'पहली लहर'

"मंगला चरण"
सतगुरू परिचय व जन्म

सम्वत् उन्निस सौ इक्यावन, विक्रम चौथ बदी वैसाख।
मिथुन लग्न की शुभ वेला में, जन्में श्री सदगुरू महाराज।।
जन्म नाम श्री झण्डू दत जी, आतम का श्री रामरतन।
याथा नाम गुँण तथा आपमें, बड़ा विलक्षण था बचपन।।
संत आप बचपन ही के हैं, जैसे सेवक हो संतोष।
जितना मिला मगन उतनें में, समझा उस ही को परितोष।।
विद्या तो जैसे चेली हो, उपजी उर से अपने आप।
ना गुरू कुल, ना ही विद्यालय, ना दर्जों ही का कुछ नाप।।
वहीं गाँव की चौपलों में, नौ वर्षों की आयू तक।
पठन करी हिन्दी थोड़ी सी, ढाई महीने संसकिरत।।
प्रातः ही उठ साथ पिता के, उंगली पकड़ जूड़ तक साथ।
नन्हे नन्हे पैरों पर चल, संग जाते थे उनके आप।।
जूड़ भयानक जंगल सा था, इक फ़र्लांग गाँव से दूर।
जहाँ गुथे थे वृक्ष आपस में, कूड़े करकट से भरपूर।।
बाँसों के बीड़ों की टोली, फँसी खड़ी थी चारों ओर।
दिन को रात बनाने वाला, अंधकार रहता था घोर।।
है देवालय उसी जूड़ में, भारी भूत नाँथ शिव का।
सेवा पूजा नित छज्जू जी, तन मन से करते इनका।।
बड़े नियम पर चलने वाले, कर्म काण्डीवी उत्तम।
थी अपार श्रद्धा शिव जी में, समझते उनको पुरूषोत्तम।।
दिन चर्य्या थी नपी तुली सी, रहन सहन भी नपा तुला।
रहते थे तल्लीन भजन में, जग को मन से भुला भुला।।
यजमानी औ प्रोहताई का, काम पिता जी करते थे।
था व्यवसाय सिर्फ़ इतना ही, पेट इसी से भरते थे।।
परिचय करा रहा मैं केवल, शब्द कहे जितने अब तक।
थे सब मेरे अपने जानो, सुनो उन्हीं के मुँह बीतक।।
स्वयं कहें अब अपनी बीती, अब प्रताप हटता पीछे।

Nijanand App

श्री बीतक – श्री मुख द्वारा – परिवार का वितरण

श्री राज और साथ को, करता हूँ प्रणाम।
झण्डू दत्त कभी कहते थे, राम रतन अब नाम।।
बुद्धिदास छोटा भाई है, दो भाई हम माँ जाये।
बाबा भी थे तीन हमारे, तीनों वे भी माँ जाये।।
इक जगह ही रहते थे हम, बस सब चूल्हे ही थे न्यारे।
और काम सब एक जगह था, आमद बाँट लिया करते।।
पिता भक्ति में रहते ज्यादा, हमें बहुत करते थे प्यार।
जाते साथ जिधर जाते वे, कंधे पर होके अस्वार।।
नहीं अलसाते थे हमसे, उम्र हमारी थी छः वर्ष।
ग्राम दूधली है नेडे की, मेला भरता है प्रतिवर्ष।।
ले गये पिता दिखाने मेला, घुमा फिरा कर मेले में।
निकट औरतों के बिठला गये, सौंप–सांप कर उन्हें हमें।।
चले गये फिर मेले में वे, मेरा मन वहाँ नहीं लगा।
ग्राम चले गये पिता हमारे, भ्रम सा ऐसा हमें हुआ।।
जिनको सौंपा मुझे पिता ने, थीं वे सभी जड़ौदे की।
पिता चले गये शायद वापस, मेरे मन को यही जंची।।
भाग पड़ा मैं आँख बचाकर, उन्हें न हो पाया कुछ ज्ञात।
मैं चल पड़ा बिछुड़ कर उनसे, दिन छिपने की है ये बात।।
तीन कोस के लगभग दूरी, समय मक्की पकने का था।
जब कुछ दूर निकल आया मैं, एक आदमी हमें मिला।।
मैं रोता जाता था जिस दम, बोला वह हमसे आकर।
क्यों रोता जाता है भईया, उठा लिया गोदी आकर।।
रोवे मत चल पिता तुम्हारे, यहीं मक्की पर हैं मेरी।
चल हम तुझे मिलावें उनसे, चला मुझे लेकर गोदी।।
मैं भी चुप हुआ इतनी सुन, खेतों–खेतों वह निकला।
जब जंगल की ओर चला वह, मैं डरता डरता बोला।।
अपना रस्ता नहीं उधर को, उस रस्ते जायेंगे हम।
लगा हमें धमकाने वह तो, खबरदार जो मारा दम।।
तेरे पिता इधर ही हैंगे, चुप बैठा रह कंधे पर।
बोला नहीं पुनः मैं उससे, वह भागा मुझ को लेकर।।
जंगल–जंगल भागा जाता, जब आया पांडो तालाब।
अपना नौकर "सुमरू" दीखा, हमने दी "सुमरू" आवाज।।

Nijanand App

जंगल फिरने आया था वह, टेर पड़ी जब उसके कान।
न थी रूकावट वहाँ फसल की, इकदम था खाली मैदान।।
दूर–दूर तक दिखता था, "सुमरू" सुन करके भागा।
किसका बच्चा टेर रहा है, है कौन व्यक्ति लेकर भागा।।
निकट गया जिस दम वे पुरूष के, उसको सुमरू ने पकड़ा।
खेंचा तान हुई बहुत दोनों में, काफी देर हुआ झगड़ा।।
वह अपना बतलाता हमको, सुमरू अपना बतलाता।
आधा मैं उसकी जफफी में, आधा वो खैंचे जाता।।
अपनी हालत ऐसी समझो, भेड़ भेड़ियों में जैसे।
चाह रहे दो टुकड़े करने, फँसा बीच में मैं ऐसे।।
लगी चटकने चूल्हों की नस, आँखों में तारे चमके।
चीख मारता बुरी तरह मैं, कोई न देता था सुनके।।
घूँसे लात एक दूजे को, मार रहे वे आपस में।
कभी हमारे भी लग जाती, ऐसी अंधा–धुंधी में।।
लात लगी सुमरू की उसकी, छाती में जमकर के एक।
छूट गया मैं उसके कर से, उठा लिया सुमरू ने देख।।
भाग पड़ा वह व्यक्ति वहाँ से, घबराकर जंगल की ओर।
रहा चींखता सुमरू दौड़ो, पकड़ो कोई है बच्चा चोर।।
लेकिन दिन छिप चुका अंधेरा, काफ़ी उतर चुका था तब।
पहुँच न पाया और मदद को, हुआ न हल कोई मतलब।।
सुमरू ने पूछी मुझसे तू, कैसे हाथ लगा इसके।
सुनकर मेरी बीती सुमरू, भगा मुझे मेले लेके।।
परेशान होंगे पंडित जी, मेले में फिरते होंगे।
ढूँड़ मँची होगी चौतरफ़ा, उन्हें ख़बर देनी थी जाके।।
हमें चिरंजी पंडित के घर, जैपुर छोड़ छाड़ करके।
सूचनार्थ भागा मेले को, उन्हें ख़बर देदूँ जाके।।
इधर खोज मेले में हो रही, मेले का चप्पा–चप्पा।
खोज रहे थे लोग और भी, जिसदम उनको पता लगा।।
दौड़े पिता तुरन्त जैपुर को, आकर मुझसे पूछा हाल।
किस प्रकार भागा मेले से, तुझे उठाकर के दज्जाल।।
हमने रो रो घटित सुनाई, लिपटे वक्ष पिता के हम।
अर्थ लगाने लगे पिता जी, बहुत हुआ सुनकर के ग़म।।
मिली भगत है घर वालों की, साँस मार कर के बोले।
परमात्माँ ही ठीक करेंगे, अधिक भेद कुछ नंहि खोले।।
घर आये हमको लेकर के, रही बहुत दिन इसकी खोज।

Nijanand App

कौन आदमी लेकर भागा, लेकिन हुआ न कुछ भी बोध।।
बड़े कुटिल थे ताऊ हमारे, सगे न थे, थे ताऊ ज़ाद।
उन्हें न भाते किसी आंख हम, कोसा करते हो बरबाद।।
घर औ बार हमें मिल जावे, हो छज्जू का दीवा गुल।
इस प्रकार की मनोव्रत्ति थीं, खुददारी थी हृदय अतुल।।
मिली भगत ताऊ की हो या, अनायास घट गयी स्वयं।
जाने करने वाला या, परमात्मां क्या जानें हम।।
करनी खुद करता ही भरता, भोग भोगता आया है।
हमने तो अप बीती कह दी, किस्सा घटित सुनाया है।।
खेले कूदे आठ वर्ष तक, रहा पिता जी का साया।
लेकिन एकसां वक्त न रहता, उसने भी पलटा खाया।।
सम्वत् उन्निस सौ उनसठ में, पिता हमारे धाम गये।
समय मृत्यु का पूर्व कह दिया, था भगवत प्रशाद जी से।।

आठ वर्ष की आयु में, ही विधना के बंध।
टूट गये इक साथ सब, पिता पुत्र सम्बंध।।

Nijanand App

'दूसरी लहर'

न्हीं भरोसा खिन का, बरस मास और दिन।
ये तो दम पर बाँध्या तो भी भूल जात भजन।।

ये जीव निमख के नाटक में, तू रहयो क्यों बिलमाये।
देखत चली जात है बाजी, भूलत क्यूँ प्रभु पाये।।

धाम चले गए पिता हमारे, हमें भाग्य के ऊपर छोड़।
माया के बंधन जितने थे, दिये विधाता ने सब तोड़।।
नीचे धरती ऊपर अम्बर, मध्य सभी कुछ अनजाना।
थे दुनियां में इस प्रकार, जैसे दो पाटों में दाना।।
खैर तभी तक दाने की, जब तक कीली से सटा हुवा।
कीली से हटते ही पल में, दाना पांता पिसा हुवा।।
पाट घूंमता चक्की का, केवल श्रोताओं ऊपरला।
जग के दोनों पाट घूंमते, क्या ऊपर क्या नीचरला।।
दाने का टिकना मुश्किल है, चक्कर में आही जाता।
काल चक्र की चक्की में, दाना दाना सब पिस जाता।।
निराकार साकार पाटके, सदा आदि से घूम रहे।
इस चक्की की घोर अजब है, पिसने वाले झूंम रहे।।
घोर निरन्तर इन पाटों की, आँख न खुलने देती है।
बेहोशी छाई रहती है, पीस एक दम देती है।।
चबा डालती सब दानों को, लेकिन लोहे के दानें।
पिसे न अब तक पिस न रहे हैं, ना मुमकिन हैं पिस जाने।।
फाड़ फेंकता है पाटों को, लोहे का दाना यदि हो।
क्या मजाल पाटों की पीसें, हो जाते पाटों के दो।।
क्या बिगाड़ सकती जग चक्की, क्या कर सकता चकियारा।
लोह पुरूष इन पाटों के, रगड़ों से रहता है न्यारा।।
माया उन्हें न वश कर सकती, महाजनों की है पहचान।
बिगड़ न पाये जब माया से, क्या बिगाड़ सकता इन्सान।।

पिता हमारे छोड़कर, चले गये जब धाम।
धीरे धीरे पास जो, धन था हुवा तमाम।।

Nijanand App

माता रह गइ सिर्फ साथ में, लालन पालन को केवल।
आठ वर्ष का बालक मैं, क्या दे सकता था उनको बल।।
और भार सा था इक अपना, उल्टा माता के ऊपर।
क्यों कर पालन होगा इनका, हमें देख रोती अक्सर।।
उलट फेर हैं ही माया में, उलट गई बाजी सारी।
काम किसी का करता कोई, करता को पड़ता भारी।।
लाले आन पड़े खाने के, घेरा संकट ने आकर।
कभी कभी माँ रो उठती, भूखा हम दोंनों को पाकर।।
दिन दरिद्रता के कुछ दिन तो, घर के कोनों में काटे।
कुछ रोज पड़ौसों ने अपने, थोड़े थोड़े संकट बांटे।।
कुछ रोज पीसने पीस पीस, चुपके चुपके माँ ने पाला।
जितना टल सका वक्त उससे, ये बुरा वक्त उसने टाला।।
लड़ती भी रही संकटों से, सब किया हमारा भर पाया।
लेकिन दुख टालन हारी का, खुद ही टलने का वक्त आया।।

काल पक्ष की ओर से, उड्डा ऐसा वेग।
चारों खूँटों देश की, फैला भीषण प्लेग।।

साल तरेसठ का अंतिम था, लगा न था समवत् चौंसठ।
महामरी फैली घर–घर में, बाकी बची न कोइ चौखट।।
छोड़ भगे घर सब घरवाले, पड़े जंगलों में जा जा ।
नाँच रहा था काल गाल में, ठूँसे बुरी तरह खाजा।।
कीड़ें और मकौड़ों की गति, मानव चारों ओर मरे।
मरने वालों को सच जानों, ठाने वाले नहीं मिले।।
अजल मज़ल करने वाला तक, किसी–किसी को मिला नहीं।
चिता एक पर मुर्दे दो दो, बाज बाज तो फुका नहीं।।
बचते एक दूसरे से सब, घर घर बंद पड़े रहते।
भाँए भाँए करते गलि कूंचे, छोड़ छोड़ घर लोग भगे।।
गोद छिपाऐ हम दोनों को, माँ घर में बैठी रहती।
चाहे काम बिगड़ जावे जो, बाहर जाने ना देती।।
मानो बाहर खैर नहीं है, गली गली फिर रही हो मौत।
जो निकला घर से बाहर को, मानों पकड़ करेगी फौत।।
घर में न था एक दाना तक, भूखे गुजर रहे थे वक्त।
समय तंग था तो पहले ही, लेकिन और हुवा कुछ सख्त।।
अपनी परम सनेही जननी, अनायास बीमार हुई।

Nijanand App

लिये फिरी कुछ देर दुख्ख को, आखिर को लाचार हुई।।
गिर ही गई अंत शय्या पर, दवा न दारू गाँठ न दाम।
सिर्फ़ आसरे पर पानी के, माँ ने काटा समय तमाम।।
दिया किये जल भर भर हम भी, चम्मच खुले हुवे मुंह में।
खुलवाऐ अपने दरवाजे, प्रातः आकर ताऊ ने।।
बिना घुसे ही अंदर माँ का, हाल ताऊ जी ने पूछा।
हमको क्या मालूम कि क्या है, हमने बता दिया अच्छा।।
आधी रात तलक तो ताऊ, कूल्ह कूल्ह इसकी बीती।
चुप्प पड़ी है अब तो पानी, देने पर ही है पीती।।
बड़ी देर में आंख लगी हैं, मुंह फाड़े है पड़ी हुई।।
ताऊ स्वयँ देखने आये, तो माँ पाई मरी हुई।
खुला हुवा मुँह देख देखकर, भरे गये पानी अनसूझ।।
जा अब कहीं गांव में जाके, कोई मरा है क्या, यह बूझ।।
मुझे झिड़क कर बोले ताऊ, कहता है माँ सोयी हुई।
अकड़ी हुई पड़ी है कबकी, जाने बुढ़िया मरी हुई।।
उसकी गाड़ी में धर देंगे, वरन कौन ले जाऐगा।
पड़ी पड़ी सड़ जायेगी यहाँ, लेने कोइ न आयेगा।।
मुझे चून देता जा इतने, पिण्ड़ बनाकर रख दूंगा।
जब गाड़ी आयेगी उसमें, तेरी माँ को धर दूँगा।।

ताऊ जी अपने यहाँ, कहा धरे हैं चून।
शायद ढूड़ो तो कही, तनिक मनिक बस नून।।

गुड़ चाहो तो है थोड़ा सा, चून न गेहूँ का दाना।
सच पूछो तो दो दिन से, भूखे है मिला नहीं खाना।।
थोड़ा थोड़ा गुड़ खा करके, पानी पी सो जाते हैं।
गर उधार मिल गया कहीं तो, चून मांगकर लाते हैं।।
इक सुनार पर वाजिब था कुछ, कर्ज पिता का दिया हुवा।
जिसने देने का वादा, कुछ दिन पहले था किया हुवा।।
मैंने उस सुनार के फाटक, खट खटाये फौरन जाकर।
ताऊ ताऊ चिल्लाया जब मैं, फाटक खोले तब आकर।।
मैंने निज मजबूरी अपनी, पिण्डों की रक्खी सन्मुख।
तो उसको मां के मरने का, सुनकर हुवा बड़ा ही दुख।।
एक धड़ी गेहूँ देकर के, बोला अब ये ले जाओ।
पिण्डदान देकर माता के, अजल मजल अब करवाओ।।

Nijanand App

चले आयें हम गेहूँ लेकर, थमा दिये ताऊ जी को।
गुड़ देकर के चले पूछने, गाड़ी के लिये माता को।।
हमने एक द्वार पर जाकर, उसकी कुंडी खड़काई।
बड़ी देर के बाद द्वार पर, बोली आकर इक माई।।
क्यों भईया क्यों आया बतला, जो कहना झट कहजा।
हमने भी झट से पूछा कोइ, तेरे आज मरा है क्या।।
अपने शब्दों को सुनकर झट, उसने बंद किया द्वारा।
लगी गालियाँ देने मुझको, नास गया, उत्ता, वारा।।
मरा मना अपनों को जाके, बड़बड़ाई वह काफ़ी देर।
सुनता रहा भोंकना उसका, कहीं बात सब मुझ पर गेर।।
लेकिन मेरी समझ न आया, क्यों मुझ पर नाराज़ हुई।
खैर वहाँ से चला अगाड़ी, फिर आगे आवाज दई।।
सुनकर के आवाज वहाँ भी, द्वारे पर आई इक माँ।
जो कुछ हम पीछें कह आये, वह ही हमने कहा वहाँ।।
बड़ा बुरा मुंह बना एक दम, ऐसा हमको फटकारा।
भाग पड़ा मैं इक दम वाँ से, सुनकर उसका ललकारा।।
हमें समझ न आयी फिर भी, मेरी बातें सुनते ही।
क्यों बक बक करने लगती है, जिससे मुर्दे की पूछी।।
झांक झांक कर ही घर घर में, हमने फिरना शुरू किया।
भिड़े मिले यदि द्वार किसी के, तो दरजों से झांक लिया।।
फिरे गांव सारे में भागे, एक जगह मुर्दा पाया।
हमने उस मुर्दे वाले से, अपना मतलब बतलाया।।
अपनी माँ भी मरी पड़ी है, उसको गाड़ी में धर लो।
सुनते ही हाँ करी एक ने, कहा कि तय्यारी करलो।।
जाओ उसको बाँध बूध लो, हम जल्दी ही आयेंगे।
गाड़ी साथ लिये आते हैं, धर देना ले जायेंगे।।
धर रक्खे थे पिण्ड़ ताऊ ने, भींच भाज गुड़ गेहूँ साथ।
इतने में मैं भी जा पहुँचा, गाड़ी की बतला दी बात।।
गाड़ी जल्दी ही आ पहुँची, माँ को लाद दिया उसमें।
जिसमें सदा बोझ लधते हैं, लाध दिया माँ को उसमें।।
धन्य वक्त तुझको बलिहारी, तू जो कर दे थोड़ा है।
तैने कभी किसी को हँसने, के लायक नंहि छोड़ा है।।
कभी जोड़ता कभी तोड़ता, करता अपनी मनमानी।
तेंने ओ बेदर्द किसी की, कभी पीर ही ना जानी।।
धर्म अधर्म न कुछ भी तुझको, ना विचार कुछ करता तू।

Nijanand App

इक मदान्धता सी है तुझमें, लगती अहं भाव की बू।।
तेंने बड़े ज़माने बदले, बड़े बड़े बदले इन्सान।
वक्त, वक्त आने को हैं अब, तेरा भी तू, झूँट न जान।।
सर तेरे भी है महाकाल, मुँह तोड़े एक तमाचे में।
दुनियाँ अब ढलने वाली है, काल नये ही साँचे में।।
सम्वत् उन्निस सौ चौसठ में, मगन देई माँ धाम गई।
दोंनों भईया शेष रह गये, सरपरस्त सर कोई नहीं।।

सभी सहारे तोड़के किये काल ने अंत।
एक सहारा शेष बस सगा पुरबला कंत।।

Nijanand App

'तीसरी लहर'

दुख से पीऊ जी मिलसी, सुखे न मिलया कोए।
अपने धनी का मिलना, सो दुख ही से होए।।

दुख बड़ो पदारथ, जो कोई जाने एह।
ताथे सुख को छोड़ के, दुख ले सके सो लेय।।

रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख।
उठते बैठते दुख चाहिए, यूँ पिऊ सो होईए सन्मुख।।

श्री महामत कहें पीछा न देखिए, न किसी की परवाह।
इक धाम हृदय में लेय के, उड़ाय दीजे अरवाह।।

वही रहा रखवाला अपना, वही खिवय्या नय्या का।
दिया सहारा उस ही ने जब, उठा सहारा मईया का।।
बड़ा भयंकर समय एक़ दम, अपने सर पर आ टूटा।
भाग्य न जाने कैसा था जो, बच्चे पन में ही फूटा।।
छूट गया पढ़ना लिखना सब, बने ग्वालिये गायों के।
पेट भरा इस ढ़ंग से अपना, ढोर चुगा हमसायों के।।
कभी पेट भर कभी एक दो, किसी वक्त की टाल रही।
इसी तरह खाने पीने की, औनी पौनी चाल रही।।
हम यह कहते हुवे शुरू ही, से लोगों से शरमाये।
हम भूखे हैं इस प्रकार के, शब्द नहीं मुँह पर आये।।
फिरे न घर घर कभी झाँकते, कभी न फैला आगे हाथ।
कभी न छूआ माल किसी का, नहीं बिगाड़ी अपनी बात।।
किसी खेत से पके नाज की, बाल तलक इक ना तोड़ी।
बला से भूके हैं होने दो, पेट भरा या हो थोड़ी।।
कोई मिल जाते कभी कबार, बालक समझ दया दिखा जाते।
किया सब्र उस ही में अपना, कर प्रणाम उसको खाते।।

श्री महामत कहें ए मोमिनों, शुकर गरीबी सबर।
इन विधि दोस्ती हक की, प्यार कर सके सो कर।।

Nijanand App

जिस हालत में साँई रक्खे, अधिक न उससे कुछ चाहते।
खेत अगर कट जाता कोई, सिल्ला बीन लिया करते।।
एक वक्त इक मुट्ठी दाने, कच्चे चाब लिया करते।
और संतोष मान जीवन का, यों ही जी लिया करते।।
कौन पीसता कौन पकाता, कहाँ धरी थी तरकारी।
चबा लिया करते बस यों ही, किस्मत ही मेरी म्हारी।।
किसे ज़ायका कहते हैं हम ने, यह बात नहीं जानी।
कभी चून घोला औ पी गये, कभी कभी केवल पानी।।

ताऊ मनाते ही रहे, हमें कि ये मर जाँए।
घर दर इनके सहज ही, अपने पै आ जाँए।।

रहा न सर साया जब कोई, एक रोज़ ताऊ जी ने।
बुद्धि दास को गोद उठाया, चला खेंच कर हाथ हमें।।
थोड़ी दूर एक कूआ था, जिसकी मन थी कुछ ऊँची।
हमें डालने को कूऐ में, ऊपर को बाँहें खेंची।।
पैर अड़ाये मैंने मन में, गोदी रो रहा बुद्धी दास।
खेंचा तानी हुई हमारी, छुड़ा रहा में उससे हाथ।।
वंश नष्ट करना छज्जू का, चाहे फाँसी हो हमको।
लेकिन तुम्हें न ज़िंदा छोड़ूँ, हम ही से ज़िद थी उसको।।
समय रात का लोग न सोये, बैठक इक कूऐ के पास।
जिसमें बैठा एक चौधरी, कान पड़ी उसके आवाज़।।
बाहर आया तुरंत निकलकर, उसने उसको धमकाया।
तुझे शर्म नंहि आती पंडित, उसने हमको बचवाया।।

हम तो हाथ हुकम के, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा पिया जी क्या चले, ज्यो जानों त्यो करो खसम।।

वरन डाल देता कूऐ में, पहुँच न पाये कूऐ तक।
बालक थे हम क्या कर लेते, अगर चौधरी ना हो तब।।
बत्तिस दाँतों में ज्यों रसना, बस अपना था वैसा हाल।
जिधर देखते कोई न अपना, जित देखा पाया दज्जाल।।
दुख के साथ युद्ध हो मानो, देखें कौन हार माने।
खैस वैस सी होती हैं ज्यों, लड़ते ज्यों दो, दीवाने।।
बुद्धिदास बच्चा था छोटा, उसे नहीं थी कुछ भी होश।

Nijanand App

यह थी बस सौगात हमारी, पीते रहे दुख्ख ख़ामोश।।
अपने हम स्वभाव के कारन, कहते न थे किसी से दुख।
जब कोई दुख आता हम पै, उसको पीना समझा सुख।।

दुख देवे दीवानगी, स्यानप देवे उड़ाए।
ताथे दुख कोई न लेवही, सब सुख स्यापन चाहे।।
चाहन वाले दुख के, दुनिया में ढूँढ़ देख।
ब्रह्माण्ड यार है सुख को, देख दोस्त हुआ कोई एक।।
जाको स्वाद लग्यो कछु दुख को, सो सुख कबहुँ न चाहे।
वाको सो दुख फेर–फेर, हृदय चढ़–चढ़ आये।।
महामत कहें इन दुख को, मोल न कियो जाये।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सर भर न आवे ताये।।

जैसे हो मखौल यह कोई, दुनियाँ ऐसी लगी हमें।
इक घटना है जिससे जाना, बतलाता हूँ आज तुम्हें।।
कई रोज़ के भूके थे हम, गाय चुगाया करते थे।
छोटा भाई साथ रहता था, गाय छोड़ उसके आगे।।
इन्तज़ाम खाने का करने, जाता हूँ उससे कहके।
गाँव चला आया मैं वापिस, चून कहीं से ला करके।।
कई दिनों में बनी रोटियाँ, चला उन्हें जंगल लेकर।
गया बुलाने बुद्धिदास को, रोटी पेड़ तले धर कर।।
जब वापिस आकर देखा तो, रोटी ग़ायब मिलीं हमें।
खोज करी जब तो वे रोटी, पाईं बंदर के मुँह में।।
धमका धमका खाता जाता, हम देखे जाते उसको।
कहो दोष दें अपने को या, दोषी कहदें बंदर को।।
जैसे ज़िद हो तुम्हें न मिलने, चाहे तू जो कुछ करले।
पैज मारता हमसे कोई, खावेगा क्या ले खाले।।
रह गये बंदर का मुँह तकते, रोता रह गया भूखा पेट।
कुछ मजाक सी करता था दुख, ज्यों हम ही रिपु उसके ढेठ।।
मिलते रहे फूल ऐसे ही, हम धरते रह गये सम्भाल।
कभी न रोऐ हम पिछलीपर, आगे का ही रहा ख़याल।।

अपने चाहे होत क्या, रब चाहे सब होत।
वो चाहे तो रात हो, करदे जोत उद्योत।।

Nijanand App

जितने थे यजमान हमारे, बटे नहीं थे आपस में।
ताऊ ही सब कै जाते थे, फंसे हुवे थे लालच में।।
खुद डकारते दान दक्षणा, हमें नहीं कुछ देते थे।
आमदनी की जगह नाम तक, अपना कभी न लेते थे।।
कुछ ललौन खेड़ी में भी, यजमान हमारे रहते थे।
कभी कभी यजमान हमारे, हमें बुलाते रहते थे।
पर रोड़ा बन वे बीच, हमारे आ जाते।।
एक दफा आया इक न्यौता, ख़बर नाई लेकर आया।
दिन छिपने ही वाला था तब, मुझे ताऊ ने बुलवाया।।
बड़े प्यार से बोले मुझसे, तुम ललोन खेड़ी जाओ।
हम बुड्ढे हैं जा न पायेंगे, तुम बच्चे हो भग जाओ।।
अभी बुलाया है प्रोहित को, यजमानों को है संदेश।
चार कोस ही तो है सारा, संग ले जाना अपना खेस।।
वहाँ सवेरे कुछ होना है, सुबह पहुँच नंहि पायेगा।
इसी लिये अब बुलवाया है, अब से पहुँच भी जायेगा।।

ताऊ ने जिस वक्त यह, दिया हमें संदेश।
उसी समय हम चल दिये, रख कंधे पर खेस।।

अस्त हुई सूरज की किरनें, चले निकलकर जब घर से।
लगा काँपने दिल जंगल में, रात हुई जिसदम डर से।।
भाँए भाँए करता था जंगल, जानवरों का भय पूरा।
हिल जाया करते उनके भी, दिल जो होते हैं शूरा।।
ले जाते उन दिनों भेड़िये, गाँवों से ही बच्चों को।
फ़िकर चढ़ी रहती थी गांवों, में ही अच्छों अच्छों को।।
हम तो फिर भी बालक ही थे, करते क्या यदि कुछ आजाए।
ताऊ ने भेजा यों ही था, ताकि जानवर ही खा जाए।।
इल्लत कटी माँ बाप की तो, बेटे की ऐसे काटो।
छोटे की देखी जायेगी, घर बर आपस में बांटो।।
चढ़ बैठो अब एक पेड़ पर, उचित यही मन ने माना।
जाय भाड़ में यजमानी, सोहताई का आना जाना।।
वृक्ष देखकर एक बड़ा सा, मैं सीधा उस ओर चला।
आता हवा उधर ही से इक, मानव मेरी ओर मिला।।
मुझे देखकर बोला बालक, किधर जा रहे हो बे वक्त।
मैं बोला चढ़ बैठूँ जिससे, खोज रहा था एक दरख्त।।

Nijanand App

वैसे तो लालौन खेड़ी, जाने को घर से आया हूँ।
पर सुनसान अँधेरा होने, के कारण घबराया हूँ।।
यही बात है तो आ जाओ, तुम्हें वहाँ पहुँचा देंगे।
इस खटके से क्यों ड़रते हो, यह तो हमीं मिटा देंगे।।
मिला सहारा जिस दम उसका, हो गए हम पीछे पीछे।
बड़ा हितेषी दीखा हमको, झट लालौन खेड़ी दीखे।।
हम लालौन खेड़ी ना जाने, किस प्रकार कैसे आये।
देर लगी थोड़ी सी ही हम, अपने यजमानों में पाये।।
अगले दिन उन्निस रूपये औ, एक धड़ी लडडू लेकर।
विदा किये यजमानों ने हम, दान दक्षणायें देकर।।
खुशी खुशी हम चले उछलते, पहर तीसरे घर की ओर।
गुजर जायेंगे काफी दिन अब, गद गद हो मन हुवा विभोर।।
गिने बैठकर के जंगल में, कितने दिन कट जायेंगें।
एक एक करके खाया तो, काफी दिन चल जायेंगे।।
बुना उधेड़ी में लडुओं की, हम रस्ता भी भूल गये।
जाना था किस ओर मगर हम, ओर दूसरी चले गये।।
फिर भटकते जंगल जंगल, सूरज अस्त हुवा कब का।
किन्तु रास्ता मिला न हमको, डर उपजा उर बेढ़ब का।।
भूल गये लडडू वडडू का, गिनना और गिनाना सब।
किधर जाँए औ किससे पूछें, कोई नहीं जंगल में अब।।
कल की तरह आज फिर फंस गये, क्या बीतेगी हे भगवान।
कुछ ही दूर गयें होंगे के, दीखा एक हमें इन्सान।।
देखा निकला एक गड़रिया, किसी गाँव से आता था।
जब हमने उससे पूछा तो, खास जड़ौदे जाता था।।
साथ साथ हम हो गये उसके, खास हमें घर पर छोड़ा।
सुना ताऊ ने मैं आ पहुँचा, हटा न रस्ते का रोड़ा।।
पश्चाताप हुवा बहुतेरा, लडडू और दक्षणा पर।
कर ही क्या सकता था ताऊ, पड़ा बैठना पछताकर।।

दिया सहारा एक ने, हमको पूरा आन।
उतर नहीं सकता कभी, बूआ का अहसान।।

'चौथी लहर'

अपना जान हमें बूआ ने, निज बेटे सा नेह दिया।
बड़ी बड़ाई उन हाथों की, पाल पोस कर बड़ा किया।।
नारी ही साक्षात् स्नेह की, परम मूर्ति मानी जाती।
मर्दों में तो खुदगरजी की, सच पूछो बदबू आती।।
बने आदमी पर न जानते, आदमियत किसको कहते।
हम हैं मर्द सिर्फ़ इक इस ही, बदबू में अकड़े रहते।।
नारी यदि आपे से बाहर, हो जावे तो मार धरे।
यदि अपने नारी पन में ही, रहे तो बेहद प्यार करे।।

बूआ ने इक रोज कुछ, करके स्वयँ विचार।
अलग बिठाके पास में, पूछा यों पुचकार।।

क्यों बेटा कुछ तुम्हें पता है, हमें शुबा है कुछ धन का।
मरते वक्त दिया हो कोई, पता तुम्हें घर आँगन का।।
तुम्हें इल्म हो तो बतला दो, काम तुम्हारे आयेगा।
अगर कहीं थोड़ा भी शकहो, खोदेंगे मिल जायेगा।।
दीवा दावा कही जलाती, हुई अगर माँ देखी हो।
मुझे भरोसा पूरा है तुम, हमें जगह वह बतलादो।।
कभी कभी देखा है माँ को, दीवा जहाँ जलाती थी।
हम जब पूछा करते क्या है, तो हमको धमकाती थी।।
बूआ उसी जगह ले करके, पहुँच गई हमको तत्काल।
कुण्डी बन्द करी बाहर की, जब खोदा तो निकला माल।।
पंद्रह सौ रूपयों से छोटा, भरा हुआ था एक घड़ा।
बूआ अति विभोर हो उट्ठी, मैं भी खुश हो उछल पड़ा।।
समझा कर बूआ यों बोली, ख़बरदार जो कहीं कही।
जैसे तैसे ये ही तो है, तुम पै दौलत रही सही।।
घर कुनबे के जितने भी हैं, ठग ही ठग हैं बसे हुऐ।
ठग लेंगे सारों को पल में, रह जाओ फिर धंसे हुऐ।।
ये पैसे तुम दोनों के, ब्याहों में काम आजाऐंगे।
बिगड़े हुवे काम सब के सब, इस धन से बन जाऐंगे।।
बूआ सुहद दयालू थी ही, था अपने पै प्यार बहुत।
अब पैसे से हाथ खुले कुछ, पहले थे लाचार बहुत।।
बूआ कभी यहाँ आ रहती, कभी घर अपने ले जाती।

Nijanand App

यथा समय अपने पल्ले से, भी सहायता दे जाती।।
हम छोटों छोटों की मंगनी, पहले ही थी हुई हुई।
पिता धाम जब चले गये तो, मंगनी वंगनी छूट गई।।
बुद्धिदास के लिये जो कन्या, करी गई थी पहले तै।
वह सम्बंध हुआ विच्छेदन, किया गया वह हमसे तै।।
थी इक और तीसरी लड़की, बुद्धिदास को वह वरदी।
एक मंढे हम दोनों की, उन लोगों ने शादी करदी।।
किसी ने अपनी बात न मानी, ब्याह दिये हम झटपट से।
दुलहन नहीं हमारी दुश्मन, बेठा दी घर में लाके।।
दहशत सी लगती थी हमको, उसे देख कर अन्तर में।
ज़्यादातर बाहर रहते अब, घुसते कभी कभी घर में।।
प्रेम लगा बढ़ने अब अपना, रामायण सुखसागर से।
चढ़ने लगी मनों में चर्चा, स्वाद बड़े हमको आते।।
पद्रह वर्ष आयु तक हमने, रामायण को कण्ठ किया।
पाठ निरंतर करते रहने, पर हमको वैराग हुआ।।
रस मानो अब रहा कहीं नंहि, मुरझाया लगता संसार।
जैसे फाड़ खायगे मुझको, ऐसे लगे मुझे घर बार।।
सोचा करते थे ग्रहस्थी से, परमात्माँ कैसे छूटें।
जकड़े हम नाहक बंधन में, ये बंधन कैसे टूटें।।
अति उत्तम हो किसी तरह यदि, पतनी अपनी मर जावे।
तो यह सब झंझट जो कुछ है, अपने सर से हट जावे।।
निष्कंटक हो जाँए मार्ग सब, जब जो चाहूँ सो करदूँ।
जब चाहूँ तब दण्ड कमण्डल, उठा उधर ही को चलदूँ।।
जन्म हो चुका था कन्या का, गृहस्थी का विस्तार हुआ।
इधर जगी उर अमर ज्योति, नीरस्ता का संचार हुआ।।
भावुकता वैराग्य आदि सब, सामिग्री ऐकत्रित थी।
बिना बहाने घर से कैसे, चलें आत्माँ चिंतित थी।।
कारण बिना कार्य का होना, सम्भव नहीं बताते हैं।
कारण के बनते ही कारज, क्षण भर में हो जाते हैं।।
कितनी देर छिपा सकती है, रूई आग को अपने में।
राख एक दम हो जाती है, दावानल को ढकने में।।
गाड़ी चढ़ी लैन पर अपनी, बस धक्के की देरी थी।
घर आना जाना तो केवल, जोगी जैसी फेरी थी।।

Nijanand App

एक दफ़ा निज गाँव ही में थी एक जनेत।
हम भी थे जौनार में अपने कुटुम समेत।।

रात हो चुकी थी दावत को, जीम रही थीं सातों जात।
हम भी सब के बीच बैठकर, जीम रहे थे उनके साथ।।
हुआ पेट में दर्द अचानक, उठना पड़ा हुवे लाचार।
टट्टी की हाजित ज़ोरों की, पकड़ पाए मुश्किल से द्वार।।
ज्यों त्यों करके दरवाज़े से, जैसे ही बाहर आया।
निकल गई टट्टी कपड़ों में, रोका किन्तु न रूक पाया।।
था थोड़ा उस जगह अंधेरा, हुआ जहाँ हम से यह काम।
हमको देख न पाया कोई, था उस वक्त वहाँ सुनसान।।
जल्दी से निव्रत हो करके, चाहा के हम हट जावें।
हाथ और कपड़े धोने थे, जल बिन क्यों कर धुल पावें।।
वहीं सामने इक कूआ था, इक गड्ढे में पानी था।
किन्तु बहुत ही गंदा था वह, उस दम और न कुछ सूझा।।
जल्दी से मल त्याग त्यूग के, हाथ उसी में साफ़ किये।
अक्समात गुज़रा इक भाई, ऐसा करते भाँप लिये।।
सर नींचा हो गया उसी दम, ख़ुद ने ख़ुद को धिक्कारा।
ग्लानि आई अपने हमको, मन ने मन को फटकारा।।
टूटे से घुटनों पर चलके, ज्यों त्यों दरवाज़ा आया।
देखा तो इक हमें खोजता, हुआ भाई बाहर आया।।
लिये हुवे था हाथ परोसा, अपने को पकड़ाने को।
मेरे ऊपर डाल डूलके, अंदर गया जिमाने को।।
क्या बतलायें उस दिन हम पै, जाने कैसे ख़ाक पड़ी।
हों मलेक्ष पूरे हम जैसे, ऐसी हमको जाँच पड़ी।।
है मलीन हाथों पर भोजन, घ्रंणा युक्त कितना अपराध।
तुझे देख कर क्या कहता, होगा ये जितना यहाँ समाज।।
घूर घूर के देख रहे हैं, मानो ये दावत वाले।
भाग पड़ा घर ले वह भोजन, आकर कुत्तों को डाले।।
हाथ धोए माँजे और न्हाया, पर वो बूंद गई पाताल।
भाँडा फूट गया पंचों में, जान गये सब मेरा हाल।।
अब मुँह दिखलाने के क़ाबिल, नहीं समझता अपने को।
दुनियाँ सब तय्यार नज़र, आती है मुझ पर हँसने को।।
जिसने मेरा यह कुकर्म, देखा वह कभी न बख़्शेगा।
क्या जवाब दूँगा जब कोई, मुझ से ये सब पूछेगा।।

Nijanand App

स्वच्छताई बाहर इतनी और, अंदर इतने कर्म मलीन।
इतना नींच कर्म करने को, बता कौन है तेरा दीन।।
हमें रात भर नींद न आई, प्रश्नोत्तर करते बीती।
हार गये हम ख़ुद अपने से, मनकी भावनाऐं जीतीं।।
मन बोला चल निकल यहाँ से, इज्ज़त अब काफ़ूर हुई।
अपनी बात बनी जो अब तक, एक मिनिट में चूर हुई।।
देख न दिखला अब मुँह अपना, चलदे अब घर से तत्काल।
छोड़ यहाँ अब क्या रक्खा है, इस घर को चूल्हे में डाल।।
जो सोना कानों को चीरे, लानत है उस सोने पर।
होकर पैदा, हों नपैद थू, ऐसे पैदा होने पर।।
रूके नहीं पल को शय्या पर, दबे पाँव पहुँचे घर में।
गौने का जोड़ा रक्खा था, पहन लिया लेकर तन में।।
पैसा घर में एक नहीं था, ख़ाली हाथ चले इकदम।
फ़कत एक गौने का जोड़ा, लेकर चले सिर्फ़ यह धन।।
निकल पड़े स्थापित करने, अमर शान्ति अंतस्तल में।
जिस घर में जन्में और पनपे, छोड़ चले उसको पल में।।
अंतर से अंतरयामी का, ध्रुव सम्बध मिलाने को।
चले टोह में चिंता मंणि की, धक्के मुक्के खाने को।।

क्या छोटी सी बात पर छूटा घर औ देश।
परमारथ पर यों हुआ अपना श्री गणेश।।

Nijanand App

'पाँचवीं लहर'

की परनाम जन्म भूमि को, और दण्डवत की घर को।
नमन किया सब घर वालों को, देखा एक नज़र सब को।।
कन्या एक वर्ष की थी घर, उन्निस वर्ष आयु अपनी।
उन्निस सौ सत्तर सम्वत् था, जब ऐसी इच्छा उपजी।।
मुँह मोड़ा फिर मोह तोड़ कर, रात ढली होगी आधी।
निकल चले हम ग्रहस्थी तजकर, सुरता बाहर को भागी।।
रोकड़ साथ सवा रूपया बस, धोती औ इक चादर साथ।
सोच लिया आगा पीछा सब, छोड़ी डोर उसी के हाथ।।
पैदल चले नाँपते रस्ता, थे विचार के पर्वत संग।
साथ उन्हीं के चले झगड़ते, बड़े बड़े थे हृदय प्रसंग।।
पहुँच मुज़फ्फर नगर रात में, मंदिर में विश्राम किया।
रोटी और पानी का बिलकुल, नहीं किसी ने नाम लिया।।
अगले दिन भी वहीं रहे पर, रहे सोच के धंधे में।
किन्तु न पूछी बात हमारी, किसी सख़ी के बंदे ने।।
कपड़े जो सुँदर पहने थे, रूप रंग में थे चोखे।
इस कारण वश हमें न कोई, समझ सका होंगे भूके।।
पल्ले कहाँ धरी थीं रोकड़, खाते भी तो काहे से।
उत्तम जाना यों ही रहना, आगे हाथ फलाऐ से।।
तीन रोज़ भूके मरने के, बाद विचार आया मन में।
दुनियाँ में कुछ नहीं दीखता, जो है प्रभु के दर्शन में।।
अब तो मथुरा चलो वहीं, प्रभु के दर्शन हो पाऐंगे।
प्रभु सेवा दर्शन पर्सन कर, जीवन सफल बनाऐंगे।।
सड़क सड़क पैदल पद यात्रा, मथुरा की आरम्भ हुई।
भूके कभी कभी हैं प्यासे, कभी कभी मिल गई कहीं।।
कुछ दिन बाद अलीगढ़ पहुँचे, मिला एक लाला हमको।
अपनी शकल भाँपकर बोला, क्या भोजन चहिये तुमको।।
या कुछ और परेशानी है, मुँह उतरा उतरा है कुछ।
पैसे धेले अगर न हों तो, कहो तुम्हें देंगे सब कुछ।।
जब मनुष्यता का अंकुर, हमने उस मानव में देखा।
तो हममें भी साहस आया, अपनी कहने सुनने का।।
हमने भी कह दिया दयालू, तीन रोज़ के भूके हैं।
इसी वास्ते होट और मुँह, अपने सूखे सूखे हैं।।
माँग नहीं सकते माँगा नंहि, आगे माँग न पाऐंगे।

Nijanand App

प्रभु आगे ही हाथ पसारें, अन्य नहीं फैलाऐंगे।।
प्रभु दर्शन की भूक प्यास के, मारे मथुरा जाते हैं।
पेट भूक क्या करती अपना, इससे नंहि घबराते हैं।।
अपनी इस प्रकार की सुनकर, लाला भावुकता में आ।
पेट बोझ भोजन जिमवाकर, दिया दक्षणा में लोटा।।
कहा तुम्हें बर्तन ना होने, से तंगी रहती होगी।
बिना पात्र मुश्किल पड़ती है, भोगी हो या हो योगी।।
हमने उसका भक्ति भाव लख, वह लोटा स्वीकार लिया।
उस लाला से विदा प्राप्त कर, आगे को प्रस्थान किया।।
ज़रा दूर निकले होंगे हम, खा पीकर लेकर लोटा।
एक डाट सी देकर हमको, दो सिपाहियों ने रोका।।
ठहरो अपना नाम पता दो, जब जाने देंगे आगे।
तुम ऐसे लगते हो जैसे, कहीं से हो भागे वागे।।
अपना नाम पता देकर हम, बोले, मथुरा जाते हैं।
दर्शनार्थ श्री कृष्ण की, पैदल घर से आते हैं।।
इस प्रकार अपनी सुनकर, उनमें से बोला एक।
जैसे कुछ सलाह देता हो, अपने हित की नेक।।
तुम जैसे लड़के सड़कों पर, अब न फिरेंगे आवारा।
चलो नौकरी देंगे तुमको, क्यों फिरते हो नाकारा।।
नाम नूम लिख पढ़ लेते हो, बोलो जल्दी चुप क्यों हो।
काम बहुत हलका है बोलो, मौज करोगे चलते हो।।
हम तो बोल न पाये इतने, दूजा बोल पड़ा इकदम।
कैसे नहीं चलेगा डण्डे, के बल से, ले जाऐं हम।।
हमें घुड़क कर बोला देखो, सीधी तरह समझ जाओ।
तुम्हें नौकरी उम्दा देंगे, अपने साथ चले आओ।।
तुमको हम पचास का नौकर, सरकारी बनवा देंगे।
नाम नूम लिखने भर का ही, काम तुम्हें दिलवादेंगे।।
मना किया हमने बहुतेरा, हुई बड़ी खेंचा तानी।
ले ही गये हमें अपने संग, एक हमारी ना मानी।।
भरा हुआ था एक डिपू सा, छत्तिस क़ौमों से भरपूर।
पहरे लगे हुवे थे जिसके, चारों तरफ़, शहर से दूर।।
डेरे लगे हुवे थे चारों, तरफ़ छाँवनी सी छाई।
भेद भाव उस जगह कहीं भी, दिया न हमको दिखलाई।।
एक जगह खाते सब मिलकर, सब जा छूते खाने को।
रोक टोक कुछ नज़र न आई, उन चौकों में जाने को।।

Nijanand App

दो दिन तक तो जान न पाये, रोटी कौन बनाता है।
धींवर रोटी पोता देखा, औ चमार जिमवाता है।।
चला न बस अपना क्या करते, दो दिन आँख मींच सटकीं।
दिवस तीसरे भंगी देखा, वहीं रोटियाँ दे पटकीं।।
चले आए अपने डेरे में, दो दिन तक उपवास किया।
उन्हीं दिनों के बीच एक, पंडित जी हमको वहाँ मिला।।
आक्रत्ति क्रोधी जैसी थी, योग भ्रष्ट होवे जैसे।
हमें देख कर योग भ्रष्ट, बोला तुम आन फंसे कैसे।।
दाने से पंछी फंसता है, तुम कैसे फंस गए कागा।
तुम जैसों को फंसा देखकर, हम भी आन फंसे बाबा।।
एक मरज़ के दो बीमारों, का जब हो जाता संयोग।
तो दोनों ही गाया करते, बैठ बैठ अप अपना रोग।।
खाने पीने की अड़चन, दोंनों के लिये समस्या थी।
बातों बातों भाव बदलकर, बोले उनसे भइया जी।।
हम भी पंडित तुम भी पंडित, यह उलझन सुलझा लेंगे।
यदि सूखा राशन ले लो तो, स्वयं बनाके खा लेंगे।।
फंस तो गये न शक इसमें कुछ, पर ईमान तो बचवादो।
जैसे भी हो हमें यहाँ से, आटा वाटा दिलवादो।।
पंडित जी बोले तो अच्छा, खाना पीना सब तजदो।
हम शौहरत करते हैं इसकी, तुम उपवास शुरू करदो।।
क्रोधी तो थे ही पंडित जी, भूखे और प्रचण्ड हुवे।
हुवे उतारू संघर्षण पर, बुरी तरह उद्दण्ड हुवे।।
लड़ लड़ पड़ते, थे जो आता, कहने हमसे खाने को।
शौहरत भूकों की सुनकर सब, आने लगे मनाने को।।
सुना मैस मैनेजर ने जब, तो दफ़्तर में बुलवाया।
छान बीन करने पर उसने, सूखा राशन दिलवाया।।

इबतदा ही है अभी रोता है क्या।
आगे आगे देखिये होता है क्या।।

मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।
मन ही देवे सत साहेबी, मन ही करे फजीत।।

कुछ दिन बाद हुकुम आया, सब का कलकत्ते चलने का।
रेलों में भर भर पहुँचाया, कलकत्ते अपना जथ्था।।

Nijanand App

वहाँ पहुँच करके हमको, अफ़सर के आगे पेश किया।
उसने देखे हाथ हमारे, तो हमको आदेश दिया।।
जाओ चूना मलो हाथ से, सख़्त न हों जब तक इतने।
कैसे काम करोगे जाकर, हाथ मुलायम हैं कितने।।
तीन रोज़ तक हमने अपने, हाथों से चूना रगड़ा।
तीन रोज़ के बाद हाथ का, सख़्त हुआ कुछ कुछ चमड़ा।।
तब उन लोगों ने हमको, अपने ही कपड़े पहनाये।
अपने जो कपड़े थे तन पर, सब उतार कर धरवाये।।
जितने भी टापू हैं स्थित, इस भारत के दक्षिण में।
भारत वासी पकड़ पकड़ कर, सब आबाद किये उनमें।।
जितने भी आवारा फिरते, भारत में मिल जाते थे।
भर भर कर उनको जहाज़ में, वहाँ बसाकर आते थे।।
उन्हीं टापुओं में इक फ़ीजू, नामक टापू कहलाता।
करने को आबाद उसे, अंगरेज़ों ने हमको छाँटा।।
इक जहाज़ आ खड़ा हुआ, हम लोगों को ले जाने को।
हुकुम हुआ हम लोगों को इक, लम्बी लैन बनाने को।।
बैठा था इक साहब आगे, मौहर हाथ पर ठप देता।
दूजा अफ़सर झट पकड़ उसे, अंदर जहाज़ के कर देता।।
हम दोनों पंडित पंडित, आगे पीछे थे खड़े हुवे।
अपने अपने बिस्तर अपनी, बग़लों में थे लिये हुवे।।

कहना सुनना हो अगर पंडित जी कुछ शेष।
तो कहलो अब वक्त है वरना छूटा देश।।

आते ही दिया धर्म भेंट अब, देश भेंट चढ़ने को है।
जो कहना कहलो वरना, लाईन आगे बढ़ने को है।।
साधनाऐं तुमने जो कीं वे, सिद्धी कब काम आवेंगी।
वतन छोड़ कर जब चलदें क्या, तब बंदूक चलावेंगी।।
पंडित ने सोचा कुछ सुनकर, बोला मेरे पीछे आ।
खड़े खड़े बस रहना तुम तो, लाईन से बाहर आजा।।
जो कहना है मैं कह लूंगा, एक शब्द तुम मत कहना।
अभी भुगतता हूँ इनको तुम, केवल पास खड़े रहना।।
यह कहते ही योग भ्रष्ट, हो गया खड़ा लाइन तजकर।
हम भी लाइन छोड़ छाड़, जा खड़े हुवे उससे लगकर।।
हमें लाइन से अलग देख, दो आदमियों ने आ पकड़ा।

Nijanand App

और डपट कर के बोले, ऐ, कैसे तुम याँ हुआ खड़ा।।
किसी तरह का भी उत्तर जब, हमने उनको नहीं दिया।
उन सिपाहियों ने हमको, साहब के आगे पेश किया।।
देखो साहब ये दोनों, थे लैन छोड़ कर खड़े हुवे।
फिर साहब ने पूछा हमसे, तुम लाईन से क्यों निकले।।
योग भ्रष्ट बोला साहब, पहले हमको यह समझादो।
कहाँ भेज रहे हो तुम हमको, कारण यह है बतलादो।।
साहब बोला यह सुन करके, क्या तुम्हें मालूम नहीं।
क्या इस भर्ती में अपनी, मरज़ी से भरती हुआ नहीं।।
पंडित जी बोले साहब हम, मर्जी से कब आये हैं।
हम सिपाहियों ने क्या क्या, धोका दे दे बहकाये हैं।।
कहते थे तनख़ा पचास की, हम तुमको दिलवायेंगे।
नाम नूम लिखने का केवल, तुमसे काम कराऐंगे।।
अब तक हमें नहीं बतलाया, फ़लाँ जगह तुम जावोगे।
कहाँ हमें ले जाते हो और, क्या हमसे करवाओगे।।
कौन हो तुम, साहब बोला, क्या करते हो घर पर अपने।
महाराज ब्रह्मण हैं हम तो, कब ऐसे काम किये हमने।।
कथा कीर्तन करने का ही, पेशा अपना है साहब।
आप कराना चाह रहे जो, करी न कर सकते हैं अब।।
अपना वतन न छोड़ेंगे, हमको तो छुट्टी दिलवादो।
हुकुम दिया साहब ने इनको, फ़ौरन वापिस भिजवादो।।
दो समान इनको वापिस, जो दफ़्तर दाख़िल है इनका।
नक़द ख़र्च और रेल पास, बन वाकर देदो घर तक का।।

नक़द पाँच और रेल का, मिला साथ में पास।
जूते कपड़े पहन के, भगे जोड़ कर हाथ।।

मथुरा का पास लिया हमने, मथुरा का लक्ष हमारा था।
श्री कृष्ण चंद्र के दर्शन का, पहले ही मता विचारा था।।
किन्तु बनारस आया जब, और रेल़ रूकी स्टेशन पर।
कौतूहल सा होकर के कुछ, असर हुवा इकदम मनपर।।
ओ पागल क्यों फिरता यों, तू आज है विद्या के घर में।
अब भी है कुछ आयु शेष, बेटा बीते कुछ अवसर में।।
फिर शेष रहेगा पछताना, ये अवसर हाथ न आयेगा।
गर निकल गया यह अब मौक़ा, तो जीवन भर पछतायेगा।।

Nijanand App

हम उतर गये स्टेशन पर, अपना मन चाहा कर ड़ाला।
औ शहर बनारस जा पहुँचे, प्रातः खोजा इक विद्याला।।
जब ऐन द्वार पर जा पहुँचे, तो मन फिर डांवा डोल हुवा।
विद्या ही यदि पढ़ली तैंने, तो क्या विशेष कुछ प्राप्त हुवा।।
सभी शास्त्री पंडित फिरते हैं, जीवन में उनके क्या हुआ।।
काँए काँए कव्वे की भाँति, करके तो हासिल होगी।
पढ़कर फिरे पढ़ाता जग को, काँए काँए ज़्यादा होगी।।
इससे बिना पढ़ा ही अच्छा, लाभ प्रभु की सेवा में।
इस विद्या का फल कड़वा है, मेवा है उस सेवा में।।
लौट पड़ा यह ध्यान आते ही, विद्यालय के आगे से।
बीता जब पढ़ने का अवसर, क्या होवे अब जागे से।।
लौट गये उस जगह जहाँ पर, अपना रैन बसेरा था।
पढ़ लूँ या रहने दूँ पढ़ना, इस दुविद्धा ने घेरा था।।
बीती रात बात यह मथते, निर्णय हो न सका इसका।
प्रातः फिर उठकर दो बारा, विद्यालय की ओर चला।।
लेकिन जब दरवाज़ा आया, उन्हीं विचारों के घेरा।
क्या रक्खा है इस पढ़ाइ में, जीवन बिगड़ जाए तेरा।।
वापिस लौटा फिर थक करके, अन्तर रह रह चिल्लाया।
कौन रोकता है यह अंदर, हमको समझ नहीं आया।।
अंदर थी खेंचा तानी सी, मल्ह युद्ध जैसे कोई।
विदा समय पति से पतनी ज्यों, सिसक सिसक कर हो रोई।।
आठ रोज तक विद्यालय के, द्वारे पर आया लौटा।
पर अंदर की हठ ने मुझको, विद्या पढ़ने से रोका।।
नौवे दिन जब विद्यालय के, द्वारे आकर खड़ा हुवा।
उसी तरह से अन्तर में वह, संर्घषण आरम्भ हुवा।।
मैं तमाश बीनी सी गति में, खड़ा हुवा नत्मस्तक सा।
अनायास इक बोल सुना, कानों में मेरे क्यों बेटा।।
चिन्तातुर औ विचलित से क्यों, खड़े हुवे हो द्वारे पर।
पहलवान जैसे निढाल सा, होता कुश्ती हारे पर।।
चौंक पड़ा यह सुनते ही में, देखा एक महात्माँ हैं।
दर्शन था तेजोमय उसका, जँचते पुण्य आत्माँ हैं।।
बोला जभी महात्माँ जी, क्या बतलाऊँ उलझन अपनी।
व्यस्त आठ दिन से हूँ इसमें, सुलझाने को यह गुथ्थी।।
द्वारे तक विद्यालय के, आसानी से आ जाता हूँ।
जानें किस शक्ती द्वारा, द्वारे पर पकड़ा जाता हूँ।।

Nijanand App

सोच–सोच कई दिन से, ठिठक कर रह जाता हूँ।।
रोक रही जाने से अंदर, द्वन्द युद्ध सा छिड़ा हुआ।
वशीभूत हूँ अंदरले के, जैसे के हूँ बँधा हुआ।।
विवश लौटना पड़ता याँ से, समझ न आती यह लीला।
आप अगर समझा सकते हो, मुझ पर थोड़ी करो कृपा।।
अपने मुँह से ऐसी सुनकर, महामुनी बोले मुझसे।
क्या लोगे लौकिक विद्या में, क्या हासिल तुमको इससे।।
विद्या है केवल पर लौकिक, प्राप्त अगर करना चाहो।
जगन्नाथ जी जाकर के तुम, जगतनाथ को अपनाओ।।
दर्शन साक्षात् होवें, कल्यांण तुम्हारा करदेंगे।
जा बेटा झोली विद्या की, वे पूर्ण रूप से भरदेंगे।।
हो गये अलख कहकर इतना, हम तकते रह गये कहां गये।
दौहराते थे मन ही मन में, जो महा पुरूष ने वचन कहे।।
भटके को जैसे मार्ग मिला, डूबे को मिला सहारा सा।
इस जीवन को इक लक्ष मिला, फिरता था मारा मारा सा।।
संतोष भरा था शब्दों में, सुन पूर्ण रूप से शान्त हुवा।
जैसे संघर्षण का मेरे, उर से इकदम प्रांणन्त हुवा।।

अब जगन्नाथ की ओर की, मन में उठी उमंग।
पर पैसों की ओर से, थे बिलकुल हम नंग।।

थे पांच नक़द रूपये पल्ले, जो धर्म गवाँकर लाये थे।
कलकत्ते से जब चले मिले, जो साहब ने दिलवाऐ थे।।
थे आज बहुत खुश आपे में, हम गंगा न्हाने जा पहुंचे।
तो हमें देख इक पण्डे ने, गंगा में न्हाते जा दबोचे।।
अर्पण तर्पण प्रारम्भ किये, चंदन से मस्तक आ लेपा।
क्या मना किया हमने थोड़ा, पर एक रूपया जा ऐंठा।।
अब चार नक़द रूपये बाकी, औ जगन्नाथ की घर ठानी।
उन महा पुरूष के वचनों ने, की पूरी मेरी अगवानी।।
ढाई में कम्बल लिया एक, दो पैसे रोज चने आबे।
इतने पर ही संतोष किया, पानी पी पीकर दिन काटे।।
चार आने हमसे खर्च हुवे, जब यात्रा का आरम्भ हुवा।
था शेष सवा रूपया हमपै, जो इक वैष्णव ने भांप लिया।।
थे वे भी एक महात्माँ ही, आकर बोले क्यों ब्रह्मचारी।
क्या किसी यात्रा पर चलने, की कर रक्खी है तय्यारी।।

Nijanand App

श्री जगन्नाथ जी के दर्शन, करने का अपना इरादा है।
उसने भी अनुमति दी अपनी, जैसे वह भी आमादा है।।
बोला यह अच्छा साथ बना, संयोग हुवा अच्छा अपना।
वे पैसे हमने उन्हें दिये, तो लो फिर ये तुम ही रखना।।
जिस जगह खर्च होगा करना, लो रक्खो अपने पास तुम्हीं।
जब जगन्नाथ ही जाना है, तो साथ साथ तो हो तुम भी।।
वे पैसे उनको सोंप दिये, जिस जगह खर्च होता करते।
इस तरह यात्रा शुरू हुई, हम चले गये आगे बढ़ते।।
सोलह दिन तक उन पैसों से, हम दोनों के अन्न पान हुवे।
जब निमट गया वह धन अपना, तो साधू अंतर ध्यान हुवे।।
गांवों से बचकर पड़ते हम, विश्राम किया करते थे जब।
वृक्षों के नींचे बैठ बैठ हम, रात काट लेते थे सब।।
थे अभी गया से इधर उधर, संध्या का काल निकट आया।
विश्राम कहीं करना ही था, सन्निकट एक आश्रम पाया।।
सोचा है कोई महात्माँ ही, बाहर ही रात बितालेंगे।
कुछ थोड़ी सी लकड़ी करके, सन्मुख धूनी सिलगा लेंगे।।
लकड़ी ऐकत्रित कर लीं जब, तो अग्नी लेने हम पहुँचे।
हमने प्रणाम की जाकरके, मुंह ऊपर किया नमन सुनके।।
पूछा अपना स्थान नाम, हमने सब पूरा बतलाया।
सुन अपना नाम पता पूरा, वह महा पुरूष कुछ हर्षाया।।
संकेत किया अंदर आओ, हम जा बैठे इक आसन पर।
कुछ हो प्रसन्न सी मुद्रा में, गदगद हो बोले अकुलाकर।।
तुम तो अपने प्रादेशिक हो, बल्के अपने भाई निकले।
हम भी चिराऊँ के हैं भाई, तुम इधर कहाँ फिरते इकले।।
हमने व्रतान्त सब कह डाला, सब हाल सुना डाला अपना।
पिछला चिट्ठा सब खोल दिया, अगला सन्मुख है जीवन का।।
सत्कार किया सुनकर अपना, इक बेल निकाली धूने से।
जो सिद्ध करी हुई थी उनकी, थी अद्भुत एक नमूने से।।
ख़ाली होने का नाम नहीं, जितना गूदा लो भरजाती।
खाने पीने के बाद पुनः, फिर धूने में दाबी जाती।।
दो टुकड़े सद्रस कटोरों के, जोड़े धूने में दाब दिये।
जब भूक लगी तो राख हटा, खाने पीने को काढ़ लिये।।
उसका प्रशाद अपने को भी, उन महापुरूष ने खिलवाया।
स्वादिष्ट बड़ा ही था प्रशाद, भर पेट खिला जल पिलवाया।।
रजनी बीती आनंद सहित, प्रातः जब चलने की ठानी।

Nijanand App

आशीर्वाद अपना देकर वे, महापुरूष बोले वाँणी।।
यदि साधनाओं का स्वाद अमर, ऐ वत्स चाहते हो चखना।
तो इस जीवन में चार बात, अपनी भी याद सदा रखना।।
तजना अधिक वस्त्र और जूते, महात्माओं के संग रहना।
दूध, दही, गुड़, पान माई के, कर से कभी नहीं गहना।।
माई अगर घर नौत बुलावे, मत उसके न्योते जाना।
कहीं फिरो पर इन्हें न करना, जाओ यही था समझाना।।
विदा हुवे हम ले विदायगी, में संतों के वचन अमोल।
सड़क आई तो जा बैठे इक, पेड़ तले निज गठरी खोल।।
बेंत टाँग दी एक डाल पर, जूता पेड़ तले छोड़ा।
बाँट दिया आते जातों को, था हम पै धोती जोड़ा।।
कोट एक को दिया दुपट्टा, दूजे को जा पकड़ाया।
लोई एक माई को दी, इस तरह मामला निमटाया।।
दो लुँगी इक धोती की कीं, एक लंगोटी कुरता फाड़।
जो कुछ था अपने पल्ले में, इसे किया यों पल्ला झाड़।।
लुटिया हाथ कमलिया कंधे, ले अब भेष फ़कीराना।
देखो संत वचन तीखापन, पल में कर गए दीवाना।।

कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागी तूं।
सब सिंगार को शोभा देवे, मेरा दिल बाँध्या तुम सो।।
तूं नाम निरगुण कहावही, सब सरगुण के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाही तुझ परे।।
रूह अल्ला पहरी अन्दर, हुई नहीं जाहिर।
दुनिया हृदय अंधली, सो देखें नजर बाहिर।।
पट पहरें खाएँ चीकना, हेम जवाहर सिंगार।
हक लज्जत आई मोमनों, तिन दुनी करी मुरदार।।
सुहाग दिया साहिब ने, कामरी सुहागन।
आंगू बोले बुजरग, सराही साधू जन।।
हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम।
महामत कहें सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम।।

एक महात्माँ के वचनों ने, कितना हल्का किया हमें।
जानें कितने हलके होंगे, और मिले यदि जीवन में।।
इल्लत कटी बोझ ढोने से, लदे लदे से फिरते थे।
अब साधू से भी लगते हैं, तब ग्रहस्थी से लगते थे।।

Nijanand App

जितना संग्रह होता पल्ले, मोह सभी में रहता है।
मोह मूल माया का प्राँणी, इसमें उलझा रहता है।।
नुक़्ता भला महात्माँ जी ने, दिया, हैं उनके आभारी।
साथ साथ वस्त्रों के बंट गई, अपनी ममता भी सारी।।
होकर के निर्द्वन्द यात्रा, पर अब चले लपक करके।
रात काटते बैठे बैठे, घुटनों से सर ढक करके।।
अब साधन सा जँचा हमें कुछ, आया मज़ा फ़कीरी का।
हो गई चिंता भस्म चिता सी, पाया राज़ सफ़ीरी का।।

चली यात्रा इस तरह अपनी हो निर्द्वन्द।
मिलने को निज यार से फेंकी उर्द्ध कमंद।।

ज्यों ज्यों पग पड़ते आगे को, निष्ठा दुगन चौगुन बढ़ती।
अब इस पौड़ी कल उस पौड़ी, चली गई ऊपर चढ़ती।।
फुरना फुरी जगा अंतस्तल, बड़े ज्वार भाटे आये।
दाह जलन जो संग लगे थे, इकदम राख हुवे पाये।।
मगर रहे दृढ़ भीतर से, नहीं कहीं घबड़ाए।।
बाह्म अंग अपना हल्का, अंदर भी सब हल्का हल्का।
वासनाऐं अंदर जो थीं जल, गल गल कर उनका ढलका।।
चार रोज़ पश्चात् रात्रि में, टिके एक बट के नींचे।
दिये हुऐ घुटनों में सर हम, बैठे थे आँखें मींचे।।
पहर रात बीते गाने की, इक आवाज़ मधुर आई।
जैसे कहीं कीर्तन हो, ऐसा कुछ आया सुनवाई।।
सोचा कोई महात्माँ होगा, सत संग भी हो सकता है।
प्रभू नाम संकीर्तन में तो, वक्त अनूठा कटता है।।
साथ रह सके यदि यात्रा में, तो फिर उच्च हमारे भाग।
दिन व्यतीत हो चलते चलते, रात कटे सत्संग में जाग।।
सुरता चली उधर को अपनी, हम भी छोड़ चले आसन।
पहुँच गये जब निकट बहुत ही, जहाँ हो रहा था गायन।।
लालटैन बुझ गई एक दम, गायन बंद हुआ इक साथ।
ईंट शुरू हुई हम पै आनी, मिली दक्षणा हाथों हाथ।।
उस प्रशाद को पाते ही, लौटे आसन को हम तत्काल।
आसन पर जब जा बैठे, दोनों हाथों से छेते गाल।।
करी प्रतिज्ञा अब आइन्दा, आसन कभी न छोडूँगा।
यदि छोड़ा तो अब कै मुँह को, अच्छे ढंग से तोडूँगा।।

Nijanand App

पीट पाट कर अपने मुँह को, हमने मन को धर जोता।
पूछा यदि वहाँ पकड़े जाते, मन फिर बतला क्या होता।।
तू भागा रस पर ललचाकर, चाह रहा था रस चखना।
बिना बुलाये औरों के घर, बोल किसे न पड़ता पिटना।।
तू भी अपना मीत नहीं है, जान लिया है रस लोभी।
तुझ ही से संबंध न रखना, क़सम है अपनी मुझ को भी।।
तेरा मेरा मेल नहीं कुछ, तू अपनी कर मैं अपनी।
तुझे निभानी बातें अपनी, मुझे बात अपनी रखनी।।
तूं तो बिन सोचे समझे ही, ओछे वार सदा करता।
अनकर को कर उठता पलमें, कर्तव्यों से डर भगता।।
मैं तेरा भिक्षुक नंहि बल्के, तू ही है भिक्षुक मेरा।
सावधान होकर रहना मन, पतन करूँगा अब तेरा।।
बड़े दिनों में जगा हूँ सोके, चुभा रहा तू जैसे शूल।
रह न पाओगे काँटा बनकर, मन उन दिनों का जाओ भूल।।
जान जान की बाज़ी है, देखें तेरी अब मनमानी।
हमने भी कस लिया लंगोटा, तुझे देखना अभिमानी।।
या तेरी अर्थी निकलेगी, या अब मेरी निकलेगी।
या मिल जुलकर साथ रहेगा, गाड़ी यों नंहि धिकलेगी।।
तेंने अब बंगालन से जो, हम पै पत्थर फिकवाये।
क्या मिल गया तुझे मन बतला, कौन कौन से यश पाये।।
शहंशाह स्थूल कहाता, अक़्ल नहीं पर धेले की।
गुरू ज़माने भर का बनता, नहीं बराबर चेले की।।
परदेशों में विचर रहे हैं, ख़बरदार होकर रहना।
सम्भल सम्भल पग धरना अब, आइन्दा इतना ही कहना।।
पाँच बजे तक तक़रीबन हम, अंतर द्वन्दों से जागे।
उठा कमलिया पेड़ तले से, प्रातः ही उठ भागे।।

शंकर विमुख भक्ति चहे मोरी।
वे मति मंद मूढ़ मति थोरी।।

ध्यान मनन चिंतन अपना सब, शिव शंकर का रहता था।
निगुरे तो थे ही हम तब तक, कभी 2 मन बहता था।।

देखा भाला कुछ नहीं ज्ञान न कुछ पहचान।
पर गाड़ी बढ़ती रही आगे हर इक आन।।

Nijanand App

देखें क्या करता है मालिक, मेहेरबान कब होता है।
हृदय चाहता जो कुछ अपना, कब पूरा वह होता है।।
बैठे थे ध्यानस्त एक दिन, पेड़ तले थी आधी रात।
बाँह मरोड़ी पकड़ किसी ने, चेत कराने को इक साथ।।
बुत सा बन जाता था अपना, बहुत हिलाकर चेताया।
जब देखा दाँऐ बाँऐ तो, नज़र कोई भी नंहि आया।।
सहसा इक प्रकाश सा उट्ठा, तेज़ अधिक होता पाया।
जिस प्रकाश ने इस धरती का, ज़र्रा ज़र्रा चमकाया।।
ज्यों प्रकाश का पर्वत फट गया, या नींचे उतरी बिजली।
तेज पुंज फट पड़ा कहीं से, चपला जैसे चमक पड़ी।
इतने में इक दिव्य पुरूष की, प्रतिमाँ आकर हुई खड़ी।।
बाँह हाथ में न जाने किसके, अब भी मेरी लगी हुई।
आँख हमारी देख रही थी, द्रश्य उपस्थित फटी हुई।।
धुंधला था आकार शुरू में, अब इकदम स्पष्ट हुआ।
साफ़ दृष्टि गोचर होते ही, उन के मुख से शब्द हुआ।।
आप फ़कीरी ले लो हमसे, इतना कह ख़ामोश हुआ।
किस से ले लें योग्य न कोई, दिखता उत्तर तुरंत दिया।।
पानी कहा छान पर पीना, गुरू जानकर करना ठीक।
अपने को तो बड़े बड़ों ने, अक्सर दी है ऐसी सीख।।
दिव्य पुरूष इतनी सुनकर के, फ़ौरन अन्तरध्यान हुवे।
बाह प्रकाश जैसे आया था, तेज पुरूष दोऊ म्यान हुवे।।
विस्मय से भरे हुए हम, मन ही मन रीझ गए।।
बांह हमारी छूटी जैसे, यह हमको महसूस हुवा।
एक तमाशा सा होकर के, सारा वहीं विलीन हुवा।।
अन्तर द्वन्द लगे बढ़ने फिर, कैसा था यह दिव्य प्रकाश।
बाँह हमारी पकड़ जगाने, को ये कौन खड़ा था पास।।
शक्ती थी या व्याधा कोई, तार्त्पय्य क्या था इनका।
इसे समझने की इच्छा से, वेग बढ़ा अपने मनका।।
अपने ढ़ंग का एक निराला, चमत्कार देखा यह आज।
वृथा नहीं था अवश्य कोई, छिपा हुआ इसमें भी राज।।
नहीं इशारा किया किसी का, किसको गुरू बनालें हम।
जब दर्शन का कष्ट किया तो, बतलाते तो कम से कम।।
अपनी समझ नहीं आई कुछ, किसका हो सकता आवेष।
क्या जानें किस कारण वश, आया यह आज हमें आदेश।।
लगा चिपकने हमसे कोई, इतना जंचने लगा हमें।

Nijanand App

हुवे अग्रसर प्रातः उठकर, हम फिर अपनी यात्रा में।।
दो दिन और अकेले बीती, मिला नहीं संगी साथी।
संत साथ को मिला न अब तक, रह रह सीख याद आती।।

वचन महात्माँ के हमें, रह रह आते याद।
जिसने चार बात दे करके, बख़्शा हमको आशिर्वाद।।

संध्या काल निकट आया जब, खोजा टिकने का स्थान।
गये भास्कर अस्ताचल को, अन्धकार सा पहुँचा आन।।
कुटिया सी दीखी अपने को, दृष्टि पड़े कुछ साधूजन।
हम भी उसी दिशा में लपके, जा पहुँचे आनन फ़ानन।।
आसन लगे हुवे थे कुछ के, बैठी थी इक माई पास।
सोने को गुदगुदा किये थे, नीचे बिछा बिछाकर घास।।
हमने कुछ विनम्र से होकर, प्रश्न किया क्यों माई जी।
किस यात्रा पर चले हुवे हो, बोली वे जगन्नाथ जी की।।
क्या अच्छा हो अगर आप, हमको भी साथ साथ रखलें।
इतनी कृपा आपकी से, हम भी उनके दर्शन करलें।।
कितने मील रोज चलते हो, माई जी ने प्रश्न किया।
सतरह मील चला करते हैं, हमने उत्तर उन्हें दिया।।
बोली तुमसे नहीं निभेगा, तीन मील हम चलते हैं।
तीन मील भी मुश्किल से ही, अपने रोज निकलते हैं।।
उनकी सुनकर हमने सोचा, साधू जन को आने दो।
उनही से कुछ बात करेंगे, इसको बात बनाने दो।।
कहाँ गये हैं साधू जन ये, हमने पूछा माई को।
तो उत्तर पाया बस्ती में, गये हुवे हैं भिक्षा को।।
बैठ गये उनकी प्रतीक्षा, करने को इक पेड़ तले।
कुछ थोड़े से समय बाद ही, भिक्षा कर साधू लौटे।।
प्रणामादि उपरान्त साधुओं, से हमने उठकर पूछा।
तुम लोगों के साथ हमारी, भी रहने की है इच्छा।।
बड़ी कृपा हो यदि आज्ञा दो, इकदम अपन अकेले हैं।
कष्ट बड़े होते इकले को, सो अब तक तो झेले हैं।।
पर अब चाह रहे संग रहना, आज्ञा हमें किसी की है।
साधू जन सब इक स्वर बोले, यह तो बात खुशी की है।।
हमें साथ रखने में तुमको, दुख्ख नहीं कुछ है आराम।
साथ साथ कल को तुम अपने, निश्चय ही करना प्रस्थान।।

Nijanand App

खिचड़ी भी कुछ दी हमको, और कहा बनाकर के खालो।
आसन निकट हमारे ही, चाहो तो अपना फैलालो।।
सूखे पत्तों में खिचड़ी की, लुटिया अपनी फदकाली।
कुछ कच्ची कुछ पक्की सी कर, हमने अंदर सरकाली।।
साधू बने स्वाद फिर कैसा, जैसा मिला प्रणाम किया।
जैसा समय जगह जैसी हो, उस ही में आराम किया।।
टुकड़ा कभी कभी पूरी हैं, कभी कभी उसकी भी टाल।
साधू उस ही को कहते हैं, हर हालत में जो खुशहाल।।
साधू साधक को कहते हैं, साधन होता लक्ष्य प्रथम।
साधन है परहेज निभाना, यही नियम है औ संयम।।
प्रातः ही उस साधू मण्डली, ने चलना आरम्भ किया।
हमने भी उनसे आज्ञा ले, संग चलना प्रारम्भ किया।।
ग्राम एक आया रस्ते में, शाम निकट थी होने को।
आटा सीदा चाह रहे थे, साधू रोटी पोने को।।
एक जगह भिक्षा जा मांगी, भिक्षा जो देता था सेठ।
उसने गिना हमें चारों को, पर भिक्षा दो को की भेंट।।
लख करके हम भिक्षा दो की, चले अन्य से लेने को।
छोड़ दिये साधू औ माई, उस भिक्षा को लेने को।।
तुम्हीं यहाँ से ले लो भिक्षा, हम आगे ले लेंगे और।
कह के उनसे बढ़े अगाड़ी, तुम्हें मिलेंगे अगली ठौर।।
आलू खुदते मिले अगाड़ी, एक खेत में थोड़ी दूर।
रूकवाया हमको किसान ने, अपने पास भेज मजदूर।।
दिये पेट भर आलू उसने, हम दो को उसकी खूराक।
विदा हुवे आलू भोजन ले, हम उससे आदर के साथ।।
आगे पहुँच उबाले हमने, जीम लिये हम दोंने ने।
थोड़े से माई की खातिर, बचा लिये हम दोंनो ने।।
तभी बुलाने आ भी पहुँची, माता उसी महात्माँ को।
जाने से इन्कार साफ, कर दिया परन्तू माता को।।
बोले न तो वहाँ जायेंगे, ना आइन्दा साथ रहें।
हमें अलग जानो अपने से, जहाँ मौज हो वहाँ रहें।।
अगर आपकी इच्छा हो तो, सुबह यहीं पर आ जाना।
हमें तुम्हारे साथ न रहना, अधिक नहीं कुछ समझाना।।
माई जी को दुख्ख हुआ अति, साधू से इतना सुनकर।
बेचारी लौटी निराश हो, अपने मन में दुख पाकर।।
अलग मार्ग पकड़ा माई ने, हम दोनों से फट करके।

Nijanand App

जब न आइ सूरज निकले तक, उनकी बाट देख देखके।।
हमने अपना मार्ग सम्भाला, चले वहाँ से हम दोंनों।
लेकिन आगे मिले मार्ग में, साधू औ माई दोंनो।।
जो साधू अपना साथी था, किंचित बात न की उनसे।
एक तरफ रस्ते पर वे, हम एक तरफ अपनी धुन से।।
एक जगह ठहरे हम सब, माई लाई उनको भोजन।
जीमे नहीं महात्मा जी तो, दुखी हुवा माई का मन।।
सोचा था उसने जीमेंगे, बना लिया था खाने को।
इस ही भ्रम से ले आई वह, माई उन्हें जिमाने को।।
माई उन्हें जिमाकर के ही, भोजन जीमा करती थीं।
लेकिन जब इन्कार किया, माई जी तब से बरती थीं।।
कल कुत्तों को डाल दिया था, अब भी कुत्तों को ड़ाला।
जैसे प्रंण हो उनका कोई, माई जी ने दिया जता।।
साधू अपने साथ साथ थे, जीमाँ करते रोजाना।
तीन रोज तक माई जी ने, जीमाँ नहीं एक दाना।।
किये रही प्रंण माई भी, जब तक साधू नंहि जीमेंगे।
भोजन का इक दाना तक, हरगिज हरगिज नंहि हम लेंगे।।

वाँ से चलकर के किया, खड़गपुरी विश्राम।
था वो इक बंगाल का, बड़ा प्रतिष्ठित ग्राम।।

Nijanand App

'छठीं लहर'

साधू जन जितने बोले, हैं आज बड़ा अच्छा अवसर।
बंगाली होली देखेंगे, सब चलो आज साधू मिलकर।।
सम्मति दी हमने भी अपनी, हमको भी सबने साथ लिया।
इक साधू का लिया कमण्डल, चिमटा इक से माँग लिया।।
अपना जो साधू साथी था, उसकी तबियत ठीक न थी।
माई उनकी देख भाल के, लिये पास उनके छोड़ीं।।
हम तो गये खड़गपुर होली, का देखें कैसा व्यौहार।
इधर हमारे साथी साधू, जी को चढ़ गया तेज बुखार।।
उसकी तेजी सह न पाये वे, गफ़लत में आये इकदम।
माई उनको उठा वहाँ से, आरद्रा भाग गई फ़ौरन।।
साठ मील आरद्रा था वहाँ से, रेल वहाँ से जाती थी।
हमसे डर लगता था उसको, इसी लिये ले भागी थी।।
अच्छा मौका सोचा उसने, उस साधू की गफलत से।
टिकिट लिया अपने पल्ले से, ताके हमसे पिण्ड छुटे।।
जब वापिस हम हुवे वहाँ से, ना साधू ना माई ही।
इधर उधर उन दोनों की, हम सबने ढूँड़ मचाई भी।।
वे तो मिले नहीं पर उनका, पता एक ने बतलाया।
कैसे उनके पास जाँये अब, से कुछ समझ नहीं आया।।
आखिर हम पैदल ही लपके, तीन रोज में पहुँच गये।
देखा तो स्टेशन पर ही, साधू हमको पड़े मिले।।
तबियत तो थी ठीक मगर, थे गमगीनी सी हालत में।
जब हम उनके पास पहुँच गये, तो साधू ने कहा हमें।।
हम भी प्रंण करके बैठे थे, अनजल उस दिन पावेंगे।
जिस दिन हमें हमारे साथी, महाराज मिल जावेंगे।।
दुष्टताइ का परिचय पूरा, इस माई ने दिखलाया।
बेहोशी में लाइ उठाकर, साथ हमारा छुड़वाया।।
करवाया जलपान उन्हें, बीतक सुनकर उनकी सारी।
तो फिर क्या हो गया तुम्हें तो, थी बुखार में लाचारी।।
अच्छा हुवा रेल से आ गए, पैदल तुमसे था दुश्वार।
कुछ बुखार की कमजोरी थी, कुछ रहते तुम निरआहार।।
सोंपा उन्हें कमण्डल उनका, क्यों कि अमानत थी उनकी।
अगले दिन फिर की हमने, तय्यारी अपनी यात्रा की।।
चले अकेले यात्रा पर, उस रोज महात्माँ जी हमसे।

Nijanand App

छोड़ गये माई औ हमको, हुवे अलंक्षित नज़रों से।।
मिले कभी नंहि फिर आइन्दा, बिछुड़ गया अपना जोड़ा।
अच्छा साथ मिला था हमको, पर उस माई ने तोड़ा।।
माई जी बोलीं अगले दिन, तुम्हीं साथ ले लो महाराज।
हमने कहा साथ तो हो ही, अपने तुम माता जी आज।।
पर जब माइयों की टोली, आवे तो उनमें मिल जाना।
साधू औ महात्माँ के संग, अनुचित है तेरा चलना।।
तीन रोज के बाद एक, बस्ती के बाहर हम ठहरे।
मौसम बदल गया इक दम से, बादल उठे बड़े गहरे।।
वर्षा शुरू हुई कुछ पड़नी, माई औ साधू बोले।
हम तो बस्ती में ठहरेंगे, भागे आसन ले झोले।।
साथ साथ अपनी गीता भी, चले गये वे लेकर के।
हमें छोड़ कर चले न जावें, गीता ले गये इस डर से।।
जाने के पश्चात उन्हों के, बारिश बरसी मूसलाधार।
पैड तले बैठे रहे सुकड़े, बहुत आइ ऊपर फ़व्वार।।
नागन सी लपलपा रही थी, बिजली घोर रहे जलधर।
उसी चमक में एक पेड़ की, नजर आइ हमको खोकर।।
घुस बैठे जाकर हम उसमें, दिन निकले तक रहे वहीं।
हमें देखने साथी अपने, आये पर हम मिले नहीं।।
धूप चढ़े तक आए नहीं जब, माई औ साधू महाराज।
हमने भी सोची चलने की, अपने परमारथ के काज।।

आज अकेले ही चले, साथी ना कोई साथ।
लम्बी यात्रा खेंच दी, हमने बातों बात।।

ग्राम मेदनी पुर पहुँचे, आश्रम था जिसके एक समीप।
साध मण्डली पड़ी हुई थी, बाहर आश्रम के नजदीक।।
एक ब्रह्मचारी जी थे उस, आश्रम के संचालक मात्र।
जा बैठे हम भी उबालने, को खिचड़ी ले अपना पात्र।।
बनी न थी अब तक निज खिचड़ी, एक महात्माँ जी आये।
हमें भी भोजन दोगे क्या, ये शब्द उन्होंने दोहराये।।
बे ख़ौफ निडर संकोच हीन, जैसा व्यौहार किया आके।
हम भी कुछ आकृष्ट हुवे, उस प्रतिमा का दर्शन पाके।।
है किसका जो पूछ रहे हो,सभी आपका है महाराज।
हम से उत्तर पाकर बोले, पत्तल ले आवें महाराज।।

Nijanand App

जब तक वे पतरावल लाये, खिचड़ी भी तय्यार हुई।
उलट के खिचड़ी को पत्तल पै, उनके आगे पेश करी।।
भूतनाँथ जैसा सरूप था, फबन निराली का इंसान।
हों विरक्तता के प्रतीक ज्यों, लगता था पुरूषत्व महान।।
नंग धड़ंगे गात लंगोटी, कंधे कमली का टुकड़ा।
जटा जूट तन में भभूत, था योग्य देखने के मुखड़ा।।
द्रष्टी कठोर सी दिखती और, शब्दों में अति तीखापन था।
हष्ट पुष्ट लम्बा चौड़ा सा, डील डौल बेढ़ब उनका।।
पत्तल पर धर हमने खिचड़ी, सब उनके आगे सरकादी।
साथ साथ बोले हम उनसे, जीमें आप महात्माँ जी।।
कहने लगे गुरू जी तुम भी, तो जीमोगे अपने साथ।
हमने कहा महात्माँ जी, क्यों शरमिंदा करते हैं आप।।
गुरू शब्द कह कहके नाहक, हमको आप लजाते हो।
गुरू पद के तो योग्य आप, ही हमें नज़र में आते हो।।
ऐसे वचन हमें मत कहिये, आप योग्य हैं पूजन के।
हमें लाज सी आती है, अपने लिए ऐसे सुन सुन के।।
हाथ पकड़ अपना जबरन, उसने अपने संग बिठलाया।
उस ही पत्तल पर भोजन, दोंनों ने साथ साथ खाया।।
उनकी ओर झूँठ के दाने, चावल के जो गिरजाते।
तभी उठा झटसे गुस्से में, वे समेट कर खा जाते।।
इतने उच्च महात्माँ ने जब, झूँटा खाना शुरू किया।
तो हमने भी उनके आगे, का खाना आरम्भ किया।।
बड़े प्रेम से जीमे दोनों, आया इक आनंद अपार।
थोड़ा ही भोजन था लेकिन, पेट भरे की आई डकार।।
खाने के पश्चात् उन्होंने, पूछा कहाँ जाँएगे आप।
जगन्नाथ जी की सुनकर के, बोले तौ हमभी हैं साथ।।
हमतो साथ खोजते ही थे, सुनते ही सम्मति देदी।
अच्छा साथ मिला अपने को, सुनते ही हमने कहदी।।
इतने में आये ब्रह्मचारी, संचालक जो उस आश्रम के।
महात्माओं के बीच आनकर, इक दम से वे खड़े हुवे।
बोले सभी महात्माओं से, जितने भी हो तुम इस वक्त।
लकड़ी की भी आवश्यकता, तुम लोगों को रहती सख़्त।।
हैं कोई तुम में ऐसा जो, इतनी कृपा करे हम पर।
लदे आ रहे हैं राजा के, लक्कड़ लधकर गाड़ों पर।।
एक एक लकड़ी क़ी गाड़ी, अगर उतरवा लो उनकी।

Nijanand App

तुम लोगों की कठिनाई सब, सुलझ जायगी ईंधन की।।
धूंने सब के सिलग जांएगें, हम भी आश्रम में रखलें।
काम तुम्हीं लोगों का है सब, इतनी कृपा आप करदें।।
सुनकर इतनी कोई न बोला, लक़वा मार गया जैसे।
कचर कचर तो उससे पहले, बहुत हो रही थी वैसे।।
पर अब कठपुतले से हो गये, होठ किसी के नहीं खुले।
सूनसान उपरान्त हमारे, साथी ही हमसे बोले।।
आप गुरू जी यदि आज्ञा दें, तो यह काम हमीं करदें।
जितने लक्कड़ कहो उतरवा, गाड़ी के नीचे धरदें।।
हमने भी कर दिया इशारा, महाराज कुछ हर्ज नहीं।
तुम तो हो सामर्थवान, इन सब में तो सार्मथ नहीं।।
कृपा आपकी से आश्रम में, लकड़ी ऐकत्रित होगी।
बड़ा प्राप्त होगा यश इससे, आश्रम की सेवा होगी।।
लकड़ी वाला तो राजा है, इसमें हानि नहीं है कुछ।
राजा तो दाता होता है, परजा होती है भिक्षुक।।
जाओ उतरवा दो कुछ लकड़ी, चल जायेगा इनका काम।
पर उपकार काज करके कुछ, जाओ कमालो अपना नाम।।
इस प्रकार अपने मुँह सुनके, उठा चीमटा वे भागे।
खड़े हुवे जाकर के फ़ौरन्, पहली गाड़ी के आगे।।
उठा चीमटा डाट लगा कर, बोले ऐ गाड़ी वाले।
बिना चुकाये कर आश्रम का, भागा जाता है साले।।
सीधी तरह उतर कर नींचे, पहले आश्रम का कर दे।
महात्माओं के लिये एक, मोटा लक्कड़ नींचे धरदे।।
उनके कड़कदार शब्दों पर, और प्रभा को लखकरके।
हर गाड़ी वाला इक लक्कड़, धरता तले उतर करके।।
उलटी सीधी जो ज़बान पर, आ जाती उनके गाली।
चाहे जो भी हुआ सामने, इक दम बस दे ही डाली।।
सौ के निकट गाड़ियाँ होंगी, जब अंतिम गाड़ी आई।
इक प्रशाद रूपी गाली उस, गाड़ी को भी पकड़ाई।।
सुन अनसुन कर बैलवान ने, रोकी नंहि अपनी गाड़ी।
ऐसा करते देख उसे, पहले तो इक गाली झाड़ी।।
अच्छा साले, बिना चुकाये, चुंगी चला जायगा तू।
देख तुझे में अभी आनकर, कैसा ठीक बनाता हूँ।।
तू घमंड में है राजा के, हमें नहीं गिनता कुछ भी।
हम भी अपना नाम बदलदें, चला जाए याँ से तू भी।।

Nijanand App

एक चीमटा जाते ही, गाड़ी में पहले मार दिया।
फिर जाकर गाड़ी को पीछे, एक हाथ से थाम लिया।।
खिंच न सकी बैलों से गाड़ी, एक इंच भी आगे को।
हाँक रहा था मार मार कर, बैलवान निज बैलों को।।
पर सरकी नंहि गाड़ी आगे, बैल हुवे इकदम बेदम।
अब लेजा साले गाड़ी को, पहले ही कहते थे हम।।
चुंगी लिये बिना साले में, आगे जाने नंहि दूँगा।
अभी बैल ही हुवे हैं बेदम, तुझे भी बेदम कर दूँगा।।
इस प्रकार की लीला लखकर, बैलवान फिर घबराया।
जभी उतर कर नींचे उनके, चरणों में गिरता पाया।।
हाथ जोड़कर खड़ा अगाड़ी, होकर के बोला महाराज।
जान बूझकर गलती की है, हमें माँफ़ कर दोबस आज।।
जिस लक्कड़ का आप इशारा, करें उसे ही धर दूँगा।
यदि सारी गाड़ी चाहो तो, ख़ाली इकदम कर दूँगा।।
तू तो महात्माओं से टक्कर, लेता फिरता है साले।
समझे हम भिकमंगे तेंने, या खड़िया पलटन वाले।
कुछ थोड़ी सी देर और, अड़ता तो तुझको बतलाता।।
साधू से टक्कर लेने के सब, दाव पेच तुझे सिखलाता।
जा अब माँफ़ किया बेटे, पर एक सज़ा तुझ को देंगे।।
लक्कड़ सब से बड़ा तुम्हारी, गाड़ी का साले लेंगे।
लक्कड़ सब से बड़ा डालकर, उसने उतर प्रणाम किया।।
तत्पश्चात् वहाँ से गाड़ी, वालों ने प्रस्थान किया।।
कहो गुरू जी यदि आज्ञा हो, फिर वही काम शुरू करदूँ।
कमी अगर लकड़ी की हो तो, शुरू दुबारा फिर करदूँ।।
महाराज बस काफ़ी हैं ये, अब इन सब को जाने दो।
इन सालों से इक इक लक्कड़, गुरू जी और उघाने दो।।
ब्रह्मचारी जी बोले उनसे, महाराज अब काफ़ी है।
गाड़ी वालों को जाने के, लिये आप अब आज्ञा दें।।
राजा के घमंड में अकड़े, चले जा रहे थे साले।
इन्हें पता नंहि था फक्कड़ के, सालों आज पड़े पाले।।
अच्छा अब ऐसा करना, जब भी लकड़ी लेकर आओ।
एक एक लकड़ी क़ी गाड़ी, चुपके से यहाँ धरजाओं।।

जब गुजरो आश्रम से होकर, भेंट यहाँ लक्कड़ करना।।
भाग जाओ ले ले कर अपने, बैलवान सारे गाड़े।
वापिस आकर उसने जितने, साधू थे सब आ झाड़े।।

Nijanand App

बड़े ज़ोर से ललकारा, सब उठ जाओ खड़िया पलटन।
इक इक लक्कड़ उठा उठाकर, पहुँचादो अंदर इकदम।।
उसका जब आदेश हुआ यह, साधू सारे खड़े हुवे।
पहुँचाये आश्रम में लक्कड़, जितने थे वहाँ पड़े हुवे।।
कुछ जमात के लिये ब्रह्म, चारी ने लक्कड़ छोड़ दिये।
धन्यवाद उन महात्माओं को, ब्रह्मचारी ने बहुत दिये।।
अगले दिन हमसे वे बोले, गुरू जी यदि आज्ञा हो।
तो हम राजा से मिल लें, पर तुम अपने साथ चलो।।
हमने भी कुछ हर्ज नहीं है, कह कर चल दिये उसके साथ।
पहुँच गये हम राज महल में, बातें करते बातों बात।।
तो देखा लगभग पच्चिस के, साधू हैं दरबार में।
वहाँ पहुँचते ही हमसे, पूछा इक पहरेदार ने।।
क्यों जी क्या जीमोगे बाबा, बैठ जाओ यदि इच्छा हो।
बड़े कड़क कर बोले क्या हम, आये तेरे भिक्षाको।।
क्या हम भूक प्यास लेकर के, राज द्वार पर आये हैं।
जाओ ख़बर देदो राजा को, गुरू जी मिलने आये हैं।।
पच्चिस और साथ हैं उनके, भोजन और दक्षणा भेज।
क्या जवाब देता है राजा, जल्दी इसका उत्तर भेज।।
ध्यान रहे देरी करदी तो, चली जयगी सभी जमात।
इन्तज़ार हम नहीं करेंगे, समझ गये सब अपनी बात।।
संदेशा वाहक झट भागा, राजा को संदेश दिया।
राजा ने उनके सवाल को, सुनते ही स्वीकार किया।।
थोड़ी देर बाद राजा ने, सब सामान पहुँच वाया।
पच्चिस रूपया साथ दक्षणा, सहित तभी लेकर आया।।
कहा महात्माँ जी से आकर, अपना यह सामान लीजे।
और दक्षणा पच्चिस साधू, लाये हैं सो सो ले लीजे।।
हम को क्या करने हैं रूपये, क्या करने तेरे सीदे।
जितने ये साधू बैठे हैं, इनमें इन्हें बाँट दीजे।।
बड़े हुवे विस्मित साधू सब, विस्मित सभी कर्मचारी।
खिलवाया भोजन उन सबको, दक्षणाए बाँटी सारी।।
साधू जन लगे सोचने, इनकी कृपा मात्र से हम।
राज मौहौल से पाइ दक्षणा, आन्दर से जीमे भी हम।।
पड़े हुवे थे यहाँ सुबह से, किसने पूछी अपनी बात।
इनके आते ही इकदम से, बने काम सब हाथों हाथ।।
क्या अच्छा हो अगर साथ, इन ही के रहती पूर्ण जमात।

Nijanand App

आदर तो मिलता कम से कम, जहाँ पहुँचते इनके साथ।।
उनका काम निमट वाकर जब, उठ कर चले महात्माँ जी।
तो पूरी जमात साधू की, हम लोगों के साथ लगी।।
यात्रा हुई शुरू हम सब की, मिलकर जगन्नाथ जी की।
साध मण्डली पीछे पीछे, बनकर एक जमात चली।।

कहते रहते थे सदा, हमें महात्माँ रोज।
आज्ञा देने में हमें, क्यों करते संकोच।।

हमें हुक्म क्यों नंहि देते हो, खाने में सकुचाते हो।
जो कुछ भी तुम खाना चाहो, क्यों नंहि हमें बताते हो।।
आप अगर जंगल में भी हों, जो कुछ भी हमसे माँगे।
क़सम आपकी लाके देंगे, आप हमें आजमाँ तो लो।।
बस्ती की परवाह नहीं कुछ, पेड़ों से पैदा करदें।
हमें कभी अजमाँ कर देखो, जो चाहो ला करके दें।।
पर जानें क्यों शरमाते हो, हुक्म नहीं देते हमको।
हम जानें क्या क्या खिलवा यें, खाना अगर आप चाहो।।
आठ रोज के बाद एक, बस्ती के बाहर ठहरे हम।
कहा महात्मा जी ने हमसे, आज सैर कर आवें हम।।
जो कुछ आप मँगावें अपने, लिये आपको हम लादें।
नहीं चाहिए हमको कुछ भी, आप सैर खुद कर आवें।।
कुछ घंटों के बाद आप, देखा तो चिपके आते हैं।
भिनभिनाहट मखियों का पूरा, साथ उड़ाऐ लाते हैं।।
कुल शरीर मीठे से चिपका, हुआ आपका आता है।
ऐसा लगता था जैसे वन, मानुष कोई आता है।।
हम से कहा गुरू जी हम तो, मीठा जीम आये हैं आज।
हमने हंसकर कहा वाह वा, अजब जीमना है महाराज।।
कुल शरीर जीमा फिरता है, किस प्रकार का है ये भोज।
ब्रह्म भोज बतलावें इसको, या बतलावें मक्खी भोज।।
कहने लगे गुरू जी हमने, बनिये के देखा इक ढेर।
शक्कर देखी जब शरीर ने, तृष्णा जाग गई बस फेर।।
हमने इस शरीर को डाटा, पर साला नंहि रूक पाया।
आखिर हमने इसे विवष, होकर बनिये तक पहुँचाया।।
जाकर बोले बनिये से, इस शरीर को मीठा ला।
उसने आध पाव ला करके, इस शरीर को दिखलाया।।

Nijanand App

हमने कहा अबे ओ बनिये, आध पाव औ यह स्थूल।
क्यों तेरी शामत आई है, देख इधर अपना तिरशूल।।
बनियाँ जभी किलस कर बोला, स्वयँ जीम लो वह है ढेर।
मिला जभी यह हमें इशारा, जा लेटे हम उस पर फेर।।
रगड़ा यह स्थूल खूब फिर, मीठे के उस ढेरी में।
फिर क्या था छक गई हमारी, चमड़ी थोड़ी देर में।।
कभी गुरू जी यह शरीर, साला हठ भी कर जाता है।
ख़ूब डाटते साले को, पर बे काबू हो जाता है।।
बोले कुछ सुलफ़ा दिखलाकर, इक बनिये से यह झपटा।
थोड़ा सा देता था साला, जब हमने उसको डपटा।।
तो फिर इतना लेकर आया, चाहो तो ले लो तुम भी।
हमने कहा महात्माँ जी, हम नंहि पीते हैं इसे कभी।।
और बहुत साधु बैठे हैं, आप इन्हें चाहें दे दें।
यह साली खड़िया पलटन है, गुरू जी इनको क्यों दे दें।।
ये तो सब पेटू बाबा है, हम तुम को ये खा के भी।
भूके के भूकें पायेंगे, पेटू छकता नहीं कभी।।

था अपने ही ढंग का, महा पुरूष वह एक।
चाल न मिलती किसी से, देखे सदा विशेष।।

यात्रा अपनी शुरू हुई फिर, थी अपने संग पूर्ण जमात।
बड़ा सुगमता से कटता था, रस्ता सब का मिलकर साथ।।
जहाँ कहीं मिल जाया करती, चिता दाह होती मग में।
जभी महात्मा पहुँचा करता, उसके निकट एक पल में।।
कहता मार चीमटा उसको, आ साले जलने वाले।
अगर नहीं आया मंगल तक, तब बतलाऊंगा साले।।
कभी कभी तो किसी चिता से, खोपड़ियाँ ले आता था।
बना बनाकर बातें उससे, झाड़ों में रख आता था।।
ऐसे ही कुछ घृणित और, अटपटे काम करते रहते।

नहीं मानता फिर भी उन्हें मैं,
हर दम समझाता ही रहता था।।

एक दफ़ा हम यात्रा, पर थे सभी फ़कीर।
मिला एक चलता हुआ कोल्हू, वहीं सड़क के तीर।।

Nijanand App

कहा महात्माओं ने मिलकर, गुरू जी मीठा खिलवादो।
मीठे को तबियत करती है, थोड़ा थोड़ा दिलवादो।।
हमने कहा महात्माँ जी से, थोड़ा सा अब कष्ट करो।
हुकुम करो कहते ही आये, क्या इच्छा है आज्ञा दो।।
आज साधुओं की इच्छा है, कृप्या यह पूरी करदो।
थोड़ा मीठा लाकर इस, कोल्हू से इनको खिलवादो।।

जो आज्ञा कहते ही इकदम, वे कोल्हू पर जा पहुंचे।
दिखा चिमटा कोल्हू वालों, को जाते ही यों बोले।।
देखो सालो ख़बरदार जो, किया उलंघन आज्ञा का।
जितने साधू बैठे हैं वे, उनको खिलवा दो मीठा।।
मीठा तो तय्यार नहीं है, झट कोल्हू वाले बोले।
एक–2 गन्ना यदि चाहै, तो इन सब को दिलवादे।।
गन्ना नहीं चाहिए उनको, वे तो मीठा ही लेंगे।
कोल्हू वाले बोले तो फिर, इक गिलास रस पिलवादे।।
कह तो दिया और कुछ भी नंहि, केवल मीठा खायेंगे।
मीठा तो तय्यार नहीं है, कहाँ से हम दे पायेंगे।।
यह जो है कढ़ाव में क्या है, बस इस ही में से दे दो।
कोल्हू वाले बोले तुम में, ताक़त हो तुम ही ले लो।।
अपने बस की बात नहीं है, जलकर हमें नहीं करना।
बोले जभी महात्मा जी तो, लो फिर हमको है मरना।।

हमीं निकालेंगे साले को, खायेंगे भी हमीं इसे।
देखेंगे मारेगा मीठा, हम में से यह किसे किसे।।
जा बैठे अंदर कढ़ाव में, फदक रहा था खद्दों में।
शुरू किया न्हना मीठे से, भर भर अपनी लप्पों में।।
भाग गये कोल्हू वाले सब, ऐसा करते देख उन्हें।
आत्म घात करना जैसे के, चाह रहे यह लगा उन्हें।।
खड़े हुवे सौ गज भग करके, रूक न पाए भय के मारे।
देख रहे थे दूर खड़े, हो करके चमत्कार सारे।।
अजी गुरू जी आजाओ अब, भाग गये सारे साले।
माल हमारा ही अब सारा, चाहे जितना बरताले।।
तीन पात्र हम माँग साधुओं, से ले पहुँचे सुन आवाज़।
बोले हमें देखकर, चाहो, तो सब मीठा ले लो आज।।
देखा, भाग गये सब साले, आओ कमण्डल ख़ुद भरलो।
कितनी ठँडी है स्पर्श, अगर चाहो तो ख़ुद करलो।।

पुते हुवे बैठे मीठे में, भाप अंग से छिटक रही।

Nijanand App

चारों तरफ़ चाश्नी उनके, विग्रह से थी लिपट रही।।
खेल रहे थे, भैंसा जैसे, अलट पलट हो कींचड़ में।
हमने भी भर लिया पहुँचकर, मीठा तीन कमण्डल में।।
इतने में कोल्हू वालों का, एक आदमी आ पहुँचा।
जब देखा अपने पै मीठा, वह धीरे से यों बोला।।
अजी महात्माँ जी तुमतो, ले चले सभी मीठा भर कर।
हम तो बड़े ग़रीबी में हैं, थोड़ी करो कृपा हम पर।।
दे दो एक कमण्डल वापिस, जब ये साले रोते हैं।
दान कलपने वालों के, बिलकुल भी हज़म न होते हैं।।

। भीक में से भीक दे, तीनों लोक जीत ले ।

बड़े कड़क कर कहा हमें यों, हमने भी अनुकरण किया।
एक कमण्डल वापिस हमने, उस कढ़ाव में डाल दिया।।
लिये हुवे जाते थे जब हम, भरे कमण्डल मीठे के।
बोल उठे इक साथ कड़क कर, साधू खड़िया पलटन से।।
क्यों बे ओ पेटू के बच्चों, तुम्हें दीखता नंहि है क्या।
तुम तो जीमो पसर पसर कर, गुरू महाराज ढोए मीठा।।
चलो कमण्डल थामो आकर, चले आ रहे हैं साले।
कुछ आगे जाकर के हमने, आपस में बटवा डाले।।
वे चिपके चिपकाऐ यों ही, चलते रहे यात्रा पर।
अगले रोज़ नदी जब आई, तब आये उसमें न्हाकर।
हमें न श्रद्धा रही कभी भी, भूतों औ अवधूतों पर।।
ऐसे चमत्कार सिद्धि के, ओछे काम कहे जाते।
ऐसे सिद्ध महात्माओं में, आदर कभी नहीं पाते।।
दुनियाँ दारों को बहकाने, और डराने का है काम।
केवल दुनियाँ वालों में ही, सिद्ध पुरूष पाते हैं नाम।।
चमत्कार दिखलाकर ये, उनको आकृष्ट किया करते।
किन्तु बाद में उन ही लोगों, के ये ख़ून पिया करते।।
पास नहीं होता है उनके, चिन्न्ह तलक परमारथ का।
उनका लक्ष हुआ करता है, केवल अपने स्वारथ का।।
बड़े ख़ुशी से एक रोज़ वे, आकर के हम से बोले।
छिपा पड़ा था हिय में कब से, आकर के परदे खोले।।
अजी गुरू जी अब तो तुम को, सदा साथ हम रक्खेंगे।
साथ साथ ही रहें आपके, अलग नहीं होने देंगे।।
हमने कहा न रहना चाहें, तब क्या जबरन रक्खोगे।

Nijanand App

जब हम जाना चाहेंगे तो, कैसे नंहि जाने दोगे।।
कैसे नहीं रहोगे हम पै, जड़ी बूटियाँ आती हैं।
सेवन तो कर ही लेते हो, बस इतना ही काफ़ी है।।
सेवन के पश्चात् आप, ख़ुद ही जाने का नाम न लो।
जहाँ जाँएगे हम तुम अपने, आप हमारे साथ चलो।।

हमने फिर गंभीरता, से सोची यह बात।
जैसे कहता है किया, इसी तरह यदि साथ।।

हो सकता है खिला पिलादे, जैसे यह अब बकता है।
साथ 2 फिरना पड़ जाये, जिस प्रकार यह कहता है।।
तो फिर करा कराया सारा, मिट्टी में मिल जायेगा।
क़िला कल्पनाओं का इकदम, नष्ट भ्रष्ट हो जायेगा।।
सेवक की सी भाँति साथ में, लगे फिरोगे झंडू दत्त।
इस से तो अब बचो और अब, इसके साथ रहो ही मत।।
बैठ गये निश्चय यह करके, धार लिया हमने मनमें।
ऐसे अपने भाव बने यह, प्रगट न होने दी उनमें।।
जिस चट्टी पर भी जाते थे, नियम बंधा था उनका एक।
इक छटाँक गाँजा माँगा, करते थे वे चट्टी प्रत्येक।।
जब दुकान गांझों की आई, पहुँचे सुलफ़ा लेने को।
हमने कहा महात्माँ जी से, लेकर के आजाने को।।
हम आगे चलते हैं तब तक, सुलफ़ा लेकर आजाना।
आप निमट आओ लेकरके, हमको चलते ही जाना।।
अनुमति दी कुछ हर्ज नहीं है, चलो आप हम आते हैं।
इस सुलफ़े वाले सुलफ़ा, अभी झपट कर लाते हैं।।
कारू दास नाम का साधू, एक हमारे साथ चला।
वह भी अपने साथ महात्माँ, के फंदों से बच निकला।।
कारू दास डरा करता था, पहले ही उनसे ज़्यादा।
कभी कभी तो उसे मारने, तक को आमादा रहता।।
हम और कारू दास वहाँ से, बहुत तेज़ हो भाग चले।
कई चट्टियाँ पार कर गये, इतने आगे जा निकले।।
पकड़ नहीं सकता अब हमको, यह मन को विश्वास हुआ।
छोड़ दिया अब पीछे काफ़ी, निश्चय करू दास हुआ।।
रूके एक नद्दी आने पै, ज़रा ताकि विश्राम करें।
न्हाने धोने के पीछे कुछ, खान पान का काम करें।।

Nijanand App

सड़क गुज़रती थी ऊपर से, पुल के नींचे जा बैठे।
न्हा धोकर निमटे भी नंहि थे, तभी कान में शब्द पड़े।।
साला कारूदास गुरूजी, को लेकर के भागा है।
जाते नहीं गुरू जी साला, जबरन ले के भागा है।।
उड़ा ले गया कौन दिशा को, जानें कारू का बच्चा।
देखो साला मिला अगर तो, मार मार करदूँ तिरछा।।
सुनते ही उसकी हम बोले, सुनते हो ऐ कारू दास।
करा कराया चौपट हो गया, हो गया सारा सत्यानाश।।
आ पहुँचा वो यहीं ढूँड़ता, सुनते हो कारू महाराज।
अगर ख़ैरियत समझो अपनी, खुद दे लो उसको आवाज़।।
हम इसको यदि मिल न पाए तो, और अधिक यह बिगड़ेगा।
कारू बोला मुझ पै तो यह, अभी चीमटा पकड़ेगा।।
मुझ पै तो पहले ही बिगड़े, हुऐ फिर रहे हैं ये आज।
कृप्या तुम्हीं बुलालो तुम से, कुछ नंहि बोलेंगे महाराज।।
मैंने दी आवाज़ महात्माँ, जी आजाओ ये हैं हम।
सुनते ही आवाज़ उन्होंने, उत्तर हमें दिया इकदम।।
शब्द गुरू जी कहके बोले, आप यहाँ बैठे हैं क्या।
हाँ कहके जवाब में उनके, कहा आप आजाँए यहाँ।।
नींचे उतर आए वे पुल से, पाते ही हमसे संकेत।
कटु द्रष्टी डाली कारू पै, नैनों में था क्रोधावेष।।
जल्दी ही मुख मुद्रा पलटी, जब मुँह मेरी ओर हुआ।
हमें ग़ौर से देख उन्होंने, धीरे से इस तरह कहा।।
आप गुरू जी क्या न्हाने के, लिये यहाँ आ बैठे हैं।
कोई हर्ज की बात नहीं तुम, न्हालो लो हम बैठे हैं।।
नित्य कर्म स्नान आदि से, निमट चले जब यात्रा को।
बड़े प्यार औ नम्र भाव में, कहा उन्होंने यह हमको।।
गुरू जी कभी उलंघन आज्ञा, का तो हमने नहीं किया।
फिर विचार क्यों तुमने, हमसे फूट जाने का किया।।
ना ही किसी तरह से गुरू जी, हम ने तुम को तंग किया।
फिर विचार क्यों बना रहे हो, हम से फट जाने के आप।
अगर कोई दुख हो हमसे तो, निस्संकोच बतादें आप।।
हम तो तुम्हें चुटकुला देते, जो आगे को काम आता।
दूजा अगर कोइ भी होता, उसको नहीं दिया जाता।।
हम तो क्षमाँ चाहते हैं बस, हमने उन्हें प्रणाम किया।
उसके बाद महात्माँ जी ने, उठकर के प्रस्थान किया।।

Nijanand App

'सातवीं लहर'

अलग हुवे जिस वक्त से हम से वे महाराज।
निज शरीर में दो गुना उदय हुआ वैराग।।

मात्राए वैराग भाव की, अधिक लगीं अपनी बढ़ने।
जिसका असर पड़ा खाने पर, इक दिन छोड़ लगे खाने।।
दिवस तीसरे भी थोड़ा सा, ही जीमाँ करते थे हम।
इतना ही काफ़ी होता था, जीम न सकते ज़्यादा हम।।
एक रोज़ रात्री में हमने, पेड़ तले विश्राम किया।
तो वहाँ इक अज्ञात शक्ति ने, अपना बाजू थाम लिया।।
बाँह शुरू हुई इठनी इकदम, जैसे पूर्व इठी अपनी।
बैठे थे आँखें मींचे तो, इक दम शुरू हुईं खुलनी।।
इक प्रकाश सा आया सन्मुख, बढ़ता बढ़ता गया बेतोल।
इतने में कानों में आने, शुरू हुवे कुछ हमको बोल।।
देखो शिव दर्शन देंगे अब, उनसे बातें कर लेना।
अगर कोई उलझन हो तो, तो अब उनसे समझ बूझ लेना।।
बढ़ा तेज द्रुत गति से इकदम, चमक उठे पृथ्वी के अंग।
तेज पुण्ज के मध्य विभूति, खड़ी थी प्रतिमाँ एक सुरंग।।
प्रभायुक्त मनहर अति सुँदर, दिव्य काँनति अति उभा रमन।
आड़े रूख से खड़े नज़र, आये थे उनके बंक नयन।।
जब प्रतक्ष हो गये उमापति, तो हमने सर झुका लिया।
पुलक पुलक अंतर ने अपने, गदगद हो परनाम किया।।
रोमावली रोमान्चित हो गई, जब यह साक्षात्कार हुआ।
बात न पूछो इस आभा की, सौंदर्य की विपुल छटा।।
कर डमरू त्रिशूल कंधे पर, गल में रहे सर्प लहरा।
उनके सिवा न कुछ दिखता था, जैसे सब कुछ अस्त हुआ।।
सुना ग़ौर से बोले शिव ऐ, भक्त गुरू धारण करलो।
सुनते ही हम बोले उनसे, शिरोधार्य जो आज्ञा हो।।
पर किसको हम गुरू बनालें, समझ नहीं हमको आता।
धारण तो करते पर कोई, व्यक्ती योग्य नहीं पाता।।
शिव को गुरू बनालो भाई, सँवर जाँयगे सारे काज।
उन्हें जानते तो नंहि हैं हम, कहाँ मिलेंगे शिव महाराज।।
आगे तुम्हें मिलेंगे यहाँ से, कहते ही हो गये अलख।
वह प्रकाश भी हुवा तिरोहित, देर लगी बस एक पलक।।

Nijanand App

अँधकार आ पसरा फिर से, मिली बाँह ढीली अपनी।
अंतर में प्रश्नोत्तर की इक, द्वन्द शुरू हो गई बढ़नी।।
रात काटदी मन से लड़ लड़, प्रातः ही उठकर भागे।
क्यों के जगन्नाथ जी की कुछ, मंजिल बाक़ी थी आगे।।
मंज़िल दर मंज़िल तै करते, हर्ष और उल्लास भरे।
गुज़रे सखि गोपाल और, भुवनेश्वर तुलसी चौरा से।।
आई हर्ष की वे घड़ियाँ, जिनकी थी इन्तज़ार कब से।
अब दर्शन की बेला आई, पैर घिसे जिस मतलब से।।
दर्शन साक्षात् तुम को हों, जगन्नाथ जी जाते ही।
खेंचे लिये चला आता था, महापुरूष का वचन यही।।
पूरी निष्ठा थी मनमें यह, साक्षात् दर्शन होंगे।
जीवन का है दिवस सुनहरा, आज इसे नंहि भूलेंगे।।
हो जिस दिवस मिलन पीतम से, उस दिन पर में बलिहारी।
चुकै न इसका मोल अगर, वारू इसपर वसुधा सारी।।
आज हर्ष का नहीं ठिकाना, गदगद हो मन उछल रहा।
ऐसे अपने भाव लिये श्री, जगन्नाथ जी मैं पहुँचा।।
वस्त्र हीन तन एक लंगोटी, वह भी टूटी हालत में।
ज्यों दरिद्रता के महाराजा, थे हम ठीक इसी गति में।।
भक्त सुदामा पै कुछ था तो, जिसमें तंदुल थे बाँधे।
गये मित्र से जब मिलने को, लटक रहे जिसमें काँधे।।
किन्तु यहाँ तो अर्ध नंग़ हैं, फूटी सी लुटिया कर में।
भेंट करेंगे क्या जब दर्शन, होंगे प्रभु के चरनों में।।
दुविधा जनक विचार लिये हम, जगत नाँथ तक पहुँच गये।
एक ताल था जाते ही, पहले उसमें स्नान किये।।
ना धोना ना कुछ निचोड़ना, मिनटों में निमटा स्नान।
क़दम बढ़े दर्शन के लिए अब, था त्रिकुटी में उनका ध्यान।।
हम जब मंदिर में पहुँचे तो, स्वागत शुरू हुआ अपना।
चले जा रहे थे दर्शन को, डाट बता बोला पण्डा।।
ऐ तुम चंदन ताल न्हाए हो, किधर जा रहे हो ऐसे।
हम बोले महाराल नहाकर, तो आये हैं हम वैसे।।
पर हम नहीं जानते चंदन, ताल किसे तुम कहते हो।
पण्डे ने धमका के मारा, चले आए हैं दर्शन को।।
भगा दिया हमको धक्का दे, पहले न्हाकर के आओ।
तब मंदिर में जाने देंगे, चलो यहाँ से भग जाओ।।
हम अपना सत्कार कराकर, मंदिर से बाहर आये।

Nijanand App

पूछा चंदन ताल वही था, जिसमें हम पहले न्हाये।।
पण्डे का आदेश पूर्ण हो, डुबकी लगी दुबारा फिर।
एक नया उत्साह साथ ले, क़दम बढ़े दर्शन को फिर।।
अब कै पहुँच गये हम ऊपर, धाम भवन के पूर्ण समक्ष।
दर्शन की इच्छा से देखा, कि दर्शन होंगे प्रत्यक्ष।।
मगर काठ के काठ जगत के, नाथ हमें दीखे अंदर।
नज़र घुमाई हमने चारों, ओर बड़े विस्मित होकर।।
प्रतिमा में कुछ फ़र्क न दीखा, जैसे के तैसे थे फिर।
हमने यात्रियों को ताड़ा, दर्शन हुए इन्हें क्योंकर।।
देखा परिक्रमाँ में हैं, संलग्न सभी दर्शक इकदम।
सोचा परिक्रमाँ के पीछे, शायद होते हो दर्शन।।
हम भी परिक्रमां करने को, जुट गए इनकी देखा देख।
जब समाप्त होने को आई, अपनी परिक्रमाँ वह एक।।
तो दर्शन करने को झाँके, वही ढाक औ वे ही पात।
काठ नज़र आये ज्यों के त्यों, बदले नहीं जगत के नाथ।।
धुकड़ पुकड़ मच गई हृदय में, दर्शन क्यों नहीं हुवे हमें।
किस प्रकार दर्शन होते हैं, प्रश्न उठा यह अन्तर में।।
परिक्रमाँ कम लीं हमने, यही कमी हमको दीखी।
अतः जुटे फिर परिक्रमाँ में, हम श्री जगन्नाथ जी की।।
देखा फिर ज्यों के त्यों पाये, परिवर्तन लव लेष नहीं।
वे ही काले काले से मुँह, छिपे नहीं थे लगे वहीं।।
जभी हमारे साथी कारू, दास हमें मिल गये वहां।
वे भी घूंम रहे थे चारों, ओर लगाते परकम्माँ।।
क्या दर्शन हो गये आपको, हमने उनसे जा पूछा।
हम तो वंचित घूम रहे हैं, अब तक दर्शन नहीं मिला।।
उत्तर दिया महात्माँ ने अरे, यह क्या कहते हो तुम आज।
दर्शन तो साक्षात् दे रहे, हैं श्री जगन्नाथ महाराज।।
वह देखो उत हीरे मानिक, चमक रहे हैं अंगों पर।
झलक रही है एक अनूठी, प्रतिभा उनकी प्रतिमा पर।।
कहते हैं प्रत्यक्ष इन्हीं को,और कौन से होते हैं।
सब कृतार्थ इस ही दर्शन से, जगन्नाथ के होते हैं।।
हमने कहा महात्माँ अपने, को तो दर्शन मिले नहीं।
अगर कृपा हो जाए आपकी, तो दर्शन करवाओ कहीं।।
हम तो एक महात्माँ के, वचनों में बंध कर आये थे।
चले आ रहे हैं श्रद्धा औ, प्रेम साथ में अटल लिये।।

Nijanand App

कर देंगे तुमको कृतार्थ श्री, जगन्नाथ दर्शन देकर।
पर हम वैसे के वैसे हैं, जगन्नाथ जी आने पर।।
जो कुछ सुना न पाया वैसा, हम निराश रह गये खड़े।
सभी दरश कहते हैं हो गये, हम ही को ना नजर पड़े।।
इस प्रकार की बातें अपनी, ताड़ रहा था इक पण्डा।
एक सिपाही को मंदिर में, लाकर वह पण्डा बोला।।
देखो मंदिर में पागल इक, घुसा हुआ है यहाँ आओ।
इक दम इसे निकालो याँ से, धक्के देकर ले जाओ।।
जाने क्या क्या यात्रियों को, कहकर भड़का रहा है वो।
एक मिनिट ऐसे पागल को,मंदिर में मत रहने दो।।
निकट सिपाही पहुँचा अपने, बोला ऐ तुम कौन।
बाहर निकलो इस मंदिर से, थे तब तक हम मौन।।
देखा कटु व्यौहार और इक, अमानुष्यता जब पाई।
तो हम देख दाखकर सब कुछ, बोले उससे ऐ भाई।।
काशी से पैदल आऐ हैं, है दर्शन की अभिलाषा।
दो ही परिक्रमाँ तो ली हैं, और रूको कुछ थोड़ा सा।।
अभी न हो पाये हैं दर्शन, शायद अब हो जायेंगे।
अच्छा बाहर चलते हो नंहि, डण्डे तुम्हें लगायेंगे।।
अपने लिये महास्वागत सा, जब वो करने आ पहुँचा।
तो जो मान मिला था अबतक, उसको ले चुपचाप चला।।
सोचा बस इतना काफ़ी है, अधिक मान क्या करना है।
दुनियाँ में है कौन हमारा, किसे कमाकर धरना है।।
जगन्नाथ ने नाथ दिये हम, नाक नकेल पड़ी अच्छी।
तृप्त किये इतने इच्छा अब, शेष न छोड़ी दर्शन की।।
मान मर्तबा उत्तम पाया, हमने दाता के द्वारे।
थकन दूर हो गई राह की, अवयव थे हारे हारे।।
जितने बंध बंधाऐ अब तक, अनायास सब तोड़ धरे।
मनो भाव अपने पवित्र थे, लेकिन सभी झंझोड़ धरे।।
दर्शन करने की इच्छा थी, छिप गई इक दम डर करके।
आये थे दर्शन करने जो, जगन्नाथ के मर मर के।।
हमने वहीं प्रतिज्ञा की इक, अब न किसी मंदिर जाना।
जगन्नाथ यदि घर आवें, दर्शन देने तो नंहि पाना।।
आठ रोज तक पड़े रहे हम, सागर तट पर चिंतिंत से।
क्या चाहा क्या मिला कहें क्या, रह गये रींते के रीते।।
भले महूरत से घर से तुम, निकले हो श्री झण्डू दत्त।

Nijanand App

बिना बात छुट गया वतन ही, हाथ न कुछ आया अब तक।।

ख़ुदा ही मिला ना, विसाले सनम।
ना इधर के रहे ना, उधर के रहे।।

पाषाणों में सर न मार अब, क्या रक्खा प्रतिमाओं में।
क्या रक्खा मंदिर मस्जिद की, बड़ी बड़ी शालाओं में।।
वह जो अलख लखा नंहि जाता, कहीं अन्य ही पायेगा।
गुरू कामिल मिल जाए अगर कंहि, वो ही मार्ग बतायेगा।।
अब तो गुरू करो धारण कंहि, जब ही जन्म सफल होगा।
वरन यात्रा जगन्नाथ की, तरह से ही निष्फल होगा।।
घुटने क्यों तुड़ाए बे मतलब,इन धामों के चक्कर में।
भले आदमी पैर उठा, चलते हैं पहली ठोकर में।।

महा पुरूष कोई मिल जावे, रामेश्वर का लक्ष्य किया।
उन ही से कुछ हाथ लगेगा, हमने उठ प्रस्थान किया।।

अब मन इष्टों की नहीं, केवल सदगुरू चाह।
उठे सिन्धु की ढाँग से, भर कर लम्बी आह।।

खोज खोजने चल दिये उसकी, जिसका नाम निशान नहीं।
ना हुलिया का बोध चित्त को, आँखों को पहचान नहीं।।
किसको और कहाँ जा ढूँड़ें, बीड़ा चाबा एक अजीब।
सभी साहु हैं क्या दुनियाँ में, हम ही हैं क्या एक गरीब।।
अतः सखी गोपाल व ईसा, पटन व बीजा पटन गये।
और हिमाँचल पर्वत जाकर, महादेव मंदिर पहुँचे।।
यहाँ हमें गौ मुख धारा पर, कुटिया एक नजर आई।
वहाँ करें विश्राम आप, पण्डे ने हमको दिखलाई।।
निमयबद्ध होकर करते अब, दिवस पाँचवें हम आहार।
पर अब बदला नियम पाँचवे, दिन करते केवल फलिहार।।
द्रश्य उपस्थित हुवे रात में, हमको यहाँ पिछले जैसे।
बाँह मरोड़ी जाने किसने, आकर अपनी इकदम से।।
जब हमने आँखें खोलीं तो, पसरा पाया दिव्य प्रकाश।
चारों तरफ़ धूँप सी खिल रही, अंधकार का हो गया नाश।।

जो प्रकाश हम देख चुके थे, यात्रा में पहले दो बार।
थी विशेषता इस प्रकाश में, देख रहे जो हम इस बार।।

Nijanand App

प्रगट हुवे इक दिव्य पुरूष, इकदम प्रकाश के अंदर से।
अविर्भाव होते ही उनका, इस प्रकार बोले हमसे।।
महादेव जी सहित मंडली, अब पधारने ही को है।
दर्शन जो अब होंगे मानव, को दुनियां में दुर्लभ हैं।।
सावधान हो लगे देखने, लीला क्या दिखलाते हैं।
किसी प्रकार का महादेव जी, दर्शन लाभ कराते हैं।।
ज्यों ज्यों द्रष्टि जमाई उनपर, तेज अधिक बढ़ता आया।
इकदम खिली धूँप सी चाँदन, जिसने कँण 2 चमकाया।।
एक पुरूष उतरा ऊपर से, जिसके आते ही इकसाथ।
आसन एक तख़्त के ऊपर, बिछ गया फ़ौरन अपने आप।।
इक प्रशाद का पात्र सामने, जिसमें चमचे जैसा एक।
पात्र बड़ा ही चमकदार सा, उस बर्तन में रक्खा टेक।।
फिर पैदा हो गई वहीं से, महात्माओं की एक जमात।
ऐसे खड़े हुवे आते ही, आवाहन कर रही जमात।।
लगे देखने सब ऊपर को, जैसे कोई आता हो।
औ प्रकाश आपे से बाहर, हो के उफना जाता हो।।

साक्षात् श्री महादेव जी, आसन पर पधारे पाये।
जँचा नहीं कब और कहाँ को, होकर आसन तक आये।।
किया दण्डवत् सबने हमने, भी उनको परनाम किया।
तत्पश्चात् बैठते ही, देना प्रशाद आरम्भ किया।।
बाँह गहे था जो अपनी, उसने हमको संकेत किया।
लगो लैन में तुम भी जाकर, हमें उठाकर भेज दिया।।
लुटिया हाथ कमलिया कंधे, लगे लैन में हम जाके।
बढ़े एक के बाद एक सब, हम भी पहुँच गये आगे।।
दिव्य पुरूष श्री महादेव जी, से जब आँख मिली जाके।
प्रेम बिंदु छलके नैनों से, नींचे द्दग से ढुलक पड़े।।
भर प्रशाद की चम्मच शिव जी, ने आगे की हमको भी।
खड़े रहे हम ज्यों के त्यों ही, फैली नंहि आगे झोली।।
दिव्य पुरूष बोला प्रशाद, ले लो देखो शिव देते हैं।
पाँच रोज़ के बाद नियम है, थोड़े फल ले लेते हैं।।
नियम टूट जायेगा अपना,लिया आज ही है फलिहार।
नहीं चाहते दिवस पाँच से, पहले करना कोई आहार।।

खाना ही जब नहीं हमें कुछ, तो लेकर के क्या करना।

लेकर अगर न खाया हमने, है यह निरआदर करना।।

दिव्य शक्ति ने बाद्य किया, हमको प्रशाद ले लेने को।

Nijanand App

हाथ पात्र तो था ही शिव के, झुके प्रशादी देने को।।
सान्त्वनाऐं देते हुवे बोले, घबराने की बात नहीं।
कठिन प्रतिज्ञा करली तुमने, पर ठहरो इक मास यहीं।।
शंकर जी ठहरा करते यहाँ, एक मास सावन सावन।
समाधान हो सकता है तब, भक्त आपका जो है प्रंण।।
कहते ही हो गये अलक्षित, यहाँ न कोई था जैसे।
हम प्रशाद लुटिया में लेके, निज आसन पै जा बैठे।।

दर्शन पर्सन क्या करें, समझ न जब तक आए।
यह सदगुरू का काम है, उस के हाथ उपाए।।

सुबह हुई बैठे बैठे ही, डूबे उन्हीं ख़यालों में।
उसी अवस्था में प्रसन्न हैं, रक्खे तू जिन हालों में।।
बोले एक महात्माँ प्रातः, अपने आसन पै आके।
श्री तृप्ति बाला जी के तुम, दर्शन और करो जाके।।
हर प्रकार से इक महत्व, दर्शाया श्री बाला जी का।
रूचि मोड़नी चाही मेरी, यह था मतलब साधू का।।
कहा महात्माँ से हमने हम, एक माह नंहि जायेंगे।
यहीं ठहरना है आवश्यक, धूनी यहीं रमाऐंगे।।
सुनकर तब तो चले गये पर, अगले दिन वे फिर आये।
फिर महत्व बाला जी के ही, साधू ने आ दर्शाये।।
कथा पूर्व की शुरू हुई फिर, बात बात पर बाला जी।
अति विभोर हो कर महत्व, दर्शाते रहे हमें बाबा जी।।
दिया बदल ही पासा आख़िर, निश्चय होने लगा हमें।
व्याख्या पर निदान अब उनकी, श्रद्धा आने लगी हमें।।
अब विचार बन गये हमारे, बाला जी की यात्रा के।
परिवर्तन आया अपने में, बृद्ध साधु की व्याख्या से।।
प्रातः ही प्रस्थान किया, हिमगिरी में वालटियर पहुँचे।
एक महात्मां का आश्रम, हमने आसन आ टेके।।
इक बरामदे से में साधू, और बहुत थे पड़े हुवे।
कुछ के आसन लगे पड़े थे, कुछ के थे वहाँ धरे हुवे।।
जगह बैठने योग्य देख के, अपना आसन लगा लिया।
सदा बैठ कर ही अपने ने, जहाँ गये विश्राम किया।।
लिये सहारा एक भींत का, हम आसन पर थे पधारे।
एक महात्मां जी अपने, आगे से होकर के गुज़रे।।

Nijanand App

रहे देखते हम उनको पर, हमने नहीं प्रणाम किया।
देखा जब व्यौहार हमारा, अपने प्रति तो वहीं रूका।।
पूछा हमें ब्रह्मण हो तुम, हाँ कहकर उसे बतलाया।
यह शरीर ब्राह्मण ही का है, सुन हमसे वह खिसियाया।।
आप ब्राह्मण कैसे जो, संन्यासी को परनाम नहीं।
है सर्वथा अनादर अपना, गुरूओं का सन्मान नहीं।।
जगत गुरू ब्रह्मण होते हैं, ब्राह्मण गुरू सन्यासी।
शास्त्रों में गर्भित है ऐसा, सन्यासी गुरू अविनाशी।।
उचित नहीं था तुमको यह, जैसा तुमने व्यौहार किया।
सुनकर के उनका भाषण, हमने भी उन्हें जवाब दिया।।
हमें आपमें सन्यासी के, लक्षण नज़र नहीं आये।
इसी लिये चुप बैठे रहे हम, तुम्हें प्रणाम न कर पाये।।
स्वयं हमारा सर झुक जाता, यदि तुम में लक्षण होते।
यों कटाक्ष करने का तुम को, हम अवसर ही नंहि देते।।
कुछ खिसियाना सा होकरके, ज़रा तुनक करके बोला।
तू तो पहले हमें आज, सन्यासी के लक्षण बतला।।

गीता से

काम्यानाम् कर्मणान्यसम संन्यासम् कवियो विदो

यह लक्षण सन्यासी के हैं, जो गीता में बतलाये।
आप हमें ऐसे लक्षण के, बिलकुल नज़र नहीं आये।।
कर्म प्रर्वत भेष सन्यासी, यह व्यौहार असंगत है।
टाट और पशमीने का क्या, मेंल कौन सी संगत है।।
समझ लिया या और बतावें, इक हल्का सा व्यंग किया।
केवल इन्हीं कारणों के वश, हमने नहीं प्रणाम किया।।
जिस श्रेणी के थे बाबा जी, उन्हीं गज़ों से नाप दिया।
अपशब्दों की वर्षा करती, शर्म आवरण तार दिया।।
रूष्ट हुवे हमसे इकदम, बोले बस अब रहना हुशियार।
मंगल का दिन आने दे, बतलाऐंगे रहना तय्यार।।
हमने करी प्रार्थना उनसे, सब ही हैं तुम में सामर्थ।
मंगल तक की बाट महात्माँ, जी क्यों देख रहे हो व्यर्थ।।
अभी कृपा कर देते हम पर, अभी देख लेते हमको।
मंगल आवे ना भी आवे, वृथा देर होगी तुमको।।

Nijanand App

मंगल ही को बतलायेंगे, चलते बने अकड़ करके।
देख रहे थे साधू जन सब, जितने थे आश्रम भरके।।
इस विवाद के देर बाद, बोली इक माई जी आके।
बड़ा बुरा है यह साधू तुम, सावधान रहना इससे।।
कोई उपद्रव ना कर बैठे, थे इसके ऐसे ही भाव।
बुद्धिमत्ता कोसों भी नंहि थी, जैसे हो सर्वथा अभाव।।
यही ठीक समझा हमने बस, इससे पहले ही चलदो।
साथ छोड़ दो अब सबका बस, बल्के त्याग यहीं करदो।।
तज रक्खा था कुछ दिन से, हमने फलिहार अहार भी।
रहते थे तब ही से हम बस, केवल जल आधार ही।।
बीत चुके थे कितने ही दिन, इस प्रकार के लंघन में।
लंघन से कमज़ोरी कितनी, ही आ जाती है तन में।।
उठ न खड़ा हो कोइ उपद्रव, हमने उठ प्रस्थान किया।
हम को जाता लख सन्यासी, ने भी मनमें ठान लिया।।
साथ साथ चल दिया हमारे, अपने पूरे साथ सहित।
हमने सोचा अब अवश्य, होना है अपना कुछ अनहित।।
उपद्रवी तो है ही यह अब, कोइ उपद्रव होना है।
हमने अपनी चाल बढ़ादी, भुगतेंगे जो होना है।।
जो बोया काटेंगे अब तो, डरना ही है अब काहेका।
पर बच सकते बचलो, भुगतें यदि सर आन पड़ा।।
हमने खान पान निज तज के, मरना ठान लिया ही था।
जब मरने पै उतर आए तो, फिर आगे डर काहे का।।
आठ रोज़ के भूके थे हम, केवल जल ही था आधार।
जाने किस कोने से शक्ती, उदय हुई इकसाथ अपार।।
लेकर चली हमें तेज़ी से, पड़ने लगे फूल से पैर।
पीछे छोड़ दिया सब ही को, क्या बैरी क्या उसका बैर।।
पेंतिस मील यात्रा उस दिन, जल के बल पर कर डाली।
जल की थैली भर लेते बस, अन की ख़ाली की ख़ाली।।
पेट पींठ तक जा पहुँचा था, आँखें धंसी हुई भीतर।
गाल कुचे थे भीतर मुँह में, औ कमान सी बनी कमर।।
बाँध लिया करते थे अपनी, गठरी हम अपने हाथों।
किसी पेड़ का लिये सहारा, धरी रहा करती रातों।।
धूँप लगा करती तब खुलती, वरन् पड़ी है बंधी हुई।
नींद न आती हमें किसी क्षण, रहती हमसे भगी हुई।।
चार रोज़ लम्बी यात्रा के, बाद पहुँच गए बाला जी।

Nijanand App

मंदिर में हम कहीं न जाते, दर्शन इच्छा भस्म हुई।।
रात कटी बाला जी प्रातः, वहाँ से भी प्रस्थान किया।
पाप नाशनी जा पहुँचे, गंगा तट पर विश्राम किया।।
नग्न अंग थे वस्त्र हीन, कपड़े का नाम निशान नहीं।
बस्ती में जाने लायक हम, इस कारण बिलकुल रहे नहीं।।
जिस हालत में वह रक्खे, उसमें ही रहना ठीक लगा।
भाग्य बिचारे को बहुतेरा, देखा हमने जगा जगा।।
किन्तु न करवट ली उसने इक, कुम्भ करण से परे हुवा।
हम भी बीत चुके पर उसका, अब तक ना परभात हुआ।।
अब तो ठौर खोजते थे जिस, पर अपना प्राणाँत करें।
मरण लालसा जाग उठी, इस चोले को अब शान्त करें।।
नहीं रहेंगे अब इस जग में, जहाँ न परमात्माँ आभास।
जहाँ न रहते हों परमातम, किसका करें मिलन अभ्यास।।
देव दानवों की दुनियां है, किसका यहाँ सहारा लें।
किसे सोंपदें अपने को, सर्वस्व सर्मपण किसे करें।।
देख चुके जग जगन्नाथ को, भी जाकर के देख लिया।
घुटने फिरे तुड़ाते नाहक, धक्कों का परशाद मिला।।
बैठ गये हम कमर लगाकर, मिल गई इक पाषाण शिला।
अब मर कर ही उठें यहाँ से, मनमें हमने धार लिया।।
अर्द्ध रात्रि उपरान्त हमारे, पास महात्माँ इक आया।
जिसने निज ठठरी की गठरी, खुलवाकर यों समझाया।।

"आश्रमात् आश्रम गच्छेत्"

आप ग़लत संकल्प लिये हैं, इसका समय नहीं है अब।
इसकी शोभा उसी वक्त है, समय आयगा इसका जब।।
पहले ब्रहाचर्य आश्रम है, तत्पश्चात् गृहस्थ आश्रम।
वानप्रस्त आश्रम के पीछे, आता है सन्यास आश्रम।।
वक्त वक्त का करना अच्छा, वक्त वक्त की बातें ठीक।
कभी वक्त शहनाई का है, कभी घोंस रण की निरभीक।।
नई कली के लिये चाहना, असमय में ही पूर्ण विकास।
क्या है नहीं अप्राकृत और, असंगत उससे ऐसी आस।।
प्रथम मिलन में ही क्या समुचित, हो जाता संकोच विनाश।
क्या परमात्माँ इतना सस्ता, है जो आवे यों ही हाथ।।
निर्णय बदल गया सुनते ही, उनका महत्वपूर्ण वक्तव्य।

Nijanand App

ठीक लगीं उनकी बातें सब, जँचा हमें अपना कर्तव्य।।
अगर आपकी राय यही है, सुबह चले जाऐंगे हम।
अब सत् समझ गये हम क्या है, पालन करें यही अब हम।।
देखो यहाँ न ठहरो कोई, नहीं ठहरता यहाँ कभी।
मेरी सम्मति में तुम यहाँ से, चले जाओ बस शीघ्र अभी।।
कोइ तुम्हें डर लगता है क्या, हमने कहा नहीं महाराज।
कभी नहीं डर लगता हमको, हमें बराबर है दिन रात।।
कर प्रणाम उनको हम उठ लिए, बाला जी वापिस आये।
वन पर्वत आ गये लाँघते, प्रातः बाला जी पाये।।
मठ के बाहर एक वृक्ष के, नींचे आसन लगा लिया।
बैठ गये घुटनों में सर दे, दुनिया से मुँह छिपा लिया।।
वही रात थी जिसकी हमें, चुनौती दी संन्यासी ने।
किया इशारा था मंगल था, उपद्रवी अभिलाषी ने।।
सर अपना घुटनों में था निज, बीत चुकी थी अर्ध निशा।
अधी रात उतर ली होगी, हमको कुछ घबराट हुवा।।
सुमरन किया इष्ट अपने का, जपते जपते रात गई।
बैठे रहे उसी मुद्रा में, जब तक पूर्ण प्रभात हुई।।
उदय हुआ जिस समय उजाला, साधुओं ने देखा हमको।
देख हमारी हालत कुछ, आश्चर्यय हुआ साधूजन को।।
कौन भेष के साधू हो तुम, प्रश्न किया हमसे कुछ ने।
हम साधू नंहि के बाबा जी, उत्तर दिया उन्हें हमने।।
बद क़िस्मत से सिर्फ़ ब्राह्मण, ही हैं और नहीं हैं कुछ।
धक्के खाते फिरते हैं भइ, लीला में उसकी अद्भुत।।
गुरू नहीं कर पाये अब तक, करमहीन निकले इतने।
विचर रहे उद्दण्ड इसी से, बँधे नही हैं घूटे से।।
बड़े प्रसन्न हुवे सब साधू, सत्य बात सुनकर अपनी।
लगें हमारी तारीफ़ें, करने सब साधू संन्यासी।।
मठाधीश जी भगवान दास, मठ से बाहर को आये।
बात पूछते फिरे सभी की, सब के बाद यहाँ आये।।
जहाँ धरा था अपना पिंजर, वृक्ष सहारा था जिसका।
पेट चिपक रह गया कमर से, जैसे दम निकला इसका।।
मुंह बन गया घौंसला सा इक, केवल आने जाने को।
स्वांस पक्षि आता जाता बस, बना न जैसे खाने को।।
उठ तो हम सकते ही नंहि थे, लटके थे धागे तनपर।
पूर्ण दिगम्बर बने पड़े थे, था दारिद्र हमारे पर।।

Nijanand App

आकर खड़े हुवे वे सन्मुख, देखा हमें आँख भर के।
बड़े ग़ौर से देख दाख कर, इस प्रकार बोले हमसे।।
चलो ब्रह्मचारी मंदिर, बाला जी का दर्शन करना।
सदभाओं को पाकर हमने, शुरू किया पीछे चलना।।
साथ चल दिये जभी हम, अन्दर पहुँच गये जिस वक्त।
पींठ थप थपा कर मिठास के, शब्दों में बोले हे भक्त।।
आप यहाँ ठहरो तुमको हम, सारी सुविधाऐं देंगे।
जिस अहार फलिहार आदि की, इच्छा हो वह ही देंगे।।
नहीं बनाया शिष्य अभी तक, आप अगर ऐसा चाहो।
तो हम तुम को शिष्य बनालें, फेर बहुत ही अच्छा हो।।
इस प्रकार आग्रह पर उनके, उत्तर दिया अजी महाराज।
कृपा आपकी इतनी ही, काफ़ी है जितनी की है आज।।
आप हमारी बात पूछली, क्या इतनी ना काफ़ी है।
शिष्य योग्य हम नहीं आपके, इसकी तो बस माफ़ी है।।
भार सहन यह हो न पाएगा, संचालन में हैं असमर्थ।
शिष्य बने भी काम चला ना, सिद्ध हुवे हम आगे व्यर्थ।।
मन है डाँवा डोल हमारा, चित्त दुनी से उचटा है।
खोज रहे हम अन्य किसी को, अभी उसी की इच्छा है।।
कृपा मात्र काफ़ी है भगवन, ज्यों की त्यों यदि बनी रही।
तत्पश्चात उन्हें झुक करके, सादर एक प्रणाम करी।।
इतना कहकर बाहर आये, बैठ गये निज आसन पर।
जिस प्रकार बैठा करते थे, निज घुटनों में सर रखकर।।
भेज दिया फलिहार हमें कुछ, मठाधीश जी ने मठ से।
जो आदेश मिला था हमको, उसी रात गंगा तट से।।
समय समय पर काम उचित है, फल अहार स्वीकार लिया।
पांच आम लेकर हमने, उनमें से उनका पान किया।।
नियम पाँच फल ले लेने का, उस दिन से आरम्भ हुआ।
अगर मिला तो इक ख़रबूजा, पा लेते यह नियम हुआ।।
उसी वृक्ष के नींचे उस दिन, रहे और विश्राम किया।
गुरूवार को तृप्ति तीर्थ को, उठ करके प्रस्थान किया।।
वहाँ तृप्ति में जब आये तो, वही माइ मिल गई हमें।
बाल्टियर में मिली हमें जो, संन्यासी के बारे में।।
प्रणामादि उपरान्त माइ से, पूछा हमने माता जी।
कहाँ साथ छूटा उनसे, हैं प्रसन्न भी वे सन्यासी।।
माई बोली सुनते ही, उनका तो चोला शान्त हुवा।

Nijanand App

बारह बजे ठीक मंगल को, हैज़े से प्रांणान्त हुवा।।
चले गये परलोक यात्रा, करते करते बेचारे।
उनको ही समाध दिलवाकर, कल आये हैं हम सारे।।

उस माई की बात सुन, बड़ा हुवा अफसोस।
जानें कैसे कर्म का, मिला उसे परितोष।।

सब लाचार यहाँ आ करके, चारा नहीं किसी का भी।
कर्म काण्ड पर बंधी हुई है, परमेश्वर की यह सृष्टी।।

Nijanand App

'आठवीं लहर'

'श्री बाला जी धाम'

बाला जी की मान प्रतिष्ठा, इस प्रदेश में काफ़ी है।
वैसे है इक राज्य तृप्ति जो, बाला जी से नीचे है।।
एक टेकरी के ऊपर है, बाला जी का मठ स्थित।
ऊचाई दस मील घूमकर, जाती है बाला जी तक।।
नीचे से पौड़ी पौड़ी, होकर के यात्री जाते हैं।
बाला जी विख्यात हुवे, कब से यह कथा सुनाते हैं।।
नामक हाथीराम महात्माँ, ने तप किया टेकरी पर।
एक वृक्ष के पत्तों पर ही, था उनका जीवन निरभर।।
अन्य आहार न करते कोई, एक वृक्ष के ही पत्ते।
खाकर मस्त रहा करते थे, थे अपने प्रंण के पक्के।।
तृप्ती के राजा ही करते, सभी व्यवस्था मंदिर की।
सब कुछ था आधीन उन्हीं के, सम्पत्ति थी सारी उनकी।।
संचालन का भार धाम का, राजा के हाथों में था।
हाथी राम जहाँ रहते वह, बड़ा भयानक सा वन था।।
होकर मुग्ध भक्ति पर उनकी, एक बार नट नागर श्याम।
बाल रूप धर कर आ खेले, जहाँ रहते थे हाथी राम।।
बाल मोहिनी छवि जब देखी, हाथी राम न रह पाये।
उठ करके अपने आसन से, उस बालक के ढिंग आये।।
निकट पहुँच जब छवि अवलोकी, तो चुटियल हुवे हाथी राम।
बुद्धी ज्ञान हवा हो गए सब, हुवा हृदय का काम तमाम।।
तब की तो पूछो ही मत जब, तोतली लीला शुरू हुई।
सराबोर करती हुइ मीठी, शिशु क्रीड़ा आरम्भ हुई।।
भूल गये उन क्रीड़ाओं में, भक्त पूछना उनका नाम।
किस प्रकार तुम मुझ तक आये, कौन पिता क्या तेरा ग्राम।।
बाल रूप पर मोहित होकर, लगे खेलने उनके साथ।
हाथी राम स्वयं भी उनसे, करने लगे तोतली बात।।
हाथी राम हुवे तन्मय शिशु, लीला का करके रस पान।
खेले ख़ूब मस्त हो करके, दोनों भक्त और भगवान।।
किन्तु भक्त अनभिग्य रूप से, वास्तवो में है यह कौन।
जब आता आनंद हृदय में, ज्ञान शक्ति हो जातीं मौन।।
चार रोज़ तक नित्य निरंतर, शिशु लीला आनंद लिया।
कृत्य कृत्य कर दिया भक्त को, हाथी राम कृतार्थ किया।।

Nijanand App

चौथे दिन भगवान भक्त से, बोले आप महात्मा जी।
पड़े हुवे हो छिपे हुवे क्यों, इस गहराई में बनकी।।
किस तलाश में हो क्या इच्छा, है हमको भी बतलादो।
किस दुख से घर त्याग आए हो, क्या गड़बड़ है जतलादो।।
बाबा बोले सुनते ही क्या, इच्छा होती भई हम को।
पड़े पड़े ऐकान्त बास में, याद किया करते उसको।।
नित्य देखते रहते हैं छवि, अलग पड़े निज प्यारे की।
नंद नंदन आनंद कंद श्री, श्री ब्रज चंद्र दुलारे की।।
अपने पास रहा करता है, नंद नंदनी का छोरा।
मस्त याद में रहते उसकी, भला चाहते उससे क्या।।
अगले दिन फिर बाल रूप ने, बाबा से यही पूछ लिया।
क्रीड़ा व्यस्त महात्मा जी से, बालक ने फिर प्रश्न किया।।
पड़े हुवे हो निरजन वन में, कारण नहीं बाताते हो।
गुप्त भेद है इसमें कोई, जिसको आप छिपाते हो।।
सानुरोध आग्रह जब देखा, बार बार उस बालक का।
हाथी राम प्यार सा करके, बोले तू क्यों पूछ रहा।।
क्या दिलवादेगा हम को कुछ, भगके गोदी उठा लिया।
दिलवाना है तो ला दिलवा, राज तृप्ति के राजा का।।
पूछ नन्हे से मुँह को, रोज़ थकाये लेता है।
दिलवा भी सकता है बस या, पूछ पूछ ही लेता है।।
कहा तोतली भाषा में, उस बाल रूप छवि ने उनको।
इच्छा अगर यही है बाबा, जाओ राज मिले तुमको।।
खेल खेल में विदा हुवे, इक दम श्री कृष्ण चन्द्र महाराज।
बातों बातों में दे गए, बाबा जी को तृप्ती को राज।।
स्वप्न दिया जाकर रात्री में, तृप्ति धाम के राजा को।
काल निकट आ पहुँचा तेरा, सूचित करते हैं तुमको।।
आठ रोज के अन्दर अन्दर, तू अवश्य मर जायेगा।
तेरा राज्य पाट सारा यह, यहीं धरा रह जायेगा।।
करने को अंत्येष्ट क्रिया तक, तेरे कोइ संतान नहीं।
अवधि पूर्ण हो चुकी तुम्हारी, आठ रोज की जान रही।।
केवल सूचनार्थ तेरे को, स्वप्न बीच मैं आया हूँ।
अंत सुधर जाये जो तेरा, चेत कराने आया हूँ।।
नामक हाथी राम महात्माँ, ऊपर इसी टेकरी पर।
राज पाट अपना यह सारा, सोंप देओ उसको जाकर।।
धर्माचारी होने से वो, राज चलायेंगे अच्छा।

Nijanand App

दाह कर्म तेरे उनके ही, हाथों हों यह है इच्छा।।
यदि सुधारना चाहो निज को, सौंप राज्य अपने हाथों।
वरन बहुत पछतायेगा तू, समय गया बातों बातों।।
राजा की खुल गई पट्ट से, आँख नींद से जाग गया।
लगा सोचने निज भविष्य को, यह क्या अपने साथ हुवा।।
निश्चय किया यही उत्तम है, जो कुछ देखा सपने में।
जिसने हमको चेत किया है, उसे प्रेम है अपने में।।
कहा न मानें यदि हम उनका, जो भविष्य वाँणी में था।
कर्म धर्म सब बिगड़ जायेगा, जीवन सारा जाए व्रथा।।
प्रातः ही उठकरके राजा, ऊपर गया टेकरी पर।
हाथी राम महात्माँ के, दर्शन पाये उसने जाकर।।
तत्पश्चात महात्माँ जी का, राजा ने पूछा शुभ नाम।
उत्तर दिया महात्माँ ने, मुझको कहते हैं हाथी राम।।
हाथी राम आप हो भी या, है केवल बस नामहि नाम।।
रूक न पाए थे राजा कहकर, उत्तर दिया नहीं हैं भी।
जब हाथी बनकर दिखलाओ, हमको भी विश्वास तभी।।
ऐसा कर दिखलादेंगे यदि, एक बात मंजूर करो।
लीद उठानी पड़े हमारी, तुमको खुद स्वीकार करो।।
राजा ने यह शर्त महात्माँ, की स्वीकारी खुश होकर।
लीद उठावें अपने हाथों, दर्शन दो हाथी बनकर।।
हाथी राम महात्माँ बोले, तो फिर प्रातः आ जाना।
लीद उठाने के साधन का, इन्तज़ाम करते लाना।।
इतना सुन प्रणाम कर उनको, राजा ने प्रस्थान किया।
प्रातः फिर दर्शन करने को, उस सरूप के पहुँच गया।।
जिधर दृष्टि पहुँची राजा की, मीलों लीद पड़ी पाई।
राजा डरा लीद जब देखी, बुद्धि उसकी चकराई।।
एक वर्ष तक भी इतनी को, तू तो उठा न पायेगा।
अगले दिन फिर इतनी को, तू तो उठा न पावे मर जायेगा।।
हार हुई अपने वचनों में, जीते आप महात्माँ जी।
चरण गहे दर्शन पाते ही, शरणागत हुए जाते ही।।
रज को उठा तभी आश्रम की, राज तिलक कर दिया स्वयं।
राजा अब से तुम तृप्ति के, नहीं रहे हैं अब से हम।।
हो समस्त वै भव अधिकारी, स्वयं सोपता हूँ मैं आज।
स्वामी सभी प्रजा के अब, तृप्ति को समझो अपना राज।।

Nijanand App

मैं हूँ सिर्फ़ चार छः दिन का, कुछ घड़िया बाक़ी हैं शेष।
इसी वास्ते सोंप रहा हूँ, हाथ आपके सभी प्रदेश।।
सब उत्तर दायित्व आप ही, पर है इसका अब महाराज।
हमतो उऋण हुवे अब इससे, सोंप दिया सब तुमको आज।।
हाथी राम महात्माँ को जब, वै भव राज्य हुवा उपलब्ध।
बाल रूप इक दम याद आया, भनके कान तोतले शब्द।।
खेल खेल में राज्य मांग कर, मैंने क्या अपराध किया।
था विरक्त निरद्वन्द भक्त मैं, अब यह बोझा लाद दिया।।
छलिया छलकर खेल खेल में, ठग कर ले गया हाथों हाथ।
ठगा गया मैं अनजाना, बाला जी तुमसे बातों बात।।
हा बाला जी, हा बाला जी, कूक मार कर हाथी राम।
विखल हो उठे विरह अग्नि से, ले ले कर बाला जी नाम।।
हाथी राम भक्त बहुतेरा, बाला बाला चिल्लाया।
किन्तु मोहिनी छवि बाला जी, की फिर देख नहीं पाया।।
राज्य भार सब केलि कला का, चिन्ह मात्र कर छोड़ गये।
मोह न मोहन तुम मे किंचित, इकदम रिश्ता तोड़ गये।।
राज्य तिलक की रस्म अदा हुइ, गद्दी पर पधारा उनको।
आदर दिया प्रजा ने सारी, हाथी राम महात्माँ को।।
चार रोज़ के बाद स्वयं, राजा ने चोला छोड़ दिया।
संस्कार अंत्येष्ट क्रिया का, भक्त राज ने आप किया।।
उसी टेकरी पर बाला जी, का इक मंदिर बनवाया।
साथ साथ इक मठ अपना भी, हाथी जी ने चिनवाया।।
बाला जी की मान प्रतिष्ठा, केवल इस घटना से है।
श्रद्धा बड़ी विकट लोगों में, बड़ा मर्तबा इनका है।।
लेकिन हम न घुसे मंदिर में, हृदय हमारा जख्मी था।
चोट लगी जो जगन्नाथ में, रहता हरदम जख़्म हरा था।।

बाला जी से भी हुवा, आगे निज प्रस्थान।
सदगुरू की इच्छा फ़कत, फ़कत उन्हीं का ध्यान।।

महा लक्ष्मी मंदिर पहुँचे, था मंदिर वह बड़ा विशाल।
लंगर जहाँ खुले रहते थे, पूरे करते सभी सवाल।।
साधू और महात्माओं को, सुविधाऐं मिलती सारी।
दवा गोलियाँ भी मिलती थीं, अगर किसी को बीमारी।।
छोड़ छाड़ इसको भी पीछे, अपन होंज पिट जा पहुँचे।

Nijanand App

मिले जुले इक जगह बहुत से, संत महात्माँ बैठे थे।।
उन्हें देखकर पास पहुँच गये, तो अपना सत्कार हुआ।
देकर हमें इशारा हाथों, का उन सबने भगा दिया।।
हाथों से संकेत मिले, इकदम से कितने ही हमको।
था मतलब स्पष्ट सभी, चिल्लाये हमको हटने को।।
एक साथ आदर इतनों से, पाया तो स्वीकार किया।
ऐसे भाव देखकर उनके, मैं हट करके बैठ गया।।
थोड़ी देर बाद इक साधू, खड़ा हुवा आकर आगे।
ऐसी दशा देखकर अपनी, फटकारा हमको आके।।
शरम नहीं आती क्या तुमको, इस प्रकार नंगे फिरते।
घर से निकल पड़े साधू बन, डूब कहीं क्यों नहीं मरते।।
इतने सेठ पड़े हैं जिनकी, गिनती तलक न हो पाती।
तुमसे एक लंगोटी उनसे, जाकर मांगी नंहि जाती।।
हमें डाट फटकार लगाते, चले गये बड़ बड़ करते।
एक शब्द भी उनके आगे, अपने राम नहीं बोले।।
पर मन ही मन लगा बोलने, जिसकी ख़ातिर घूँम रहा।
आँखों वाला है वह तो क्या, उसको नंहि दिखता होगा।।
उसकी ऐसी ही इच्छा, होगी जो घुमा रहा है यों।
स्वयं न दे जब तक नंहि पहनें, किसी से जाके माँगे क्यों।।
उचित यही समझा अपने ने, और जगह बैठे जाकर।
जब दीखेंगे नहीं किसी को, कहे कौन किसको आकर।।
चले गये बाज़ार खंडर सा, पड़ा हुवा था इक स्थान।
दरवाजा वरवाजा कुछ नंहि, मंदिर हो जैसे हनुमान।।
जँची मूरती भी स्थापित, जैसे वीराने में मोर।
अस्त व्यस्त औ जीर्ण क्षींण सा, नजर पड़ा हमको चहुँ ओर।।
कमर लगा जा बैठे हम भी, उस उलूक सी शाला में।
भांप लिया लेकिन अपने को, इक दुकान से लाला ने।।
थोड़ी देर बाद लाला जी, बोले आकर के हम से।
क्यों जी तुम यां क्यों बैठे हो, चलो उठो भागो यहाँ से।।
ठहरो और कहीं जाकर के, जहाँ तुम्हारा हो स्थान।
भाइ हमारी जगह कहाँ है, अपनी जान न याँ पहचान।।
कहाँ चले जायें लाला जी, किसके द्वारे पड़े जाकर।
अपना कोइ नहीं है बाबा, किरपा करो हमारे पर।।
तब तो कृपा करी लाला ने, चले गये बड़ बड़ करते।
किन्तु एक घंटे के पीछे, लाला जी फिर आ धमके।।

Nijanand App

लगे भगाने फिर आ करके, गये नहीं क्या अभी कहीं।
यह तुम जैसों के पढ़ने का, भाग जाओ स्थान नहीं।।
जगह ठहरने की नंहि है ये, कहीं जाओ माँगो खाओ।
रात काट लेने दो हमको, लाला तुम मत घबराओ।।
कुछ लेते तो नहीं आपसे, हमें तंग फिर क्यों करते।
कहा चले जाऐ अब बोलो, सोचो जरा कृपा करके।।
लाला बुरड़ बुरड़ सी करते, चले गये ऐंठे ऐंठे।
घोंस धास देकर भगने की, फिर दुकान पर जा बैठे।।
जब बाज़ार बंद होने का, वक्त हुवा लाला आया।
कुछ परिवर्तन सा था अब कै, जो आकर के दर्शाया।।
बाबा जी दुकान में आओ, वहीं ठहर जाना अब आप।
जाना नहीं कहीं हमको अब, मना कर दिया हमने साफ़।।
क्या लेना हमको दुकान में, क्या लेना हैं यहां हमें।
प्रातः उठकर चले जायेंगे, लाला रक्खो क्षमाँ हमें।।
चिंता कुछ मत करो हमारी, ठीक ठाक बैठे हैं हम।
आप बिना आराम रहोगे, क्षमाँ करो गलती भगवन।।
हमने जो अप शब्द कहे वह, थी बाबा जी अपनी भूल।
आप महात्माँ हो बाबा जो, हम हैं सिर्फ़ चरन की धूल।।
क्षमा करो ग़लती थी अपनी,अब दुकान ही में रहना।
वहाँ तुम्हें आराम मिलेगा, मान जाओ बाबा कहना।।
पैर पकड़ सौ मिन्नत करके, साथ साथ ले गया लिवा।
माना नहीं चिपट कर रह गया, बहुतेरा ही मना किया।।
कपड़े की दुकान थी उसकी, आसन बिछा दिया इकसाथ।
बैठ गये हम जब जा करके, बोला हमें जोड़कर हाथ।।
कृप्या आप लंगोटी ले लें, हमने कहा ठीक हैं हम।
जैसे हैं रहने दो हमको, लाला करो न हमको तंग।।
उसकी इच्छा जिस प्रकार हो, उस ही में रहना है ठीक।
दख़ल न दो उसकी इच्छा में, उस ही में रहते निरभीक।।
बोला सेठ नहीं बाबा जी, यह तो बात मान ही लो।
बड़ी कृपा होगी तुम हमसे, एक लंगोटी ले ही लो।।
अपनी जगह फकीरी अच्छी, अपनी जगह भेष होता।
बाबा जी नाता होता, दोनों में चोली दामन सा।।
जितना बड़ा बताओ कपड़ा, अभी फाड़कर देता हूँ।
मगर लंगोटी आवश्यक है, विनय पूर्वक कहता हूँ।।
लाला तो अपनी धुन में था, पर विचार में हम भी थे।

Nijanand App

सोच रहे थे मन ही मन में, व्यौहारों पर बनिये के।।
घंटे भर पहले तो धक्के, देने पर था तुला हुवा।
अब उदारता क्यों है इसमें, दाता क्यों है बना हुवा।।
कहीं उन्हीं की इच्छा है क्या, बनिये से दिलवाने की।
बनिया चोट कभी खाने, वाला नंहि होता आने की।।
यह तो बाहर भी दुकान के, नहीं बैठने देता था।
भाग जाओ क्यों बैठे हो यहाँ, इस प्रकार से कहता था।।
निश्चय है आदेश उन्हीं का, उन ही ने उकसाया है।
इसी वास्ते बनिया अपने, पास भाग कर आया है।।
दिला रहे हैं वे ही इससे, तो फिर लेलो झण्डूदत्त।
तन ढकने को कपड़ा लेकर, आई पी किरपा इस वक्त।।
अगर यही इच्छा है तेरी, हम लाला जी से बोले।
इक बालिश्त फाड़कर कपड़ा, हमें लंगोटी का दे दे।।
उसने झटसे फाड़ फूड़के, हमें लंगोटी पकड़ादी।
बोला बनिया एक अंगोछा, और चाहिये बाबा जी।।
क्या करना है हमें अंगोछा, उसकी नहीं हमें दरकार।
थाली वाला कपड़ा अपना, है अवश्य बिलकुल बेकार।।
जब निकाल दिखलाई हमने, कपड़े की अपनी थाली।
जो अब वास्तवों में छलनी, रह गई सूराख़ों वाली।।
बीच हुआ फटकर ग़ायब सा, बनिये को आश्चर्य हुआ।
क्या बाबा इस कपड़े से, अब तक थाली का काम लिया।।
मैं तुमको इक थाली लाकर, देता हूँ इसको छोड़ो।
हम बोले लाला जी हमको, कृप्या बोझा मत जोड़ो।।
आप बराबर इस कपड़े के, हमें वस्त्र ही दे देवें।
थाली का जंजाल बाँधने, से तो हमें क्षमाँ देवें।।
फाड़ दिया इक वस्त्र सेठ ने, अन्दाज़न इक हाथ बड़ा।
जो चावल वावल इत्यादी, पकाने के लिये काफ़ी था।।
तिसपर भी लाला नंहि माना, इच्छा प्रगट करी अपनी।
आवश्यकता एक चीज़ की, तुम्हें और रहती होगी।।
एक चदरिया और फाड़दूँ, मना न करना बाबा जी।
हाथ जोड़ विनती करता हूँ, इसे मान ही लेना जी।।
सुनकर कहा सेठ से हमने, बस अब और कृपा रक्खो।
आवश्यकता जो थी मिट गई, हम पै भाइ दया रक्खो।।
लाला बोला एक चदरिया, तो अवश्य दूँगा महाराज।
चाहे आप अस्वीकारें भी, हो जाना चाहें नाराज़।।

Nijanand App

कहते ही दो चादर उसने, फाड़ीं तीन तीन गज़ की।
फाड़ फूड़ कर मेरे आगे, हाथ जोड़ करके रख दी।।
बोला इक कम्बल ले लो अब, फिर हम कुछ नंहि बोलेंगे।
क़सम कहो तो खालें तुमको, फिर हम कुछ भी नंहि देंगे।।
बहुत आग्रह पर उसके, हमने कम्बल भी स्वीकारा।
जो सब में हल्का हो देदो, उसने हल्का सा तारा।।
वक्त पड़े तो ओढ़ बिछा, दोनों कामों में आ जावे।
और रास्ते का बोझा भी, जो बनकर ना रह जावे।।
आज हमारा दीवाना पन, लुप्त हुआ लाला द्वारा।
लगने लगे एक साधू से, भेष साधुओं का धारा।।
सुबह हौज़ पिट से चल करके, पक्षि तीर्थ पर जा पहुँचे।
जहाँ जटायू रावण ने जब, सिया चुराई मारे थे।।
मंदिर बना हुआ था उसका, एक टेकरी के ऊपर।
पहुँच गये चंगुल पिट आगे, पक्षि तीर्थ से हम चलकर।।
पटकशिला जा पहुँचे हम, जिस जगह राम का मंदिर है।
जहाँ राम ठहरे थे कुछ दिन, मंदिर याद उन्हीं की है।।
पटकशिला से पम्पेश्वर है, जहाँ महाशिव मंदिर एक।
नदी तुंग भद्रा बहती है, करती हुई किलोल अनेक।।
है प्रवाह उसका अति तीखा, बड़ा स्वच्छ जल है उसका।
पम्पा नामक एक सरोवर, भी है श्री पम्पेश्वर का।।
बड़ा गहन बन है पम्पेश्वर, महादेव के चारों ओर।
मुख्य द्वार हर दम बंद रहता, खुलता था दरवाज़ा चोर।।
जानवरों का भय हर दम ही, रहता था दिन रात वहां।
दरवाज़ा बंद कर लेते थे, जो भी अन्दर घुसा जहां।।
रात बिताई उस मंदिर में, जब उठकर प्रातः देखा।
तो समक्ष हमको अपने इक, ऊँचा पर्वत नज़र पड़ा।।
पूछा तो ऋषि मुख बतलाया, जिसमें बाली के ड़र से।
भग करके सुग्रीव बहुत दिन, छिपे रहे मारे डर के।।
खड़ा एक दम और घने, वन से आच्छादित था पर्वत।
गुथें हुवे थे वृक्षापस में, धूँप न जा सकती भू तक।।
पूछा इक मंदिर था उसपर, जो मंतग का बतलाया।
मंदिर नहीं बल्कि आश्रम है, हमें एक ने समझाया।।
किश्किंधा कुछ दूर नहीं है, निकट श्री पम्मेश्वर से।
सभी जाने जाने के पीछे, द्वन्द किया मन ने हमसे।।
चलो सैंर कर आवें चलकर, ऋषि मंतग आश्रम की आज।

Nijanand App

आश्रम दिखता है प्रत्यक्ष, जैसे हो इस पर्वत का ताज।।
दूर दूर ही के दर्शन से, उर विरकृता उपजी जाए।
वहाँ पहुँच कर यदि दर्शन हो, तो जानें बस क्या हो जाए।।
चलो जानने की इच्छा से, मार्ग और दूरी उसकी।
जब पूछा तो लगे साधु जन, सब के सब करने हाँसी।।
अनायास हंस करके बोला, आप जायेंगे आश्रम में।
तुम ज़रूर जाओ बाबा जी, ताकत दिखती है तुम में।।
जहाँ आज तक गया न कोई, गया तो वापिस नहीं हुआ।
अव्वल तो पहुँचा नंहि ऊपर, रस्ते में ही काम हुआ।।
अपनी ओर मुखाक्रति करके,खिल खिलाट की हंसी हंसा।।
तुम ज़रूर जाओगे ऊपर, बड़े जोर से पुनः हंसा।
हंसी व्यँग सी सुनकर उनकी, हम आश्रम से निकल पड़े।
जिधर बुद्धि ने मार्ग बताया, उसी दिशा को धिकल पड़े।।
विकट चढ़ाई थी पर्वत की, इकदम खड़ी नाम का ढाल।
अगर बीच से फिसले कोई, तो बस पहुँच जाए पाताल।।
वृक्षालिंगन किये हुवे थे, आपस में थे गुथे हुवे।
जंगल था गुँजान भयानक, हिंस्र जंतु थे छिपे हुवे।।
पड़ी हुई थी जानवरों की, पगडण्डी वन में अनगिन।।
उन्हीं मार्गों से होते हुये, बढ़े गये हम भी पल छिन।
थोड़ी देर मार्गों पर चलते, थोड़ी देर बिना रस्ते।
कहीं खुला मिल जाता रस्ता, कहीं निकलते फंस फंस के।।
तुके और बे तुके मार्ग, पल में विलीन पल में पाते।
दस दस गज उपरान्त और ही, मार्ग ढूँडने पड़ जाते।।
कहीं सघनता बड़ी भयानक, कहीं अस्थियों के पिंजर।
शेरों की माँदों के आगे, पड़े हुवे मिलते अकसर।।
शेर और गुलदार जानवर, थे जंगल में कसरत से।
दिन में भी खूँख़ार दरिन्दे, अपनी धुन में रहते थे।।
भय से किसी समय भी ख़ाली, जंगल को समझो ही मत।
पथिक पहुँच जावे मंजिल तक, बहुत बड़ी समझो क़िस्मत।।
जिस प्रकार घूंमा करते हैं, शहरों में फेरी वाले।
इसी तरह फिरते रहते हैं, जंगल में धौले काले।।
लेकिन हमें मिला नंहि कोई, उनके गली मौहल्लों में।
भय न मौत का सीध नाक की, बढ़े गये हम भी ऊपर।।
महा प्रभू की अनुकम्पा से, पहुँच गये ऊपर आखिर।
अब आश्रम दृष्टी में आया, ऊपर एक चोंतरे के।।

Nijanand App

लगे ढूड़ने रस्ता ऊपर, काहम घूंम घूंम करके।।
मगर मार्ग बिलकुल नंहि पाया, थी दीवार क़िले जैसी।
चढ़े जानवर ऊपर कैसे, उनकी ऐसी की तैसी।।
चारों ओर घूमकर आख़िर, यह अंदाज़ लगाया फिर।
हिंस्र जंतु ऊपर न पहुँचें, मार्ग न छोड़ा इस ख़ातिर।।
मार्ग न रखना बुद्धि मत्ता, ही की बात नजर आई।
जानवरों की बहुतायत से, पौड़ी यों नंहि बनवाई।।
जिसने आश्रम को बनवाया, पौड़ी भी बनवा देता।
अगर जंगली जानवरों से, टक्कर रोज़ कौन लेता।।
पहरा हर दम का रह जाता, विघ्न रहा करता हर दम।
चैन न लेने देते हिंसक, जीव जन्तु बन के कम्बख्त।।
एक जगह दो इक पत्थर को, देख दाख कर हमें जँचा।
ऊपर को आने जाने का, एक जगह कुछ चिन्ह मिला।।
उसी जगह से जड़ें पकड़ कर, चढ़ ही गये घिसरा घिसरा।
देखा तो था इक चबूतरा, चौखूँटा औ खुला हुवा।।
वह दीवार नहीं थी बल्के, कटी हुई थी इक चट्टान।
पर्वत की चोटी तराश कर, समतल कर रखा मैदान।।
उसके ऊपर आश्रम की, बुनियाद बाद में डाली है।
आश्रम के बाहर चबूतरे, की सब भूमी खाली है।।
तबियत फड़क गई जाते ही, छटा देखकर आश्रम की।
इक विचित्र सी हालत हो गई, दर्शन करते ही मन की।।
चारों ओर भयंकर प्रहरी, पर्वत की उत्तुंग शिखा।
इससे उत्तम तप करने का, और भला स्थान कहाँ।।
किसकी है मजाल आ जावे, ध्यान भंग करने दुनियाँ।
स्वर्ग धरा पर उतरा सा कुछ, द्रष्टी गोचर हुवा वहाँ।।
अलग थलग इस झूँट जगत से, विषयों का चिन्हमात्र नहीं।
धन्य धन्य स्मृति मंतग की, तुझमें मिथ्या वाद नहीं।।
छटा देखकर तेरी अब भी, मन हिलोर लेने लगता।
लगता था यह ऋष्टि मंतग, मानो अब भी इसमें रहता।।
सुंदर स्वच्छ पड़ा था बाहर, तिनका नहीं एक ऊपर।
जैसे अभी झाड़ कोइ निमटा, हो कोई साधू इस पर।।
लता और झांड़ी जंगल की, बनी खड़ी थी किले समान।
फल फूलों ने लता वृक्ष के, फूंकी सुंदरता में जान।।
द्रश्य देखकर मन मोहक, उनसे मिलने का चाव हुआ।
किस प्रकार के होंगे वे, जिनके घर से यह भाव हुआ।।

Nijanand App

है विरकृता का प्रतीक जिस, जगह उन्हों का वासा था।
हृदय मचल उठ्ठा दर्शन को, क्योंकि बेचारा प्यासा था।।
ठीक मध्य में उस चबूतरे, के था छोटा सा तालाब।
जिसमें बरसाती पानी, ऐकत्रित होता अपने आप।।
बड़ा स्वच्छ निरमल जल उसमें, जब देखा हमने सोचा।
सर्व प्रथम स्नान आदि से, निमट जाओ प्रगटी इच्छा।।
दर्श पर्श पश्चात हुवा, करते पहले होता स्नान।
जो पवित्र होकर दर्शन, करने जावें है बुद्धीमान।।
बैठ पाल पर मैंने भर भर, कर लोटे स्नान किया।
लगा लंगोटी ओढ़ चदरिया, दर्शन को तैयार हुआ।।
हर प्रकार से मन अपना दृढ़, अंदर हैं यह ऋषी ज़रूर।
आ ही लिये शरण जब उनकी, दर्शन लाभ नहीं अब दूर।।
धीरे धीरे कदम बढ़ाते, हम आश्रम की ओर बढ़े।
तीन खण्ड थे उस आश्रम के, प्रथम खण्ड़ में पहुँच गये।।
बड़ा साफ़ सुथरा पाया वह, किसी वस्तु का नाम नहीं।
झाडू एक पड़ी पाई बस, और चीज का नाम नहीं।।
खण्ड दूसरे में जब पहुँचे, धूना एक लगा पाया।
निकट एक आसन भी देखा, धूने से धूँआ आया।।
मन ने जान लिया निश्चय ही, कोई यहाँ महात्माँ हैं।
दर्शन भी अवश्य होंगे अब, यहीं कहीं वह बैठे हैं।।
थोड़े ओर बढ़े आगे जब, एक ताक़ में मिला चिराग।
तेल और बत्तीं दोंनों ही, पड़े पाए दीपक के साथ।।
बत्ती का मुँह काला भी था, रात जला ज्यों दीप अवश्य।
इसी जगह है ऋषी कहीं पर, ढूड़ोगे तो मिले अवश्य।।
खण्ड तीसरे में जा करके, देखा वस्तु विहीन मिला।
सिर्फ़ एक कोने में थोड़ी, लकड़ी का इक ढ़ेर मिला।।
बस इसके अतिरिक्त और कुछ, अपने को ना नज़र पड़ा।
लगा सोचने मैं आश्रम में, होकर के इक ओर खड़ा।।
पुरूष हीन आश्रम नंहि लगता,महा पुरूष छिप गयें कहाँ।
जगह ढूँडली इक इक हमने, पहुँची द्रष्टी जहाँ जहाँ।।
एक तरह संषय उपजा के, दर्शन क्यों नंहि हुवे हमें।
या दर्शन के पात्र नहीं हम, दर्शन यों नंहि हुवे हमें।।
महापुरूष तो यहीं कहीं है, हम ही नहीं योग्य उनके।
हमें देख कर लोप हुवे है, उठा हमारे में संषय।।
इसी सोच में हम बाहर को, निकल आए वाँ से तत्काल।

Nijanand App

बैठ गये पत्थर पर बाहर, मन में विकट उठा भूचाल।।
वृथा रहा क्या आना अपना, दर्शन लाभ न होगा क्या।
कंद मूल फल आदिक लेने, तो साधू नंहि चला गया।।
कभी टहलने लग जाता मैं, कभी बैठता पत्थर पर।
कभी टिप्पणी करने लगता, महा पुरूष के कृत्यों पर।।
शंका और उठी इक मन में, जिसने हिला दिया क्षण में।
क्या कुपात्र हो झण्डु दत्त तुम, जो दर्शन नंहि हुवे तुम्हें।।
ऋषी लोग भी जब दर्शन, देने से हमको झिझकेंगे।
तो पूर्ण परातम हमको, दर्शन किस प्रकार देंगे।।
लगी रही दीपक सी मन में, उठता कभी बैठ जाता।
कभी प्रतीक्षा औ स्वागत हित, दौड़ दौड़ नींचे आता।।
शायद कंद मूल और फल लेने, चले गये हों वनकी ओर।
इन्हीं विचारों की हल चल में, बैठ गया निश्चय इक ओर।।
था प्रवाह गहरा विचार का, कल्पनाऐं उड्डीं निरमूल।
जड़वत निश्चल बैठ गया मैं, डूब गया उसमें स्थूल।।
अगम प्रश्न जाग्रत हुवे हममें, धारा वही विचारों की।
निकल पड़ा सूक्षम अपना, खोजी बनकर के सारों की।।
जग का जगदाधार और फिर, उसका भी आधार कहाँ।
मिल भी जाऐंगे या यों ही, जीवन सारा जाए बथा।।
ऐसी ही विचार धारा के, बवंडरों ने घेर लिया।
बहुत देर के बाद कहीं, मैं जाकर उनसे मुक्त हुआ।।
देखा सूर्य देव अस्ताचल, के अति निकट लगे पाये।
और भयानक अंधकार मय, वन पर्वत होते आये।।
अगर महात्माँ दर्शन देते, तो टिकना था ठीक यहाँ।
जब हम उनके योग्य नहीं, तो यहाँ अपना निर्वाह कहाँ।।
चलो वहीं उस जगह जाहाँ पर, वास किया था पिछली रात।
यह विचार आते ही मन में, उठ कर चल दिये हम इक साथ।।
अंतिम बार निहारा आश्रम, औ हमने परनाम किया।
तत्पश्चात् वहाँ से नींचे, को अपना प्रस्थान हुआ।।
किन्तु शब्द आया आश्रम से, जैसे कोई बोलता हो।
पदचापों की ध्वनि भी आई, जैसे कोई डोलता हो।।
मनमें एक ख़ुशी सी उपजी, क्यों के मन का था दावा।
अब अदृश्य हों चाहे आश्रम, में अवश्य ही हैं बाबा।।
किसी गुप्त रस्ते से अंदर, ही अंदर आ गए हों अब।
होते ही संकल्प पूर्णतः, पैर मुझे ले चले उधर।।

Nijanand App

जिधर मिलन की मनो कामना, पूरन होती आइ नज़र।
पुनः आश्रम में पहुँचे हम, फिर से किया तलाश उन्हें।
ऋषी मंतग तो दूर रहे पर, मिली न उनकी ख़ाक हमें।।
तब कुपात्र हम जँचे स्वयं को, नफ़रत हुई हमें हमपर।
बनो पात्र झंडूदत पहले, तब किरपा होगी तुमपर।।

बड़ी करी हमने अपने पर लानत और फटकार।
जब ऐसे भी छिपें आपसे तो तुमको धिक्कार।।

विवश मुड़े नींचे चलने को, दोबारा परनाम किया।
उस पवित्र प्राचीन भूमि से, हृदयंगम कर धार लिया।।
पम्पेशवर के आश्रम का ही, अब तो अपना लक्ष हुआ।
मैं चबूतरे से ज्यों त्यों कर, आख़िर नींचे उतर गया।।
ज्यों ही नज़र पड़ी आगे तो, एक जानवर सा दीखा।
बहुत बड़ा स्थूल रंग से, नज़र आ रहा चितकबरा।।
देखते हि झिझका मैं इकदम, हृदय गती हो गई दुगनी।
झंडू दत अब किसी तरह भी, जान नहीं बचती अपनी।।
किन्तु अचल सा दीखा जब, तो इक भ्रम सा हुआ हमें।
चार पैर तो दीख पर, सिर ग़ायब सा लगा हमें।।
क्या कारण जो अचल पड़ा है, चल फिर नहीं रहा हैं क्यों।
जान जाँए जिस से कुछ कारण, बढ़े अगाड़ी को हम यों।।
निकट बहुत ही पहुँच जब, कारण ज्ञात हुआ हमको।
यह गाय पड़ी है कोई, हिंसक मार गया इसको।।
गये दूसरी ओर तो उसका, सिर भी दबा हुआ पाया।
दुम की तरफ़ फाड़ रक्खी थी, बहता रूधिर नज़र आया।।
मार्ग पेट तक कर रक्खा था, पेट भाड़ सा खुला पड़ा।
पतनाले की तरह खून, अंदर से आता था निकला।।
और ग़ौर से देखा तो थे, साँस अभी बाक़ी उसमें।
इक दम दया भाव और करूणा, जाग्रत हो उट्ठी मुझमें।।
किसी जानवर ने गऊ माता, ऐसे देकर मारी थी।
गरदन दबकर धड़के नींचे, रह गई थी बेचारी की।।
मैंने ज़ोर किया बहुतेरा,गर्दन नींचे से निकले।
पर बेचारी के दम मेरे, हाथों हाथों में निकले।।
देखा जब दयनीय द्रश्य यह, रोमाँचित हो उठा शरीर।
बरबस निकल पड़ा निज मुख से, गऊ माता तेरी तक़दीर।।

Nijanand App

पम्पेश्वर का मार्ग सम्भाला, पहले रस्ते से होकर।
तेज हीन होता जाता था, पल पल बाद अधिक दिनकर।।
अंधकार भागा आता था, इस जगपर छा जाने को।
अकुला रहे भटों में अपने, निश्चर खाने दाने को।।
हमने अपनी चाल बढ़ादी, भागे चले आये नींचे।
थोड़ा अंधकार हो पाया, था मंदिर में जा पहुँचे।।
हमें देखते ही साधूजन, बोले हमसे आकर के।
आप महात्माँ जी आ गए क्या, ऊपर से दर्शन करके।।
सुनते ही उनकी हम बोले, आ तो लिये महात्मां जी।
जानां किन्तु व्यर्थ ही समझो, दर्शन उनके हुऐ नहीं।।
मंदिर के महंत जी भी यह, बातें सनते आ पहुँचें।
सुनकर बात चीत यह अपनी, कुछ खिसिया सी कर बोले।।
आप झूँट कहते हो बिलकुल, ऊपर नहीं गये हैं आप।
अपने कहने पर महंत जी, को नंहि हुआ तनिक विश्वास।।
हमने कहा महंत जी तुमसे, झूँट बोल क्या लेना है।
क्या इनाम तुम लिये खड़े हो, जो अपने को देना है।।
अपने पर विश्वास करो मत करो, हानि क्या है हमको।
जो कुछ पूछा अक्षर अक्षर, सत्य बताया है तुमको।।
परिक्षार्थ बोले महंत जी, यदि तुम वहाँ गये हो तो।
चिन्ह बताओ हमें वहाँ के, तब जानेंगे पहुँचे हो।।
हमने पूर्ण बनावट उसकी, और चोंतरे का सब हाल।
किस प्रकार चढ़ते हैं ऊपर, मध्य चोंतरे के है ताल।।
साथ साथ यह भी बतलाया, वहीं पास ही में इक गाय।
चितकबरे से हुलिया की है, जिसका हाल न चर्चा जाय।।
खाई पड़ी थी पीछे से सब, रक्तपात था बुरी तरह।
अपने आगे ही दम तोड़ा, छोड़ आए हम उसी तरह।।
मरने का वृतान्त जब मेंने, गऊ माता का बतलाया।
तो महंत जी के चेहरे पर, झट पीलापन सा आया।।
यह हुलिया तो तुम अपनी ही, गय्या की बतलाते हो।
हमने कहा आपकी है तो, अपनी को देखो भालो।।
शंकर शंकर फिरे कूकते, पर भ्रम रहा हमारे पर।
शायद हमने झूँट कहा है, देखी बाट सवेरे तक।।
गाय न आई बाट देखते, जब उनको परभात हुआ।
तब बेचारे महंत जी को, अपने पै विश्वास हुआ।।
साँयकाल को हम प्रशाद तो, बिलकुल लेते ही नंहि थे।

Nijanand App

हनूमान जी का इक मठ था, उस दिन उसमें जा बैठे।।
कम्बल का आसन था नींचे, और चदरिया ओढ़े थे।
कनपटियों के आजू बाजू, लगे हुवे निज गोड़े थे।।
आँखें मिंची रहा करती बस, नींद हमें आती कब थी।
यह ही था अभ्यास हमारा, बीत गई इसमें अवधी।।
मंथन करते रहते बैठे, कल्पनाओं के सागर का।
रतन खोजते रहते उसमें, मार मार पल पल गोता।।
तन समिधा को देता फिरता, आहुतियाँ इस लालच से।
रतन हाथ आजावे लेकिन, रह जाते कर मलमल के।।
उलझा रहता इस विचार में, रात बीत जाती यों ही।
एक यही आसन था अपना, अभ्यासी थे इस के ही।।
अर्धरात्रि उपरान्त आज फिर, अपने साथ हुवा ऐसा।
हाथ हमारा पकड़ किसी ने, बड़े ज़ोर से धर ऐंठा।।
आँखें आज लगीं चिरती, बल पूर्वक कोई खोल रहा।
खुलती गई आँख ज्यों ज्यों, त्यों त्यों हमें उजियाला चमका।।
जैसे सूरज निकल चुका हो, इस प्रकार का लगा हमें।
हरिक वस्तु स्पष्ट रूप से, पूरी जँचने लगी हमें।।
इक विशाल आकृत्ति सामने, छायावत् हो गई खड़ी।
जब स्थिर हो गई सामने, उसपर अपनी द्रष्टि पड़ी।
केवल रूप रेख सी थी बस, नाम नाम का था आकार।।
छूने में आ नंहि सकते थे, कहने कहने के साकार।
बाँह मरोड़े करता था जो, अवसर अवसर पर अपनी।।
चेत कराया करता था जो, इस प्रकार से हमें कभी।।
बोला हनूमान जी हैं ये, सादर इन्हें प्रणाम करो।
बल पराक्रम के दाता हैं, उठ करके सन्मान करो।।
ये सहायता देंगे तुमको, भक्त इन्हें हृदयस्थ करो।
हमने कहा अलक्षित बंधू, कृप्या हमको माँफ़ करो।।
उत्तर इस प्रकार का देके, बैठ गये मुँह नींचा कर।
दिव्य पुरूष बोला अपने से, बाँहों को झटके देकर।।
हनूमान जी खड़े हुवे हैं, तुम प्रणाम ताक नंहि करते।
शिष्टाचार नहीं है यह है, बुरी बात यों नंहि करते।।
उन्हें देख कर मैं बोला, भइ हनूमान हैं होने दो।
क्या मतलब इनसे अपने को, हम को बैठे रहने दो।।
क्यों सहायता लेंगे इनसे, अटक रहा क्या ऐसा काम।
तेंतिस कोटि देवता हैं यहाँ, किस किस को हम करें प्रणाँम।।

Nijanand App

हमें नहीं करवाना कुछ भी, अपना काम निंभा लेंगे।
हमें ज़रूरत हैं जिसकी, उसको हम खुद ही पा लेंगे।।
यह सर कहीं नहीं झुकता अब, बिला वजह मत तंग करो।
यह तो अपने को हि झुकेगा, जाओ ध्यान मत भंग करो।।
दिव्य पुरूष सकुचाये से कुछ, फुस्फुसाए निज कानों में।
हनूमान जी काम आएगे, बड़े तुम्हारे कामों में।।
इन्हें ग्रहण करलो अपने में, मान जाओ अपना कहना।
साथ रहेंगे सदा आपके, मान जाओ अपना कहना।।
बहुत ज़िद्द की दिव्य पुरूष ने, हमको जब मजबूर किया।
हनूमान थे जिधर उधर से, पीछे को मुँह फेर लिया।।
जिससे वह आकृत्ति सामने, की ना हमको नज़र पड़े।
जब देखा तो हनूमान जी, उधर पहुँच जा हुवे खड़े।।
अब तो चलने लगे होट भी, ज्यों कहते हों कुछ हनुमान।
लगे हमें तब बड़े भयंकर, शब्द न आते थे कुछ कान।।
फेर लिया फिर से हमने मुँह, दिशा तीसरी को झट से।
किन्तु उधर भी आन खड़े हुए, हनूमान फ़ौरन् खट से।।
जब हमने हनुमान इधर भी, खड़े हुऐ फिर देख लिया।
सोचा झण्डूदत्त आज तू, जंजालों ने घेर लिया।।
उठ बैठे इक साथ हाथ में, ले लोटा कम्बल अपना।

'नौवीं लहर'

तुम अब यहाँ न टिकने दो, कहकर शुरू किया चलना।।
रात काटनी थी सो भाई, तुम न काटने देओ यहाँ।
टिक क्या गये आपके मठ में, वक्त काटना मौत किया।।
गये द्वार पर जब हम मठ के, रस्ता रोक लिया आकर।
ग्रहण इन्हें क्यों नंहि कर लेते, दिव्यपुरूष बोला आकर।।
रामचंद्र जी की सब मुश्किल, सुलझी थीं इनके द्वारा।
इनको मान जाओ अपनालो, काम सुधर जावे सारा।।
जंगल और बयाबानों में, विचरा करते हो हर वक्त।
आवश्यकता क़दम क़दम पर, तुम्हें मदद की रहती सख़्त।।
इन्हें अगर अपना ही लो तो, हर्ज बताओ क्या होगा।
रक्षा करें साथ रहकरके, जिससे तुम्हें सुख्ख होगा।।
घिर से गये राह रूकने पर, परवश से हो गये खड़े।
झण्डूदत्त आज चक्कर में, बेढब इनके आन फंसे।।
वैसे दिव्य पुरूष अपने, अनहित का कभी न सिद्ध हुआ।
दर्शन कई बार उन ही की, कृपा द्रष्टि से हमें हुआ।।
जब है इतना गहन आग्रह, तो फिर चुप्प लगा जाओ।
तो फिर कहदो हनूमान जी, निज चोले में आ जाओ।।
मैं इनका स्वागत करता हूँ, करलो तुम जैसे चाहो।
मैं बोला यदि आप इसी में, खुश हैं तो फिर आ जाओ।।
शब्द समाप्त हुवे जैसे ही, आकृत्ती भी हुई समाप्त।
घुल सी गई वायु में इकदम, निज शरीर में हो गई व्याप्त।।
ऐसा लगा हमें अपने में, जैसे कोई सरकता हो।
भय भयभीत हुआ अंदर से, बाहर निकल भागता हो।।
अंदर उतर गये जब अपने, शक्ती का संचार हुआ।
भय लवलेष रहा नहिं अंदर, सारा जलकर क्षार हुआ।।

विग्रह में अपने हुआ, हनूमान का वास।
डर फिर काहे का रहा, शक्ती हो जब पास।।

इस घटना के बाद यात्रा, फिर अपनी आरम्भ हुई।
चाल तेज़ हो गई हमारी, औ थकने का काम नहीं।।
रात और दिन बड़े भयानक, बन पर्वत से गुज़रे हम।
भय का बीज नाश सा हो गया, कभी नहीं डरते थे हम।।

Nijanand App

सफ़र और दर सफ़र गुज़रते, शिव काँची हम जा पहुँचे।।
शिव काँची से विष्णु काँची,हम तेज़ी से जा पहुँचे।
चले सिलम्बर महादेव को, रंग नाँथ उसके पश्चात्।
अलग़रजी होकर रामेश्वर, जा पहुँचे हम उसके बाद।।
इसके बाद कील भद्रा और, अन्य जंगलों से गुज़रे।
मंज़िल दर मंज़िल चल चलकर, इक दिन बम्बई जा पहुँचे।।
भोलेश्वर दो माह बिताकर, चले द्वारिका अपने राम।
पुरी द्वारिका से चल करके, कुछ दिन अपन रूके रतलाम।।
दावद और गोदरा से, उज्जैन और अजमेर गये।
पुष्कर कर स्नान एक दिन, साथ ख़ैरियत घर पहुँचे।।
दो वर्षों उपरान्त पहुँच कर, अपने घर वाले देखे।

क्या लेके हम गये थे और क्या लेके आए।
परखन हारा ही नहीं को काको बतलाए।।

स्वागत कभी हुवा न होवै, जग के बीच भगोरों का।
इतना भी नंहि किया किसी ने, जितना होता ढोरों का।।
सभी सगे सम्बंधी हमसे, नाखुश और नाराज़ रहे।
सब कुछ हुआ साथ भी रहे पर, जीवन में ना स्वाद रहे।।
नौ वर्षों तक रहे जूड़ में, ग्राम जड़ौदा से बाहर।
घर से था सम्बंध बहुत कम, कभी कभी हम जाते घर।।
सत्य धर्म इक सभा बनाई, जुड़ती सिर्फ़ आठवें रोज़।
सभी ग्राम बंधू आते थे, देते थे सब ही सहयोग।।
चर्चा सिर्फ़ सत्य पर होती, भजन कीर्तन और सत्संग।
सम्प्रदाय ना मज़हब कोई, नहीं किसी से कुछ संबंध।।
मस्त रहा करते अपने में, लोगों पर कुछ पड़ा प्रभाव।
रखने लगे बहुत से सज्जन, अपने से कुछ प्रेम लगाव।।
इधर हमारे पक्के साथी, हनूमान औ दिव्य पुरूष।
सदा साथ रहते प्रसन्न चित, हर प्रकार से हमसे खुश।।
उलझन अगर कोई आजाती, झट से सुलझाते इकदम।
कभी कभी तो किसी विषय पर, उनसे बातें करते हम।।
कठिन पश्न करता यदि कोई, अपनी समझ न जब आता।
तो यथार्थ उत्तर फ़ौरन ही, उनसे हमको मिल जाता।।
श्रोता गण आवाक् रह जाते, सुनकर हम से प्रश्नोत्तर।
इस प्रकार निज धर्म सभा का, उठा और ऊपर स्तर।।

Nijanand App

कभी कभी बाहर भी जाते, हरिद्वार आदिक में हम।
तीर्थ आदि स्थानों में भी, रहे विचरते काफ़ी दिन।।
होते गये लीन अपने में, दिव्य पुरूष साधन के साथ।
सम हो गये हमारे अंदर, लाली ज्यों मंहदी के पात।।
पर घायल जैसी गति अपनी, रहते सदा लोचते से।
चला हुवा सा रहता मन कुछ, हर दम यही सोचते थे।।
लाभ हुवा क्या घर छोड़े का, हैं तो रीते के रीते।
आयु क्षींण होती जाती हैं, स्वांस जा रहे हैं बीते।।
कब सच्चा सरूप दीखेगा, कब प्रपंच का होगा बाध।
कब वह सुदिन समय शुभ होगा, कब सुख होगा मुझे अगाध।।
कब गुरू चरणों की रज को मैं, निज मस्तक पर धारूँगा।
काम क्रोध लोभादि बैरियों, को कब हठ से मारूँगा।।
कब सब के आधार एक, भूमा सुख का मुँह दीखेगा।
कब मन सब भेदों में नित, अभेद देखना सीखेगा।।
कब साधन के प्रखर तेज से, सारा तम मिट जायेगा।
कब मन विषय विमुख हो प्रभु की, विमल भक्ति को पायेगा।।
कब प्रति बिम्ब बिम्ब होगा कब, नहीं रहेगा चित आभास।
निजानन्द निर्मल अज अवमव, में कब होगा नित्य निवास।।
फूट जाए वो आँखे जिनसे, बंधा अश्रु का तारा नहीं।
विनश जाए वो हृदय पलक में, जिसमें प्रीतम प्यार नहीं।।
जानें क्यों सब कुछ उतरा, उतरासा हमको लगता है।
किसी अलख वस्तु को पाने, को अब हृदय तरसता है।।
वे पूरे मैं एक अधूरा, यही एक है लाचारी।
कहाँ जाँऊ तुमको पाने को, मेरी तो गति भी हारी।।
घूंमा फिरा मगर क्या हासिल, हूँ तो ख़ाली का ख़ाली।
जिधर घूंमकर देखी दुनियाँ, दीखी काली की काली।।
कोई वस्तु न अच्छी लगती, कोई जगह न भाती है।
रह रह कर अंदर अब जानें, किसकी याद सताती है।।
जिसको प्यास न लगती हो, मृग तृष्णा का दुख क्या जाने।
फटी बिवाई कभी न जिसके, पीर पराई क्यों माने।।
खान पान से रूची हमारी, इक दम हटती चली गयी।
और हमारी तबियत घर से, बस फटती ही चली गयी।।
मन उचाट फिर हुवा हमारा, हमने सबको बतलाया।
बुद्धि दास ग्रहणी इत्यादिक को, बिठलाकर के समझाया।।
हमें घूमने की इच्छा है, कृप्या हमें आज्ञा दो।

Nijanand App

कुछ दिन जैसे निंभे निभालो, सब मिल हम पर कृपा करो।।
बात बहुत जितनी हो पाई, बहुत कहीं समझाने की।
किन्तु हमारे मन में बिल्कुल, चाह ने वापिस आने की।।
कलावती शान्ती दो बच्ची, सोमदत्त आदिक जन्मे।
मरी शान्ती ओमदत्त बस, बच्चे तीन साथ छोड़े।।

Nijanand App

'दसवीं लहर'

सम्वत उन्निस सौ अठहत्तर, में फिर चले छोड़कर घर।
रूका न ज़्यादा गया गांव में, छोड़े सब प्रभु के ऊपर।।

'दूसरी परिक्रमाँ'

चले दूसरी बार फिर तज अपना घरबार।
न्यौछावर करने चले अपने को इसबार।।

नहीं लौटके वापिस आना, करके पुष्ट चले मन को।
वहीं कहीं मर खप जाऐंगे, नहीं लौटना अब हमको।।
कर प्रणाम सादर सब ही को, कर अंतिम सब के दीदार।
मातृ भूमि से विमुख हुवे हम, अपना और हाल इस बार।।
जहाँ जहाँ को प्रथम गये थे, उसी मार्ग को फिर पकड़ा।
पहली परिक्रमा का अप़ने, ऊपर काफ़ी असर पड़ा।।
चले घूमते और घामते, हिमआँचल आदिक पहुँचे।
और राज बंदरी इत्यादिक, दखन हैदराबाद गये।।
जगन्नाथ द्वारा में जाकर, कुछ दिन तक विश्राम किया।
एक मारवाड़ी से कुछ दिन,लगातार संत्संग हुवा।।
आठ रोज़ के बाद सेठ से, लेकर विदा चले आगे।
शनः शनः पग यात्रा करते, ताण्डूर पहुँचे जाके।।
इक महंत जी मिले वहाँ जो, गुलबर्गा जाने को थे।
हैदराबाद के थे वैसे वे, हम पर बड़े प्रसन्न हुवे।।
साथ लिवा ले गये वहाँ से, हमको वे अपने स्थान।
जोदी नद्दी के संगम पर, स्थित था स्थान महान।।
मुचकंदा संकट मोचन दो, नदियाँ मिलतीं संगम में।
ईसा मूसा नाम पुकारे, जाते इनकी यवनों में।।
बड़ी कृपा की महंत ने, गुलबर्गा के अपने ऊपर।
देकर के आ़र्चाय्य भेष, स्थान छोड़ बैठे हम पर।।
कार्य्य भार सौंपा सब हमको, सभी व्यवस्था हम करते।
साधन योग मनन गीता का, साथ साथ करते रहते।।
सिर्फ़ आध घंटे सोते हम, चिंतन में रहते अनुरक्त।
इस प्रकार की दिनचर्य्या में, ढाइ साल का बीता वक्त।।

Nijanand App

अपने काल बीच मंदिर की, बद इन्तज़ामी नष्ट हुई।
साथ साथ कुछ बढ़ी आय भी, धन का दुर्उपयोग नहीं।।
आदर औ सत्कार यथावत्, महात्माओं ने वहा पाया।
धन बर्तन वस्त्रादिक जिसने, मांगा उसको दिलवाया।।
मौका कभी शिकायत का, आने ही नहीं दिया हमने।
लिखवाया इक रोज विरासत, नामा हमें महंत जी ने।।
हम इस झंझंट को अपने सिर, लेना नहीं चाहते थे।
पर महंत जी गादी पर, हमको बिठलाना चाहते थे।।

सुनो रे सत के बनजारे, एक बात कहूं समझाई।
या फन्द बाजी रची माया की, तामें सब कोई रहिया उरझाई।।
लोके लाज मर्यादा छोड़ी, तब ज्ञान पदवी पाई।
एक आग ज्यो छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई।।
कोट सेवक करो नाम निकालो, इष्ट चलाओ बड़ाई।
सेवा करो सतगुरू कहलाओ, पर अलख न देखे लखाई।।
अब छोड़ो रे मान गुमान को, एही खाड़ बड़ी भाई।
एक डारी ज्यों दूजी भी डारो, जलाय देओ चतुराई।।

उमर हुजूरी पहुँचे लेकर, काग़ज़ के संग अपने को।
हाकिम के सन्मुख जाकरके, रजिस्ट्री करवाने को।।
दैव योग से उस दिन छुंट्टी थी, सुनवाई हुई नहीं।
लौट आए हम वापिस यों ही, यों की त्यों ही बात रहीं।।
धन्यवाद भेजा परमात्मां, को हम बड़े प्रसन्न हुवे।
चाह रहे थे जो देना हमको, प्रातः वापिस सौंप दिये।।
रखकर के सब ही कुछ आगे, कर प्रणाम छुट्टी माँगी।
कुछ मत पूछों महंत जी ने, किस प्रकार मंजूर करी।।

धन्यवाद प्रभु को दिया, हमने बारम्बार।
भली मुक्ति दी आपने, हमको प्रांणांधार।।

कमली और लंगोटी अचला, लेकर भाग पड़े अपना।
बस अपना श्रंगार यही था, अपनी इतनी सी दुनिया।।
ताण्डूर होकर शोला पुर, नाप धरी कुछ दिन में ही।
ठहरे जाकर इक मंदिर था, हनुमान का पंच मुखी।।
यहाँ साधुओं में बस केवल, मौज लिया करते थे हम।

Nijanand App

साधनाए करते रहते थे, उस अतीत की हम हरदम।।
शोलापुर से चलकर के हम, पण्डर पुर में जा पहुँचे।
चंन्द्र भान का था सुरम्य तट, राम बाग़ में जा ठहरे।।
बिता दिये दो मास यहीं पर, वही निंयम रक्खा अपना।
साठ रोज पश्चात् यहाँ से, शुरू किया हमने चलना।।
डौन और मनमाड़ आदि, कल्याँण मार्ग से हो करके।
पहुँच गये बम्बई बाल, केश्वर में हम ठहरे जाके।।
दो ही माह यहाँ भी ठहरे, गये न आसन छोड़ कहीं।
प्रभु चर्चा हर वक्त यहाँ भी, मूर्तियों से रहती थी।।
एक महात्माँ की संगति से, उठा पुनः अपना आसन।
हमें गोमती द्वारका जी की, लगी चुटपुटी और लगन।।
बाइ जानकी के जहाज पर, बैठ द्वारका जा उतरे।
तीर गौमती एक महात्मा, की कुटिया पर जा ठहरे।।
कुछ दिन के पश्चात् वहाँ से, बेठ द्वारिका पहुँचे हम।
वहाँ एक नरसिंह मंदिर था, उसमें जाकर ठहरे हम।।
गये द्वारका धाम सुबह जब, दर्शन करने हम मिलकर।
सत्रह आने कर राजा का, देना पड़ता था जाकर।।
खड़े हुवे दर्शक गंण को, दो लाइन में हमने पाया।
हमने कारण पूछा तो वह, इस प्रकार का बतलाया।।
यहाँ प्रथा है कर देने की, पहले वह दाखिल कर दो।
उसके बाद छाप चंदन की, लगवा कर दर्शन कर लो।।
पक्की छाप अगर लगवालो, तो जब तक वह चिन्ह रहे।
तब तक रोक न सकता कोई, दर्शन उसे अवश्य मिले।।
अपने साथी पर पैसे थे, उसने हमें सचेत किया।
आप न घबराओं पैसे हैं, मैं ही दाखिल कर दूँगा।।
नही महात्माँ जी हम तुमसे, पैसे कभी नहीं लेंगे।
जब हम बे पैसे वाले हैं, दर्शन यों ही कर लेंगे।।
खड़ी हुई थी लैन लगी इक, जो बे पैसे वालों की।
ख़ैर मनाते थे बेचारे, दर्श दिलाने वालों की।।
सब फ़कीर फुकरा बैठे, रटते थे राधे राधेश्याम।
हम भी जा बैठे उन ही में, रटने लगे श्याम का नाम।।
एक बड़ौदे का अफ़सर, दर्शन करने को जब आया।
तो इक कोलाहल सा उसके, साथ साथ मचता आया।।
अजी हमें दर्शन करवादो, दर्शन करवादो महाराज।
किन्तु नहीं सुनता था कोई, उन बेचारों की आवाज।।

Nijanand App

कोई गिड़गिड़ाता फिरता, पैरों को पकड़ रहा कोई।
कोई दुआ देता फिरता था, कर जोड़े फिरता कोई।।
किन्तु न सुनने वाला कोई, हमने जब ये जांच लिया।
तो फिर सुना सुना अफसर को, हमने बकना शुरू किया।।
क्या लोगे ऐसे दर्शन में, क्यों करवाते हो अपमान।
क्या तुम समझ न पाऐ अब भी, याँ हैं पैसे के भगवान।।
जाओ पहले भिक्षा माँगो, तत्पश्चात् यहाँ आना।
करो इकट्ठे पैसे पहले, सब सत्रह सत्रह आना।।
पैसे का भगवान न बातें, करता है कंगालों से।
यहां भाई बातें होती हैं, केवल पैसे वालों से।।
राधेश्याम अगर भजना हैं, तो जंगल में बैठ भजो।
यहाँ नियम ऐसा है पहले, पैसे दो तो दर्शन लो।।
भनक कान पहुँची अफसर के, आकर के बोला हमसे।
अभी आप क्या बोल रहे थे, सुना रहे थे यह किससे।।
सुनते ही उनसे हम बोले, यह है वह ख़ड़िया पलटन।
जिसकी कोई न सुनने वाला, इनको कहते थे भगवन्।।
पड़े पड़े प्रातः से जिनको, सांय काल हो जाता है।
आखिर को उठकर बेचारा, विवश चला ही जाता है।।
सत्रह आने तीन रोज़ में,भी ये मांग न सकते हैं।
इसके मायने साफ़ यही है, दर्शन नंहि कर सकते हैं।।

हुइ चेतना सी इक अंदर, अफ़सर के सुनकर अपनी।
कर्मचारियों और प्रबंधक, से जाकर के कहा जभी।।
जब इन कंगालों के पल्ले, फूटी कौड़ी एक नहीं।
तुम्हें कहाँ से लाकर देंगे, दे दो आज्ञा इनको भी।।
तभी छाप चंदन की लेकर, आया एक निकट अपने।
इस पूरी लाइन के उसने, हम ही बस लीड़र समझे।।
क्यों कि हमीं ने शोर मचाया, था उस लाइन में ज़्यादा।
अपने ही शब्दों से अफ़सर, किया दर्श पर अमादा।।
जब वह छाप लगाने आया, हमने उसको रोक दिया।
अपने नहीं लगाना चंदन छाप, प्रबन्धक जी कृप्या।।
अगर लगानी है तो पक्की, छाप हमारे लगवा दो।
एक महीना ठहरेंगे हम, या बस हमको क्षमा करो।।
पता नहीं क्या सोच साचके, अपने पक्की छपवादी।
बाकी जो थे लाइन में, सब कै चंदन की लगवादी।।
क्रम से दर्शन मिले सभी को, हमने भी दर्शन पाये।

Nijanand App

जब तक बेठ द्वारका ठहरे, दर्शन के लिए नित आये।।
चले यहाँ से भी आगे को, दानापुरी अहमदाबाद।
राजकोट होते हुवे सूरत, जा पहुँचे हम इसके बाद।।
कुछ दिन सूरत ठहर ठार कर, नासिक पंच वटी पहुँचे।
सारी राह जंगली ब्रंदा, के हमने चावल भक्षे।।
राम कुटी विश्राम किया,कुछ रोज तपोवन रह करके।
ओझड़ औ चांदौर गये फिर, तत्पश्चात रिडिंग पहुँचे।
अमर नेर ढुलिया होते हुए, सोन गिरी में जा पहुँचे।।
एक व्यक्ति ने हमें सोन गिरी, मैं कुछ ऐसा ज्ञात किया।
बड़े उच्च है एक महात्माँ, जिनका हमको पता दिया।।
उनके साथ राम मंदिर में, हम भी ठहर गये जाकर।
प्रभा युक्त थे वास्तव में, धन्य हुवे दर्शन पाकर।।
वह स्थान भयानक भी था, थे शमशान निकट ही में।
साथ साथ रमणीय बहुत था, ठहरे बस हम उस ही में।।
ठहरे यहीं सुनिश्चित होकर, खाना स्वयं बनाते थे।
बैठक रोज आठ घंटे की, हो निरद्वन्द लगाते थे।।
बढ़ा हुवा अभ्यास बहुत था, और अधिक ताई पर था।
ध्यान लीन हर इक क्षण रहता, कभी कभी ही हटता था।।
हो जाती अकसर अचेतना, कभी कभी लुढ़के पाते।
हाथ पैर हो करके उल्टे, बहुधा नींचे दब जाते।।
ऊंगली टूटी सी हो गई थी, पलक वामनी खाऐ से।
जूऐं झड़ने लगीं मुण्ड से, पिंजर बने बनाये थे।
जहाँ हुवें ध्यानस्थ पड़े के, पड़े वहीं रह जाते हम।।
करवट भी नंहि ले पाते थे, मुर्दे से पड़ जाते हम।
क्यों कि स्वांस चलना थम जाता, नब्ज़ आदि पड़ती मद्धम।।
एक रोज मंदिर में थे हम, सन्मुख थी प्रतिमाँ श्री राम।
ध्यान हुवा अंतरमुख इतना, वायू होने लगी अपान।।
सुध न रही कुछ हमें बाह्य की, मानो चोला छूट गया।
देख अवस्था ऐसी अपनी, दर्शक गण में शोर मचा।।
चारों ओर इकट्ठे हो गए, अपने आ आ करके लोग।
छा सा गया इक दम सारे, मंदिर पर इक भारी सोग।।
समाचार पहुँचा सारे में, मरा पड़ा है एक फ़कीर।
उसको अजल मजल करवादो, उठवा दो यह मृतक शरीर।।
चंदा हुवा गली कूँचे से, किया कफ़न काठी तैयार।
होने लगे ऐकत्रित बन्दे, आ पहुँचे लकड़ी के भार।।

Nijanand App

भारी भीड़ जमाँ हो गइ थी, एक व्यक्ति आया पश्चात।
जिसे देखकर सारे हट गये, उसने देखा अपना हाथ।।
पूर्ण निरीक्षण किया हमारा, समझे योग अवस्था है।
बोले किसने कहा मृतक है, जो कहता है बकता है।।
अच्छा सब हट जाओ यहाँ से, भेजा इक घर को अपने।
जो झोली आया लेकर इक, दिया हमें कुछ उसमें से।।
जल गुलाब का छिड़का मुँह पर, जिसने हम चैतन्य कियें।
लोगों ने जब हमें निहारां, जीवित लखकर सन्न हुवे।।
सब ऐकत्रित हो गए फिर से, हमें होश आने के बाद।
उस आदर्श पुरूष से अपना, आँख आँख में हुवा मिलाप।।
देखा अन्दर तक टटोल कर, पूर्ण लिया परिचय अपना।
बड़ी भीड़ उमड़ी ऊपर को, हरिक चाहता था सुनना।।
बोले अच्छा सोमेश्वर में, ठहरे आप पहुँच करके।
जगह बहुत उत्तम है तुमको, देखो ज़रा पहुँच करके।।
सोमेश्वर इक शिव मंदिर है, डेढ़ मील की दूरी है।
जिसकी छटा बहुत सुँदर है, अपने पन में पूरी है।।
आठ पहाड़ों के घेरे में, देवालय है घिरा हुवा।
योग्य आपके है वह मंदिर, हर द्रष्टी से नपा तुला।।
महा पुरूष की इस प्रकार की, वांणी सब ही सुनते थे।
दया भाव दर्शा कर मेरे, ऊपर कुछ सज्जन बोले।।
इन्हें वहाँ क्यों भेज रहे हो, इन पर दया करो महाराज।
आप जानते तो हैं सारी, क्या है छिपा वहाँ का राज।।
सभी जानते उस मंदिर को, उसकी चर्चा है सबमें।
उसमें प्रेत आत्मा रहती, है विख्यात नगर भर में।।
कोई पुजारी और महात्माँ, जब उसमें टिक नंहि पाता।
तो फिर इनको वहाँ न भेजो, अपनी समझ नहीं आता।।
जिनकी रक्षा पर वे खुद हों, उनको कभी न कुछ होता।
मरने वाले ही मरते हैं, उन ही को सब कुछ होता।।
हमें सान्तवना देकर बोले, श्री स्वामी नारायण दास।
प्रातः ही हम मिला करेंगे, जाकर सदा तुम्हारे पास।।
ब्रह्म वाक्य से सुनकर उनके, मुँह से उठ प्रस्थान किया।
कहे मुताबिक महा पुरूष ने, जाकर हमको दर्श दिया।।
नित्य कर्म से निवृत होकर, रोजाना आया करते।
रसा स्वाद वांणी का उनकी, हम प्रति दिन पाया करते।।
चढ़ा हुआ अभ्यास हमारा, कम सा होना शुरू हुवा।

Nijanand App

जो हम ध्यान किया करते थे, कौन दिशा को क्षींण हुवा।।
परिर्वतन ऐसा आया कुछ, लगा बदलने अपना ध्यान।
और और से हो गए हम कुछ, और और सा हो गया ज्ञान।।
परिर्वतन विचार में ऐसा, आया और बात हो गइ।
हम अब लगे और ही बनने, बातें पिछली सब खो गइ।।
मन में थी पहले हि विमुखता, इस संसारी सागर से।
पर अब निश्चयता सी आई, ढंग और हो गए मन के।।
कुछ दिन के पश्चात उन्होंने, कुछ ऐसा व्यौहार किया।
क्या बताए कुछ कहा न जाता, कितना हमको प्यार किया।।
उनके इस दुलार ने हम पर, वह जादू का काम किया।
संजीवन बूटी सी देकर, आतम को आराम दिया।।
मौजों के दरवाजे खुल गए, हवा और ही बह निकली।
उपवन मेरा हुवा कुछ ऐसा, खिली हृदय की कली कली।।
फूलों में ढ़ककर प्रशाद औ, गजरे पुष्प हार लाते।
अपने हाथों हमें खिलाकर, हार व गजरे पहनाते।।
हम न रहे वो भ्रम न रहे वो, और हुआ कुछ अपना हाल।
आठों पहर नजर आने, लगे पिया के हमें जमाल।।
पलक उठाते गर ऊपर को, लगता बोझ उठा रहे हैं।
कहा न जाता क्या देते हैं, क्या हम उनसे पा रहे हैं।।
आँखें खुलने लगीं हमारी, आगे पीछे का चमका।
आज और कल और हुआ, परिवर्तन हम में प्रतिदिन का।।
चार माह पीपल के नीचे, उस मंदिर में हम ठहरे।
बड़े बड़े आनन्द आए, उस जगह हमें गहरे गहरे।।
आ सोते थे सर्प बगल में, कभी कभी आसन पर ही।
देते जब संकेत हाथ से, भग जाते वे सर्प तभी।।
साथ समझने लगे उन्हें हम, जब हरदम रहते वे साथ।
व्यक्ति बहुत कम जाते हम तक, रहता उन संग हास विलास।।
पड़े रहा करते थे केवल, उस पीपल के नीचे ही।
एक रोज रात्री में हमको, इस प्रकार आवाज़ लगी।।
महाराज, महाराज, महाराज जी।
हम आवाज़ सुना करते थे, पर हम बोले नहीं कभी।
तीन रोज तक इसी तरह से, हमको नित आवाज लगी।।
आधी रात बाद चौथे दिन, क्रम से फिर हमको टेरा।
महाराज, महाराज, महाराज जी।
हमें क्रोध सा आया इकदम, उसी दिशा को मुँह करके।

Nijanand App

क्रोध भरे तीखे शब्दों में, इस प्रकार उससे बोले।।
कहो कौन हो क्या इच्छा हैं, कह दो जो कुछ कहना है।
कैसे कष्ट किया है आओ, दे दो जो कुछ देना है।।
इस प्रकार से सुन कर हमसे, फिर वे चुप हुवे ऐसे।
बोले कभी न फिर आइन्दा, लक़वा मार गया जैसे।।
हमने महाराज जी से भी, इस घटना को नहीं कहा।
कुछ दिन के पश्चात मगर, खुद ही हमको आदेश मिला।।
आप शहर ही मैं आ जाओ, है नजदीक एक स्थान।
बस्ती के ही निकट बहुत ही, कुछ दिन यहीं करो विश्राम।।
आटा सीदा आसानी से, पहुँचाया जा सकता है।
और हमें भी आना जाना, अधिक सुलभ हो सकता है।।
हम उनका आदेश प्राप्त कर, दो नदियों के संगम में।
एक खेत सा खाली पाया, आसन लगा लिया उसमें।।
सुविधा अधिक हुई अब उनको, आने लगे सवेरे और।
समय बढ़ा सत्संग आदि में, बुद्धि हुई अपनी कुछ और।।
इक विचित्र सी हालत पैदा, करी यहाँ की चर्चा ने।
हममें भ्रम लवलेष न छोड़ा, उनकी ज्ञानी वार्ता ने।।
रहने लगे अधिक अंतरमुख, कभी ध्यान आता संसार।
जगत हुवा विस्मृत सा हमको, हुवा शिथिल सा निज आकार।।
कान न सुन पाते बाहर का, आँखें देख न पाती थीं।
रसना रस लेना सब भूली, मन में कुछ कुछ आती थी।।
प्रश्न कोइ कुछ यदि कर देता, उत्तर कुछ का कुछ देते।
एक अटपटी हालत हो गई, लोग हमें पागल कहते।।
कहना कुछ हम और चाहते, मगर कहा जाता कुछ और।
क्या बतलायें क्या हो गये हम, विचल गये सारे तिल तौर।।
गुरू महाराज निरन्तर सत्संग, रूपी पिला रहे हाला।
जिसके फलस्वरूप अंतस्तल, बना हमारा मतवाला।।
उत्तेजित हो उठे एक दम, हृदय हुवा चित्रित गुरू रूप।
खुद सा गया हृदय के अंदर, ज्यों का त्यों सदगुरू सरूप।।
सन्मुख अगर न होते यद्यपि, तो कुछ भी परवाह नहीं।
थिर रहता गुरू रूप हृदय में, गये न जैसे अन्य कहीं।।
यदि कुछ समाधान चाहा तो, कर लेते थे निस्संकोच।
साक्षात उत्तर मिलता था, गुरू मूरत से हमको बेरोक।।
मानो सन्मुख ही बैठे हों, समझाते हो अपने को।
साक्षात स्थापित पाते, अपने में गुरू मूरत को।।

Nijanand App

वाँणी से जो भी कह देते, शत प्रतिशत होता वह ठीक।
जिस प्रकार होना होता था, कार्य कोई सब जाता दीख।।
उर स्थित सदगुरू सरूप से, नित्य छिड़ा रहता सत्संग।
परम धाम आदिक विषयों पर, जारी रहते सदा प्रसंग।।
यथा प्रश्न उत्तर हम पाते, इच्छित दिखलाते स्थान।
सदगुरू की पसरी अपने पर, इस प्रकार की कृपा महान।।
नम्र निवेदन किया एक दिन, हमने सदगुरू चरनों में।
महराज जी कृपा आपकी, नहीं आती है वरनन में।।
हम जैसे इक तुच्छ दास को, बख्शी इतनी कृपा प्रभो।
जब जो पूछा उत्तर देते, जब जो चाहा दिखला दो।।
बतला रहे दिखाते सब कुछ, किया आपने हमें निहाल।
ख़ाली कोठा पूरा कर, कंगाल बनाया माला माल।।
क्या आँकू मैं मोल आपकी, एक कृपा की किनकी का।
बार सहस्त्रों वारू सृष्टी, मोल न पूरा होने का।।
बख़्शी जब इतनी कृपाऐं तो, एक और दे दो प्रभुदान।
डाल लेओ आसन अंतर में, सदा सदा को कृपा निधान।।
आभारी मैं रहूँ आपका, करो अनुग्रह इतना और।
तुम्हें बहुत है मुझसे भगवन्, मगर नहीं है मुझको और।।
उत्तर दिया श्री सदगुरू ने, चिंता क्यों करते भइय्या।
रहता तो हूँ सदा ह्रदय में, कभी न तुमसे अलग रहा।।
पकड़ लिये पग हमने बढ़कर, चरण थाम हम बैठ गये।
देख आग्रह इस प्रकार का, पहले कुछ क्षण मौन रहे।।
फिर बोले धीरे से अच्छा, बैठ जाओ सिद्धासन से।
पालन किया हुक्म हमने वह, बैठ गये हम जाकर के।।
करने लगे पान गुरू मूरत, पी गए अंदर छवि उनकी।
कुछ क्षण के उपरान्त हमारे, अन्दर इक शक्ती उतरी।।
जो जाती हुइ ज्ञात हुई कुछ, अच्छी तरह हुई महसूस।
जिसका असर पड़ा जाते ही, जैसे भरी किसी ने कूक।।
उत्तेजित हो उठा एक दम, भारी एक प्रभाव पड़ा।
बड़ी विकट तबदीली आई, जिसको मैं ना झेल सका।।
ऐसा आया इक परिवर्तन, लक्षण बनने लगे अजीब।
मूल्य आँकते नहीं किसी का, धनी कोई हो कोई ग़रीब।।
अगर व्यक्ति है कोई प्रतिष्ठित, जंचता हमको कींट समान।
अपना मन तिल भर नंहि करता, उसका आदर औ सन्मान।।
अगर प्रश्न कर्ता यदि मेरे, उत्तर से संतुष्ट नहीं।

Nijanand App

वाद विवाद लगा करने यदि, चाँटा देते मार वहीं।।
जाने किसके वशी भूत, आवेष क्रोध का जग उठता।
तर्क विर्तक किया जिसने भी, बस वो पिट कर ही उठता।।
चाहे कितना बड़ा प्रश्न हो, पर उत्तर दो शब्दों का।
लक्षण ऐसे बने हमारे, उस विशेष शक्ति द्वारा।।

Nijanand App

'बारवहीं लहर'

आठ पहर चौसठ घड़ी, सदगुरू की आगोश।
रहे न हम आपे में तबसे, जब से उतरा जोश।।

एक बार एक अध्यापक ने, हमसे आकर प्रश्न किया।
वैसे था वह आर्चाय्य मगर, उत्तर अपना नंहि समझा।।
हमने दो शब्दों में उत्तर, देकर उसको समझाया।
क्यों कि हमारा था स्वभाव यह, पर वह समझ नहीं पाया।।
लगा तर्क करने हमसे वह, लगा दिखाने विद्वत्ता।
हमें क्रोध की आइ लहर सी, किन्तु क्रोध तब तक रोका।।
जब तक समझ नहीं पाया वह, रहा उसे मैं समझता।
लगा कहलवाने मैं उस ही, की जबान से वह व्याख्या।।
घूंम घाम कर जब वह आया, अपने ही उन शब्दों पर।
लगा बोलने मेरी वाणी, तब चाँटा मारा मुंह पर।।
खाते ही चाँटा अध्यापक, आसन से हो गया खड़ा।
और हमारे कटु व्यौहारों, पर उसको अफ़सोस हुवा।।
आइ ग्लानि हमको भी अपनी, इस बेहूदा हरकत पर।
लेकिन हम मजबूर स्वयँ थे, थी सवार शक्ती हम पर।।
अध्यापक बोला पिट करके, तुम तो लगे मारने भी।
यही बात है तो आइन्दा, आयेंगे हम नहीं कभी।।
अच्छा मत आना तो जाओ, हमने दिया उसे उत्तर।
चला गया अध्यापक इक दम, कुछ अपने से खिसया कर।।
तीन रोज़ बीते जब उसको, आना जाना बंद हुआ।
अमानुष्यता पर अपनी हमको, भी कुछ कुछ दुःख हुआ।।
पास गये हम श्री सदगुरू के, किस्सा उनको बतलाया।
अमुक मास्टर तीन रोज़ से, निज कुटिया पर नंहि आया।।
यहाँ न आऊँ अब भविष्य में, एक शपथ ली है उसने।
अच्छा मत आना तो जाओ, उत्तर दिया उसे हमने।।
आज हमारी इक इच्छा है, कृप्या वह पूरी करदो।
भागा चला आए अध्यापक, स्वयं यहा ऐसा कर दो।।
सिर्फ़ आज आ जावे बस वो, चाहे रूके सदा को फिर।
तो फिर आ जायेगा चिंता, ही क्या है आखिर उसकी।।
संध्या समय कुटी के सन्मुख, नित आसन बिछ जाते थे।
बंधे हुए से नियम पूर्वक, सतसंगी जन आते थे।।

Nijanand App

दिन था वह उस रोज़ पेठ का, दिवस आठवें भरती थी।
सोन गिरी की जनता हफ़्ते, का राशन ले लेती थी।।
जो भरती कुटिया के सन्मुख, संध्या काल निकट आया।
लेने को सामान आवश्यक, अध्यापक घर से आया।।
किन्तु पेंठ में आते ही वह, भूल गया लेना सामान।
लगी उचाटी एक हृदय में, देखा जब उसने स्थान।।
चला ओर खिंचकर कुटिया की, द्वारे आकर हुवा खड़ा।
रूका द्वार पर जब अध्यापक, अपने को भी नज़र पड़ा।।
हमने किया इशारा सदगुरू, को अध्यापक आ पहुँचा।
पर है असमन्जस्य अभी कुछ, द्वारे पर ही है ठिठका।।
बोले गुरू महाराज देखते, रहो आप बस चुप बैठे।
जो घर से द्वारे तक आया, अंदर आवे नंहि कैसे।।
खड़ा रहा कुछ देर और, अध्यापक अपने द्वारे पर।
किन्तु बढ़े फिर कदम विवश ही, अध्यापक जी के अंदर।।
देख लिया जब आ ही पहुँचा, स्वागतार्थ फिर बोले हम।
बैठ जाओ आजाओ शायद, भूल गये तुम अपना प्रंण।।
कोई बात नहीं मास्टर जी, भूल चूक हो जाती हैं।
प्रतिज्ञाऐं कितनी ही जीवन, में विस्मृत हो जाती हैं।।
व्यंग हमारा सुन अध्यापक, बोला महाराज जी अब।
आता था मैं एक बार ही, बार बार आऊँगा अब।।
हर फेरे मारा करना पर, आना बंद नहीं होगा।
हाथ आप ही के दुख्खेंगे, बंदे का क्या बिगड़ेगा।।
हमने कहा मास्टर जी से, शान्त चित्त होकर सुनना।
जो हम पूछें सोच साचकर, जंचे तो उत्तर दे देना।।
अध्यापक बोला सुनकर के, पूछो हम देंगे उत्तर।
हम बोले अध्यापक से तो, सुनना ज़रा ध्यान देकर।।
आप पढ़ाते हो लड़कों को, अगर एक लड़का उनमें।
सबक याद ना होने पर, पिट कर यदि जा बैठे घर में।।
क्या क्षति पहुँची उससे तुमको, क्या पहुँची विद्यालय को।
क्या बिगड़ेगा अध्यापक का, कृप्या इसका उत्तर दो।।
कुछ नंहि में उत्तर देकर के, अध्यापक ख़ामोश हुआ।
हमने भी फिर इस प्रकार से, उनसे कहना शुरू किया।।
अगर भूल से आगए हो अब, तो भविष्य में मत आना।
इधर भूल कर रूख मत करना, जाओ अगर होवे जाना।।
मौन हुआ इकदम अध्यापक, बोला क्षमाँ चाहते हैं।

Nijanand App

हम ही ग़लती पर थे भगवन, आप यथार्थ ताड़ते हैं।।
आदर और सन्मान हमारा, बहुत किया इसके पश्चात्।
अक्सर ऐसे काण्ड हमारे, से होते रहते दिन रात।।
नहीं चाहते थे हम लेकिन, अनायास घट जाते थे।
है स्वभाव ही ऐसा इनका, लोग समझ सब जाते थे।।

घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध।
ऐसे बानक बन गये, बैठी ऐसी विद्ध।।

यही कहावत आन उपस्थित, हुई हमारे मध्य वहाँ।
लगी मान्यता होने अपनी, काफ़ी से भी अधिक वहाँ।।
सदगुरू को अपनी बस्ती का, जान लोग करते अनुमान।
यह तो हम ही में से है इक, हुई नहीं उनकी पहचान।।
है हक्की सूरत सदगुरू की, शुद्धाति शुद्ध सत्य का रूप।
छिपी हुई थी बात सभी से, सदी तेरवीं का है रूप।।
हैं अध्यक्ष क़ायमी के ये, इस से सब अनभिज्ञ रहे।
थी अंतिम छवि प्राणनाथ की, इससे सभी अनभिज्ञ रहे।
मान न दे पाये ता कारण, संग रहकर भी जुदा रहे।।
काम ठठेरे का करते थे, था यह पेट बोझ व्यवसाय।
भार ग्रहस्थी चलती थी यों, होती थी इस ही से आय।।
हम में कुछ विशेषता समझी, लगी ख्याति अपने होने।
पहुँचा हुआ महात्माँ हमको, लगी समझने सब नगरी।।
हारी बीमारी औ संकट, पड़ने पर आते नर नार।
जो हम कहते या दे देते, ठीक उतरता सभी प्रकार।।
संकट ग्रस्तों को जो कहते, संकट उससे हट जाता।
भश्मी या विभूति देने पर, रोगी चंगा हो जाता।।
इस प्रकार से हमें मान्यता, नागरिकों ने दी अत्यन्त।
जिसे समझते थे हम बाधा, बाधा भी कैसी बे अंत।।
उनके आन जान से हमको, विघ्न बहुत ही होता था।
हरदम कोई खड़ा ही रहता, भजन भंग यों होता था।।
एक रोज़ आकर इक व्यक्ति, सोन गिरी का मेरे पास।
लगा श्री सदगुरू जी के प्रति, करने निंदनीय बकवास।।
मतलब था बुराइ से उनकी, सो उसने आरम्भ करी।
उसकी जब बकवास सुनी यह, हमने उसको मना करी।।
भाइ यहाँ ऐसा मत बोले, निंदा करना ठीक नहीं।

Nijanand App

किंतु रहा बकता ही फिर भी, मानो अपनी नहीं सुनी।।
बार बार हमने वह रोका, पर वह व्यक्ति नहीं माना।
बस हमने आवश्यक समझा, उसका वाँ से उठ जाना।।
हमने कहा उसे उठ जाने, को लेकिन वह नहीं उठा।
कहने लगा चाहे मर जाऊ, पर याँ से नंहि उठने का।।
जब इतना उद्दण्ड बना वह, अपने मुँह से निकल पड़ा।
मरना तो है ही तुझकोपर, जाकर अपने घर मरना।।
जैसे तैसे उसे उठाया, जब पहुँचा अपने घर।
मरणा सन्न अवस्था हो गइ, जाते ही उसकी घर पर।।
नब्ज़ वब्ज़ इत्यादि छूट गइ, आँखें पहुँच गई कप्पाल।
दम दरूद कुछ रहा न अंदर, बड़े तंग से दीखे हाल।।
घर पर पड़ा पीटना इकदम, हाय राम यह क्या बीती।
रिश्तेदार पड़ौसी आदिक, भाग आए सुनकर उसकी।
कोइ ऊपरी ब्याधा कोइ, भड़की वायु बताता था।।
नशा कोई विष कोई बताता, रोग कोई समझाता था।।
लेकिन एक व्यक्ति यों बोला, यह तो अभी वहाँ पर था।
जहा महात्माँ सीता रामी, रहता है वहाँ बैठा था।।
सीतारामी नाम हमारा, पड़ा सिर्फ़ उस घटना से।
जब हम पड़े मिले मुर्दा से, सीता रामी मंदिर में।।
तब ही से सब सीता रामी, बाबा हमको कह उट्ठे।
नाम हमारा बना यही बस, हम भी बोला करते थे।।
छिड़ी हमारे ऊपर चर्चा, उस ही ने कुछ किया इसे।
सुन कर के इतनी घर वाले, पास हमारे दौड़ पड़े।।
पैरों पर गिर पड़े हमारे, क्या अपराध हुवा उससे।
मरणासन्न अवस्था को क्यों, पहुँचाया महाराज उसे।।
उसकी तो हालत ख़राब है, किरपा कर दो चल करके।
क्या हो गया महात्माँ उसको, जाते ही घर पर याँ से।।
अच्छा बिच्छा बैठा था यहाँ, निकट आपके अभी अभी।
नब्ज़ छूट गइ उसकी तो अब, महाराज घर जाते ही।।
सुन ली हर प्रकार की बातें, जब उन लोगों की हमने।
बोले भइय्या हम क्या जानें, यह तो गुरू देव जानें।।
या बस वही जानता होगा, हमको कुछ मालूम नहीं।
बिना बात हम क्या बतलादें, गुरू देव पर जाओ वहीं।।
बड़ी मिन्नतें की अपने घर, साथ लिवा ले जाने को।
चाह रहे थे घर ले जाना, कृपा द्रष्टि करवाने को।।

Nijanand App

हमने कहा अकेले अपना, जाना ना मुमकिन समझो।
अगर चलें गुरू देव साथ तो, जाना फिर सम्भव समझो।।
जब तक साथ न लाओ उनको, चलने को मत कहो हमें।
यदि वे चलें वहाँ तो हम भी, साथ साथ चल सकते हैं।।
बड़ी प्रार्थनाओं के पीछे, गुरू देव तय्यार हुवे।
जब हमने वे जाते देखे, हम भी उनके साथ हुवे।।
दी विभुती जाते ही अपनी, गुरू देव ने बटुवे से।
हुई अवस्था ठीक तत्क्षण, उस विभूति के देने से।।
छूटी जब अस्वस्थ अवस्था, होश हुवा जिस समय उसे।
पैरों पर गिर पड़ा भाग कर, लिपटा सदगुरू चरनों से।।
हम बोले उससे समझे कुछ, जिसकी निंदा करते थे।
उस ही की किरपा से बेटा, प्राँण आपके आज बचे।।
रोने लगा हमारी सुनकर, दम न मार, पाया आगे।
ख़बरदार आइन्दा के लिए, ऐसे मत बकना आगे।।

कोई न कोई आकर हमको, करता रहता तंग।
बाधा पड़ती भजन हमारा, होता इससे भंग।।

एक और आ धमका इक दिन, बोला आते ही हमसे।
आज हमारी इच्छा है कुछ, चमत्कार देखें तुमसे।।
हमने कहा भाई हम साधू, चमत्कार से क्या मतलब।
प्रश्न आपका बड़ा असंगत, और बहुत ही है बेढ़ब।।
चमत्कार की यदि इच्छा है, तो मैं कहता हूँ जाओ।
किसी तांत्रिक विद्यावाले, के नज़दीक चले जाओ।।
या कुछ चमत्कार स्याने भी, दिखला सकते हैं तुमको।
ऐसी विद्याओं से कुछ भी, मतलब नहीं भाइ हमको।।
बातें करते बड़ी बड़ी पर, चमत्कार के नाम सिफ़र।
चमत्कार क्या और दिखावें, बिल्ऐवज़ तेरे आकर।।
दुनियांदारों को बहकाना, फुसलाना ही आता है।
करामात पल्ले नंहि तो फिर, कहो तुम्हें क्या आता है।।
नाम बड़े औ दर्शन छोटे, क्या है सिर्फ़ ढ़ोंग है पास।
मार दिया तुम जैसों ने ही, इस दुनियाँ का सत्यानाश।।
उस दिन तो कह सुनकर उसको, हमने वहाँ से उठा दिया।
नंद लाल यहाँ यों मत भोंको, चलो उठो औ भगा दिया।।
रूका न लेकिन आना उसका, जब भी उसको वक्त मिला।

Nijanand App

मगज़ मारने को हमसे बस, नंदलाल आ ही धमका।।
बिना पैर सिर की बातों को, घंटों बकता रहता था।
जब आता जब चमत्कार की, माँगें करता रहता था।।
हमने काफ़ी रोज़ टलाया, पर वह मान नहीं पाया।
तो हमने मजबूर एक दिन, श्री सदगुरू को बतलाया।।
नंद लाल महाराज रोज़ दिक़, करता है हमको आकर।
चमत्कार दिखलादों कोई, कहता रहता है आकर।।
रोज़ टालता रहता हूँ मैं, पर वह बाज नहीं आता।
समझाता हूँ रोज उसे पर, उसकी समझ नहीं आता।।
अब जो आज्ञा हो बतलादो, गुरू देव बोले सुनकर।
कल जब नन्दलाल आ जावे, तो कहना यों समझाकर।।
परसों दिख जावेगा बच्चा, चमत्कार यों कह देना।
मनो कामना पूरी होगी, संदेशा यह दे देना।।
अगले दिन जब आया वह तो, हम बोले भइय्या नंदलाल।
चमत्कार देखोगे ही क्या, या कर बैठे उसकी टाल।।
बोला नंदलाल बातें ही, बातें हैं तुम पै केवल।
यदि होता तो दिखला देता, तुम में नहीं कोइ भी बल।।
हम बोले तो अच्छा कल को, सावधान होकर रहना।
चमत्कार आवेगा कल को, साक्षात् दर्शन करना।।
मनो कामना पूर्ण आपकी, परमात्माँ कल करदेंगे।
चमत्कार नंदलाल तुम्हें कल, घर पर ही दर्शन देंगे।।
अब अधीर मत होना भइया, मनो कामना पूर्ण हुई।
प्रबल लालसा थी भाई सो, कल अब कोई दूर नहीं।।
चला गया नंदलाल वहाँ से, जभी हमारे सुनकर बोल।
उसने शायद सुन रखा था, चमत्कार है कोई मख़ौल।।
अगले दिन नंद लाल महाशय, बैठे थे घर के अंदर।
कमर लगी थी एक भींत से, गिरी एक दम से ऊपर।।
थी छोटी दीवार मगर, काफ़ी थी नंद लाल जी को।
हडडी पसली की दुरूस्त सब, तोड़ फ़ोड़ कर के उनको।।
चारों ओर मचा बावैला, भगदड़ मच गइ लोगों में।
नंद लाल दब गया भींत के, नींचे दौड़े सुन सुन के।।
जैसे तैसे आदमियों ने, बाहर उसे निकाल लिया।
चिंताजनक मगर हालत थी, जैसे अब प्रणान्त हुवा।।
चारों ओर उड़ी अफ़वाहें, नंदलाल दब कर मर गये।
कुछ उसके घर के संबंधी, अपनी कुटिया पर पहुँचे।।

Nijanand App

बाद्य किया घर ले चलने को, पर हमने इंकार किया।
जब तक गुरू महाराज न जावें, हमसे आकर मत कहना।।
उनके बिना अन्य के द्वारे, जायेंगे हम नहीं कभी।
सुन कर के गुरू जी को लेने, उन में से भग गये तभी।।
ऐकत्रित हम दोनों को कर, चले साथ ही ले करके।
हमने नंद लाल को देखा, उसके घर पर जा करके।।
इतना होश उसे बाक़ी थी, ताके हमको पहचाने।
हमें देखते ही वह इक दम, लगा जोर से डकराने।।
मुझे माँफ़ जल्दी कर दो, क्यों के मैं जाने वाला हूँ।
और आपका हूँ अपराधी, सज़ा भुगतने वाला हूँ।।
नंद लाल अब नंहि बचने का, कृपा करो प्रभु कृपा करो।
कह दो तुम्हें माफ़ करते हैं, बस इतना अहसान करो।।
बोले गुरू महाराज अरे भइ, नंद लाल क्यों जाते हो।
इतने तुम हताश क्यों हो गए, मरूँ मरूँ चिल्लाते हो।।
चमत्कार तो अभी बहुत हैं, उनको कौन सम्भालेगा।
तुम यदि चले गये तो उनको, कोइ न देखे भालेगा।।
व्यर्थ जाँएगे वे बेचारे, क़दरदान था तू ही एक।
तू ही चला गया तो उन पर, क्या बीतेगी यह तो देख।।
कहते ही गुरूदेव एक दम, खड़े हुवे घर चलने को।
किन्तु आग्रह नंदलाल से, की हमको रूकवाने को।।
महाराज ठहरो बस जब तक, जब तक निज प्रांणान्त न हो।
यह शरीर अपना विषयों का, भगवन जब तक शान्त न हो।।
हो सकता है मिले शान्ति कुछ, महात्माओं के होने पर।
अंतिम बार दरश कर लूंगा, यहाँ आपके रहने पर।।
अभी न मरने देंगे तुमको, बोले गुरू महाराज पुनः।
दी विभूति अपने बटुवे से, गुरू देव ने उसे अतः।।
ठीक हुवा उसका शरीर तो, पर बुद्धी पर हुवा असर।
बुद्धि रहां करती बैकुण्ठ, वासियों की सी आठ पहर।।
देव व्रत्ति अंदर जग उट्ठी, दान पुन्न रहता हर वक्त।
इक विरक्त सी हालत हो गइ, जंचने लगा एक दम भक्त।।
भर भर घड़े दूध कुटिया पर, भिजवाता रहता नंदलाल।
वस्त्र अन्न आदिक बटवाता, रहता जो मिलता कंगाल।।
इस मंदिर में अन्न भेज दो, उस मंदिर में भेजो दाल।
इस आश्रम में चावल भेजो, ऐसे बने श्री नंदलाल।।
फ़लाँ महात्माँ को जिमवादो, फ़लाँ फ़लाँ को दे दो दान।

Nijanand App

इस प्रकार की व्रत्ती उसकी, एक माह तक चली निदान।।
साधारण से स्तर का घर, सहे कहाँ से इतना भार।
घर वाले उसकी वृत्ती से, थक करके हो गए लाचार।।
उसके इस उदार भावों से, तंग बने घर वाले अब।
घर में भूनी भाँग न छोड़ी, ख़ाली करके छोड़ा सब।।
लुटा दिया अपने हाथों से, उड़ा दिया सब राख समान।
दान वीर बन बैठे इकदम, नंद लाल जी कृपा निधान।।
नंद लाल के घर वालों ने, करी प्रार्थना जा करके।
महाराज जी क्षमाँ करो अब, तो उसको किरपा करके।।
उजड़ गया घर सारा उसका, दिया दान का ऐसा रोग।
घर में अन्न न बरतन बस्तर, हंसते सोन गिरी के लोग।।
अब तो मेहेर फेर दो अपनी, अब तो करो महात्माँ माँफ़।
अगर कोइ ग़लती है उसकी, उसे थूक दे मन से आप।।
हम ये बातें श्री सदगुरू के, कानों में कह कर आये।
सुनकर इस प्रकार की गाथा, सदगुरू साहिब मुस्काये।।
हमसे उनसे कह कर के झट, नंद लाल को बुलवाया।
उसका इक सुफ़ारशी उसको, अपने साथ लिवा लाया।।
देख उसे श्री सद गुरू बोले, चित्त प्रसन्न भी है नंदलाल।
सुना है अब तो दान पुन्न में, कर रक्खा है बड़ा कमाल।।
भोग भोग रहे हो धरती पर, अब बैकुण्ठ निवासी का।
चमत्कार की मन में इच्छा, अभी और बाक़ी है क्या।।
बोला नंहि नंदलाल काठ सा, बना सामने खड़ा रहा।
करूणा कर उसपर सदगुरू ने, फिर उसको प्रसाद दिया।।
साधारण हो गई अवस्था, उस विभूति निधि से इकदम।
नंद लाल फिर कभी न बोला, मारा नहीं सामने दम।।

छत्र छाँए हम पर सदगुरू की, जिसमें रहते मस्त।
साक्षात पूर्णाति पूर्ण थे, थे सदगुरू सिद्धस्थ।।

जहा झोंपड़ी थी अपनी, उसका मालिक था एक किसान।
थोड़ी जगह मांग सदगुरू ने, बनवाया अपना स्थान।।
भजनों बजनों आदि कर्म के, लिये हमें वह काफ़ी थी।
निकट रहूँ हरदम मैं उनके, यह सदगुरू की इच्छा थी।।
कभी व्यवस्था खाने वाने, की नंहि करनी पड़ी हमें।
हर आवश्यक वस्तु समय पर, मिलती थी तय्यार हमें।।

Nijanand App

बना बनाया खाना पाता, पाता बना बनाया साग।
धूना निज चैतन्य मिला, करता था मिलती उसमें आग।।
दीपक तक जलता मिलता था, जानें कौन किया करता।
पका पकाया बना बनाया, हर सामान धरा मिलता।।
मस्त भजन में रहते हम तो, हर प्रकार की मौज रहीं।
सदगुरू की कृपाओं से अपने, पास न रहती कोइ कमी।।
उसी खेत का मालिक इक दिन, आ बैठा अपने नज़दीक।
पहले तो आते ही उसने, पूछी हमसे दुख तकलीफ़।।
फिर आरम्भ किया यों कहना, महाराज जी इक दिन मैं।
फंसा बड़े चक्कर में आके, बतलाता हूँ आज तुम्हें।।
आप महात्माँ हो यदि तुमसे, भेद छिपाऐं उचित नहीं।
कह देना उत्तम है तुमसे, कोई छिपानी ठीक नहीं।।
यहाँ प्रेत रहता है कोई, सत्य बताता हूँ महाराज।
बहुत रोज़ से मनमें थी सो, कहता हूँ मैं तुमसे आज।।
इसी खेत में जिसमें तुम हो, लगा खड़ा था मक्का से।
फेरा फटका चला मारने, मैं इक दिन अपने घर से।।
कोई जानवर तो नंहि इसमें, अर्ध रात्रि थी जब आया।
कोई तोड़ रहा ज्यों कुकड़ी, शब्द कान ऐसा आया।।
बाड़ नागफन चारों खूँटों, सोचा कोई घुसा जैसे।
पशु तो जा नंहि सकता अंदर, यह मनुष्य ही है वैसे।।
आज नहीं छोडूँगा इसको, बिन पकड़े मैंने सोचा।
और लठ्ठ ले हाथ महात्माँ, जी मैं बस अंदर पहुँचा।।
ज़्यादा धिनका खेत नहीं था, सारे में फिर गया तुरंत।
नहीं चोर ना कोई आहट, मिली महात्माँ जी उस वक्त।।
कोने कोने पेड़ पेड़ पर, फिर जाने के बाद मुझे।
जब कोई नंहि पाया तो फिर, बड़ा ताज्जुब हुआ मुझे।।
डूबा हुआ उन्हीं फ़िकरातों मैं बाहर मैं जब आया।
बिल्कुल उसी तरह का आहट, मेरे कानों फिर आया।।
हिम्मत सी कर घुसा फेर मैं, पर परिणाम रहा वो ही।
लागा सोचने बाहर आकर, उन चोरों की चालाकी।।
बाहर तो प्रतीत होता है, पर अलोप होता अंदर।
चोर नहीं है साधारण यह, है यह कोई बड़ा चतुर।।
पहले जैसा हाल हुवा फिर, भागा फिरता हो कोई।
हमें लगा स्पष्ट कि कुकड़ी, तोड़ता फिरता हो कोई।।
ले लाठी घुस गया खेत में, मैं इस बार सोचकरके।

Nijanand App

अबकी बार न छोडूँगा मैं, जो है इसको बिन पकड़े।।
भाग भाग कर लगा खोजने, लेकिन चोर नहीं पाया।
जँचा और ही फिर अपने को, सर फिर भय सा चढ़ आया।।
भय बढ़ता ही चला गया फिर, भय से मैं बेहोश हुआ।
गिरा खेत में ही उस भय से, इतना भय का कोप हुआ।।
किस प्रकार पहुँचा अपने घर, कौन उठा ले गया मुझे।
ऐसा ताप चढ़ा के मुश्किल, से ही अपने प्राँण बचे।।
कुछ दिन के पश्चात् सुनी जब, उससे उसकी अपबीती।
एक रोज़ हमने भी हूँ हूँ, जैसी इक आवाज़ सुनी।।
हूँ हूँ के अतिरिक्त और कुछ, समझ नहीं आया हमको।
ध्यान भंग सा हुआ हमारा, नज़र न आया अपने को।।
उसी दिशा को लालटैन ले, निकल पड़े हम कुटिया से।
आगे आगे शब्द चला और, पीछे पीछे हम उसके।।
शब्द शब्द चलता दिखता बस, व्यक्ति न दिखता था कोई।
जान लिया यह प्रेत आत्माँ, है अवश्य ही आज कोई।।
चले गये हम पीछा करते, गया खेत से बाहर जब।
तो हम उसी दिशा से बोले, ख़बरदार मत आना अब।।
इस प्रकार बाहर कर उसको, कुटिया पर वापिस आया।
जब तक वहाँ रहे दोबारा, प्रेत आत्माँ नंहि आया।।

कहाँ तलक गिनावाए हम क्या क्या बीती संग।
ऐसों ऐसों से होता था, भजन हमारा भंग।।

एक बार बीती कुछ ऐसी, पासा जिसने बदल दिया।
कारण बने कार्य होने के, बड़ा अटपटा कार्य हुआ।।
एक बीमारी निज गुरू भाई, की पत्नी को हुई ऐसी।
बड़ी भयंकर हालत करदी, उस बीमारी ने उसकी।।
चिंता जनक अवस्था हो गई, जब घर में बेचारी की।
ख़बर श्री सदगुरू को आकर, उसकी बीमारी की दी।।
मंशा था इलाज करवाओ, या ख़ुद करो कोई तदबीर।
हमने कहा श्री सदगुरू से, के अपने भाई की वीर।।
बहुत सख़्त बीमार पड़ी है, उसे देख लो चलकर के।
गुरू वाक्य को ब्रह्म वाक्य हम, मन में समझा करते थे।।
बोले सदगुरू चिंता क्या, सब ठीक ठाक हो जायेगी।
बीमारी वीमारी जो है, आप चली सब जायेगी।।

Nijanand App

परमात्माँ के वचन समझ के, हम आगे नंहि बोल सके।
जो कहते वे हो जाता था, सुनकर हम ख़ामोश रहे।।
अपना निश्चय बड़ा प्रबल था, क्यों न होए जो गुरू कहदें।
जो कहदें हो जायेगा फिर, चिंता क्यों बेकार करें।।
किन्तु अवस्था गई बिगड़ती, गुरू भाई की पतनी की।
हालत बद से बदतर हो गइ, शनः शनः बेचारी की।।
सब हमसे कहते आकर के, अजी कहो अपने गुरू से।
खुद उनके घर बीमारी है, क्यों न देखने घर जाते।।
औरों को संजीवन देते, फिरते रहते हैं हर वक्त।
अपने घर का ध्यान नहीं कुछ, जब बीमारी इतनी सख़्त।।
नम्र निवेदन श्री सदगुरू से, हमने तत्पश्चात् किया।
अब अवश्य चलकर घर देखो, सदगुरू को मजबूर किया।।
बार बार कहने पर अपने, श्री सदगुरू लाचार हुवे।
किसी तरह से चलने को घर, आख़िर वे तय्यार हुवे।।
साथ साथ हम भी थे उनके, हम दोनों जब घर पहुँचे।
देख दाख कर हालत उसकी, इस प्रकार सदगुरू बोले।।
मर्ज़ इसे कुछ भी तो नंहि है, क्या होता यदि मर जाती।
देकर के संजीवन इसको, फिर जिंदा कर ली जाती।।
पड़ी हुई है ठीक ठाक ये, किसी बात की फ़िकर नहीं।
देकर सान्त्वनाऐं सी सब को, सदगुरू वापिस गये वहीं।।
क्षण उपरान्त सूचना पहुँची, उसका तो प्राँणान्त हुवा।
सुनकर के संदेश शीघ्र ही, मैं सदगुरू के ढिंग पहुँचा।।
सुनते ही घर चले एक दम, पहुँच गये हम दोनों साथ।
श्री सदगुरू ने देखा जाकर, अपनी पुत्र वधू का हाथ।।
मृत शरीर पाया अबला का, बोले तो चिंता क्या है।
जीवित इसे करेंगे हमने, तुम्हें वचन दे रक्खा है।।
पर होगी शमशान पहुँच कर, जल्दी से तय्यार करो।
दाह कर्म की सामिग्री सब, लेकर इसके साथ चलो।।
रोते और पीटते सब ही, ले उसको शमशान चले।
ज़िंदा होगा शव मरघट में, तमाशबीन बहु साथ चले।।
नर नारी जानें कितने थे, किन्तु ताज्जुब था सब में।
हम भी स्वयं भ्रमित ही से थे, वचन दिया है सदगुरू ने।।
शव अवश्य ज़िंदा होवेगा, जो कहदेते होता है।
निकल गई जो भी ज़बान से, ज्यों का त्यों सब होता है।।
जीवन दान मिलेगा क्यों नंहि, शव मरघट में जब टेका।

Nijanand App

तो लोगों ने आग्रह की, द्रष्टी से सदगुरू को देखा।।
प्रार्थनाऐं की जन समूह ने, महाराज जीवित करदो।
बोले हाँ हाँ कयों नंहि इसको, ज़रा चिता पर तो धरदो।।
जीवित कैसे नंहि होवेगी, लोगों ने अनुकरण किया।
और मृतक को विधी पूर्वक, झट्ट चिता पर टेक दिया।।
गुरू देव ने किया इशारा, आग और देदो इसको।
संस्कार सम्पन्न हुवा वह, अगनी भी देदी उसको।।
रहे देखते फटी आँख से, जन समूह सब इसका अंत।
जानें कैसे जीवित होगी, सब कहते, जानै भगवंत।।
ताक रहे सब ही उनका मुँह, देखें अब क्या होता है।
किस प्रकार इन लपटों में से, मुर्दा जीवित होता है।।
धू धू करके उठी धधकती, भीषण शव से ज्वाला।
लपट गगन को उठीं भड़क कर, ले इक साथ उछाला।।
भस्माभूत हुवा शव जिसदम, घर की ओर चले गुरू देव।
मगर मार्ग में कहते पाये, चिरंजीव अब रहो सदैव।।
चले गये सब मन सा मारे, अपने अपने घर की ओर।
गुरू महाराज गये अपने, स्थान और हम अपनी ओर।।
उस दिन हमें लगा भय इतना, मौत न कर सकती भयभीत।
सदगुरू साहिब से डर इतना, लगा हो जैसे मौत समीप।।
यही अवस्था रही कई दिन, सदगुरू ने हमें भाँप लिया।
इस कारण वश रम जाने का, कुछ दिन को आदेश दिया।।
आज्ञा शिरोधार्य श्री सदगुरू, करें उलंघन कहाँ मजाल।
छोड़ दिया कुटिया को हमने, साथ हुकुम के ही तत्काल।।
पड़े रहे कुछ दिन पत्थर पर, सोन गिरी से बचकर के।
दिया हमें सदगुरू ने जो कुछ, उसका रस लेते रहते।।

महिमाँ कैसे वरनूँ इनकी है जिभ्या लाचार।
साक्षात् श्री पार ब्रह्म हैं परमधाम सरकार।।

जिस पत्थर पर बैठे जाकर, है वो टेकरी छोटी सी।
रूप गुफ़ा जैसा था उसका, हमने वहीं तपस्या की।।
एक सड़क पड़ती थी सन्मुख, मोटर बहु आते जाते।
उनकी चोंद मारती हमको, भंग ध्यान निज कर जाते।।
बड़ा कष्ट होता था हमको, हमने मना किया उनको।
आप यहाँ से जब गुज़रें कर, लिया करो गुल बत्ती को।।

Nijanand App

जने जने को कहते थे पर, कौन सुने बातें अपनी।
सड़क आपकी है क्या बाबा, सब की यह आवाज़ सुनी।।
सहन किया बहुतेरा हमने, पर पी पी नक्कारों में।
घुल मिल कर ही रह जाती है, पहुँच न सकती कानों में।।
बैठे थे इक रोज़ ध्यान में, मस्त मौज में थे अपनी।
आया इक अंग्रेज़ कार से, तेज़ रोशनी थी उसकी।।
पड़ी आँख पर आकर जिसदम, गुरू महाराज़ शब्द निकला।
बंद रोशनी हुई उधर झट, मोटर डाइनमो बिगड़ा।।
आती गई मोटरें सब में, कुछ कुछ होता चला गया।
सरक न पाई आगे कोई, यत्न सभी ने बहुत किया।।
बंद होती जिस वक्त रोशनी, मजबूरी रूकना पड़ता।
मोटर चले भला फिर कैसे, जिसका डाइनमो बिगड़ा।।
हुई इकट्ठी दसियों आकर, मर्ज़ हुआ सब ही में एक।
बड़ा ताज्जुब हुआ सभी को, सोचा है क्या बात विशेष।।
कुछ रोज़ाना वाले भी थे, इक चालक बोला उनसे।
मुझे रोग आ गया समझ में, सनमुख एक महात्मां है।।
बहुत बार रोका है उसने, चलो रोशनी बंद करके।
पर हमने नहीं सुनी उन्हीं की, यह लीला उन ही की है।।
जो अंग्रेज़ प्रथम आया था, सभी कार पर थे उसकी।
जुटे ठीक करने में ड्राईवर, लेकिन जब यह बात सुनी।।
बोल पड़े इक साथ और भी, रोका तो हमको भी था।
ग़ौर न की लेकिन हमने कुछ, बस है उन ही की लीला ।।
आए इकट्ठे होकर हम तक, महाराज जी क्षमा करो।
जान बूझ का ग़लती की है, इस ग़लती पर माँफ़ करो।।
बोर्ड लगाये देते हैं, आईंदा जो भी गुज़रेगा।
पहले बंद करेगा बत्ती, सर भी संग झुकायेगा।।
माँफ़ करो इस वक्त पादरी, साहब भी बोला हमसे।
किया इशारा उन्हें हाथ का, माँफ़ किया सब भाग गये।।
हुकमी बोर्ड लगा उस दिनसे, पड़ी न फिर लाईट हम पै।
कुछ दिन के पश्चात् वहाँ से, हम आगे को निकल पड़े।।
किन्तु रोशनी सदा सदा को, चलते रहे बंद करके।
मानो के क़ानून बना हो, जाते वहाँ से रूक रूक के।।

हम तो चले गये पर अपनी पुजी वहाँ चट्टान।
सभी मुसाफ़िर आते जाते, करने लगे प्रणाम।।

Nijanand App

कुछ दिन के पश्चात् सतपड़ा, मालाओं से होकर के।
नदी तापती के तट स्थित, शहर मुड़ावद जा पहुँचे।।
कपिलेश्वर का मंदिर था इक, आसन उसमें लगा लिया।
नदी तापती और पाँजरा, संगम लेती थीं उस जा।।
बसा हुआ है शहर मड़ावद, इसी पाँजरा के ऊपर।
ख़ुश्क पड़ी थीं दोनों नदियाँ, पर संगम था अति सुंदर।।
पड़ गए हम दोनों नदियों के, उसी सुहावन संगम पर।
आने जाने लगे लोग भी, हमको पड़ा हुआ पाकर।।
पात्रों में पिचकी सी लुटिया, आसन को पृथ्वी माता।
बब्क छुटी रहती थी अपनी, बकते जो भी मन आता।।
हालत अर्ध पागलों जैसी, दाढ़ी मूंछ केश सब एक।
गुथ गुथ उलझ गये आपस में, हो गए मिल सब ऐकम एक।।
हालत फिरते लिये अटपटी, कुछ का कुछ भोंके जाते।
लोग अवस्था देख हमारी, पागल हमें समझ जाते।।
बातों में थी पूर्ण सत्यता, जो कहते वह हो जाता।
थे स्थित गुरू देव हृदय में, सिर्फ़ सत्य यों होता था।।
बैठे जहाँ वहीं बैठे हैं, चिंता का कुछ काम नहीं।
पावन दर्शन होते रहते, आठ पहर ज्यों के त्यों ही।।
जो बोला वह मैं नंहि बोला, अंदर वे बोला करते।
वचन श्री मुख के होते जो, मुख से निकला करते।।
थे निमित्त से केवल हम तो, थे सदगुरू कर्ता धरता।
अपना चोला तो केवल बस, फिरता था धक्के खाता।।
कुछ ठहरे हम संगम पर, आने लगे शहर के व्यक्ति।
गाड़ी छुटी रहा करती थी, अपनी बक बक की हर वक्त।।
न तो ज्ञान चर्चा कह सकते, ना कोइ भक्ति पक्ष की बात।
गहरे में उतरे रहते हम, विषय छिड़ा रहता अज्ञात।।
लोग समझ नंहि पाते उसको, लक्ष न कर पाते संकेत।
पर जानें क्यों आ आ करके, करने लगे अपन से हेत।।
बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति शहर के, आने लगे हमारे पास।
जाने क्या देखा अपने में, कैसे हुआ उन्हें विश्वास।।
सर्व श्रेष्ठ इक व्यक्ति मुड़ावद, जिसको सब पटेल कहते।
अपने बारे में सुन सुनकर, इक दिन वे भी आ पहुँचे।।
उन्हीं दिनों चौदस के मेले, के भरने का दिन भी था।
सदा पाँजरा की रेती में, यह मेला भरता आया।।
इक विशाल तय्यारी उस, मेले की जब आरम्भ हुई।

Nijanand App

इन्तज़ाम जब देखा हमने, तो हम को भी ज्ञात हुई।।
व्यक्ति प्रतिष्ठित शहर मुड़ावद, जब आया अपने नज़दीक।
हमने उत्तम व्यक्ति जानकर, देनी चाही उसको सीख।।
बोले हम पटेल जी यदि तुम, मान जाओ इक अपनी बात।
तो कुछ कहने की इच्छा है, हित की है रक्खो विश्वास।।
आप योग्य समझे हैं हमने, यों हम तुम से कहते हैं।
क्या सेवा है योग्य हमारे, सर आँखों पर लेते हैं।।
दो शब्दों में बात ख़त्म, करते हुऐ हम बोले उससे।
जा तो अब के यहाँ पाँजरा, में मेला मत भरने दे।।
अन्य कहीं भरवादे चाहे, सुन करके पटेल बोला।
महाराज क्या बतलाऐं यह, सदा यहीं भरता आया।।
यही एक स्थान नि़यत है, इसका हटना मुश्किल है।
मुझ इकले की बात नहीं है, यह तो कुल पबलिक की है।।
दो दिन के पश्चात् वहाँ, डेरा आ पहुँचा थाने का।
अपना आसन हटवाकर, आदेश हुआ लगवाने का।।
हमें वहाँ से हट जाने को, कहा सिपाही लोगों ने।
थोड़ी दूर अलग हटकरके, आसन लगा लिया हमने।।
थानेदार साहब का डेरा, लग कर के जब खड़ा हुआ।
हम पहुँचे जिस समय दरोग़ा, डेरे में था पड़ा हुआ।।
वही अकेला था डेरे में, बोला हमें देख करके।
साँई साहब क्या ख़्वाहिश है, बैठ जाओ यहाँ आ करके।।
क्या खाना वाना लोगे कुछ, हमने झट इन्कार किया।
उसने कईबार खाने का, अपने से इसरार किया।।
बोला तो तकलीफ़ और क्या, है साँई साहब बोलो।
हमें पता तो चले आप क्या, चाह रहे मुँह तो खोलो।।
हमने कहा आपसे हम कुछ, कहने आये हैं इस वक्त।
ज़िम्मेदार व्यक्ति मेले के, तुम ही केवल हो ऐ भक्त।।
उसने हमें इजाज़त देदी, कहें आप जो कहना हो।
हमने कहा दरोगा जी यह, मेला यहाँ न भरवाओ।।
अपने बसकी बात नहीं है, थानेदार साहब बोले।
यह जाने कब से भरता, आया है इसी जगह बोले।।
अभी नहीं बिगड़ा कुछ इसका, हैं अब तक दस बीस दुकान।
अन्य जगह जा सकता है यह, चाहें अगर आप श्रीमान्।।
उसने पहले जैसा उत्तर, देकर हमको टरकाया।
मैं उसका उत्तर सनकरके, वापिस आसन पर आया।।

Nijanand App

नद्दी के दोनों बाजू पर, इन्तज़ाम दो रहते थे।
उसी रात दूजी बाजू के, प्रबंधकों पै हम पहुँचे।।
वही माँग की हमने जाकर, पर उत्तर कोरा पाया।
चेत कराकर मैं उनको भी, वापिस विवश लौट आया।।
मेला भरने लगा ज़ोर से, रेती में लग गये बज़ार।
दूकानों गाड़ी आदिक का, होता नंहि था कोइ शुमार।।
डेरे तान तान रेती में, व्यक्ति हज़ारों आन पड़े।
नदी पाँजरा के दोनों ही, बाजू थे इक साथ खड़े।।
कहीं कहीं ढालू था थोड़ा, जिससे मेला आता था।
और पेट में नदी पाँजरा, के आकर भर जाता था।।
दोनों ओर कगारें ऊँची, फाँट बड़ा चौड़ा उसका।
पर उन दिनों ख़ुश्क रहती थी, पानी बूंद न रहता था।।
सच पूछो तो लोग वहाँ के, बारिश ही से थे अनजान।
चादर तर हो जावे जिससे, यह थी वर्षा वहाँ महान।।
पड़ी रहा करती थीं नदियाँ, इस कारण से सूखी सब।
पर इस साल न जाने कैसे, मेला भरा बड़ा बेढब।।
मेला जब भर गया पूर्णतः, चौदस की रात्री आई।
अर्ध रात्रि उपरान्त ऊपरी, दिशा से एक ध्वनी आई।।
जैसे कहीं शंख बोला हो, सुना हज़ारों ने उसको।
और विचार भी किया शंख पर, अर्ध रात्रि में बोला क्यों।।
शंखनाद विश्राम काल में, क्या कारण हो सकता है।
किसी देव की आरती वारती, पर ही बोला करता है।।।
साधारण सी बात जानकर, दिया न कोई ध्यान विशेष।
क्या होने आ पहुँचा सर पर, जिससे चले न कोई पेश।।
ठीक एक घंटे के पीछे, नद्दी में आया तूफ़ान।
उमड़ आइ जल राशि कहीं से, जैसे हाँडी बीच उफान।।
चली उफन कर नद्दी ऐसी, मेला सारा लिया लपेट।
भरा पड़ा था नदी पाँजरा, का मानव से छकवाँ पेट।।
कुछ हिसाब नंहि सामानों का, कुछ हिसाब नंहि जानों का।
कुछ नंहि जानवरों का, क्या हिसाब इन्सानों का।।
उठा साथ पानी के सब कुछ, लमहे भर में ले ली रेड़।
सब पदार्थ बह गये एक दम, मिनिट लगी मुश्किल से डेढ़।।
त्राहि त्राहि का उठा शोर इक, जिधर लखो थीं की चींख पुकार।
लाखों की सम्पत्ति मिनिट में, करली जल ने धारों धार।।
ना वर्षा की आशंका कुछ, नहीं बाँध का कहीं गुमान।

Nijanand App

पृथ्वी सी फट गई एकदम, फट गए ज्यों पर्वत पाषाँण।।
प्रलय उपस्थित हुआ कहाँ से, एक पहेली बनी समक्ष।
जान हजारों की जो कर गई, आकर एक मिनिट में भक्ष।।
नहीं निकलने दिया किसी को, बाहर ऊँची ढाँगों ने।
चीतकार जब उठे एक दम, आया मेरे कानों में।।
हम उठकरके चले वहाँ से,पहुँचे पास दरोगा के।
शब्द हमारे कड़कदार थे, जाते ही उससे बोले।।
यही आपका इन्तजाम है, यही नौकरी है तेरी।
बता कौन से गण्डे पर, ठुकरादी थीं बातें मेरी।।
हाथ जोड़ कर बोला साँई, क्या कहदें हम कुदरत को।
अब तो आप ठीक हो बाबा, चाहे जो कहलो हमको।।
तुमको चेत कराया नंहि क्या, जो बनते हो अब निर्दोश।
तुम भी इसी तरह यदि बहते, तब तुमको आती कुछ होश।।
नक्कारों की चोबों में, पी पी की कौन सुने आवाज़।
धौंस जहाँ बजती रहती हों, कोइ न सुनता छोटा साज़।।
हमको तो पागल समझा, होगा क्यों रे ओ थानेदार।
पागल भी अव्वल दर्जे का, खुद को समझा था हुशियार।।
बता कौन इतनी जानों का, ज़िम्मेदार बनेगा अब।
सर नींचा क्यों किये खड़ा है, उत्तर क्यों नंहि देता अब।।
लाखों की सम्पत्ति मिनिट में, तेंने ज़ायल करवादी।
चेत कराने पर भी पबलिक, नाहक़ तेंने मरवादी।।
उत्तर नहीं दिया कुछ उसने, सूंघ गया हो जैसे साँप।
रौद्र रूप मेले का लखकर, थानेदार रहा था काँप।।
छोड़ गये स्थान तभी हम, घुस गये गहन जंगलों में।
पर्वत जंगल चले लाँघते, इकचित हो अपनी धुन में।।
जिस को होश नहीं बाहर का, मार्ग कौन खोजे उसका।
सीध नाक की चलता वह तो, रक्षक उसका परमात्माँ।।

इश्क में डूबा सो डूबा और गया।
इश्क जिसका जैसा वैसा बन गया।।

चार पाँच दिन चलने के, पश्चात् गाँव इक हाथ आया।
करो यहीं विश्राम हमारे, हमारे मन में कुछ ऐसा आया।।
लगा लिया आसन बाहर ही, पेड़ तले उस बस्ती के।
कुछ अजीब से ही मकान, उस बस्ती के हमको दीखे।।

Nijanand App

पंद्रह सोलह फुट ऊँचे, बाड़ों के बड बड़े थे घेर।
पैने काँटों के झाड़ों से, छपे पड़े थे चारों फेर।।
दर झाड़ों के घर झाड़ों के, झाड़ों की ही दीवारें।
सारा गाँव झाड़ सा लगता, जिधर जिधर द्रष्टी डालें।।
हमें देखकर एक व्यक्ति उन, ग्रामीणों में से आया।
और हमारे पास आनकर, उसने हमको समझाया।।
बाबा जी तुम यहाँ न ठहरो, यहाँ शेर आ जाता है।
रोज़ यहाँ के ग्रामीणों को, आकर तंग बनाता है।।
आप घेर में ठहरें अंदर, बाड़े में विश्राम करो।
हमने कहा भाई तुम जाओ, जाके अपना काम करो।।
हमसे क्या कहना है उसने, क्या मतलब बेचारे का।
हम पै कुछ सामान नहीं है, उसके चारे वारे का।।
आप पड़ें बेफ़िकर हमारी, चिंता कोई मत करना।
हमें तंग नंहि करता कोई, फ़िकर हमारी मत रखना।।
सीधा साधा उत्तर हमसे, पाकर वो ख़ामोश हुआ।
बिना कहे कुछ तब तो वह, अपने सन्मुख से चला गया।।
पुनः शाम को फिर आया, आकर खाने के लिये कहा।
हम रात्री को नहीं जीमते, हमने उस से मना किया।।
वह फिर भी इक पाव दूध, इन्कार किया पर ले आया।
हमने पी पा करके उसको, अपना धूना सिलगाया।।
बैठ गये ध्यानस्त पेड़ के, नींचे हम निज भाओं में।
अर्ध रात्री उपरान्त खलबली, मची वहाँ की गायों के।।
नथनों से नाकों के फूँ फूँ की फुँकारें आती थीं।
ज़ोर ज़ोर से मिलकर गऊऐं, एक साथ रंभाती थीं।।
उसी आदमी ने फ़ौरन, बाड़े का फिर फाटक खोला।
शेर आ चुका है बाबा, अंदर आजाओ यों बोला।।
हमने पहले जैसा उत्तर, देकर के ख़ामोश किया।
उसने हमसे सीधा उत्तर, पाकर फाटक बंद किया।।
क्षण उपरान्त सिंह आकर, धूने से बचकर खड़ा हुआ।
ताका किया देर तक हमको, आख़िर वापिस लौट गया।।
घंटे दो घंटे के भीतर,मची खलबली फिर अंदर।
हमें बुलाने को उसने, बाड़ा खोला फिर घबराकर।।
रहा टेरता हमको वह पर, हम बिलकुल ख़ामोश रहे।
आकर लौटा नंहि जब तक, बन राज गायों में शोर रहे।।
लौटा कई बार आ आकर, सिंह वहाँ से हो लाचार।

Nijanand App

हाथ लगन कुछ हुई न उसको, पौ फट आई आख़िरकार।।
प्रातः ही वह व्यक्ति आनकर, निकट हमारे यों बोला।
और प्रभावित सा हो हमसे, हाथ जोड़ कर मुँह खोला।।
बचवादी इक गाय आपने, रात हमारी बाबा जी।
कृपा आपने की हमने तो, तुम्हें उठाना चाहा भी।।
यह जो सिंघ रात आया था, नियम पूर्वक आता है।
कूद काद बाड़े में से, इक गाय रोज़ ले जाता है।।
उपस्थिती से रात आपकी, हिम्मत नहीं पड़ी उसकी।
तीन बार आ आ कर लौटा, किरपा सिर्फ़ आपकी थी।।
आप यहीं स्थाई रूप से, ठहरें तो अति किरपा हो।
ख़र्च आपका मेरे ज़िम्मे, बाबा जी चाहे जो हो।।
किन्तु न जावें आप यहाँ से, हम पर बड़ी कृपा होवे।
आप यहाँ ठहरें तो नगरी, कम से कम सुख से सोवे।।
हमने कहा मौज है अपनी, जहाँ चाहा विश्राम किया।
जब जी उचटा उठा कमलिया, हमने अपना मार्ग लिया।।
अपने राम किसी के नौकर, या कोई पहरेदार नहीं।
सिर्फ़ एक के चाकर हैं हम, और हमारा यार नहीं।।
उठा कमलिया उसी रोज़, हमने वहाँ से प्रस्थान किया।
घने पर्वतों और जंगलों, का उठकरके मार्ग लिया।।
कई रोज़ जंगल ही जंगल, मार्ग चले गए तै करते।
आख़िर एक ग्राम फिर आया, उसके अंदर जा पहुँचे।।
आसन लगा गाँव की जड़ में,बैठे ही थे जाकर के।
रोने की आवाज़ कान में, पड़ी हमारे आकर के।।
एक व्यक्ति था खड़ा पास ही, हमने उससे पूछ लिया।
क्यों भाई यह कौन रो रहा, उसने हमें जवाब दिया।।
बाबा जी इक औरत है यह, था जवान बेटा इसका।
उसे साँप ने काट लिया है, अभी यहीं है पड़ा हुआ।।
देख रहे हैं सब आ जाकर, बाबा जी तुम भी देखो।
विधवा है बेचारी उसके, बेटे पै कुछ कृपा करो।।
इक लौता बेटा है उसका, नहीं आसरा कोई दूजा।
सारे जीवन दुखी रहेगी, चल कर बाबा करो कृपा।।
सौ आते यहाँ सौ जाते यहाँ, सरोकार क्या अपने से।
हम जा करके क्या कर लेंगे, बच्चा हमको रहने दे।।
किन्तु चिपट सा गया हमें वो, हमने बहुत किया इंकार।
चलना पड़ा साथ में उनके, आख़िर हमको हो ला चार।।

Nijanand App

जब उस घर में जा पहुँचे हम, हमें देखकर उसकी माँ।
आ चिपटी अपने पैरों से, बहुतेरा हमने झिड़का।।
करने लगी रूदन पड़ करके, क्षमाँ इसे करदो भगवन।
साक्षात् भगवान आप हो, दे दो प्रभो इसे जीवन।।
मेरा सिर्फ़ आसरा यह ही, जग में कोई नहीं अपना।
हमने करी प्रार्थना उससे, देवी तुमसे करी मना।।
हम क्या कर सकते हैं इसमें, काल नहीं बसका अपने।
छोड़ो पैर हमें मत लिपटो, छोड़े नहीं पैर उसने।।
माँफ़ करो पग तब छोडूँगी, तुममें हैं सारी सामर्थ।
हैं भगवान आज घर मेरे, मेरी बात नहीं है व्यर्थ।।
या फिर साथ साथ बेटे के,मेरी भी भेजो अर्थी।
पैर तभी छोडूँगी जब, मंजूर करो मेरी अर्ज़ी।।
छोड़े पैर न जब बुढ़िया ने, चक्कर में मैं फंसा खड़ा।
श्री सदगुरू महाराज करेंगे, किरपा मुँह से निकल पड़ा।।
नहीं उठााना सूर्य उदय तक, जल प्रवाह भी मत करना।
गुरू महाराज ठीक कर देंगे, श्रद्धा चरणों में रखना।।
लेकर वचन पैर छूटे तब, हम छुटकर बाहर आये।
गये नहीं हम जहाँ टिके थे, बिलकुल वहाँ न रूक पाये।।
उसी समय चल दिये वहाँ से, रूकना ठीक नहीं समझा।
सारी रात सफ़र करते रहे, दूर पहुँच कर दिन निकला।।

निकला तीर कमान से नहीं लौटता अब।
हुकुम हाथ से छुट गया भली करेंगे रब।।

मुर्दा अगर कहीं होता है, जगते रहते उसके पास।
सोते नहीं पड़ौसी तक भी, बनता वातावरण उदास।।
चार बजे लोगों ने सोचा, बैठे बैठे थक गए जब।
करो तयारी अजल मजल की, मुर्दा ले चलना है अब।।
छूने दिया न उसकी माँ ने, जब तक सूर्य न निकलेगा।
पड़ा यहीं रहने दूंगी मैं, मुझे नहीं छूने देना।।
काफ़ी किया आग्रह सबने, पागल है क्या बुढ़िया तू।
मुर्दे हुवे कभी क्या जीवित, ले चलने दे हमको तू।।
पानी बन गया गर शरीर का, कोइ न अवेगा फिर पास।
बुढ़िया बोली चले जाओ तुम, मुझ को है उनपर विश्वास।।
बच्चा ठीक होयगा मेरा, ना भी हुवा तुम्हें फिर क्या।

Nijanand App

अपने का मैं आप करूँगी, तुम सब पास नहीं आना।।
लोग चले गए वापिस कहते, देखें जब होगा ज़िंदा।
दो ढाई घंटे के पीछे, जब आकर सूरज निकला।।
तो लड़के ने आँखें खोलीं, उठते ही पानी माँगा।
शोर मचा ज़िंदा होते ही, गाँव देखने को भागा।।
अपनी ढूँढ़ मची इक दम फिर, फिरा ढूँढ़ता जना जना।
लेकिन हमें कहाँ मिलना था, चाहा ही नंहि जब रूकना।।

अन हौनी हम से हुई भली करें श्री राज।
चाहे जो परिणाम हो सरे बिगाने काज।।

कई रोज़ जंगल ही जंगल, मार्ग चले गए तै करते।
आख़िर कार शीरपुर थी इक, बस्ती उसमें जा पहुँचे।।
आबादी नंहि भाती हमको, अंदर घुसते ही नंहि थे।
और मांगने की प्रकर्ति औ, अपने कुछ स्वभाव नंहि थे।।
दिल इतना निर्भय था अपना, हो कोई अपने आगे।
चाहे महा राजा हो बातें, बिना झिझक करते जाके।।
जब से गुरू महाराज हमारे, उर में बैठे थे आकर।
क्या बतलाऐं क्या हो गए हम, उन्हें हृदय में बिठलाकर।।
जैसे हम कितने ही संग है, ऐसा हमें लगा करता।
इकले कभी न रहते थे हम, बीज नाश समझो डर का।।
चढ़े हुवे हैं मानो हम कंहि, पर्वत सी ऊचाई पर।
मानव छोटे लगते जब हम, द्रष्टि पात करते उन पर।।
साथ साथ दुर्बल भी लगते, चाहे हाथी हो आगे।
हमसे लोग लगे डरने कुछ, निज स्वभाव ऐसा पाके।।
ग्राम शीर पुर कस्बा सा था, घने जंगलों में आबाद।
जंगलात की कोठी भी इक, बनी हुई थी उसके पास।।
उसमें रेन्जर औ फ़ौरैस्टर, आदि निरिक्षक रहते थे।
मुसलमान अफ़सर था उनका, जिसे फ़ौरैस्टर कहते थे।।
हम अपने दीवाने पन में, स्वयं खोल कोठी का द्वार।
बिना इज़ाजत लिए किसे से, घुस गये अंदर आख़िर।।
देख हमें आता अफ़सर ने, पूछा अंदर क्यों आये।
हमने कहा मौज है अपनी, यों ही करी चले आये।।
तुम्हें देखकर चाहा हमने, बातें औ सत्संग करें।
हमें औलिया समझा उसने, सोच लिया झट चुप्प रहें।।

Nijanand App

थी उद्दण्ड अवस्था अपनी, हिचक और भय लेष नहीं।
जो जी में आता बक देते, जो मन आया कहा वहीं।।
उसने हमें बिठाने के लिए, आसन घर से मंगवाया।
बिछवाकर आसन अफ़सर ने, सादर हमको बिठलाया।।
बैठ गये हम जब आसन पर, पूछा क्या कुछ खाना है।
सर को हिला दिया हमने, बोले कुछ भी नंहि पाना है।।
सत्य अगर पूछो तो उल्टा, तुम्हें खिलाने आये हैं।
जो रूहानी ग़िज़ा जीमते, तुम्हें चखाने आये हैं।।
उनके साथ मित्र भी था इक, वो भी बैठा था ख़ामोश।
भाव बने अपने कहने के, उतरा कुछ कहने का जोश।।
मुसलिम विषय पकड़के हमने, जब कहना आरम्भ किया।
झूम उठे मुसलिम प्रसंग पर, ऐसा उसने दंग किया।।
अश अश करने लगे मुसलमाँ, हिन्दू के मुँह उनकी बात।
रग़वत हुई उन्हें सुनने में, सुनने लगे सभी इक साथ।।
बातें थी सब ही चोटी की, चुटियल कर देने वाली।
हुवे प्रभावित वे सब के सब, बक बक ही नंहि थी ख़ाली।।
लगे ज़िक्र करने आपस में, मुसलमान सारे मिलकर।
निस्संदेह इल्म पूरा है, कैसे बतलाऐं काफ़िर।।
घूम रहे ऐसे क्यों जानें, विद्वत्ता का पार नहीं।
साधू है पहुँचा हुवा कोई, जिसका वार न पार कहीं।।
हम सत्संग के बाद घास पर, बिन आसन ही लेट गये।
वे बेचारे वस्त्र खाट, आदिक बिछवाते हुवे फिरे।।
बहुत आग्रह किया उन्होंने, पर हमने नंहि मानी एक।
लेट गये निर्द्वन्द घास पर, मना करी सेवा प्रत्येक।।
रहा मुड़ावद की यात्रा पर, इक तेली भी अपने साथ।
हमें वहाँ ठहरा हुवा सुनकर, मिलने आया अपने पास।।
तेल बेचने वाला नंहि, बल्के इक जाति कहाती है।
उस प्रदेश में तेली नामक, जाति अलग कहलाती है।।
उस तेली के साथ एक, बच्चा भी लगा चला आया।
बैठ गये आकर के दोनों, कुछ चर्चा भी चलवाया।।
इसके बाद वो बोला हमसे, कहीं घूंम आवें आवो।
हमने भी अनुमति दे दी, ले चलो जहाँ की इच्छा हो।।
पहुँचे जब बाजार में उसने, हमें खिलाना चाहा कुछ।
हमने जब इंकार किया, उपजा उसे बड़ा ही दुख।।
डबडबाई सी आँखें हो गई, हो गया भक्त रूलासा सा।

Nijanand App

मैं प्रशाद लाऊँगा केवल, लेना चाहे ज़रा सा सा।।
इतना कह कर चला गया वो, और ज़लेबी ले आया।
इच्छा प्रबल देखकर उसकी, हमने उसको स्वीकारा।।
किन्तु जलेबी पर चिपका हुवा,पाया कुछ काला काला।
देख अधिक मात्रा में उनको, हमने अपने लब खोले।
भाई ये तुम क्या ले आये, इस प्रकार उससे बोले।।
देख मक्खियाँ उसमें उसने, हमें जीमने से रोका।
हम बोले अब तो जीमेंगे, ऐसा अब नंहि होने का।।
तुम दुकान से भोग समझकर, क्रय करके जब ले लाये।
उस प्रशाद को तुम ही बोलो, फिर हम कैसे नंहि खाऐं।।
इतना कहकर उन जलेबियों, का खाना आरम्भ किया।
खाता हमें देखकर उसने, भी खाना प्रारम्भ किया।।
बोला जब तुम खा सकते हो, मैं क्यों कर नंहि खाऊँगा।
आप नहीं फेंकेंगे तो फिर, मैं भी फेंक न पाऊँगा।।
खा पी कर भोजन मक्खी का, जब हम कोठी में आयें।
तो वह अफ़सर हमसे बोला, बाबा कुछ खा भी आये।।
हम बोले हाँ खा तो आये, पर हमने है विष खाया।
अपनी राज नुँमा बातों को, अफ़सर समझ नहीं पाया।।
जब स्पष्ट किया हमने सब, तब वो कहीं समझ पाया।
उस तेली के व्यौहारों पर, उसको बड़ा क्रोध आया।।
बाद एक घंटे के अपने, पेट में गड़बड़ शुरू हुई।
जब देखी बे कली हमारी, उस अफ़सर को फ़िकर हुई।।
उसने दवा गोलियों से, अपना इलाज करना चाहा।
इनसे ठीक नहीं होंगे हम, हमने उनको बतलाया।।
हमने कहा आप यदि हमको, ठीक चाहते हो करना।
तो गाँजे की चिलम पिला दो, और अधिक कुछ मत करना।।
चिलम नई मंगवा गाँजे की, उस अफ़सर ने भरवायी।
हमने आग्रह किया एक का, पर उसने दो पिलवाई।।
पीते ही हम चिलम एक दम, स्वस्थ हुवे पीते ही साथ।
किन्तु चिलम जो पीते थे हम, लगी हुई थी अब भी हाथ।।
खेंचा अंतिम कश जोरों का, धुँआ बाहर जब निकला।
जो मक्खी खाई थी ड़ारा, वह उड़कर बाहर निकला।।
जब देखीं उड़ती हुई सबने, महाराज यह क्या लीला।
हम बोले बस रहो देखते, यह है मुक्ती की क्रीड़ा।।
बड़े कृपालू हैं श्री सदगुरू, उनकी लीला अपरम्पार।

Nijanand App

उन्हें समझना बड़ा कठिन है, उनका कोई पार न वार।।

किये हुवे को भोगना, पड़ता ही हर हाल।
या केवल सदगुरू कृपा, करती उसे बहाल।।

जाने किस प्रकार सदगुरू को, मेरे प्रति मालूम हुवा।
मुझे बुलाने ग्राम शीर पुर, अपना लड़का भेज दिया।।
दाह क्रिया जिसकी पतनी की, मैंने ही करवायी थी।
आज शक्ल देखी मैंने, उस अपने सदगुरू भाई की।।
उठकर कण्ठ लगा आदर से, प्रेम पूर्वक बिठलाया।
याद किया तुमको सदगुरू ने, यह भाई ने बतलाया।।
पाते ही आदेश गुरू का, हमने उठ प्रस्थान किया।
तीन चार दिन की मंजिल में, श्री चरणों में पहुँच गया।।
बार बार पग चूम नमन कर, साष्टांग्ग प्रणाम किया।
में नंहि कह सकता के कैसा, हमको आशीर्वाद मिला।।
मुखाकृति थी और तरह की, जिसे देख भय लगता था।
भय का वातावरण छोण कर, ही मैं उस दम भागा था।।
बैठो इधर सामने आकर, सदगुरू का आदेश हुवा।
मैं सन्मुख जा पहुँचा उनके, मुह नीचा कर बैठ गया।।
इतना बड़ा हो गया अब तू, लगा जिलाने मुर्दों को।
दख़ल लगा देंने कुदरत में, क्या समझा है उत्तर दो।।
बीच निकल गइ मेरे सुनकर, बैठा रहा किन्तु खामोश।
किस मुँह से मैं बोलू सन्मुख, कैसे कहूँ कि हूँ निर्दोश।।
उसकी जगह कौन जाऐगा, फिर बोले सदगुरू महाराज।
जिसको तेंने रोक लिया है, पूरा कर वह खाना आज।।
बता कौन जाऐगा अब वहाँ, उसकी जगह पूर्ण करवा।
या कुछ खेल समझ रक्खा है, जिसको चाहा दिया जिला।।
कौन जाएगा उत्तर दे अब, मेरे मुँह से निकला मैं।
और कौन है बिलऐवज़ को, भेजो उसकी जगह हमें।।
किये हुवे को कौन भरेगा, हमने किया भरेंगे हम।
तो फिर इधर देख चलने की, तय्यारी कर ले इकदम।।
लगा हुक्म हमको मरने का, उठ गये शीघ्र हुक्म के साथ।
किया स्वच्छ स्थान लीप कर, कुशा बिछाई उस पर आप।।
कर स्नान आए मरने को, चरन लिये सदगुरू आकर।
चरण ध्यान में लेकर अपने, लेटे आसन पर जाकर।।

Nijanand App

यह ले कफ़न शब्द के संग ही, ऊपर चादर आन पड़ी।
हमने उठा संवर उसको, सर से पैर तक ओढ़ी।।
लेट गये आँखें बंद करके, श्री सदगुरू का ध्यान लगा।
सरहाने आसन सद गुरू का, चरनों में मेरा चोला।।
रम गये हम अपने ख़याल में, ज्ञात नहीं क्या हमें किया।
कुछ क्षण में आई अ चेतना, बाहर ज्ञान समाप्त हुवा।।
कितनी देर रही यह हालत, कुछ अनुमान नहीं इसका।
लेकिन आँख खुली जब अपनी, तो अजीब ही था नक्शा।।
श्री सदगुरू की जगह राज जी, मुस्काते बैठे बैठे।
दी आवाज रतन अब उट्ठो, हम चोला ले उठ बैठे।।
हुवा यहाँ क्या अब से पहले, अपने को कुछ ज्ञात नहीं।
लिपट गये श्री राज चरण से, चारू चरण में झुकी जंमीं।।
सावधान हो रतन बाई सुन, जो चोला तुमको बख़्शा।
झण्डू दत्त परातम भेजा, इसमें तुम्हें प्रविष्ठ किया।।
इस चोले में बैठ कायमी, की लीला करनी है अब।
अभी उतरते हैं हम तुम पै, बैठो सावधान हो अब।।
फ़ौरन् ही सुन शब्दों को, बैठ गये आसन लेकर।
इक प्रकाश सा उतरा जैसे, कोटि सूर्य उतरे अंदर।।
अगला पिछला ज्ञान हुवा सब, समझ आइ सारी लीला।
दुख का खेल खिला है क्योंकर, इसका सारा राज़ मिला।।
अगले रोज़ घटी इक घटना, श्री सदगुरू का वह लड़का।
जिसकी धर्म पत्नि मर गइ थी, अनायास ही धाम गया।।
बड़ा एक धक्का सा पहुँचा, पूछो मत जो दुख्ख हुवा।
लखते के लखते ही रह गये, पक्षी ने प्रस्थान किया।।
दाह पुष्प आदिक कर्मों से, दिवस तीसरे जब निपटे।
श्वेत वस्त्र आदिक लाकर, सदगुरू ने हमें प्रदान किये।।
धोती ज़ोड़ा और अँगरखा, पगड़ी और कमण्डल एक।
चदरी देकर कहा कफ़न है, समझो इसको अपना भेष।।
प्रथम नमन कर उन वस्त्रों को, हमने अंग लिये वे धार।
पहने हुऐ देख कर हमको, सदगुरू पुलकित हुवे अपार।।
मंत्र तारतम दिया साथ ही, बिठला आसन पर हमको।
शरण लिये हम बड़े हर्ष से, बख़्शा सब कुछ ही हमको।।
जो प्रसाद आशीर्वाद का, दिया हमें श्री सदगुरू ने।
कुछ समझे कुछ समझ न पाये, कोशिश बहुत करी हमने।।
पर मतलब हम जान गये सब, जो श्री मुख वचनों में था।

Nijanand App

अतुलित धन पर हाथ पकड़कर, जैसे आज दिया बिठला।।
सर्व शिरोमणि घोषित जैसे, किया जँचा हमको ऐसा।
जिस धन पर बिठलाया तुमको, धन नंहि है ऐसा वैसा।।
श्री सदगुरू आशीर्वाद, रूपी धन हमको देकर दान।
गदगद और प्रफुल्लित बेहद, द्रष्टि पड़े हमको श्रीमान।।
बिखरी पड़ती थी मुस्काहट, खिला जा रहा था मुखड़ा।
यह उनके भावों से लगता, था है उनको हर्ष बड़ा।।
हम अपनी क्या कहे बताई, नंहि जाती हमसे वह बात।
बस इतना जाने द्रढ़ता से, पकड़ा श्री सदगुरू ने हाथ।।
दो के एक बने इक पल में, बाहर भीतर एक समान।
उनमें मैं मेरे में सदगुरू, द्वैत हुवा अद्वैत महान।।

इस प्रकार की सम्पदा, कर सदगुरू से प्राप्त।
शक्ती अपने बीच में, जंची हमें पर्याप्त।।

जहाँ मौज हो जाओ विचरो, इस प्रकार आदेश दिया।
श्री मुख से आज्ञा पाते ही, गुरू ग्रह से प्रस्थान किया।।

Nijanand App

'तीसरी परिक्रमाँ'

भेष और आशीर्वाद के, पाते ही हम बदल गये।
इक विचित्र सी हाल हो गइ, कह नंहि सकते क्या हो गये।।
कुछ जवार भाटे से अंदर, उठने लगे तरंगों के।
और ख़ैल के ख़ैल खयालों, रंगों और उमंगों के।।
जिसकी रौ में यदि बक छूटती, तो रूकना दूभर होता।
समझ न पाते लोंग हमारी, उठ उठ भग जाते श्रोता।।
हमें ड़ाक गाड़ी सम्बोधन, करने लगे जगत के लोग।
और बहुत से तो कहते थे, इस साधू को है कुछ रोग।।
मौन अगर हैं तो ऐसे हैं, जैसे हों मोनी बाबा।
बोले तो ऐसे बोले ज्यों, विश्व विजय बीड़ा बाबा।।
अकथनीय हालत रहती निज, उदय अस्त रहते उन्माद।
अंदर ही अंदर पलकों के, जानें क्या मिलता था स्वाद।।
मस्त सैर में रहते प्रति पल, रत्न जड़ित सुख पालों पर।
लटा पीन रहते हम हर दम, अपने निजी ख़यालों पर।।
श्रवण बंद से थे बाहर से, आँख बंद थी चमड़े की।
पग पहिये से घूंमा करते, भार लिये तन छकड़े की।।
ज्ञान बहुत कम रहता हमको, जगह कौन सी हैं इस वक्त।
नज़रों पर दुनियाँ दारी की, कुलफ़ ढका रहता था सख़्त।।
पहुचे खुड़खुड़ेश्वर से हम, सौन गिरी से चल करके।
नदी तापती के तट पर शिव, मंदिर था उसमें ठहरे।।
बड़ी भयंकर गहराई थी, नदी तापती की उस ठौर।
जैसे किसी खोल में बहती, ऐसे थे उसके ढंग डौर।।
जल लेने जाते तो मीलों, का आना जाना होता।
पांच महीने वही खुड़खुड़ेश्वर, मंदिर में अपना बीता।।
जगह महात्माओं के ही, रहने लायक थी निस्संदेह।
जहाँ आत्माँ मन पावन हो, साथ साथ पावन हो देह।।
एक व्यक्ति के संकेतों पर, पहुँचे हम उस मंदिर में।
बड़ा सिद्ध बाबा रहता है, बतलाया उस व्यक्ति ने।।
उन संकेतों पर हम पहुँचे, दर्शन पाये महात्माँ के।
थे विख्यात् ब्रह्मचारी कर, रामा नन्द नाम के थे।।
नंगला फूल ग्राम मेरठ के, निकट वहाँ के थे वासी।
जन्म नाम शंकर उनका, थे उच्च कोटि के अभ्यासी।।

Nijanand App

जाते ही प्रणाम की हमने, इक विनम्र उत्तर आया।
और एक आसन ला करके, मेरे नीचे बिछवाया।।
हमें दक्षिणी पंडित जाना, भेष हमारा जब देखा।
हाथ कमण्डल पाग मुँड़ पर, अचला धोती पहने था।।
आदर मान हमें देकर के, एक निवेदन की हमसे।
खाना हम करलें खा लोगे, या तुम स्वयं बनाओगे।।
इस प्रकार की सुनकर उनसे, मैंने कही महात्माँ जी।
एक महात्माँ एक महात्माँ, से यों पूछे उचित नहीं।।
जग छोड़ा तन भस्म रमाई, फक्कर बने फ़खर के साथ।
शुद्धी और अशुद्धी की हम, रहे छेड़ते फिर भी बात।।
गौड़ों में भी गौड़ तलाशे, थोपो मेंत यह आपस में।
आप बनायें हम खायेंगे, छूत छात क्या है इसमें।।
बैठ गये हम एक वृक्ष से, अपनी कमर लगा करके।
मस्त मौज में अपनी हो गये, उचित जगह को पाकरके।।
भोजन जब बन चुका महात्माँ, जी ने दी हमको आवाज।
भोजन तो तय्यार हो चुका, जीम जाओ आकर महाराज।।
हम रसोइ तक पहुँचे उठकर, बैठ गये भू पर जाकर।
एक पात्र में सारा भोजन, निज सन्मुख रक्खा लाकर।।
अन्य पात्र भोजन का हमने, रामा नंद का नंहि पाया।
तो हमने आवाज़ लगाई, वापिस उसको बुलवाया।।
क्या कारण है थाल आपने, अपना कोई नहीं पंरसा।
रामानंद मौन हो गये सुन, भेद न खोला अंदर का।।
मौन देखकर हमने उनको, प्रश्न दुबारा करडाला।
थोड़ी देर मौन रहकर फिर, उत्तर के लिये मुंह खोला।।
महाराज खाना तुम खाओ, मैं तो जीम न पाऊँगा।
मेरी एक प्रतिज्ञा है आमरण, अन्न नंहि खाऊँगा।।
जिस व्रत के सत्रह दिन पूरे, हो भी चुके हमारे आज।
हमने कहा आपने हम से, पहले क्यों नंहि खोला राज़।।
पहले हमें बता देते तुम, के हमको यह इल्लत है।
तो हम भूखे रह सकते थे, हम तो यह आदत है।।
सत्रह दिन के मरे हुवे से, भोजन कभी न बनवाते।
मुर्दे के खाने से तो, बेहतर था भूके रह जाते।।
मरे हुवों के हाथों का मैं, भोजन खाता नंहि फिरता।
मुझे पता नंहि था मुर्दे हो, तुमको ज़िंदा समझा था।।
शीघ्र उठालो जो कुछ परसा, है तुमने मेरे सन्मुख।

Nijanand App

घृँणा युक्त हो करके मैंने, घुमा लिया थाली से मुख।।
हम कुछ कुछ बकते जाते थे, कहते जाते थे उससे।
ले जाओ भोजन वोजन ये, और कहें हम क्या तुझसे।।
हम मंदिर के भ्रम में आ गए, थे है के है देवस्थान।
पर अब हमको पता लगा, स्थान नहीं है, है शमशान।।
अपनी रूखी औ चुटियल सी, बातों को सुन रामानंद।
रहा देखता हत्यारा सा, अंतर में था बेहद द्वन्द।।
सोच रहा था क्या होवे अब, यदि यह चला गया भूका।
तो अनर्थ हो जावे बेढ़ब, उपजी उसके उर चिन्ता।।
गया अतिथि भूका द्वारे से, किसको मुँह दिखलाऊँगा।
पुण्यादिक तो जाँए भाड़ में, सीधा यमपुर जाऊँगा।।
अपनी बक बक ही सुनकर के, उसके मन को चोट लगी।
अर्थ लगा करके बातों का, उसने परशादी खाली।।
अपना पेट बोझ हमने भी, जीम लिया उसको लखकर।
और प्रतिज्ञा का कारण, पूछा उससे रोटी खाकर।।
पेट घड़ा सा दिखलाकर, बोला कारण यह है इसका।
तिल्ली से मजबूर हुआ हूँ, कारण बना प्रतिज्ञा का।।
पेट घड़ा सा लखकर के हम, लगे पूछने फिर उससे।
महाराज यह तो बतलाओ, तिल्ली हुई तुम्हें कैसे।।
कुछ सकुचा सी कर वे बोले, महाराज क्या बतलाऊँ।
कच्चा चिट्ठा है जीवन का, कैसे तुमको समझाऊँ।।
हम छाया सिद्धी कर बैठे, नदी तापती के जल में।
छाया को चेली करने की, इच्छा थी अपने मन में।।
बीता करती जल में अपनी, खड़े खड़े ही सारी रात।
काफ़ी दिन के बाद एक दिन, घटना घटी हमारे साथ।।
अंदर ही अंदर उस जल के, पैर लगे अपने बंधने।
बाँध लिया नींचे से ऊपर, तक हमको इक अजगर ने।।
सिद्धी तो सम्पूर्ण हुई पर, जकड़े गए अजगर द्वारा।
युक्ति मुक्ति की की पर उसने, हमें पाल पै दे मारा।।
क्या बीती अपने पर आगे, कौन उठा लाया हमको।
हम अचेत हो गए थे पूरे, ज्ञात नहीं आगे हमको।।
उसी रोज़ से तिल्ली का यह, रोग हमें आरम्भ हुआ।
बढ़ते बढ़ते पेट घड़ा सा, बढ़ा रोग अक्षम्य हुआ।।
सिद्धी करो चाहे जैसी संग, एक रोग तो आता है।
साथ साथ सिद्धी के वह भी, रोग रहे ही जाता है।।

Nijanand App

लाभ नहीं सिद्धी का इतना, जितना रोग सताता है।
कष्ट सहन नंहि होता जिवड़ा, मरूँ मरूँ चिल्लाता है।।
इस कारण वश महाराज, मैंने मरना उत्तम जाना।
ब्रत आमरण इसी कारण था, तुमने मगर बुरा माना।।
आख़िर बुरा भला कहकर के, वह व्रत तुड़वा ही डाला।
दुख है ही यहाँ भाग में अपने, है आगे भी मुँह काला।।
छाया पुरूष सिद्ध करने से, थे पदार्थ सारे उपलब्ध।
मैं भगवन् पहचान लिया, करता हूँ पशु पक्षी के शब्द।।
पर जब स्वास्थ ठीक नहीं रहता, क्या करने उपलब्ध पदार्थ।
सिद्धी से तो ऐश करी जातीं, उसमें होता है स्वार्थ।।
मानव ठीक ठाक होने पर, ही तो व्यंजन खाता है।
खाने पीने और पहनने, का आनंद उठाता है।।
स्वास्थ अगर पल्ले नंहि उसके, तो सिद्धी का फिर क्या मोल।
उसको तो ऐसे जानो बस, जैसे एक ढोल की पोल।।
इतने में इक वैद्यराज भी, औषधि ले कुछ आ पहुँचा।
प्रणामदि उपरान्त वैद्य से, इस प्रकार हमने पूछा।।
वैद्यराज इनका इलाज क्या, आप लिये हैं हाथों में।
उसने हाँ कहकर स्वीकारा, औषधि थी ही हाथों में।।
दवा गोलियाँ मामूली सी, रहती हैं कुछ अपने पास।
उन ही से इनका इलाज, जारी कर रक्खा है महाराज।।
फिर क्यों ठीक नहीं होते ये, समझें भी यह क्यों है रोग।
कब से तुम इलाज करते हो, भोग रहे थे कब से भोग।।
भौंचक्का सा होकर बोला, वैद्य हमारे प्रश्नों पर।
कुछ सकुचाया सा हो करके, दिया हमें उसने उत्तर।।
झूँठ नहीं बोलूँगा तुमसे, यह मैं समझ नहीं पाया।
रोग हुवा उत्पन्न कहाँ से, किन कमियों ने जन्माया।।
यदि इतना तक जान न पाये, इसका जन्म कहाँ से है।
तो इलाज भी क्या करलोगे, यह तो बात व्रथा सी है।।
भाग गया वह वैद्य वहाँ से, अपनी शीशी लेकर के।
इस प्रकार की सुनके हमसे, देखा नंहि पीछे फिरके।।
रामानंद को दस्त बहुत, आया करते थे तिल्ली से।
मरण बरत था इसी लिये वह, तंग हुवा था दस्तों से।।
अपनी इस प्रकार की सुनकर, रामानंद ख़ामोश रहा।
शायद ये इलाज कर सकते, हैं उसको संतोष रहा।।
जाते हुवे वैद्य को रामा, नंद ने योंही नंहि रोका।

Nijanand App

ये इलाज तिल्ली का शायद, कर सकते हैं यह सोचा।।
रामानंद सिद्ध तो थे ही, साथ साथ विद्वत्ता भी।
इल्म और अध्यन् पूर्ण था, कमी नहीं थी कोई भी।।
जाने के पश्चात् वैद्य के, लगे पूछने निज परिचय।
महाराज यह तो बतलादो, आप कहाँ से आये हैं।।
जन्म भूमि है कहाँ आपकी, औ शरीर यह किसका है।
सुनकर प्रश्न शुरू हो गए हम, जो इक अपनी आदत है।।
ऊपर हाथ उठाकर हमने, अपनी डाँक शुरू करदी।
हम तो बड़ी दूर से चलकर, आये हैं यहाँ पंडित जी।।
चले आए दुख ग्रसित प्रॉंणियों, को लखकर इस दुनियाँ में।
सोचा चलो विचारों का, चल करके कुछ उद्धार करें।।
छुटकारा पा जाँए अगर इस, दुनियाँ से तो अच्छा है।
दुनियाँ यह कल्याँण प्राप्त, करले अपनी यह इच्छा है।।
इस प्रकार की डाँक छोड़दी, हमने अंधा धुंध अपनी।
सुनकर जब कुछ समझ न आया, घबराये रामा नंद जी।।
यह तो कोई सिड़ी है शायद, या पागल आ टकराया।
तंग करेगा हमें हमेशा, उसने हमको धमकाया।।
एक डाट देकरके उसने, हमको चुप करना चाहा।
बोला बस बकवास बंद कर, क्या यह अंड बंड गाया।।
हम उसकी सुन करके बोले, कुछ पहचान कौन हैं देख।
पर तेरी तो फूटी हुई हैं, दीख रहा है केवल भेष।।
तुम केवल मल के कीड़े हो, जीव सृष्टि हो मामूली।
तुम हरगिज़ पहचान न सकते, हो अंदर ख़ाली ख़ूली।।
जिसको ज्ञान स्वयं अपना नंहि, क्या जानेगा औरों को।
बात बड़ों की क्या जानो तुम, क्या जानो तिल तौरों को।।
जाने क्या क्या रहे भौंकते, हम अपनी उस रौ के साथ।
पर बेचारे रामानंद को, बात एक भी लगी न हाथ।।
पिंड किस तरह छूटे इससे, इतनी बात सोचता था।
आ लिपटा दीवाना कोई, कैसे छुटे खोजता था।।
कौतूहल तो था अवश्य यह, पागल विप्र भेष में क्यों।
रामा नंद तंग आकर के, इक दिन हमसे बोला यों।।
चले जाओ अब आप यहाँ से, करके कृपा हमारे पै।
हम ने भी विनम्र होकर के, उत्तर दिया इशारे पै।।
भाव उदय होने से पहले, चले गये होते महाराज।
आवश्यकता ही नंहि पड़ती, तुम्हें हमें कहने की आज।।

Nijanand App

किन्तु आपकी आज्ञा का, अब हमें उलंघन करना है।
ठीक अवस्था न हो आपकी, तब तक यहीं ठहरना है।।
जब तक ठीक न हो पाओ तुम, या तुम चोला छोड़ न दो।
तब तक टाले नहीं टलेंगे, जब तक रिश्ता तोड़ न दें।।
या तो ठीक करेंगे तुम को, या चोला छुड़वायेंगे।
अगर टूटनी है तुड़वावें, जुड़नी है जुड़वाऐंगे।।
आप हमें मारें भी चाहे, हम सहर्ष सब सहलेंगे।
हालत नंहि है ठीक आपकी, कुछ कहलो सब झेलेंगे।।
थे जब तक हम अलग आपसे, चाहे तुम जीते मरते।
पर अब आन लगे हम तुमसे, छोड़ जाँए तुमको किसपै।।
इधर आपका जीवन दाता, वैद्य हमारी बातों पै।
भाग गया बोलो फिर कैसे, जा सकते हैं हम यहाँ से।।
अब उत्तर दायित्व आपका, निर्भर है केवल हमपर।
कार्य भार सेवा वेवा का, जाँए छोड़ कर अब किसपर।।
रामानंद हमारी बातों, पर कुछ था चिड़ा हुआ सा था।
पर अपनी यथार्थ बातों को, सुनकरके ख़ामोश हुआ।।
अब हमने दो चार रोज़ के, भीतर ही अपना श्रंगार।
कोइ किसी को कोइ किसी को, बाँट दिया सब आख़िरकार।।
वैसे थे निधि रूप वस्त्र वे, था प्रशाद गुरू हाथों का।
पर हमने जंजाल जानकर, सारा इक दम बाँट दिया।।
भूषण वही पुराना अपना, नग्न लंगोटी रक्खी एक।
रामा नंद चकित सा हो गया, जब देखा उसने ये भेष।।
लगा सोचने हो सकता है, स्वयं हमीं ग़लती पर हैं।
यह तो और मामला है कुछ, कोई उच्च महात्माँ है।।
रामानंद ढला स्तर से, झुकने लगा हमारी ओर।
हमने भी सत्संग आदि में, पकड़ा उसको पूरे तौर।।
जो भी विषय पकड़ लेते हम, खोल 2 पट रख देते।
अर्थ, अर्थ पै अर्थ, अर्थ का, अर्थ तुरंत कर रखदेते।।
जगह जौनसी का भी वर्णन, हम करने को लग जाते।
अंग अंग न्यारे न्यारे ज्यों, पुस्तक से हों बतलाते।।
दरवाज़े दालान खूंटिया, थमले, आले रोशनदान।
अलग अलग गिन गिन बतलाते, परमधाम का हर सामान।।
वार्ताओं का रस लेने लग, गया हमारी रामानंद।
फूट पड़ी श्रद्धा अपने में, फीके पड़े हृदय के द्वन्द।।
रामानंद संयमी था ही, साथ साथ साधक विद्वान।

Nijanand App

पढ़ा, पढ़ा करता है जल्दी, पकड़ा करते जल्द महान।।
पल में पलटा खा जाता है, सार सामने जब आता।।
इल्म इल्म को सर करता है, उलझा हुआ सुलझ जाता।
पूर्व लक्ष से रामा नंद की, श्रद्धा ने खाया पलटा।।
आतम पक्षी रस का इच्छुक, मुड़ करके वापिस आया।
छोड़ छाड़ कर उन गलियों को, जिनका वह अनुयायी था।।
आकर के आकृष्ट हुई, अपने ऊपर उसकी श्रद्धा।
चलती रहीं ज्ञान चर्चाऐं, आतम होती गई विशुद्ध।।
जंग गया घुटता मानस का, मंजती चली गई दुर्बुद्ध।।
सिद्धी जो की थी छाया की, गई एकदम होती लुप्त।
भ्रम की शाखें गिरी धरन पर, कटी जड़ें जब उसकी गुप्त।।
पंद्रह दिन के अंदर अंदर, तिल्ली का तो अंत हुआ।
रामानंद की आखें खुलगईं, दुश्मन का जब अंत हुआ।।
प्रगति देखकर दिन प्रतिदिन की, कटे देखकर दुख से फंद।
जाँच लिया बच गया, नहीं, मरने का अब यह रामानंद।।
हमने कमली और कमण्डल, उठा लिये निज चलने को।
पहुँच गये रामानंद जी के, पास आज्ञा लेने को।।
कर प्रणाम उनसे हम बोले, हमने तुम्हें महात्माँ जी।
कष्ट बहुत पहुँचाया अब तक, सुख पहुँचाया नहीं कभी।।
हमने अपने ढीट पने का, पूरा परिचय दिया तुम्हें।
किया उलंघन आदेशों का, दुखी बहुत ही किया तुम्हें।।
तुम जैसे सिद्धात्माओं पर, निज व्यौहार उचित नंहि था।
आज उन्हीं उद्दण्डताओं पर, भगवन् करना हमें क्षमाँ।।
हम तो तुम्हें न भूल सकेंगे, याद रहेंगे प्रिय व्यौहार।
ऋण उऋण न हो पाऐंगे, लदा रहेगा हम पर भार।।
अच्छा अब प्रणाम लो अपनी, क्षमाँ, आज हम जाते हैं।
दुर्व्यौहारों पर माँफ़ी दो, भगवन् आज्ञा चाहते हैं।।
रहा खड़ा का खड़ा देखता, रामानंद हमारे को।
मुँह अवाक् सा रह गया उसका, लखकर गवन हमारे को।।
छलक उठा जल स्नेह नेत्र में, रूँधा कण्ठ उनका इकदम।
कुछ खिसियाऐ से सकुचाकर, बोले हमसे रामानंद।।
सच्च अगर पूछो तो भगवान्, शठता तो मैंने की है।
क्षमाँ आपसे मैं चाहूँगा, ठेस तुम्हें मैंने दी है।।
जब तक मैं व्यक्तित्व आपका, जान न पाया हे महाराज।
तब तक रहे अनादर करते, सिद्ध हुवा शठ मैं ही आज।।

Nijanand App

वास्तवो में व्यक्ति हमीं हैं, क्षमाँ आपसे पाने की।
चोट लगी जब सुनी आपसे, भगवन् हमने जाने की।।
जीवन दान हमें जो देवे, यों ही सहज चला जावे।
है पाहन इन्सान नहीं वह, बिछुड़न कैसे सह पावे।।
आप चले गए अगर यहाँ से, असह होयगा यह आघात।
बड़ी आपकी कृपा होए यदि, मानें एक हमारी बात।।
वर्षा ऋतु तो यहीं बितादें, फिर चौमासे के उपरान्त।
साथ आपके घूँमूँ मैं भी, इस भारत के सारे प्राँत।।
महाराज यह अभिलाषा है, छोड़ूँ नहीं आपका साथ।
स्वीकारो तो बड़ी कृपा हो, भगवन् है यह अंतिम बात।।
अधिक आग्रह देखा जब, हमने रहना स्वीकार लिया।
रामानंद जी गदगद हो गए, की प्रणाम सत्कार दिया।।

जहाँ हों गुंण ग्राहक वहीं समझो अपना ठाम।
धोबी बसके क्या करे जहाँ नंगों का ग्राम।।

नियम पूर्वक वहाँ हमारा, फिर सत्संग आरम्भ हुआ।
लोगों का ऐकत्रित होना, शनः शनः प्रारम्भ हुआ।।
आने लगे बहुत मात्रा में, कमखेड़ी के प्रेमी लोग।
दिन प्रति दिन सत्संग में वृद्धी, निसदिन बंटते मोहन भोग।।
अपना भी अभ्यास बोलने, का हर रोज़ प्रगति पर था।
इक पटेल के हाथों में था, इन्तज़ाम उस मंदिर का।।
जो कमखेड़ी का सुयोग्य औ, व्यक्ति प्रतिष्ठित कहलाता।
उस मंदिर का पूर्ण रूप से, सब अधिकार उसी पर था।।
उसकी आज्ञा बिना महात्माँ, वहाँ नहीं टिक सकता था।
जिससे असंतुष्ट वो होता, तभी भगा भी देता था।।
उसका ग्रामीणों के कहने, पर आना आरम्भ हुआ।
किन्तु हमें गाढ़ी द्रष्टी से, आकर ताका करता था।।
एक रोज़ हम उस पटेल से, बोले आओ तुम्हें महाराज।
जो स्थान देखना चाहो, सैर करादें उसकी आज।।
ऊपर हाथ उठाकर बोले, बोलो नूर बाग़ दिखालाँए।
या श्री परधाम की यमुना, जी के तट की सैर कराँए।।
कितनी मस्त तरंगों में, मदमाती बहती रहती हैं।
मानों प्रीतम ख़ुश हों जिससे, चाल बदलती रहती हैं।।
वहाँ खड़ा था इक गाँझे का, पेड़ कहा वह दिखलाकर।

Nijanand App

देखो छटा ज्ञान बल्ली की, झूंम रही हैं लहराकर।।
न्यारी ही शोभा है इसकी, देखो ज़रा निकट जाकर।
धन्य धन्य होगे पटेल जी, इसकी गंध आप पाकर।।
हमने एक पेड़ गाँझे का, बो रक्खा था आँगन में।
जो अंदर ही था मंदिर के, बक गये आनन फ़ानन में।।
हमने जो कुछ बका बकाया, सोचा उसने यह क्या स्वाँग।
बोल उठे इक दम पटेल जी, अपनी सुनकर ऊट पटाँग।।
वहाँ जुर्म समझा जाता है, पेड़ लगाना गाँझे का।
अगर लगा भी ले कोई तो, डर रहता था थाने का।।
हमने तो सब बाग़ बगीचे, परमधाम के देख लिये।
जहाँ जहाँ की सैर कराई, द्रश्य सभी कुछ देख लिये।।
थानेदार आएगा कल को, उसको भी दिखलादेना।
उसी बेग लहजे में बोले, क्यों नंहि साथ लिवालाना।।
भला उसे हम क्यों न दिखावें, जिसे चाहो तुम दिखवाना।
अन्य मित्र अफ़सर हो कोई, उसको भी लेते आना।
दिखलाना है काम हमारा, तुम पटेल मत घबराना।।
जिसको तुम दिखलाना चाहो, बेखटके संग ले आना।।
खिसिया गया हमारा उत्तर, पाकर के पटेल इकदम।
राह लगा उठकरके घर की, आगे एक न मारा दम।।
लेकर थानेदार साहब को, अगले दिन फिर आ पहुँचा।
गिरफ़्तार करवाने वाले, लहजे में आकर बोला।।
बाबा जी वे बाग़ बगीचे, कहाँ हैं अब फिर दिखलादो।
थानेदार साहब आये हैं, इन्हें भी दर्शन करवादो।।
हम भी बड़े हर्ष से उत्तर, देकर बोले आ जाओ।
इनको क्यों नंहि दिखलायेंगे, पहले इनको बिठलाओ।।
जो पग प्यादे, पैर उठाकर, दर्शन हित आ सकते हैं।
भला ये कैसे हो सकता है, वे वंचित रह सकते हैं।।
थानेदार साहब मुसलिम थे, हमने उन्हें देख करके।
कहा आप नज़दीक हमारे, कृप्या बैठो आकरके।।
बोलो किसकी सैर चाहते, हो, देखोगे क्या जबरूत।
या लाहूत देखने की ख्वाहिश है, या देखो हाहूत।।
नूरे तजल्ला देखोगे या, देखोंगे तुम नूर जमाल।
आवे ज़मज़म पीओगे या, न्हाओगे तुम क़ौसर ताल।।
अश्के जम जम चक्खोगे तुम, या घूमोगे कौसर ताल।।
मिलना अगर चाहते हो, मिलवादें तुम से अशराफ़ील।

Nijanand App

या चाहो तो वहाँ ले चलें, जहाँ रहते हैं इजराईल।।
अच्छा ज़रा ग़ौर से देखो, वह है नूर बाग़ अपना।
अमर फलों की रविशों पर भी, ध्यान ज़रा देते रहना।।
वर्णन नहीं किया जा सकता, थानेदार साहब इनका।
पर पटेल जी की रहमत से, दर्शन कर रहे हो इनका।।
वह देखो बारीक नज़र से, रविश ज्ञान बल्ली की भी।
जिसका दर्शन बिना कृपा के, हो नंहि सकता तुम्हें कभी।।
उसी पेड़ की ओर इशारा, हमने अपना फेर लिया।
जो पटेल साहब को हमने, पहले दिन दिखलाया था।।
जिसको हमने अपने हाथों, मंदिर में था आरोपा।
उसी पेड़ को थानेदार, साहब को हमने दिखलाया।।
हम पहचान न पाये उसको, थानेदार वही है क्या।
जिसको हमने नदी पाँजरा, के मेले पर डपटा था।।
बाढ़ पीड़ितों को दिखलाकर, बोले थे औ थानेदार।
बतला इतनी जानें खपंगई, कौन बनेगा ज़िम्मेदार।।
वही दरोगा हो करके, तबदील मुड़ावद से आया।
उस ही को बहका बहका कर, वह पटेल यहाँ ले आया।।
हम पिछान नंहि पाये उसको, उसने हमको जाँच लिया।
यह फ़कीर वह ही है उसने, प्रथम नज़र में भाँप लिया।।
जुटे हुवे थे हम अपनी, बक बक में पूरे दर्जे से।
इकदम थानेदार बीच में, हमें रोक करके बोले।।
बस बस काफ़ी देख चुके अब, बाग़ बग़ीचे साँई जी।
हम बोले सारे थोड़े ही, दिखलायें हैं तुम्हें अभी।।
अभी हमारे परमधाम का, बड़ा अंग सब बाक़ी है।
थानेदार चरण पर झुककर, बोला अब यह काफ़ी है।।
हरिक पंद्रवे दिन दर्शन को, साँई साहब आऊँगा।
धीरे धीरे जो दिखलाओ, सभी देखता जाऊँगा।।
नज़र गुज़ारी दस रूपयों की, चलते समय दरोगा ने।
कहा ख़र्च से तंग मत रहना, और ज़रूरत हो देवें।।
हमने कहा दरोग़ा जी, क्या करें बताओ हम इनका।
हमें ज़रूरत ही नंहि पड़ती, बोझा क्यों लाधा धनका।।
उसने बोसा लिया क़दम का, हमने आशीर्वाद दिया।
देखा देखी उस पटेल ने, आज हमारा चरण लिया।।
विदा हुवे दोनों सज्जन, हमको नत्मस्तक हो करके।
श्रद्धा और बढ़ी सत्संगी, जन में उनको लखकरके।।

Nijanand App

जब कि तापती अपने पूरे, जल स्तर पर आ जाती।
तो सत्संगी जन की टोली, तैर तैर कर बार जाती।।
लगा लगा छाती से तारन, ख़ुद तो वे आते ही थे।
पर कुछ खान पान आदिक भी, अपने संग में लाते थे।।
बंधे हमारे प्रेम पाश में, चसका ऐसा लगा उन्हें।
भरी तापती में को आते, भय न रहा जैसे उनमें।।
कभी हमें भी निज तारन पर, तैराकर ले जाते थे।
कभी किसी कै कभी किसी कै, भोजन आदि कराते थे।।
चतुरमास बीता जब सारा, तो चलने की ठहराई।
वह सत्संगी जंन की टोली, जाना सुनकर अकुलाई।।
उन सबने ले जाना चाहा, हमको अपने गांवों में।
विदा वहीं से देंगे तुमको, जंचा हमें यह भाओं में।।
कह भी उठा एक उनमें से, जाना जहाँ चाहोगे तुम।
वहीं छोड़कर के आवेंगे, गाड़ी में बिठला के हम।।
थीं दो पार्टियां गावों में, कलह आपसी के कास।
अलग थलग रहते थे सारे, वैमनस्यता के कारण।।
ऐडू नामक इक पटेल था, बड़ा व्यक्ति उस बस्ती का।
कभी न पहुँचा हम तक मिलने, वजह पार्टी बाजी का।।
उसे महात्माओं से नफ़रत, नहीं बल्कि मजबूरी थी।
दोंनो पार्टियाँ तकड़ी थीं, बल्के पूरी पूरी थीं।।
जाते ही गांवों में अपनी, खेंचा तान शुरू हो हुई।
अपने अपने घर ले जाना, चाहा ज़िद्द शुरू हो गई।।
बात एक की एक काटता, अपने घर ले जाने को।
हम बोले लखकर यह उनसे, झगड़े को निपटाने को।।
बस ऐडू पटेल ही के घर, ठहरेंगे हम अन्य नहीं।
बिना बुलाये ही जा पहुँचे, कहते ही यह बात तभी।।
दिया हृदय से स्वागत इकदम, जब उसने देखा हमको।
ग्रामीणों से उच्च कोटि का, आदर मान दिया हमको।।
बड़ा आदमी तो था ही वो, शिष्टाचार जानता था।
व्यक्ति अधिकतर उस बस्ती का, उसकी बात मानता था।।
किया हमें आंमत्रित उसने, आप जीम कर जायेंगे।
जब तक जीम न लोगे भगवन्, आप न जाने पायेंगे।।
एक दूसरे के घर अनबन, से कोई जाता नंहि था।
किन्तु आज अपने कारण, उनका आना आरम्भ हुवा।।
धीरे धीरे व्यक्ति बहुत, जा पहुँचे उनकी बैठक पर।

ऐडू ने सबको बिठलाया, आदर से आसन देकर।।
ऐडू ने हमसे बस्ती का, सारा झगड़ा बतलाया।
बैठ नहीं सकते हम मिलकर, किस्सा सारा समझाया।।
पार्टियों के चक्कर मिलकर, हमें बैठने नंहि देते।
क्या बतलाऐं महाराज, मजबूर हैं हम इस कारन से।।
व्यक्ति गाँव के सब बैठे थे, उसने कहा सुना कर के।
वैमनस्यता सुनकर उनकी, बोले हम समझाकर के।।
ऐडू जी तुम बड़े व्यक्ति हो, देगी तुम्हें क्षमा शोभा।
सहन शीलता गहने पर कुछ, दर्जा ऊँचा ही होगा।।
छोटे तो उत्पात किया ही, करते हैं है स्वाभाविक।
परम्परा चलती आई है, इसी ढंग से प्रार्कतिक।।
बीती हुई कभी मत सोचो, जो सोचो बस आगे की।
किया आपने यदि ऐसा ही तो, कीर्ति आपकी जागेगी।।
अब तो जो कुछ हुवा बिसारो, भूल जाओ पिछला चिट्ठा।
अब तो जो आगे करना है, ध्यान करो केवल उसका।।
आप खिलाना चाह रहे हो, यदि भोजन हमको अपना।
तो जो कुछ हम तुम्हें बतावें, उस प्रकार करना होगा।।
सर्व सम्मिलित भोजन बनाओ, आप लोग मिल गांवों का।
पूरा गांव एक चूल्हे पर, आज यहाँ यदि जीमेगा।।
तब हम यहाँ जीम सकते हैं, वरना हमको जाने दो।
मार्ग हमारा कोइ न रोके, इस भोजन से क्षमां करो।।
सुन कर के ऐडू पटेल ने, अपनी तो स्वीकृति दे दी।
मैं तो बड़ा प्रसन्न हूँ इससे, बोले इक दम ऐडू जी।।
मंगवा कर पटेल ने दो सौ, रूपये ड़ाल दिये सन्मुख।
बोला यदि कम समझो इनको, तो मैं दूंगा और अधिक।।
श्रद्धा सहित भाइ सब पैसा, अपना ऐकत्रित कर लो।
बाक़ी देख दाख लूँगा मैं, लंगर को आरम्भ करो।।
अतः प्रीति भोजन आयोजन, प्रेम सहित सम्पन्न हुवा।
व्यक्ति हुवा प्रत्येक प्रफुल्लित, सब झगड़ों का अन्त हुवा।।
गले एक के इक मिल मिलके, स्वागत करते आपस में।
लेष रहा नंहि भेद भाव का, स्वाहा हुवा एक क्षण में।।
जीम जाम कर व्यक्ति गांव के, हमसे बोले हे महाराज।
जब से गांव बसा होगा यह, एक जगह बैठे हैं आज।।
कभी नहीं जीमें हम ऐसे, कभी न पाया यह आनन्द।
देखा सुना न हमने ऐसे, काट दिये सारों के फंद।।

Nijanand App

सब प्रताप इन चरनों का है, अच्छी लीला दिखलाई।
क्षण पहले जो कठिन शत्रु थे, क्षण में बने भाइ भाई।।
काया पलट गई क्षण भर में, वातावरण बदल ड़ाला।
भली पिलाई भगवन् तुमने, ऐक मेकता की हाला।।
आज ग्राम के कंण कंण में, भर दिया आपने प्रेमानन्द।
कलह आपसी खोया ऐसा, मेटा भाई भाइ का द्वन्द।।
बीज फूट का सर्वनाश कर, के पल भर में दिखलाया।
अहो भाग्य हम ग्रामीणों के, चरण आपका अपनाया।।
अगले रोज़ छलकती अंखियों, से अभिवादन किया हमें।
सारा गांव गया सरहद तक, नज़र भेट भी दिया हमें।।
लेकर चले चार घोड़े, ताँगों में प्रेमी जन हमको।
सोंप दिया ले जाकर हमको, अगले गांवों वालों को।।
इस प्रकार अगले गांवों ने, अगले गाओं पहुँचाया।
उसने उससे आगे सोंपा, कई रोज़ यों चलवाया।।
चार रोज़ के बाद उन्हों से, क्षमां स्वयं हमने मांगी।
बड़े कठिन आग्रह पर उन सब, लोगों ने वह स्वीकारी।।
जब हम उन प्रेमी लोगों से, क्षमां मांग कर के निमटे।
रामानंद हमारे साथी, इस प्रकार हमसे बोले।।
बोलो किधर चलोगे भगवन्, हमने उत्तर दिया उन्हें।
जहाँ तुम्हारी इच्छा होवे, उसी ओर ले चलो हमें।।
हम पीछे हैं भाई आपके, हमको कुछ भी ख़बर नंहि।
हम तो बने बनाये पागल, हैं बाहर का पता नहीं।।
लक्ष्य न रहता कोइ हमारा, कहाँ चले सुध नंहि रहती।
उस ही की हाँ कर देते हैं, जो जिसने जैसे कहदी।।
आँख मिचे रहने से हरदम, दिखता भी थोड़ा ही है।
कोइ और ही मार्ग बताता, हुवा हमें तो चलता है।।
रामानंद सोच कर बोला, चलो चलें कलकत्ते को।
एक सेठ ने कलकत्ते में, बुलवाया भी है हमको।।
हमने झट से स्वीकृति दे दी, यात्रा का आरम्भ हुवा।
पांव पिया दे कलकत्ते की, जानिब रामानन्द हुवा।।
हम भी पीछे पीछे हो लिए, चले कई दिन इसी प्रकार।
कई रोज यात्रा करके, मुड़वारे पहुँचे आख़िरकार।।
पर वह जगह ठीक सी नंहि थी, साँई खेड़ी जा पहुँचे।
जहाँ तीन सौ वर्ष आयु के, एक महात्मा रहते थे।।
नाम केशवा नंद था उनका, परम हंस करके विख्यात।

Nijanand App

नग्न रहा करते शरीर से, ऐसा था उनका अभ्यास।।
श्वेत पलक पड़ गये आखों के, बोली समझ न आती थी।
पर दर्शन को जनता उनके, बड़े भाव से जाती थी।।
बूढ़ा हो कोइ कितना ही, सबको लौंड़ा कहते थे।
बंदर का सा मुँह बन जाता, जब वे बोला करते थे।।
खलड़ी लटक गई थी चुड़कर, बैठे रहते अध लेटे।
स्वयं नहीं उठ सकते थे वे, और उठाते तब उठते।।
उन्हीं दिनों इक बड़े आदमी, की लड़की पहुँची उस ठौर।
तभी विलायत से आइ थी, मेमों के से थे ढंग डौर।।
परम हंस जी ने देखा जब, उस लड़की को खड़े हुवे।
देकर के संकेत हाथ का, यहाँ आओ यह कहा उसे।।
बैठी जब वह निकट आनकर, लगे फेरने सर पर हाथ।
उसके बाद बाँहों औ मुँह पर, जैसे कर रहे हो कुछ ज्ञात।।
अर्ध नग्न से फ़ैशन में थी, जगह जगह पौडर लाली।
देख रहे थे मेकप उसका, कितनी है फ़ैशन वाली।।
वह लड़की को तनिक न भाया, तभी भड़क कर खड़ी हुई।
कुछ कुछ कहती हुई वहाँ से, घर की जानिब दौड़ पड़ी।।
घर जाकर के उसने अपने, एक शिकायत सी कर दी।
भ्रष्ट आचरण हैं उन सबके, बना बना कुछ कुछ कह दी।।
योग्य नहीं हैं वे दरशन के, परमहंस जिनको कहते।
कान पिता के भरे पहुँच कर, बात कही सब रो रो के।।
बाप बहुत बिगड़ा सुन करके, बड़ा आदमी तो था ही।
परम हंस जी को आश्रम से, बाहर करवा दूँ सोची।।
वहीं कलक्टर का डेरा था, दौरे पर था वह उस वक्त।
उसने करी शिकायत जाकर, था अंग्रेज बहुत ही सख़्त।।
अडडा है गुण्ड़ों का यहाँ इक, आवश्यक है उठ जाना।
उल्टा सीधा भरा साहब को, साहब ने भी सच जाना।।
बोला वेल हम खुद देखेंगे, अतः आशरम पर पहुँचा।
परम हंस जी की गादी के, सन्मुख जाकर खड़ा हुवा।।
वर्ष तीन सौ के मानव पर, नजरें पहली बार पड़ीं।
साथ सेठ था उसने भी, द्रष्टी उन पर डाली गाढ़ी।।
ना प्रणाम ना वंदन कोई, देख रहा था खड़ा खड़ा।
जो सर पर था टोप साहब के, परमहंस ने मांग लिया।।
दिया साहब ने खुद उतार कर, परम हंस जी ने लेकर।
मूत दिया उसकी टोपी में, अपनी टाँगों में देकर।।

Nijanand App

मूत मात कर दिया हाथ में, इक के लो सिर पर रख दो।
बड़े चकित थे लोग सभी ही, लख उनकी करतूतों को।।
थी तौहीन एक अफ़सर की, वह भी एक कलक्टर की।
जो छोटे अफ़सर थे संग में, उन सब की त्यौरी बदली।।
हाल सेठ का तो पूछो मत, दीखे उसको मन चीते।
बोला जिलाधीश से देखा, हम तुमसे जो कहते थे।।
अपनी आंखों देख लिया खुद, इनके डण्डे लगा लगा।
अभी भगाओ इस आश्रम से, यहाँ नहीं रहने देना।।
टोप हाथ में था जिसके अब, गया कलक्टर के वह पास।
और साथ ही बड़े अदब से, किया साहब के सर पर हाथ।।
फूल चमेली झड़े टोप से, ठीक कलक्टर के सर पर।
महक उठी इक साथ गंध वहा, वातावरण हो गया तर।।
मानो स्वागत किया साहब का, दात तले आइ अंगुली।
द्रश्य जिसे भी मिला दर्श को, वाह वाह मुँह से निकली।।
जीवित मरा सेठ तो जैसे, देखा साहब ने उसको।
डाट सेठ को पड़ीं फेर तो, इनको गुण्डा कहते हो।।
साबित है तुम खुद गुण्डे हो, औरों को बतलाते हो।
जो ज़ाहिर है साफ़ एक दम, तौहमत उन्हें लगाते हो।।
इन्हें कभी भी अगर कोइ, तकलीफ़ हुई तो तुम जानो।
बुरी तरह मैं पेश आऊंगा, इनको आप ख़ुदा मानो।।
परमहंस जी को सलाम कर, वापिस चला गया साहब।
घटी वहाँ यह ऐसी लीला, चकित हुवे सब ही बेढ़ब।।
परम हंस जी पर अति श्रद्धा, उसके बाद बनी सबकी।
न भी पूजता था जो उनको, उसको भी इच्छा उपजी।।

चमत्कार को देखकर, करती दुनी सलाम।
हो सन्मुख परमात्माँ, कोई नहीं पहचान।।

ठहर वहर के पास उन्हों के, कुछ दिन के पश्चात चले।
पैदल कभी कभी वाहन पर, तिरवैनी पहुँचे जाके।।
पार उतर कर के तिरवैनी, मीलों दूर चले गए हम।
एक महात्माँ की कुटिया को, लख कर बोले रामानंद।।
यहीं ठहर जाओ भगवन अब, टेक दिया कहकर सामान।
रात रात ही ठहरे हम उस, कुटिया पर बनकर मेहमान।।
थोड़े से समपर्क मात्र से, रामा नंद उस बाबा पर।

Nijanand App

पूछो मत बस लड्डू हो गये, उसके एक इशारे यह।।
उसने पूछा तुम रेलों में, कैसे आते जाते हो।
बिन पैसे ही चलते हो या, पैसे भी भुगताते हो।।
रामा नंद बोल उट्ठा हम, तो बिन पैसे चलते हैं।
वह फकीर बोला इक दम से, कैसे आप महात्मा हैं।।
अपना खर्च चला पाओ क्या, ऐसा हुनर नहीं आता।
हमको देखो बड़े ठाट से, जाते जब मौका आता।।
क्या कंगले से बने घूमते, यह भी कोइ फ़कीरी है।
अरे फ़कीरी सच पूछो तो, सबसे बड़ी अमीरी है।।
रामानंद चकित सा होकर, लगा पूछने हे महाराज।
आप कहा से लाते हो धन, हमें भी बतला दो महाराजं।।
धन अपनी चुटकी में रहता, वह फकीर बोला हमसे।
कह तो गया मुझे जब देखा, तो फिर चुप्प हुवा झट से।।
रामानंद जानने का, इच्छुक था ऐसी बातों का।
धन चुटकी में इकदम इनके, ऐसे कहाँ से आ जाता।।
रामा नंद लगा सेवा करने, चुट कला बता दें ये।
हम से बोला युक्ति सीख ले, हर्ज कौन सा हैं इसमें।।
आवश्यकता पड़ने पर धन, कर तो लिया करेंगे प्राप्त।
हम बोले रामानंद से गुरू, की हालत तो देखे आप।।
दग्धा पड़ा है चमड़ा इसका, जली पड़ी है सारी खाल।
क्या अपना भी ओ रामा नंद, करवाना है ऐसा हाल।।
इससे बुरा हाल हावेगा, तेरा चाहे लिखवाले।
बिना लक्ष्मी के ही रह ले, लाँडा ही रह कर खाले।।
सावधान करवाया बहुत, रामानंद नहीं माना।
बात न अच्छी लगी हमारी, उत्तम समझा धन पाना।।
उसने अलग ओट में जाकर, रामानंद को बुलवाया।
ताँबे का सोना कर देते, है हम उसने जतलाया।।
फिर क्या था रामानंद जी की, बाँछे खिल गइ सुनते ही।
जुटे प्राप्त करने को नुक़ता, बाबा जी के साथ तभी।।
हमसे रामा नंद जी अक्सर, कहते रहते थे भगवन।
अब चिंता काहे की करनी, पल्ले होगा धन ही धन।।
अजी ठाट से चला करेंगे, धन जब पल्ले में होगा।
उच्च कोटि के लगें महात्माँ, क्यों कि भेष उत्तम होगा।।
होता है सर्वदा निरादर, ऐसी फटी अवस्था में।
अपनी गिनती हुवा करेगी, आगे सिद्ध महात्माँ में।।

Nijanand App

हमने कहा सीखले भइया, पर आगे पछतायेगा।
बात हमारी याद रहे यह, कहीं नहीं रह पायेगा।।
पीछे भी तू सिद्ध बना था, व्रत आमरण तक पहुँचा।
अब धन की इच्छा जागी है, जा जिंदा नंहि रहने का।।
जब भी कभी देखता हमको, वह बाबा कटु द्रष्टी से।
जैसे कुछ बिगाड़ रहे हों हम, लखता था हमको ऐसे।।
जब रहस्य की बातें करनी, होती थी रामा नंद से।
कह उठता हमसे ओ फक्कड, भिक्षा लाओ जाकरके।।
रोका रामानंद ने उसको, भिक्षा को हम जायेंगे।
हम इनसे भिक्षा विक्षा का, काम नहीं करवायेंगे।।
रामानंद को अलग बुलाया, हमने कुछ समझाने को।
भिक्षा कभी करी तो थी नंहि, पर रोको मत जाने को।।
आज देख लें यह भी करके, अपनी बात बिगाड़ो मत।
जो कुछ सीख सकते हो, सीखो हमको रोको मत।।
हमने इक पगडण्डी पकड़ी, एक गांव में जा पहुँचे।
पहले तो सारी नगरी के, हमने चक्कर धर काटे।।
फिरे घूमते पूर्ण गांव में, खोज रहे थे हम लकड़ी।
इक बढ़ई के घर पर आखिर, हमको लकड़ी नज़र पड़ी।।
खड़े हुवे चुप चाप वहाँ हम, खाती ने हमको देखा।
महाराज जी क्या इच्छा है, बतलाओ हमसे बोला।।
हमने कहा भाइ लकड़ी की, हमको आवश्यकता है।
आप छाँट लो खुद इसमें से, जैसी तुमको इच्छा है।।
हमने दो लकड़ी चट्टे से, बाहर रख ली ला कर के।
उस बढ़ई ने इक लड़के को, फ़ौरन कहा बुला करके।।
जाओ महात्माँ जी की लकड़ी, धूने पर रख कर आओ।
महाराज जी इस लड़के को, साथ लिवा कर ले जाओ।।
हमने एक टोकरा उपलों, का भी उससे माँग लिया।
उसने कहते ही अंदर से, लाकर हमको पेश किया।।
दो लड़के सामान उठाकर, पहुँचे जिसदम धूने पर।
तो वह साधू लगा देखने, हमको विस्मित सा होकर।।
क्यों कि स्वयं भिक्षा करके जब, लाता था साधू लकड़ी।
तो सारी की सारी लकड़ी, खुद के सर पर होती थी।।
अगले दिन रामा नंद से वह, साधू इस प्रकार बोला।
सोना बनवाना है तो, तांबा लाकर देना होगा।।
रामा नंद के पास अचवनी, थी सो उसने पकड़ा दी।

Nijanand App

बोला गोपी ताल चलो, क्यों के वहाँ बूटी मिल जाती।।
वहाँ काम नंहि बना तो कस्बे, पहुँचे तांबा गलवाने।
लेकिन स्र्वणकार चोरी, छिप्पे बनने पर नंहि माने।।
बोले अगर की मिया अपने, सन्मुख आप बनाओगे।
तब तो हम भी लगें साथ में, ताम्बा तभी गलायेंगे।।
वे चोरी चोरी करते थे, अतः लौट आये वापिस।
कई रोज गुरू चेले दोंनों, ने आपस में की फुसफुस।।
रामानंद को हर प्रकार से, फ़ांस लिया निज फंदे में।
उसकी बुद्धी लगी रहा, करती थी उस ही धंधे में।।
धर्म कर्म काफूर हुवे सब, सोते स्वर्ण जागते स्वर्ण।
स्वर्ण बने जैसे भी हो चाहे, शेष रहा बस यह ही धर्म।।
ऐसे मुग्ध हुवे रामानंद, जले भूने से साधू पर।
लाड़ों में आकर पकड़ा दी, कमली साफा औ चादर।।
एक रोज देखा तो साधू, आसन से गायब पाये।
सोता हुवा छोड़ गये सबको, ढूंड़ा खोज नहीं पाये।।
हमने कहा कहो रामा नन्द, गुरू तो छोड़ गये मजधार।
अब जीवन यापन कैसे, होवेगा है कोई उपचार।।
रामानंद सर धुनता रह गया, शब्द न निकला मुँह से एक।
सांप निकल गया अपने रस्ते, रहा पीटता उसकी रेख।।

पूछो मत बस क्या हुवा, रामानंद का हाल।
अपने वस्त्रों का उसे, आया बड़ा मलाल।।

विदा हुवे हम उस स्थल से, मिरजा पुर में जा पहुँचे।
कर कुछ दिन विश्राम वहाँ पर, बैज नाथ जी जा पहुँचे।।
तपो भूमि थी चार मील पर, जो विरक्तता उपजाती।
मन विशुद्ध होता था उसमें, लीन आत्माँ हो जाती।।
वहीं पहुँच कर ठहरे कुछ दिन, बस घटी नंहि कोइ विशेष।
आख़िरकार एक दिन वह भी, छोड़ा हमने पुण्य प्रदेश।।
देव गिरी नामक इक साधू, हमें मार्ग में ओर मिला।
वह भी प्रेम पगी प्रतिमाँ थी, विचर रहा था वह इकला।।
चलते चलते तीर नरवदा, हम तीनों जन आ पहुँचे।
नामक खेड़ी घाट आश्रम, था एक उसमें जा पहुँचे।।
एक भयानक जंगल लगता, था आश्रम के चारों ओर।
जीव जंतु अनगिन रहते थे, उसमें जिनका ओर न छोर।।

Nijanand App

स्वामी चंद्र शेखरा नंद जी, महाराज उस आश्रम के।
व्यक्ति जगत में परमहंस, करके वे माने जाते थे।।
रहते थे विदेह स्वामी जी, यदा कदा दिख भी जाते।
चरण पादुकाओं की आहट, सब सुनते जब वे आते।।
उनका पेट घड़ा सा लटका, रहता था जंघा के मध्य।
प्रतिमा थी प्रभाव शाली अति, हर प्रकार से थी समृद्ध।।
उनकी प्रभा चर्तुदिश बिखरी, सी पाई जाती सर्वत्र।
परम हंस जी का यश उज्वल, गाते रहते उनके भक्त।।
महा पुरूष का बास जंचा, करता था हर दम आश्रम में।
उन्हीं दिनों ठहरे हुऐ थे इक, बान–प्रस्थी आश्रम में।।

शंकर राव नाम था उनका, उनका लड़का भी था साथ।
था जवान पट्ठा आयू में, नामक ओंकारेश्वर नाँथ।।
माई जो थीं साथ बड़ी, पति भक्ता थीं अपने पति की।
सर्व प्रथम गुरू, माता ही, मानी जाती हैं संतति की।।
सती साध्वी माता थीं सुत, भी था अति आज्ञाकारी।
पत्नी शंकर राव बड़ी, श्रद्धालू ढंग की थी नारी।।
ठहरे जाकर ठीक बराबर, ही उनके हम जा करके।
जब हम लगे बनाने भोजन, तो वह बोली आ करके।।
आप कष्ट क्यों करते हो, भोजन तो हमीं बना देंगे।
जिस प्रकार का चाहोगे, महाराज बनाकर लादेंगे।।
अपना नित्य बनाती ही हूँ, तुम लोगों का और सही।
उसने अपनी एक न मानी, बहुत उसे इन्कार करी।।
सीदा मिल जाता आश्रम से, भोजन सती बनाती थी।
बड़े शुद्ध भावों से हमको, भोजन बना खिलाती थी।।
बाहर और भीतर दोंनों ही, पावन थे उस देवी के।
लक्षण सारे विद्यमान थे, जो होते प्रभु प्रेमी के।।
जो जैसा होता है उसके, वैसे ही सब लगते हैं।
कव्वे भी हंसों को अपने, से बदतर ही गिनते हैं।।
कभी भँवर में भ्रम भी अपने, मानव को लेता है खेंच।
भ्रम वश सीधी दीवारों में, लगने लग जाते है रेंच।।
आखें चुँधिया भी जाती हैं, बहु प्रकाश में चमड़े की।
तब खुलती हैं, जब जूती, पड़ती हैं सर पर चमड़े की।।
एक रोज़ भोजन बनवाकर, सारे जीम रहे थे हम।
थी तल्लीन जिमाने में वह, देवी हम सब को भोजन।।
शंकर राव कहीं बाहर से, तभी आश्रम में आया।

Nijanand App

उसने अपनी धर्मपत्नि को, सब की सेवा में पाया।।
तो झुँझला गया देखकर, अंदर जा बैठा चुपचाप।
भोजन आदि परस कर हमको, देवी पहुँची उसके पास।।
नम्र भाव में बोली पति से, आओ आप भी खालेओ।
तो वह रूखेपन से बोला, उनही लोगों को दे ओ।।
सेवा करो महात्माओं की, जाओ जीमाओ उन ही को।
हम को भूक नहीं है भागो, जाओ खिलाओ उन ही को।।
पाकर इक असभ्य सा उत्तर, वो बेचारी लौट पड़ी।
किन्तु क्षणिक उपरांत बात के, देवी फिर समीप पहुँची।।
आग्रह किया पुनः खाने का, पर उत्तर तीक्षण पाया।
उस देवी के ऊपर शंकर, राव क्रुद्ध हो गर्माया।।
जाओ करो सेवा उन ही की, उन ही से रक्खो मतलब।
उन ही की होकर अब रहना, ख़बरदार यहां आई अब।।
वह साध्वी अवाक् सी रहगई, सुन करके पति का आरोप।
फिर देवी इक शब्द न बोली, जाग उठा उसमें भी रोष।।
उसने ओंकारेश्वर को तो, खिला दिया खाना लाकर।
किन्तु स्वयं किनका नंहि जीमीं, लगी भजन करने जाकर।।
झाँझ उठाली उसने जाकर, रटने लगी प्रभू का नाम।
ज़ोर ज़ोर से लगी कीर्तन, करने ले ले प्रभु का नाम।।
शंकर राव क्रुद्ध तो था ही, भूत चढ़ा था सर उसके।
उसी दशा में उस देवी को, लगा मारने जाकर के।।
अन कहनी कह डालीं अन गिन, चढ़ा मूढ़ को क्रोधावेष।
लगा मारने बे दर्दी से, खेंचे फिरा पकड़ कर केश।।
मन में और लिये बैठी है, हमें भक्ति दिखलाती है।
राम नाम की ओट कल मुँही, पाप छिपाना चाहती है।।
खेंचे फिरा पकड़ कर चुटिया, झाँझ फेंकदी हाथों से।
बे दर्दी से करी पिटाई, उसने घूँसे लातों से।।
सुनकर शोर आश्रम वासी, भागे उसे छुड़ाने को।
जिसने सुना मारना उसका, भागा तुरंत बचाने को।।
ओंकारेश्वर भी आ पहुँचा, सुनकर मार पीट माँ की।
सभी इकट्ठे होगए जाकर, जितने थे आश्रम वासी।।
शंकर राव पुत्र से बोला, ओंकारेश इधर आओ।
हमें हमारे रूपये और, हमारा बिस्तर दे जाओ।।
तुम अपनी जनिब से मर गए, हम मर गए तुम लोगों से।
कहीं जहन्नुम में जाओ तुम, हमें नहीं मतलब तुमसे।।

Nijanand App

बोला ओंकारेश पिता जी, वह तो एक धरोहर है।
उसे आप जब चाहें ले लें, उसमें हमें उज़र कब है।।
आधा, पौना, पूरा, जितना, चाहो लो, इन्कार नहीं।
वह धन पैदा किया आपने, अपना कुछ अधिकार नहीं।।
लेकिन परिस्तिथी को सोचो, रूक जाऐं जाने से आप।
अनुचित उचित सभी आती हैं, सह लेंगे घर में चुप चाप।।
हमें छोड़कर चले गये यदि, तो हमपर क्या बीतेगी।
दुनियाँ जानें क्या क्या कहकर, हम लोगों पर थूकेगी।।
शंकर राव क्रोध के वश था, रोका किन्तु नहीं माना।
जिसने भी समझाया उसको, उसने जाना ही ठाना।।
ज़िद्द पिता की बेहद लखकर, बिस्तर रूपये ले आया।
जितना रूपया पास अमानत, सारा लाकर पकड़ाया।।
शंकर राव सती साध्वी, पतनी को रोती छोड़ गये।
सर ऐसा चाण्ड़ाल चढ़ा, बे सोचे रिश्ता तोड़ गये।।
परम हंस स्वर्गीय आठ दिन, पूर्व स्वप्न में आये थे।
शंकर राव उन्होंने अपने, वचनों से समझाऐ थे।।
थे स्वर्गीय किन्तु सूक्षम बपु, से स्वामी जी रहते थे।
औ विदेह होकर निज आश्रम, में वे विचरा करते थे।।
आठ रोज़ पहले घटना से, शंकर राव सचेत किया।
परम हंस जी ने सपने में, उनको यह आदेश दिया।।
भजन करो निर्द्वन्द आप, मैं तुमसे दूर नहीं रहता।
अपने पास समझ़ना मुझको, कोई चिंता मत करना।।
पुत्र तुम्हारा ओंकारेश्वर, बड़ा योग्य बन जायेगा।
एक रोज़ यह बड़ा महात्मा, बन कर यश फैलायेगा।।
सिर्फ़ एक सप्ताह बाद ही, शंकर राव विचल बैठा।
सर भूत कहाँ से जाने, उनके आकर चढ़ बैठा।।
मार कूट कर भ्रम वश अपनी, पतनी को भी छोड़ भगा।
भ्रम में परख न पाया पागल, कौन शत्रु है कौन सगा।।
अस्ताचल के निकट सूर्य था, शंकर राव चला जिस वक्त।
डेढ़ मील पर स्टेशन था, मार्ग भंय कर था औ सख्त।।
बड़ा सघन वन स्टेशन तक, दिन तक में मिल जाते शेर।
दिन के छिपा छिपी मत पूछो, क्या बीते जब हो अंधेर।।
शंकर राव मध्य स्टेशन, के जब पहुँचा घबराया।
क्यों कि अचानक पीछे से, उनको इक ऐसा शब्दाया।।
ठैर कौन जाता है भागा, शंकर राव मुड़ा पीछे।

Nijanand App

देखा तो कोई भी नंहिं था, कहने वाले नंहि दीखे।।
इतने में कुछ पड़ा खट्ट से, उसके सर पै आकर के।
शंकार राव खट्ट होते ही, पड़ा धरन में जाकर के।।
पुनः शब्द आया क्यों रे ओ, तुझ को होश नहीं आया।
अभी एक सप्ताह न बीता, सपने में था समझाया।।
हर प्रकार संतुष्ट किया था, तुझे चेत कराया मूर्ख।
भक्त बनेगा तेरा लड़का, इतना तक समझाया धूर्त।।
अंग लगी नंहि तेरे लेकिन, बाज़ नहीं आया कमबख़्त।
शब्द खत्म होते ही इकदम, हुई खोपड़ी पर फिर खट्ट।।
पड़ने लगीं खटाखट फिर तो, जो करवट आती आगे।
बिस्तर फेंक भूमि पर शंकर, फिरे वहाँ भागे भागे।।
कभी कमर पर कभी खोपड़ी, कभी चूतड़ों पर आती।
दिखता न था मारने वाला, पर खंड़ाम बजती जाती।।
चला जायगा क्या तू लाँछन, देके एक महात्माँ को।
खाल खेंच लूँगा मैं तेरी, दिया दाग़ पुण्यात्माँ को।।
चलो क्षमाँ मांगो चल करके, वापिस लौटो आश्रम को।
जब तक क्षमाँ न माँगो उनसे, छोड़ूँगा नंहि मैं तुमको।।
चीख़ रहा था पड़ा भूमि पर, शंकर राव चोट खाया।
चलो एक दम वापिस आश्रम, कड़कदार फिर शब्दाया।।
साथ साथ ही लात कमर में, लगी जोर से शंकर के।
शंकर राव तभी आश्रम को, मुड़ें बिस्तरा ले करके।।
इधर पत्नि का हाल बुरा था, रो रो टेर रही पति को।
पेट पीटती आपा धुनती, देख देख निज अवगति को।।
इतने बुरे लाँछन को लख, निज साथी बोले हमसे।
महाराज जी उचित यही है, चुपके से चल दो यहाँ से।।
हमने कहा अरे दुर्बद्धो, दाग़ कहाँ ले जायेंगे।
जिसने भेंट किया यह हमको, उसे सोंप कर जायेंगे।।
इतने में वह माइ हमारे, पास आइ रोती धोती।
अश्रु पूंछकर चरण लिये, और इस प्रकार आकर बोली।।
देख रहे हो आप हमारी, हालत क्या निज बीत रही।
फिर भी आप नहीं कुछ करते, कसर कौन सी शेष रही।।
आठ रोज ही पहले आके, परम हंस जी ने उनको।
चेत कराया था सपने में, निष्कंटक हो भजन करो।।
हमें दूर मत समझो खुद से, पास हमें समझो अपने।
पर क्या पत्थर पड़े अक़्ल पर, समझाया आश्रम भरने।।

Nijanand App

चले गये तजकर हम सबको, भ्रम ने ऐसा भ्रमित किया।
जो अपने थे जनम जनम के, अपने हाथों दाग़ दिया।।
करें भरोसा अब हम किसका, तुम ही बतलाओ महाराज।
अपने भी बन गये पराये, कोइ न दिखता अपना आज।।
हमने दुख़ी देकर उसको, कहा शान्त अब हो जाओ।
दुनियाँ स्वयं तमाशा है इक, जो गुज़रे देखे जाओ।।
परम हंस ने चेत कराया, तब तो यह परिणाम हुवा।
श्रद्धा शून्य व्यक्ति के संग में, तुम्हीं कहो क्या जाए किया।।
अगर आपका कथन ठीक है, चेत कराया था उसको।
तो देवी तुम घबराओ मत, भेजें परम हंस जी को।।
अभी आए जाते हैं तेरे, पति देवी घबराओ नहीं।
भजन किये जाओ प्रीतम का, बैठी बैठी आप यहीं।।
एक घाड़ी पीछे देखा, बिस्तर है उसके कंधे पर।
एक शराबी सी हालत में, चले आ रहे हैं अंदर।।
डाँवा डोल अवस्था में है, गति है उसकी बे ढंगी।
मार मार कर जैसे उसको, बना दिया होवे भंगी।।
परम हंस जी की समाधि के, जब सन्मुख हुवे शंकरराव।
ऐसा पटका परम हंस ने, जैसे पहलवान ने दांव।।
शब्द हुवा इक दम धड़ाम से, निकली बड़े जोर की चींख़।
देखा जब सबने जाकर के, पड़ा हुवा था आँखें मींच।।
लड़का और पत्नि हम सब जन, पहुँचे उसे देखते ही।
पर अचेत पाया वह हमको, उठा लिया झट जाते ही।।
जंधा पर सर रखकर उसकी, पतनी बैठ गई उसका।
होश जल्द हो जावे जिससे, करने लगे हवा ववा।।
थोड़ी देर बाद उसको कुछ, होश आना आरम्भ हुवा।
आँख फाड़कर इधर उधर को, उसने लखना शुरू किया।।
तो पतनी बोली प्रीतम से, हमें आज यों लगता है।
परम हंस जी के दर्शन, तुमको हो गए यह जंचता है।।
शंकर राव शब्द सुन करके, बोला धीमे से स्वर में।
दर्शन कैसे बल्कि कहो यों, मार लगाई है हममें।।
लड़के को पुकार कर बोला, ओंकारेश कहाँ हो तुम।
लड़का बोला अजी पिताजी, सन्मुख ही हूँ करो हुकुम।।
बेटा अगर पैर में जूता, हो तो मेरे आकर मार।
इसी योग्य है बाप तुम्हारा, मारो इसको बे अख़्तयार।।
हुकुम समझ या इसको सेवा, बेटा बड़ा नींच हूँ मैं।

Nijanand App

बड़ी हानि पहुँची है मुझसे, तुम लोगों की इज्ज़त में।।
लगा देखने पैर पतनी के, तेरे पै यदि जूता हो।
तो तू ही किरपा कर इतनी, मेरे इस सर में मारो।।
मेरे जैसा अधम नींच, पाखण्डी अन्य नहीं होगा।
जितना काम किया नींचा, उतना भुगतान नहीं होगा।।
पश्चात्ताप रहा करता वह, घण्टों बैठा इसी प्रकार।
मुश्किल से उठकर आने को, हुवा वहाँ से वह तय्यार।।
जो कालिख सौगात मिली थी, जब उसने वापिस ले ली।
और किये कर्मों पर अपने, माफ़ी वाफ़ी जब ले ली।।
देव गिरी रामानंद से हम, बोले अब हो लो तय्यार।
अब अपनी पगडण्डी पकड़ो, मंजिल पर हो लो असवार।।
झोली कम्बल उठा वहाँ से, फिर हमने प्रस्थान किया।
दरभंगा की ओर चलेंगे, हमने मन में ठान लिया।।
शुक्र गुजार बहुत सदगुरू के, करी कृपा हम पर।
इज्ज़त से चल दिये वहां से, निज झोली लेकर।।
चले लाँघते पर्वत जंगल, नदी नर्बदा की घाटी।
कुछ दिन चल कर ओंकारेश्वर, की हमने मंजिल काटी।।
ओंकारेश्वर महादेव जहाँ, राज्य वहाँ मीलों का था।
रामानंद लगा कहने, ठहरेंगे हम बोलें, अच्छा।।
स्वर्ण पत्र था ओंकारेश्वर, महा देव पर चढ़ा हुवा।
ख़ैर उसी मंदिर पर अपना, हमने आसन लगा लिया।।
अगले दिन रामा नंद बोला, चलो किला देखेंगे आज।
भील राज करते है यहाँ पर, चलो देख आवे महाराज।।
हमने कहा क़िले का क्या, देखें देखो तो राजा को।
जिसके दर्शन वर्शन से कुछ, हासिल होवे अपने को।।
पत्थर से सर मारे से तो, कुछ भी प्राप्त न होवेगा।
चेतन सत्ता के दर्शन से, ही कुछ हासिल होवेगा।।
परमात्माँ की इक विशेष, शक्ती होती राजा में व्याप्त।
एक पंथ दो काज सेरंगे, दर्शन हों ओ हो कुछ प्राप्त।।
ठीक लगी रामानंद को यह, महाराज जी ठीक कहा।
वही किला भी होगा उसका, राजा भी उसमें होगा।।
फिर क्या था रामानंद हमको, जुटा नीति बतलाने को।
राजा से इस तरह मिलेंगे, युक्ति चला समझाने को।।
कभी बताता पत्र लिखो इक, द्वार पाल को देवेंगे।
द्वार पाल राजा को देगा, इस प्रकार मिल लेवेंगे।।

Nijanand App

कभी बताता द्वार पाल की, कृपा अगर हमपै होवे।
दर्शन तभी सुलभ होवेंगे, राजा से मिलना होवे।।
सुनते रहे युक्तियाँ उनकी, अपना दिल तो था निर्भीक।
हमें कोइ भी युक्ती उसकी, अपने मन को लगी न ठीक।।
राजा शब्द हमारे मन को, कुछ महत्व नहीं देता था।
बल्कि एक साधारण सा ही, शब्द हमें वह लगता था।।
हम बोले रामा नंद जी से, आप व्रथा घबराते हैं।
साथ हमारे चलकर देखो, कैसे तुम्हें मिलाते हैं।।
राज महल के मुख्य द्वार पर, जब अपना जमघट पहुँचा।
तो हमको इक द्वार पाल ने, देखा औ आकर रोका।।
आप कहाँ जाते हो आगे, उसने हमसे प्रश्न किया।
हम बोले राजा से मिलने, उत्तर यह बेख़ौफ़ दिया।।
बोला पीछे हटो यहाँ से, राजा यहाँ नहीं रहता।
चला हमारी ओर वचन वो, इस प्रकार हमको कहता।।
हम बोले क्या गद्दी यहाँ की, सूनी पड़ी हुई है भाइ।
अपनी बातें सुनकर उसकी, आँखों में सुरखी सी आइ।।
कहीं गद्दियाँ सूनी रहती, हैं उसने हमको डपटा।
उसपर हैं युवराज आज कल, इतना कहकर चुप्प हुआ।।
हम रामानंद की जानिब को, मुंह करके उससे बोले।
राजा तो यह नहीं बताते, राज कुँवर हैं गद्दी पर।।
बात चीत तो क्या होंगी, पर चलो उन्हीं के पास चलो।
राजा आगर नहीं हैं तो फिर, राज कुँवर ही से मिल लो।।
हम चलने को जिसदम सारे, अंदर को तय्यार हुवे।
जान गया वह द्वारपाल कि, ये रोके नंहि रूकने के।।
बोला देखो वे तलवारें, लटक रही हैं राजा की।
दर्शन उनके करजाओ अब, समझो उनको राजा ही।।
हमने उसकी बातें सुनकर, बड़े ज़ोर का व्यंग कसा।
कैसी बातें करते हो तुम, दर्शन करलें लोहे का।।
क्या हम दर्शन करते फिरते, हैं लोहे का ओ दरबान।
राजा को तू क्या समझे है, चमड़े का ही है इन्सान।।
केवल तेरे समझे से क्या, परमात्माँ बन जायेगा।
या हमसे परमात्माँ करके, राजा को पुजवायेगा।।
नाम बड़े और दरशन छोटे, बड़े बोल तो मत बोलो।
बातें करो होश की हमसे, अमृत में विष मत घोलो।।
क्या तलवारें तेरे राजा, ही ने रक्खी हैं जग में।

Nijanand App

तू शायद यह समझ रहा है, कभी राजा नंहि मिला हमें।।
ज़ोर ज़ोर से जब मैं बोला, ढला सिपाही स्तर से।
डाक छुटी देखी जब अपनी, तो नवकर बोला हमसे।।
ग़लती हुई हमारे से प्रभु, अब कृप्या ख़ामोश रहो।
दर्शन अभी मिलेंगे उनके, कृप्या थोड़े खड़े रहो।।
राज कुँवर स्नान आदि से निब्रत होकर आऐंगे।
एक महल से निकलेंगे, और दूजे में को जायेंगे।।
आप तभी दर्शन कर लेना, हम बोले यदि ऐसा है।
हमें यहाँ से दर्शन करवा, ने की तेरी इच्छा है।।
तो हमको सूचित कर देना, पाँच मिनट पहले उनसे।
अच्छा कहकर चला गया वो, पहरे पर दरवाज़े के।।
होकर के बेफ़िक्र बैठ गए, हम अपने स्थानों पर।
सूचित कर ही देगा अब यह, हमें भरोस हुआ उसपर।।
जल्दी जल्दी धीमे स्वर में, द्वारपाल बोला पश्चात्।
अरे खड़े हो अरे खड़े हो, कहने लगा हमें इस भांत।।
हम उसका मुँह तकते रह गए, जाने अब क्या बकता है।
जानें किस कारण वश हमको, खड़ा यहाँ से करता है।।
राज कुँवर जिसद्वारे से, बाहर को अने वाला था।
हम लोगों का लक्ष एक दम, द्वार पाल की ओर हुआ।।
इतने में युवराज निकलकर, जा भी चुके अन्य घर में।
द्वार पाल अब क्या कहता है, हम थे इसी प्रतीक्षा में।।
राज कुँवर के अंदर जाते ही, वह द्वार पाल अपने।
सिर हो गया हमारे आकर, लगा हमें कुछ कुछ बकने।।
तुमने किया निरादर अपने, श्री युवराज बहादुर का।
उसने आपे से बाहर हो, करके हम सबको घुड़का।।
क्यों नंहि खड़े हुवे तुम अपने, संकेतों पर उत्तर दो।
जल्द खड़े हो जाओ सब, क्या कहा नहीं हमने तुमको।।
जान बूझकर राज कुँवर का, तुम सबने अपमान किया।
बिला वजह ही अपने सर पर, चढ़ा वो, हमने जान लिया।।
इसे पड़ेगा हमें रोकना, अपनी बकता जाता है।
हमें जानकर के भिखमंगे, सर पर चढ़ता चाहता है।।
हम बोले ख़ामोश रहो अब, कहा था सूचित कर देना।
पाँच मिनिट पहले आने से, सावधान हमें कर देना।।
तुमने हमें बताया क्यों नंहि, पहले इसका उत्तर दो।
आदर करते या कि निरादर, कम से कम अजमाता तो।।

Nijanand App

किन्तु जानकर तेंने अपने, साथ धृस्टता की है ये।
और हमीं को दोषी ठहरा, कर करता है अबे तबे।।
रामा नंद चलो इस पागल, के मुँह हरगिज मत लगना।
जिस राजा के द्वारपाल, ऐसे हों उससे नंहि मिलना।।
हमने बेअदबी की है, इस पागल के राजा के साथ।
हम बाहर को चले ज़ोर से, कहकर उसको ऐसी बात।।
राज महल से जाकर बाहर, हम इक पत्थर पर बैठे।
द्वार पाल द्वारे पै हमने, छोड़ दिये ऐंठे ऐंठे।।
राज कुँवर ने भी सुन ली थीं, अपनी द्वार पाल की बात।
अतः महल में राजकुँवर ने, बुलवाये वे हाथों हाथ।।
किस आज्ञा से डाट रहा था, महात्माओं को द्वारे पर।
चाह रहा क्या धूल उछल, वाना कमबख़्त हमारे पर।।
जब बाहर आये हम तेंने, कैसे कहा खड़े हो जाओ।
किस कारण अपमान हुआ, हम लोगों का हमसे बतलाओ।।
मस्तक हमें झुकाना चाहिये, या उनसे झुकवाऐंगे।
करना चहिये हमें या हम, उनसे सत्कार कराऐंगे।।
पाँच मिनिट पहले सूचित, करने को जब तुमसे बोले।
तो तुमने उनको सूचित क्यों, नहीं किया बतला, क्यों बे।।
अपनी ख़ता डाटता उनको, जाओ उन्हें आदर से लाओ।
वरना इसकी सज़ा मिलेगी, यह भी बात समझते जाओ।।
द्वार पाल भागा हुआ अपने, पास वहीं पहुँचा उस ठौर।
आपस में बातें हम तीनों, कर रहे बैठे जिस ठौर।।
आते ही बोला वह हमसे, अजी महात्माँ जी तुम को।
राज कुँवर ने याद किया है, बुला रहे हैं तीनों को।।
चेहरे को देखा जब उसके, सत्ता छिनी हुई सी थी।
मुँह पर आब नहीं थी उसके, आभा पिटी हुई सी थी।।
हमने समझ लिया कहते ही, बोले, गई हमारी मौज।
जिस रौ में हम जा पहुँचे थे, बेटा राम उड़ी वह मौज।।
अब तेरा युवराज स्वयं भी, लेने आवै तौ नंहि जाँए।
क्यों बे अदबों में जा करके, अपनी बेअदबी करवाँए।।
मुलजुम नहीं आपके कोई, चोरी हमने करी नहीं।
ना हम उसकी कोइ रिआया, हमें न जाना जाओ कहीं।।
अपनी मौज गये थे भइया, अपनी मौज चले आये।
जाओ यहाँ से क्यों करते हो, अपने संग झाँए झाँए।।
चला गया हथप्रभ सा होकर, द्वारपाल वह आखिर कार।

Nijanand App

पेश चली नंहि जब हम कुछ, लौट गया होकर लाचार।।
एक और आया अंदर से, उसने बतलाई सब बात।
कँवर साहब सुन रहे थे सारी, जो कुछ हुआ तुम्हारे साथ।।
इसे डाटकर के भेजा था, उन्हें अदब से वापिस लाओ।
वरना इसकी सज़ा मिलेगी, यह भी बात समझते जाओ।।
हम सब चले आए उठकर के, ठहरे थे जिस मंदिर में।
निज मस्ती में रहे कई दिन, मंदिर ओंकारेश्वर में।।

मौजों में रहते सदा थी सदगुरू की देन।
पधरे रहते थे हिये गुरू ऐन के ऐन।।

कुछ दिन और वहाँ ठहरे हम, तत्पश्चात् चले आगे।
बड़े दिनों के बाद एक दिन, दरभंगा पहुँचे जाके।।
वहाँ एक आश्रम में ठहरे, था स्थान बड़ा रमणींक।
हर प्रकार की सुविधा थी हर, द्रष्टिकोंण से था वो ठीक।।
रामानंद को एक रोज़ वहाँ, भिक्षा करने की सूझी।
यहाँ नगर में भिक्षा की, जावे उसने हमसे बूझी।।
हमें हमेशा जल्दी सूझा, करती थी बोले उससे।
सौ द्वारे टक्कर मारोगे, क्या हासिल होगा उससे।।
अलख जगाते डोलो घर घर, सौ दरवाज़े झाँकोगे।
तब कंहि भिक्षा हाथ लगे जब, ख़ाक छटाँको फाँकोगे।।
अरे एक दरवाज़ा माँगो, और तृप्त होकर उड्डो।
जीमो और दक्षणाँ भी लो, ऐसा दरवाज़ा ढूँडो।।
रामानंद ने पूछा हम से, ऐसा द्वारा है किसका।
उत्तर दिया उसे हमने, भाई ऐसा है राजा का।।
आइ समझ में उसके सुनकर, तीनों ने प्रस्थान किया।
राज द्वार पर अपना जमघट, अलख जगाने जा पहुँचा।।
अफ़सर लोग महाराजा के, हम लोगों को नज़र पड़े।
कुछ पौड़ी चढ़कर ब्राँडा था, जिसमें थे सब खड़े हुवे।।
रामानंद तिलक छापों की, रखता था बेहद भरमार।
टीप टाप और माला वाला, पहना करता बड़ा सँवार।।
हम भूतनाँथ बाबा थे, कौन डालता हमको घास।
अपने फ़ैशन नहीं बदलता, बेढंगे हम बारो मास।।
हमने भिक्षा करने के लिए, रामानंद तैनात किया।
आज भार तीनों पेटों का, तेरे सर है सोंप दिया।।

Nijanand App

रामा चढ़ा पौड़ी पर, हम नींचे हो गये खड़े।
उन लोगों को ऊपर आते, रामानंद जी नज़र पड़े।।
इक अफ़सर बोला उनमें से, जब ये ऊपर पहुँच गये।
लहजा कड़कदार था उसका, क्यों क्या है कैसे आये।।
रामाँनंद बोला हम भिक्षा, करने आये हैं महाराज।
निकली थी डरपीली सी कुछ, उस बेचारे की आवाज़।।
कैसी भिक्षा, क्या है भिक्षा, क्या मतलब है भिक्षा का।
टुटे से मूढ़े पर तब तक, रामानंद था बैठ चुका।।
बैठा का बैठा ही रह गया, सुनकर भिक्षा का मतलब।
एक व्यंग सा उस अफ़सर का, आया अपने कानों तक।।
दे न सका उत्तर रामानंद, सुनकर उससे ऐसी बात।
अफ़सर ने दौहराया फिक़रा, कई बार नचका कर हाथ।।
रामानंद तो सह गए उसकी, पर हम सहन न कर पाये।
वहाँ हमें बारह बीघे में, भी अंकुर नंहि दिख पाये।।
हम नीचे से ही बोले भइ, सुनते भी हो रामानंद।
तुमने जीवन कहाँ बिताया, तुम तो रहे अंध के अंध।।
महाराज क्या जाने भिक्षा, किस चिड़िया को कहते हैं।
राज प्रशादों में तो भाई, सेवक गंण ही रहते हैं।।
तुमने बड़ी सख़्त गलती की, इनसे भिक्षा जा माँगी।
इनसे झाड़ू मांगी होती, जो जाते ही मिल जाती।।
प्रातः से संध्या तक इनके, आँगन में झाड़ू देते।
संध्या को गिड़गिड़ा माँगते, तब ये इक रोटी देते।।
ये बेचारे भिक्षा को क्या, जानें कैसी होती है।
तुमने पहले परखा होता, पत्थर है या मोती है।।
सुनकर इतनी बात हमारी, लाल हुई अफ़सर की आंख।
उठा उछलकर कुर्सी से झट, लगी भड़कने उसकी साँस।।
कम्पन सा आ गया शब्द में, गुस्से से निकली आवाज़।
बड़े जोर से उस अफ़सर ने, सेवक गण को दी आवाज़।।
इन्हें निकालो बाहर इक दम, देखो कौन घुसे है ये।
धक्के देकर के निकाल दो, बाहर इनको अंदर से।।
दौड़ पड़े सौइयों इक दम से, जब उसने यों शोर किया।
और हमें आकर उन सबने, चौ तरफा से घेर लिया।।
कांप उठा रामा नंद उनकी, जब ऐसी लीला देखी।
लगा सोचने जानें अब हम, लोगों पर क्या बीतेगी।।
जब अफ़सर रूक ही नंहि पाया, गया जोर में भरता ही।

Nijanand App

इन्हें निकालो इन्हें निकालो, रहा शोर यों करता ही।।
हम तो फिर ही रहे निकले, तुम क्या हमें भगावोगे।
हम ख़ुद को खाये फिरते हैं, तुम क्या हमको खाओगे।।
बाहर कर भी दिया हमें गर, तब भी गिने जाँए निकले।
चाहे शहर से बाहर कर दो, तब भी गिने जाँए निकले।।
अंदर निकले बाहर निकले, यहाँ भी निकले खड़े हैं हम।
कहीं हमें ले चल दुनियां में, निकले गिने जायेंगे हम।।
जान मार दोगे गर अपनी, मिले परातम से जाके।
निकले गिने जायेंगे तब तक, जब तक बीच हैं दुनियां के।।
तड़प उठा गुस्से में आकर, जब हमसे यह वचन सुना।
लगा काँपने गुस्से में वह, क्रोधावेष हुवा दुगना।।
हम उसका आवेष देखकर, बोले रामानंद चलो।
ये क्या बाहर हमें करेंगे, भाइ यहाँ से खुद निकलो।।
शुद्र नदी भरी चलि अतुराई, जिमि थोड़े धन खल बौराई।
बूंद अघात सहे गिरि कैसे, खल के वचन संत सहें जैसे।।
चौपाई कहके रामानंद, से हम बोले रामानंद।
चलो यहाँ से हमको तो अब, मार रही इनमें दुर्गंध।।
तुम्हें अगर इनकी सेवा, आदिक पर भिक्षा हो मंजूर।
तो आ जाना हम जाते हैं, हमें नहीं है यह मंजूर।।
हम औ देव गिरी दोनों ही, बाहर निकल आए कहकर।
पर रामानंद साथ न आया, बैठा रहा वहीं सुन कर।।
ख़ूब तमाशा देखा अपना, प्रजा जनों ने आकर के।
इक दुकान ख़ाली सी थी, हम बैठे उस पर जा करके।।
करनी थी प्रतीक्षा क्यों के, रामानंद के आने तक।
बैठ न पाये प्रजा जनों का, वहां आ गया इक जमघट।।
देखा था व्यौहार हमारे, साथ उन्होंने राजा का।
हर इक के दिल में अपने प्रति, एक अनौखी थी श्रद्धा।।
जोड़ जोड़ कर हाथ हमारे, से कहना आरम्भ किया।
खेंचा तान हमें ले जाने, को घर का प्रारम्भ हुवा।।
कोई अपने घर को कहता, कोइ कहता अपने को।
लेकिन हम तय्यार नहीं थे, कहीं किसी के जाने को।।
कोइ लड़ो मत आपस में, हम भूखे नंहि हैं भूते हैं।
यह ब्यत जानो हम दुनियाँ के, टुकड़े चुगते फिरते हैं।।
ले आये पकवान मिठाई, कुछ सज्जन हम लोगों को।
हमने कुत्तों की जानिब, संकेत किया इनको दे दो।।

Nijanand App

जो भूके हैं उन्हे खिलाओ, हम तो छके हवये हैं भाइ।
छके हुवे को अगर छकाया, क्या हासिल कुछ समझे भाइ।।
चले आए जब हम बाहर तो, समझ आइ कुछ अफ़सर को।
दुर्व्यौहारों पर अफ़सर को, ग्लानि स्वयं आई खुद को।।
जंचा उसे आपा जैसे, इसने अमृत विष कर ड़ाला।
कोई भारी पाप वाप, याके अनर्थ हो कर ड़ाला।।
रामानंद वहीं था तब तक, उससे कहा महात्माँ जी।
पता नहीं उस समय हमारे, से क्यों ऐसी ख़ाता हुई।।
कैसे हुई धृष्टता हमसे, पता नहीं अच्छा जाओ।
क्यों कि आपके साथी हैं वे, वापिस उन्हें लिवा लाओ।।
रामानंद लगा कहने वे, मेरे कहे न आयेंगे।
अच्छा आटा सीदा उनका, जितना चाहो ले जाओ।
हमसे सीदा भी नंहि लेंगे, आप स्वयं ही दे आओ।।
सौदा अगर नहीं लेते तो, ले जाओ इक इक रूपया।
रामा नंद पुनः बोला तुम, हमको कुछ मत दो कृप्या।।
स्वयं आप बुलवालो उनको, अपने सेवक गण के हाथ।
सत्य समझना अपनी तो, मानेंगे नहीं एक भी बात।।
तभी उन्होंने इक सेवक को, बुलवा कर आदेश दिया।
बाहर से उन महात्माओं को, बुला लाओ यह हुक्म दिया।।
हम दुकान पर बैठे मिल गए, उस सिपाइ को जाते ही।
उसने हम दोनों से जाकर, इस प्रकार की बात कही।।
हाथ जोड़ कर किया निवेदन, कहने लगा महात्माँ जी।
उप सामन्त महाराजा के, बुलवाते हैं तुम्हें वहीं।।
क्यों रे क्या हैं चोर तुम्हारे, क्यों बुलवाता है सामंत।
मार आए या उठा लाए कुछ, सूली देगा क्या सामंत।।
दाता नहीं विधाता वह नंहि, कौन बला है यह सामंत।
हम क्या जानें किस बनमानुष, को कहते हो तुम सामंत।।
भाग यहाँ से हम नंहि जाते, हमसे ज़्यादा सर मत मार।
करले अपना जो जी चाहे, ले आ जो चाहे हथियार।।
अजी आपके साथी भी तो,वहीं विराजे हैं महाराज।
उन ही ने तुम को बुलवाया, है शायद कुछ होगा कांज।।

वह अपना साथी क्यों होता, क्या मतलब अपना उससे।
वह अपना कर्तव्य कर रहा, हम अपना करते फिरते।।
जाओ हमारा कोइ न साथी, कोइ न सम्बंधी अपना।
बंधन में सामन्त तुम्हारा, होगा हम नंहि कह देना।।

Nijanand App

चला गया चुप चाप सिपाही, अपना उत्तर पाकर के।
कुछ क्षंण बाद हमें रामानंद, भी मिल गया वहाँ आकर के।।
परखा नृप दर भंगा को भी, देख चुके ऊँची दुकान।
देख लिये व्यंजन चख कर सब, पर निकले फीके पकवान।।

मास घौंसले चील के, ना मुमकिन सी बात।
नीरस में रस खोजते, तृष्णा फिरें बुझात।।

अतः वहाँ से भी हम सबने, उठ करके के प्रस्थान किया।
अपना इक दिन साधू तेकड़ा, आख़िर कलकत्ते पहुँचा।।
मौमिन पुर से वर्दमान, महा राजा की कोठी के पास।
महा देव तालाब नाम से, कलकत्ते में है विख्यात।।
कलकत्ता जन नित्य कर्म, आदिक करने वहाँ आता है।
बड़ा नीर निर्मल है उसका, आलम रोज़ नहाता है।।
तीर ताल के एक चौतंरा, हमें पड़ा ख़ाली पाया।
हमने अपना आसन जाते, ही उस ही पर लगवाया।।
बड़ा कर्म काण्डीवी जन उस, जगह नहाने को आता।
इक अटूट से जन समूह का, लगा रहा करता तांता।।
धीरे धीरे जन मुमुक्ष कुछ, अपने निकट लगे आने।
हम फक्कड़ थे नंग धड़ंगे, क्यों श्रद्धा उपजी अपने।।
सेठ लक्ष्मी नारायण था, कलकत्ते का व्यक्ति विशेष।
बड़ा दयालू औ भावुक था, उस मानव का हृदय प्रदेश।।
नित्य क्रम आदिक से निवृत, होने वे नित आते थे।
दैव योग वश वे अपने ही, आगे रोज़ नहाते थे।।
गीता पाठ किया करते थे, घंटों जल में खड़े खड़े।
आते बहुत सवेरा लेकिन, निपटा करते सूर्य चढ़े।।
न्हा धो चुके एक दिन जब वे, औ चलने का वक्ताया।
तो हमने करकी झोली, देकर के उनको बुलवाया।।
हमने प्रश्न किया उनसे तुम, जल में यह क्या करते हो।
क्या पुस्तक है जिसको तुम यों, जल में आकर पढ़ते हो।।
अजी महात्माँ जी गीता का, पाठ किया करते हैं हम।
इसे पठन करने का हमने, बना लिया है एक नियम।।
हमने प्रश्न किया दोबारा, बात आपकी अच्छी है।
तुमने खुद ही पढ़ी अभी तक, या यह कभी सुनी भी है।।
हाथ जोड़ कर बोले ना जी, सुनी किसी से नहीं कभी।

Nijanand App

ना हमने सुनने की भगवन, किसी अन्य से कोशिश की।।
केवल पढ़ ही लेता हूँ बस, धर्म समझ कर के अपना।
हमने कहा सेठ पढ़ने से, मतलब हल नंहि होने का।।
जो रहस्य गर्भित है इसमें, स्वयं समझ नंहि पावोगे।
जब तक सुलझे हुवे पुरूष से, भेद नहीं खुलवाओगे।।
आप सेठ जी क्या जाने यह, कृष्ण कौन है गीता का।
करी बाल लीला किसने, किसने महाभारत जीता था।।
इसमें भेद छिपे है जितने, जान न पाओ खुद पढ़कर।
जब तक खोलें नहीं आप को, पता तभी होगा सुनकर।।
भेदों का भेदी जाने बस, गर भेदी होवे पूरा।
वरन हजारों मिले ख़ाक में, पढ़ पढ़ गींता को शूरा।।
अपनी बातें सुनी सेठ ने, उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा।
सत्संग में आने लग गए नित, इतना उन पर असर पड़ा।।
कहने लगे सेठ जी इक दिन, हाथ जोड़कर के हमसे।
जितनी मूर्ति आपके संग है, जीमेंगी मेरे अब से।।
जब तक आप यहाँ ठहरेंगे, सब प्रबन्ध मेरा होगा।
अन्य जीमने नहीं जाओगे, ऐसा अब नंहि होने का।।
हमने कहा सेठ जी हम तो, साधू हैं कुछ पता नहीं।
ना जाने क्षंण में हम कितने, हो जाए कुछ ज्ञात नहीं।।
गिन कर तुमको क्या बतलायें, अपनी नहीं कोइ तादाद।
तिस पर समय मकर संक्राती, गिन उसको ले हो इक आध।।
गंगा सागर के मेले का, वक्त निकट आ पहुँचा था।
जो सागर के अंदर टापू, में सालाना भरता था।।
जहाँ कपिल ने महिप सगर के, भस्म किये सुत साठ हज़ार।
उसका ही मेला भरता था, बड़े जोर का सागर पार।।
सुनकर उत्तर दिया सेठ ने, फिर क्या चिंता है महाराज।
चाहे जितने हों ऐकत्रित, जीमेंगे सब मेरे आज।।
हमने भी स्वीकृति दे दी फिर, चले गये इसके पश्चात्।
इंतजाम लंगर आदिक का,किया उन्होंने हाथों हाथ।।
बढ़ते गये महात्मा ज्यों ज्यों, बढ़ता गया रसद भी और।
जिधर बिना मांगे मिलता हो, भला जगह क्यों खोजें और।।
ले ले करके आड़ हमारी, पड़ने लगे महात्माँ जन।
क्यों कि सुना करते थे जब वे, क्षेत्र खुला इनके कारन।।
जहाँ सुगमता से खाने को, मिल जाता हो दो वक्ती।
वहाँ कभी खाने वालों की, सोचो कमी न हो सकती।।

Nijanand App

वहाँ मार वाड़ी जन अक्सर, आये करते थे ज़्यादा।
किन्तु हमारे ऊपर उनकी, लेष मात्र नंहि थी श्रद्धा।।
मांगी लाल एक सज्जन नित, न्हाने को वहाँ आता था।
था वह मारवाड़ का वासी, भजन वजन कर जाता था।।
अपने सत्संग में जाने क्यों, एक रोज वह आ बैठा।
सुनता रहा बड़ा चित्त देकर, कुछ क्षण तो बैठा बैठा।।
किन्तु बाद में बहुतेरे ही, वाद विवाद किये हमसे।
हम भी यथा प्रश्न उत्तर, संतुष्टी का दे देते थे।।
वह उत्तर जिस उत्तर से फिर, शंका ही ना शेष रहे।
मांगी लाल लिये थे जितना, सारा सौदा बेच गये।।
आखिर श्रद्धा उपजी उर में, नित आना आरम्भ किया।
मांगी लाल मारवाड़ी वह, अपना चेला पूर्ण हुवा।।
फिर हमने वे रहस्य खोले, आँखें चली गई खुलती।
काली और कलूटी प्रतिमाँ, मन की चली गयी धुलती।।
ज्ञान नाड़ियों में इक दम से, बैरागी संचार हुवा।
कोसों मोह भगा हो जैसे, ऐसा माँगी लाल हुआ।।
पहने था इक स्वर्ण अंगूठी, झट निकाल फेंकी जल में।
जाग गई वैराग्य भावना, बल शाली बन कर मन में।।
उसका यह नुकसान देखकर, अपने को महसूस हुआ।
हमने सोचा अपने कारण, इसका यह नुकसान हुआ।।
बड़ी अधिक मात्रा में ग़ोते, ख़ोर फिरा करते थे वाँ।
हमने दो ग़ोते ख़ोरों को, बुलवाकर उनसे पूछा।।
मुंदरी यदि दोगे निकालके, दो रूपया इनआम मिले।
अपनी सुनते ही वे दोनों, इकदम जलमें कूदपड़े।।
जगह दिखा ही दी थी उनको, जहाँ गिरी जाकर मुंदरी।
उन ग़ोते ख़ोरों ने वो, मुंदरी निकलकर के दे दी।।
हमने सेठ लक्ष्मी नारा, यण से रूपये दिलवाये।
माँगी लाल अंगूठी वापिस, पहना कर घर भिजवाये।।
पर वैराग्य भाव उनमें प्रति, दिवस प्रगति पर दिखते थे।
हालत ठीक होयगी उसकी, लक्षण नज़र न आते थे।।
एक रोज़ उसके लक्षण को, देख समझ उसकी पतनी।
अपनी व्यथा सुनाने अपने, पास वहीं वह आ पहुँची।।
महाराज उसकी हालत तो, तुमने अब ऐसी करदी।
हम को भी बतलादो आगे, अपनी हालत क्या होगी।।
लेना था वैराग्य इसे यदि, तो फिर ब्रद्ध अवस्था में।

Nijanand App

इसने शादी क्यों की हमसें, यह उत्तर दिलवाओ हमें।।
इन्तज़ाम मैं करवाके ही, तुम से अपना जाऊंगी।
या इसको जैसा था वैसा, करवाके ले जाऊंगी।।
इसको कुछ भी नहीं हुआ है, देवी तुम मत घबराओ।
कहीं नहीं जावेगा यह, बेफ़िक्र आप घर को जाओ।।
आवै जावै कहीं नहीं यह, तुम हमपर विश्वास करो।
कहीं न जाने देंगे इसको, तुम निश्चित घर वास करो।।
मारवाड़ियों ने देखा जब, कितना बदला माँगी लाल।
तो प्रचार सा होने लग गया, उनमें अपने प्रति तत्काल।।
मारवाड़ियों का आना आरम्भ, हुआ फिर अपने पास।
बड़ी जाग्रति आई उनमें, अपने प्रति उपजा विश्वास।।
भक्ति भाव और जागरूकता, जँचने लगी हमें उनमें।
अपनी चर्चा फैल गई उन, दिनों नगर के जन जन में।।
एक महात्माँ जहाँ मार वाड़ी, जन सारे जाते थे।
बड़े सिद्ध बाबा कलकत्ते, में वे माने जाते थे।।
टूटा जब सत्संग वहाँ का, बंद हुवे जाने वहाँ लोग।
हुआ बहुत व्याकुल वह बाबा, पड़ा एक दम उनमें सोग।।
माँगी लाल बुलाया उसने, सिद्धी का दिखलाया जौंम।
तैंने सभा बिगाड़ी मेरी, देखूँगा मैं तेरा ढोंग।।
चिंता मत कर मैं तेरे उस, सदगुरू को भी देखूँगा।
करामात उनके पल्ले में, क्या है बेटा परखूँगा।।
एक घाट गुरू चेले ना, तारे तो कुछ भी काम नहीं।
नाकों चने चबाये नंहि तो, जा मेरा भी नाम नहीं।।

तत्पश्चात् निकट अपने भी, आए परिक्षा लेने को।
साधनाओं का बल दिखलाने, और हमें धमकाने को।।
बाबा से मशहूरी अपनी, बिलकुल सहन न हो पाई।
उसे युक्ति हमसे लड़पड़ने, की ही बस उत्तम भाई।।
सोचा शास्त्रार्थ करके मैं, पल में उसे पछाड़ूँगा।
ज्ञान बेल को न दूँ फैलने, जड़ से उसे उखाड़ूँगा।।
हमसे पूछा कौन पंथ हैं, बाबा ने आते ही साथ।
शिष्टाचार न कोई तरीका, शुरू किया उसने अपवद।।
भ्रकुटी अदल बदल कर बोला, कौ गुरू है बतलाओ।
हमने किया इशारा रामा, नंद को इनको बिठलाओ।।
सिद्धनांथ जी ने आते ही, हमें ज़ोर से ललकार।
औ प्रश्नों का अपने सर पर, एक बौम्ब सा दे मारा।।

Nijanand App

ढंग सभी बेढंगा उनका, रसना देखो तो रूखी।
अंतस्थल में भरी ईर्षा, भावुकता सूखी सूखी।।
अन्य जगह जाओ तो पहले, शिष्टाचार बताता है।
उत्तम है परनाम दण्डवत्, करना, यह मानवता है।।
शत्रु पक्ष चाहे हो सन्मुख, पर अभिवादन है अनिवार्य।
हर मज़हब बतलाता है यह, हर पंथी का है यह कार्य।।
सिद्धनाँथ जी आते ही, इकदम से हमपर टूट पड़े।
जिभ्या से प्रश्नोत्तर के, अनगिन फ़व्वारे छूट पड़े।।
हमने उत्तर दिया सिद्ध को, हम हैं जी आपा पंथी।
आप गुरू हैं आप शिष्य हैं, चर्चाऐं अपने घर की।।
और पूछिये क्या इच्छा है, ताकि तुम्हें संतुष्ट करें।
पर अपने को और क्रोध को, अपने में सीमित रक्खें।।
अपने संग वह सिद्धनाँथ, इतनी सुनकर के अकड़ पड़ा।
एक विषय अटपटा पकड़के, फिर वह हमसे बहस पड़ा।।
बड़े खरे हमने भी उत्तर, बाबा जी को पकड़ाये।
जिनको सुनकर के वे इकदम, आपे से बाहर आये।।
थी प्रकृर्ति अपनी कुछ ऐसी, यथा प्रश्न उत्तर देते।
जैसा भाव कोई संग लाता, उसी भाव की गा देते।।
हम से बोला समझ लिया, हमने तू कितना ज्ञानी है।
होशियार रहना तुझ में, देखूँगा कितना पानी है।।
बैठे तो हैं अभी देखलो, हम बोले उससे इकदम।
निर्णय ये सत्संगी जन भी, कर लेंगे कुछ कम से कम।।
भागा अपनी सुनकर के, इस प्रकार वहाँ से बाबा।
जैसे हमको ज़मींदोज़, जाते ही इकदम कर देगा।।
माना नहीं रात्री में उसने, बहुत डराया माँगी लाल।
छोड़ दिया उसने अपनी, सिद्धि का इक उसपर जंजाल।।
बैठा रहा रात भर माँगी, उसे डराया कुछ ऐसा।
दिखलाया उसको द्वारे पर, इस प्रकार का इक भैंसा।।
सर ग़ायब है धड़ से उसका, फ़र्श ख़ून से भरा हुआ।
ज्यों दरवाज़े में वह भैंसा, फंसा खड़ा है मरा हुवा।।
उसे द्रश्य यह दिखा स्वप्न में, डर कर आँख खुली उसकी।
किन्तु द्रश्य वह रहा दीखता, उसकी आँखों को फिर भी।।
डर से चींख़ तलक नंहि निकली, बेचारे की सारी रात।
जैसे तैसे कटी रात वह, सूरज निकला हुई प्रभात।।
जब उसकी पत्नी उसके ढिंग, पहुँची तो उसने पूछा।

Nijanand App

कहाँ को होकर के आई तुम, कैसे मिला तुम्हें रस्ता।।
बोली क्यों रास्ते में क्या है, यही एक तो है रास्ता।
माँगी बोला दिखता नंहि क्या, इसमें भैंसा फंसा खड़ा।।
बड़े अचम्भे से में आकर, पतनी ने मुड़कर देखा।
ख़ाली पाया द्वारा उसने, उसे न कुछ भी नज़र पड़ा।।
बोली क्या कह रहे हो तुम यह, मेरी समझ नहीं आता।
भैंसा कहाँ खड़ा है इसमें, ख़ाली पड़ा है दरवाज़ा।।
उसका यह संदेह दूर, करने को पत्नी फिर पहुँची।
ख़ाली पड़ा हुवा है देखो, द्वारे में जाकर बोली।।
था भयभीत बहुत ही माँगी, घरवाली ने समझाया।
यहाँ कोइ नंहि भैंसा वैसा, हाथ पकड़के दिखलाया।।
भय का भूत भगा मुश्किल से, बाहर आये माँगी लाल।
पहुँचे अपने पास सुनाने, इस घटना को वे तत्काल।।
सुनकर के माँगी की बीतक, हमने उसको शान्त किया।
तुम तो तुम उसने तो भाई, हमको भी भयभीत किया।।
जितनी उसके पास शक्ति थी, उसने अपनी अजमाली।
झुक जाती जनता इतनी ही, बातों पै भोली भाली।।
छोटी छोटी साधनाओं से, भय दिखलाते रहते हैं।
डरा डराकर अपना उल्लू, सीधा करते रहते हैं।।
ये बिगाड़ सकते ही नंहि कुछ, किसी भाइ का किसी प्रकार।
क्यों कि दिखावे की होती हैं, यह साधनाऐं बिलकुल निस्सार।।
अपना बनाए रहते हैं ये, लोग दिखाकर डर ऐसे।
कच्चे पिल्ले डर जाते हैं, जा चरनों में गिर पड़ते।।
अधिक और कुछ नंहि कह सकता, दावा है ये माँगी लाल।
दिखा चुका जितना बेचारे, के पल्ले था रात कमाल।।
माँगी लाल समझ कर हमसे, पहुँचा बाबा जी के पास।
जाकर बोला करामात क्या, इतनी ही थी तेरे पास।।
करामात जो रात दिखाई, थी वह तो बेकार रही।
सच्च अगर हमसे पूछे तो, उसमें तेरी हार रही।।
अधिक और इससे हो कुछ, तो उसको आज दिखा देना।
क़सम तुझे अपनी करनी में, कसर कहीं मत रख लेना।।
जितना सौदा था पल्ले में, तेरा देख लिया वह रात।
शेष और सिद्धी हो जो भी, उसको भी दिखलादे आज।।
सुनकर बोल न निकला उसका, माँगी लाल चला आया।
बड़े ठाठ से सोए रात को, भय नज़दीक नहीं आया।।

Nijanand App

सिद्धनाँथ के पास में सेवक रहा न एक।
दौड़ पड़े सब इधर ही शक्ती देख विशेष।।

माना नहीं सिद्ध वह फिर भी, इक नाँगे को भड़काया।
बदला लिया जाय जो भी हो, उसको हमसे भिड़वाया।।
भक्त जनों के साथ एक दिन, हम आसन पर बैठे थे।
किसी विषय पर चर्चा वर्चा, सी हम बैठे कर रहे थे।।
इक नागा बाबा आया वहाँ, आकर के बोला हमसे।
तुमने आसन यहाँ लगाया, बोलो किसकी आज्ञा से।।
यह चबूतरा अपना है, हम, इस पर बैठा करते हैं।
है स्थान पुराना अपना, इसको सभी जानते हैं।।
था यहाँ कौन पूछते जिससे, हम बोले नागा जी से।
अच्छा तो यह उठा मिले अब, नागा फिर बोले हम से।।
हमने फिर उत्तर पकड़ाया, उठता तो नंहि अब यहाँ से।
अपने हाथ फेंकना हो तो, जब मरज़ी हो आ जाना।
अगर फेंकना अब चाहो तो, आओ फेंक कर ही जाना।।
उठा मिले बस उठा मिले, बक बक सी करता चला गया।
किन्तु शाम को दिन छिपने से, पहले पहले फिर आया।।
नहीं उठाया आसन तुमने, बोले नागा जी हमसे।
आओ पधारो नागा जी हम, इस प्रकार बोले उससे।।
अपना ही समझो यह आसन, अन्य किसी को मत जानो।
आसन और हमें नागा जी, दोनों को अपना मानो।।
आओ पधारो, हम आसन से, थोड़ा नींचे खिसक गये।
किन्तु नहीं आये नागा जी, हम पर ज़्यादा बिगड़ गये।।
खिसक लिये कहते हुवे हमसे,कल को आसन उठा मिले।
वरना ठीक न होगा कल को, साथ तुम्हारे क्या समझे।।
रूके नहीं पल भर को फिर वे, चले गये कहते कहते।
आसन यहाँ न पावे कल को, वरना ठीक नहीं होगा।।
हमने फिर भी कहा वही, यह अपने आप न उठने का।

गये चले गाते अपनी ही नागा जी महाराज।
फिर सत्संग जारी हुआ भक्त बहुत थे आज।।

आने लगे एक बाबू भी, कलकत्ते के अपने पास।
उसी वक्त बोले वे हमसे, अपनी भी सुनलो कुछ आज।।

Nijanand App

मुझ को बीस रूपये रोज़ाना, का इक रोग लगा टेढ़ा।
गर इलाज हो पास आपके, किरपा हमपर कीजेगा।।
हम बोले उन बाबू जी से, यह तो रोग अजीब सुना।
शारीरिक तो रोग सुने हैं, पर रूपयों का आज सुना।।
ज़रा खोलकर समझाओ तो, हम भी रोग समझ लेवें।
क्या अनुमति दे अपनी इसमें, जब तक समझ नहीं लेवें।।
बोला इक थेटर आया है, जिसमें प्रति दिन जाता हूँ।
पंद्रह रूपये तो टिकिट है उसका, पाँच रूपये खा जाता हूँ।।
और जागता तीन बजे तक, दो घंटे मिलता आराम।
आँख टूल्हती रहतीं दिनभर, लेष नहीं होता फिर काम।।
बोलो कैसे निभे रोज़ यह, नहीं मानता मन अपना।
हम बोले उस बाबू जी से, भाई आज यहाँ आ जाना।।
स्वाँग तमाशे कभी कभी तो, हम भी करवा लेते हैं।
अपना बे पैसे का है, उससे मन बहला लेते हैं।।
आज तमाशा यहीं देखना, दिन छिपने तक आ जाना।
ये रूपये हम बचवा देंगे, पर आना यहाँ रोज़ाना।।
क्यों कि पर्व गंगा सागर का, नेड़े ही था लगा हुआ।
इस कारण से इक जमाव सा, था वाँ साधु महात्माँ का।।
साँय काल को भक्त और, साधू जन सब ऐकत्रित थे।
सत्संग जारी था अपना, आनंद सभी जन ले रहे थे।।
अक्यात वह नागा आया, जिसे देखते ही हमने।
आसन छोड़ दिया थोड़ा सा, और कहा उससे हमने।।
बैठो आओ पधारो नागा, पर वो बोला आते ही।
उठा मिले आसन तुम से यह, बोला था क्यों उठा नहीं।।
यह भी साथ साथ कह गए थे, कल ऐसा यदि नहीं हुआ।
तो फिर सोच समझ रखना बस, तेरे साथ बुरा होगा।।
हम बोले नागा जी आसन, तो अब ख़ुद नंहि उठने का।
आप स्वयं अपने हाथों से, गर उठाओ उठ जायेगा।।
आप फेंकदो हम उठकरके, तभी चले भी जायेंगे।
जिन हाथों ने इसे बिछाया, अब वे नहीं उठायेंगे।।
नागा बातें करता करता, आसन पै ही आ पधारा।
पधरा नहीं बल्के यों कहिये, एक क़िसम से आ पसरा।।
सारा आसन हथियाने के, लिये पसर गये नागा जी।
उसके ऐसे भाव देखकर, नीचे सरक गये हम भी।।
अपनी विजय जानकर नागा, लेटे से होकर बैठे।

Nijanand App

जीता जैसे कोइ मोरचा, लगते थे ऐठे ऐंठे।।
ख़त्म हुवा जिस वक्त पसरना, फैल चुके पूरे नागा।
पास कान के मुँह करके मैं, इस प्रकार उससे बोला।।
अगर पियो तो चिलम बनावें, बोला हां क्यों नंहि भर लाओ।
बनी हुई या सादा बोला, बनी हुई का दम लगवाओ।।
हमने इत्र लगा कर अपने, नुस्ख़े की तय्यार करी।
ख़ूब सुगंधी देकर उसको, हमने अपने आप भरी।।
बड़े तरीक़े से भर करके, नागा जी को लायें चिलम।
और थमा कर हाथों में, बोले लो पियो लगाओ दम।।
नागा जी बोले हमसे नंहि, पहले तुम ही शुरू करो।
हम बोले नंहि पहले तुम, क्यों के तुम साक्षात शिव हो।।
भला आप से पहले हम, पीलें यह कैसे मुमकिन है।
खेंचो प्रेम पूर्वक खेचों, आज दम कशी का दिन है।।
नागा जी ने चिलम थाम ली, दम लेने फिर शुरू किये।
खेंच खेंच लम्बे लम्बे दम, नागा इक दम मुग्ध हुवे।।
नागा की दाढ़ी को हमने, इत्र फुलेल लगाये फिर।
जिसकी लपटों में नागा जी, लहर लहर लहराये फिर।।
विषधर भी सुगन्ध पाकर,फुंकार मारना तज देता।
बड़े बड़े फनियर ढल जाते, मंत्र मुग्ध सा कर देता।।
हाथ फेर कर दाढ़ी पर, नागा जी बोले ओ हो हो।
यह है असली मौज आज तो, छक छक के ले लेने दो।।
मर गइ ढाढ़ी राख चाटती, धूल धूसरित बेचारी।
आज मिली है मौज असल, फिरती थी यह मारी मारी।।
चिलम हो चुकी थी ठँडी, हम बोले और पियोगे क्या।
नागा जी इक दम खुश होकर, हमसे बोले भइ बाबा।।
कर दो आज हमें तर पूरा, मस्त बना दो मौजों में।
कसर न रह जाये कुछ बाक़ी, बाबा लोगों क़सम तुम्हें।।
लाये फिर हम चिलम डाटकर, उसी तरह की बनी हुई।
बड़े प्रेम से लाके हमने, नागा जी को पकड़ा दी।।
नागा बोले शुरू करो हम, बोले यह नंहि होने की।
भला आपसे पहले हम, पी सकते हैं क्या नागाजी।।
जब समर्थ बैठे हों आगे, छोटे दम कैसे मारें।
इसमें है अपमान आपका, हमें शरम से मत मारें।।
प्रथम चिलम में ही नागा के, धरती अम्बर एक बनें।
दूजी चिलम उड़ा कर नागा, जी पूर्णाति पूर्ण बने।।

Nijanand App

एक फुरैरी और इत्र की, की हमने दाढ़ी की भेंट।
मत पूछो नागा क्या बन गये, नागा जी बस बन गये ढेढ।।
लुक्क उठा के हटे चिलम से, तो उनको ख़ुश्बू आई।
उबल पड़े नागा जी फिर तो, ओ हो आज कहाँ है भाई।।
आप अखाड़े में हैं अपने, हम बोले नागा जी से।
वाह वाह आनंद आपका, क्या कहना बोले हमसे।।
हमने कभी नहीं देखा था, भाइ तुम्हारा सा आनंद।
हम तो सड़ते रहे राख में, अब तक पशुओं का मानिंद।।
नागा जी तिरशूल बजाकर, नाचा गाया करते थे।
उन्हें मौज में लखकर के हम, इस प्रकार उनसे बोले।।
लोग आपके शिव ताण्डव के, नागा जी अभिलाषी हैं।
दर्शन चाह रहे ताण्डव का, जो साधू सन्यासी हैं।।
बिखर उठे नागा जी फिर तो, गज़ पर ताल लगी लगने।
बैठे बैठे लगे नाचने, उछल उछल अपनी धुन में।।
जहा नाचना शुरू किया था, थोड़ी देर वहीं फड़के।
इसके बाद सरकने लग गये, नागा जी बल चूतड़ के।।
थिरकन उनकी बड़ी विहंगम, ताल लखो तो बेताली।
अंग अंग का नाच निराला, राग छिड़ी गूगों वाली।।
दे दे मार रहे चूतड़ को, वे चबूतरे के ऊपर।
राग रागनी ऐसी जानो, जैसे रोता हो कूकर।।
सस्त हुवे अपनी मस्ती में, बेसुध हो ऐसे नाचे।
उस चबूतरे के नींचे, इक दम धड़ाम से जा पहुँचे।।
पड़े पड़े ही रह गये नाचते, नाच न रूकने में आया।
वहाँ पत्थरों की नोकों ने, छील धरी उनकी काया।।
नागा घायल हुवे वहाँ जब, लोग लगे कहने हमसे।
शान्त करो महाराज इसे नंहि, मर जायेगा छिल छिल के।।
हम बोले नागा जी अब इस, ताण्डव को अपने रोको।
औ चबूतरे पर आकर के, शान्त चित्त होकर बैठो।।
नागा जी सुन कर उठ बैठे, चढ़े चबूतरे के ऊपर।
पर आसन पर नंहि बैठे इस, बार पधारे कुछ हटकर।।
हमने कहा बराबर बैठो, पर नागा अब नंहिं आया।
बोला यहीं ठीक हूँ भगवन, ज्यों आपे में शरमाया।।
मुझ से चूक हुई थी पहले, मैंने तुमको तंग किया।
आप उच्च हैं हमसे भगवन्, ज्यह अब हमने जान लिया।।
हम बोले नागा जी यदि अब, हुक्म आप कहे हम उठ जायें।

Nijanand App

स्वयं उठा लेंगे आसन अब, हुकुम आप यदि दे जायें।।
हाथ जोड़कर क्षमा माँग ली, बोला क्षंण की संगति में।
जो आनंद दिखाया हमको, मिला न अब तक जीवन में।।
अपनी तुलना करूँ आपसे, महा राजजी है मिथ्या।
आप आप हैं हम हम ही हैं, भला आपसे तुलना क्या।।

श्री सदगुरू की मेहर ने, नागा कर दिये ठीक।
इज्जत से बैठे रहे, आसन पर निरभीक।।

गंगा सागर के मेले का, पर्व निकट आ पहुँचा था।
सेठ लक्ष्मी नारायण यों, आकर के हमसे बोला था।।
महाराज जी बोलो कितनी, मूर्तियों के टिकिट कटें।
जितनी मूर्तियां हो अपनी, गिन कर सारी बतलादें।।
हमने कहा सेठ जी अपना, साथ बहुत हैगा इस वक्त।
साधु सन्यासी बैरागी, और प्रवाही सब हैं भक्त।।
आप कृपा रक्खें टिकिटों की, अपने आप खरीदेंगे।
जिसको जाना है मेले पर, हर हालत में पहुचेंगे।।
सेठ लगा कहने स्वामी जी, आप फ़िकर कुछ मत कीजे।
यात्रियों को गंगा सागर, के केवल बतला दीजे।।
हमने कहा अभी ठहरो, तो इस जहाज को जाने दो।
जो अपने पैसे से जावे, उन सब को छट जाने दो।।
नत्मस्तक होकर लक्ष्मी, नारायण तो फिर चले गये।
काफ़ी मूर्तियां अपने, पैसों से स्वयं सवार हुवे।।
उस जहाज के छुट जाने के, बाद सेठ जी फिर आये।
वही प्रश्न पहले वाला ही, सेठ पुनः करते पाये।।
इस जहाज को भी जाने दो, उसके बाद बतायेंगे।
स्वयं आप गिन लेना फिर, जितने बाकी बच जायेंगे।।
तीन जहाजों को कह कह के, हमने उनसे छुटवाया।
हर जहाज पर सेठ हमारी, अनुमति लेने को आया।।
महा राज जी कब जाओगे, पूछ रहे पल पल साधू।
भाइ हमारी कुछ मत पूछो, जाँऊ जाँऊ न भी जाऊ।।
यह सुन करके साधू जन सब, बैठ बैठ कर चले गये।
सतरह लोग हमारे ऊपर, पड़े हुवे बाकी रह गये।।
छोड़ दिया जिन मूर्तियों ने, आपा मेरे ही ऊपर।
जब तुम ही नंहि जावोगे तो, वहाँ करेंगे क्या जाकर।।

Nijanand App

जहाँ आप हैं वहीं रहेंगे, जाना नंहि कंहि छोड़ तुम्हें।
मौज यहीं लेंगे संगति की, क्या मिलना है वहाँ हमें।।
हमने जान लिया बस अपने, पक्के साथी इतने हैं।
हमने कहा सेठ जी से अब, गिन लो हमको कितने हैं।।
जितने हों गिन करके उनके,टिकिट विकिट अब कटवादो।
जो प्रबन्ध हो सेठ आपके, आज्ञा है अब करवा दो।।
दस रूपया फ्री मूर्ति टिकिट था, टिकिट सत्तरह कटवाये।
बड़े भाव से सादर हमको, वे मेले लेकर आये।।
क्षेत्र खोल दिया आकर उसने, जो चाहे भोजन जीमें।
तीन रोज़ तक अपना सब कुछ, ख़र्चा किया सेठ जी ने।।
बड़े विकट प्रश्नोत्तर होते, रहे वहाँ सत्संग चले।
बड़े धुरंधर विद्वानों ने, आकर उसमें भाग लिये।।
सभा लगी गंगा सागर के, मेले पर अपनी भारी।
सुनने को सत्संग बहुत, ऐकत्रित होते नर नारी।।
सेठ लक्ष्मी नारायण पर, अपना बड़ा प्रभाव पड़ा।
दिन दूना औ़ रात चौगना, भक्ति भाव का रंग चढ़ा।।
आँखें तो काफ़ी खुल गइ थीं, पहले ही सत्संगों में।
लेकिन और खुली मेले के, वाद विवाद प्रसंगों में।।
सेवाऐ दी वहाँ सेठ ने, बड़े भाव से खड़े खड़े।
दिवस तीसरे कलकत्ते को, फिर हम वापिस लौट पड़े।।
रही हाज़री उनकी पक्की, दोनों समय हमारे पास।
सेठ लक्ष्मी नारायण को, हुवा अटल हम पर विश्वास।।
कुछ ही दिन बीते थे हमको, गंगा सागर से आये।
कलकत्ते में शौहरत हो गई, सत्संगी बढ़ते आये।।
एक रोज़ इक ठाकुर अपने, सत्संग को सुनने आये।
सुनते रहे प्रेम से तब तक, जब तक वचन समाप्त हुवे।।
होते ही समाप्त सत्संग के, बैठा आकर अपने पास।
हाथ जोड़ कर बोला हमसे, करने लगा हृदय की बात।।
महा राज जी हमको भी क्या, अपने संग लगा लोगे।
क्या अपने पावन चरणों में, कुछ स्थान हमें दोगे।।
हमने कहा गृहस्थी भाई, सुनकर के कल्याण करें।
लाभ इसी में है गृहस्थी का, ठाकुर जी विश्वास करें।।
उसने आग्रह किया बहुत ही, पर हमने स्वीकृति नंहि दी।
रहे गिड़गिड़ाते घंटों ही, अपने आगे ठाकुर जी।।
थोड़ी देर दुपहरी में हम, सो से जाया करते थे।

Nijanand App

बैठा पाया एक महात्माँ, जब हम सो कर के उट्ठे।।
घोटम घोट चेष्टा उसकी, दाढ़ी मूँछ सफ़ा मैदान।
दण्ड कमण्डल पास न कोई, तन पर एक लंगोटी जान।।
कौन दिशा से आए महात्माँ, हमने पूछा उठते ही।
हाथ जोड़ कर हो विनम्र सा, उसने हमसे बतलाई।।
महाराज मैं कहाँ महात्माँ, मैं तो वह ही ठाकुर हूँ।
लेट फिरा चरण में अपने, कहा तुम्हारा सेवक हूँ।।
आश्चर्य की रही न सीमाँ, सर मुँह घोटम घोट हुआ।
बिना बनाये बिना मंत्र के, भला शिष्य ये आ पहुँचा।।
हमने पूछा यह तुमने क्या, किया बिना सोचे समझे।
जब हमने इन्कार किया था, तो तुम क्यों मुंड कर आये।।
अभी नाई से मुँडवाये हैं, इन्हें मुंडा ही रहने दो।
इतनी और कृपा करदो अब, हमें शरण ही में ले लो।।
सेवा में ही रहने दो, महाराज आप अब सेवक को।
हम अवाक् से रह गए उसके, सुनकर ऐसे आग्रह को।।
उसकी पतनी ने जब ऐसी, उसकी लीला सुन पाई।
तो वह इक दम भागी भागी, अपने पास वहीं आई।।
लगी एक ऊधम उतारने, बक बक ज्यों आरम्भ हुई।
बिला वजह ही भीड़ हमारे, आगे आ ऐकत्र हुई।।
हमने देखा जब झंझट, जो देवी जी ने रच डाला।
हम बोले यह काम तुम्हारे, पति ने ख़ुद ही कर डाला।।
हमें किसी भी क़ीमत पर, तेरे पति की दरकार नहीं।
व्रथा किसी को बहकाने को, अपना कारोबार नहीं।।
अपना काम कोइ भी इसके, आने पर नंहि चल सकता।
और न इसके आने पर कुछ, कार्य हमारा रूक सकता।।
तू लेजा अपने को अपने, साथ यहाँ मत गुँजारै।
यहाँ महात्माओं में देवी, कृप्या ऊधम मत तारै।।
वाद विवाद हुवे ठाकुर, ठकुरानी का फिर द्वन्द हुवा।
बड़े फजीते हुवे वहाँ, अच्छा ख़ासा शठ संग हुवा।।
लेतो गई साथ अपने, ठाकुर को ठकुरानी उस वक्त।
लेकिन रूका नहीं वह उससे, आया करता दोनों वक्त।।
सिर्फ़ एक इच्छा रहती थी, यही ही पूछा करता था।
आप यहाँ से कब जाओगे, प्रश्न यही करता रहता।।
अपना जाना सदा छिपाते, रहते थे हम ठाकुर से।
जो जी में आ जाता उल्टा, सीधा उत्तर दे देते।।

Nijanand App

कुछ दिन बाद वहाँ से चलने, की हमने ठहरा ही दी।
बड़ा आग्रह किया रोकने, का तय्यारी कर ही ली।।
फैल गई यह बात सभी में, महाराज जी जाते हैं।
रोक रहे हैं प्रेमी जन पर, रूकने में नंहि आते हैं।।
बढ़ा प्रमियों का ताँता, वापिस जाया करते रोते।
कूक निकल जाती कुछ की, कुछ अश्रु बहाते चल देते।।
आख़िर दिन आया चलने का, जमाँ हुवे सब सुंदर साथ।
चला बिठाने हमें, रेल में, कलकत्ते का अपना साथ।।
नैन छलक रहे थे सब ही के, कण्ठ भरे थे सब के।
हृदय बहे जाते थे गल गल, चहरे सब ढलके ढलके।।
बात न कर सकता था कोई, उर भर भर कर आ जाता।
जैसे मय्यत के संग हो सब, द्रश्य नज़र ऐसा आता।।
स्टेशन पर भीड़ ग़जब की, ज्यों सागर हो ठाठों में।
ज्यों प्रचण्ड हो उड्डी नदी, पसरी घाटों बाटों में।।
हारों उपहारों से हमको, सब ही ने सन्मान दिया।
विखल हृदय से जन समूह ने, आख़िर हमको विदा किया।।
लगे बैठने जब हम अंदर, तो ठहरो की ध्वनि आई।
देखा तो ठकुरानी है जो, भीड़ चीरती हुइ आई।।
आते ही बवकारी हम पर, मेरा मर्द कहाँ है जी।
या तो करो हवाले मेरे, नंहि जाने नंहि देने की।।
बोलो कहाँ छिपा रक्खा है, मेरे ठाकुर को तुमने।
क्या चरित्र दिखलाती हो यह, उत्तर दिया उसे हमने।।
तेरा मर्द हमारे संग क्यों, होता पगली यह बतला।
क्यों झूंठा तूफान लगाती, है यदि साथ नहीं निकला।।
तो फिर अपनी सजा सोच ले, झूंठे लम्पट का अंजाम।
तेरे पति के ले जाने पर, क्या सँवरेगा अपना काम।।
लपक झपक करके देवी झट, डब्बे के अंदर पहुँची।
अनायास डब्बे के बाहर, सबने चींख़ पुकार सुनी।।
कहाँ मुझे जाता है छोड़े, छिपकर बेईमान बता।
यदि फ़कीर अच्छे लगते थे, तो क्यों मुझसे ब्याह रचा।।
हाथ पकड़ कर लगी खेंचने, बड़े जोर का शोर मचा।
हमने जब देखा ठाकुर को, तो इक दम आश्चर्य हुवा।।
हम लजाए उसको लख करके, बस स्त्री बोली हमसे।
कहाँ लिए जाते हो तुम, मेरे पति को बहका करके।।
तुम तो जब अनजान बने थे, क्या नीयत है बतलाओ।

Nijanand App

आदमियों को लगी टेरने, अरे कोई जल्दी आओ।।
वह था छिपा सीट की नीचें, लेट रहा था छिपा हुवा।
वहाँ किसी को भी ता कारण, ठाकुर का ना पता चला।।
निकट गये ठाकुर के इकदम, हम जाकर उससे बोले।
क्यों ठाकुर यह क्या हरकत है, इस प्रकार तुम कहाँ चले।।
हाथ जोड़कर बोला हमसे, महाराज जी मत छोड़ो।
साथ लगा रहने दो अब इन, चरनों के मुँह मत मोड़ो।।
हमने कहा उतर जाओ, वह बोला कहाँ चला जाऊँ।
तरस खाओ इतना हम पै, जो चरनों में ही रह पाऊँ।।
क्या रक्खा है इस दुनियां में, जो कुछ है इन चरनों में।
दुख्खों का भण्ड़ार दीखती, दुनियाँ मत ना तजो हमें।।
दया करो मेरे ऊपर अब, नाथ मुझे धक्का मत दो।
मुझे शरण में नाथ चरण की, रहने दो बस रहने दो।।
दुनियाँ प्रभु खाए जाती है, निंगल जायेगी सारे को।
हमने बड़े तरीक़ों से, समझाया उस बेचारे को।।
क्यों कि रेल छुटने वाली थी, उधर रूदन थे औरत के।
हमने देव गिरी को बोला, कुछ निगाह तिरछी करके।।
देवगिरी इसको उतार दो, ड़ब्बे से इक दम नींचे।
देव गिरी ऐसे कामों में, बड़े निपुण थे जा पहुँचे।।
उसे डपट कर कहा एक दम, अच्छा अब नींचे उतरो।
वरना हम धक्के देकर के, कर देंगे नींचे तुम को।।
बहुत हो चुकी पहले अपनी, औरत से जाकर निमटो।
छुटकारे के बाद साधू, सन्यासी से आकर लिपटो।।
खेंच खेंच कर बड़े जोर से, ठाकुर को उसने तारा।
नींचे से भी भाग भाग कर, चढ़ता था वह दोबारा।।
रोता था डकरा डकरा कर, मुझे छोड़ के मत जाओ।
हाथ जोड़ता हूँ स्वामी जी, मुझ पै जरा दया खाओ।।
हमने सान्त्वना दी फिर, भाई जल्दी ही आएेंगे।
सत्य समझना अब कै तुमको, साथ लिवा ले जाऐंगे।।
इन्तजाम अब के चक्कर तक, अपने घर का कर लेना।
बड़े शौक से साथ हमारे, अब के फेरे चल देना।।
गाड़ी लगी सरकने इतने, लोगों ने जयकार किया।
डब्बे पर फूलों का सबने, एक साथ ही वार किया।।
भीगे भीगे डबडबाए से, और टपकते नैंनों को।
छोड़ आए रोते स्टेशन, पर अपने परवानों को।।

Nijanand App

हृदय विदारक द्रश्य देख यह, हमको भी रोमान्च हुआ।
अपने जब छूटे अपने से, टुकड़े टुकड़े हृदय हुवा।।

बूँदों से नदियाँ बनी, नदियों से सागर भर गये।
चोट बिछुड़न की, लगी ऐसी कि हम भी मर गये।।

आए मुजफ्फर पुर कलकत्ते, से हम चलने के पश्चात्।
उसके बाद गये मुतिहारी, केवल रूके एक ही रात।।
सीता मढ़ी जनक पुर पहुँचे, उसके बाद गये रूखसौल।
पशु पति नांथ नाम से मेले, का आयोजन था नैपाल।।
ख़ाबर मिली जैसे ही हमको, चलने के सामान हुवे।
पशु पति के मेले की ख़ातिर, तीनों के प्रस्थान हुवे।।
कई दिनों की यात्रा करके, इक दिन जा पहुँचे नैपाल।
लेकिन वहाँ पहुँचकर देखा, बेढ़ब भीड़ बुरा था हाल।।
कहीं खड़े होने तक को भी, मेले में स्थान नहीं।
थक थक चूर चूर थे टाँगों, में बिल्कूल भी जान नहीं।।
चारों तरफ घूम कर देखा, जगह न पाई टिकने को।
औ शरीर की यह हालत थी, जैसे हो अब गिरने को।।
साधू ही साधू दिखता था, जहाँ नज़र जाती अपनी।
आलम फैला हुवा पड़ा था, जगह न थी तिल रखने की।।
केवल एक जगह ख़ाली थी, जहाँ बैठते नृप नैपाल।
उसके चारों ओर खड़ी थी, ऊँची बल्ली की दिवाल।।
राजा के अतिरिक्त अन्य को, आज्ञा वहाँ न घुसने की।
फिर कैसे मिल जाये इजाज़त, उसमें भला ठहरने की।।
हम धक्के खाते फिर रहे थे, इक मखौल में बोला साध।
जगह आपके लिए पड़ी है, ख़ाली वह देखो महाराज।।
मर तो लिये हि थे हम थककर, बोले हम भइ देवगिरी।
चलो वहीं ठहरेंगे चल कर, भुगतेंगे जो गुज़रेगी।।
फाँद फूँद कर हम तीनों बल्ली, हाते में जाकर बैठे।
दो प्यादे कुछ देर बाद, दौड़े आऐ ऐंठे ऐंठे।।
आप यहाँ ठहरोगे क्या, हम बोले भइया क्या कहदें।
जगह न मिलने के कारण, कुछ देर यहाँ आ बैठे हैं।।
आप जगह बतलादोंगे तो, देर न होगी उठने में।
हम तो मजबूरी बैठे हैं, दम न रहा जब घुटने में।।
वे तो चले गये सुनकरके, अन्य और दो आये फिर।

Nijanand App

ऐसे लगते थे वे जैसे, हों सिपाहियों पै अफ़सर।।
आकर प्रश्न किया पहला सा, आप यहीं ठहरेंगे क्या।
थक कर बैठ गये हैं बाबा, ठहरे तो हम नहीं यहाँ।।
पशुपति का दरबार देखने, आये हैं यदि देख सकें।
क्यों कि यहाँ लाले पड़ रहे हैं, जगह बैठने तक की के।।
ज़िद तो हमें किसी से है नंहि, जगह बतादें हमको आप।
दण्ड कमण्डल उठा तत्क्षण, चल देंगे उठकर चुप चाप।।
उत्तर बिना दिये कुछ हमको, चले गये दोनों सुनकर।
बार तीसरी उनसे भी दो, बड़े और आये अफ़सर।।
चिन्ह अफ़सरी उन लोगों के, कंधों पर थे लगे हुवे।
उच्च कोटि की वर्दी में वे, अफ़सर गंण थे सजे हुवे।।
महाराज क्या आप यहीं, ठहरेंगे वे बोले आकर।
हम बोले दो दफ़ा बताती, चुके आपको समझा कर।।
जगह बैठने तक को नंहि जब, मिली व थककर चूर हुवे।
बैठ गये थक कर आख़िर, क्या करते जब मजबूर हुवे।।
जगह आपकी उठा नहीं ली, बोलो कहाँ चले जावें।
जगह बतादो साहब हमको, ताकि अभी हम उठ जावें।।
वे बोले कितने साधू हो, हमने कहा तीन हैं हम।
अच्छा आप यहीं ठहरो, विश्राम करो तीनों ही तुम।।
इनको रसद यहीं पहुँचाओ, प्यादों को आदेश दिये।
तत्पश्चात् आज्ञा देकर, दोनों अफ़सर चले गये।।
फिर तो अच्छी तरह फैल गए, हम तीनों जन के आसन।
जो मखौल कर रहे थे साधू, हमें देखके हुई चुभन।।
लगे ख़ुशामद करने अब वे, महाराज किरपा करके।
आप हमें भी वहीं बुलालो, बड़ी दया होगी हम पै।।
यहाँ प्राँण निकले जाते हैं, इस महान धिचपिच के बीच।
हमने उन्हें इजाज़त देदी, आ सकते हैं आप समीप।।
हमसे पूछ पूछ कर साधू, काफ़ी पहुँच गये नज़दीक।
बड़े मौज से रात बिताई, हम सब लोगों ने निर्भीक।।
अगले दिन ही पर्व दिवस था, सो वह भी आरम्भ हुआ।
स्वयं दान बाँटा करते, मिलकर महारानी महाराजा।।
महाराज नैपाल चंद्रशम, शेर जंग गद्दी पर थे।
आप पाँच सरकार नाम से, भी सम्बोधन होते थे।।
बाद पर्व के साधु महात्माँ, को राजा ने दान दिया।
रानी राजा दोनों ने ही, मिलकर सब को विदा किया।।

Nijanand App

बरतन, कम्बल, वस्त्र रूपय्या, जो माँगा जिसने उनसे।
वह सहर्ष उसको बरताया, महाराज ने निज कर से।।
सब के बाद हमारा नम्बर, आया तो हम भी पहुँचे।
आप कहाँ से आये हैं, महाराज, महाराजा बोले।।
कलकत्ते से इधर आए हैं, यहाँ से मेरठ जायेंगे।
महाराज बोले जो इच्छा, हो बोलो, दिलवायेंगे।।
हम बोले थी हमको इच्छा, सिर्फ़ आपके दर्शन की।
महाराज सो पाये हमने, इच्छा कोई नहीं बाक़ी।।
सेवक को आज्ञा दी फ़ौरन्, इनको दो रूपया दे दो।
हम बोले महाराज करेंगे क्या, रूपयों का ले करके।।
ना कुछ कभी ज़रूरत पड़ती, ना हम पास इन्हें रखते।
हमें आपकी दर्शन इच्छा, थी महाराजा मुद्दत से।।
महाराज बोले अच्छा इन, तीनों मूर्तियों का ध्यान।
रक्खा जायेगा तब तक, जब तक हैं सीमा के दरम्यान।।
हम तीनों के नाम रजिस्टर, में राजा ने चढ़वाये।
तत्पश्चात् विदा लेकर के, हम अपने रास्ते धाये।।
सुल्फ़ा गाँझा काफ़ी मंदा, वहाँ प्राप्त हो जाता था।
थोड़ा बहुत वहाँ से पीने, वाला ले भी आता था।।

किसी साधु के पास पाव था, और किसी पै दो पव्वा।
थोड़ा बहुत सभी के पल्ले, बंधा हुवा था दुब कव्वा।।
हम भी दो तोले अंदाज़न, गाँझा लिये हुवे थे साथ।
यह अपने सदगुरू साहिब ने, बख्शी थी हमको सौगात।।
इसे ज्ञान बल्ली कहकरके, सदा पुकारा करते थे।
चित्त एक हो जाता इससे, यह बतलाया करते थे।।
ज्ञान पूर्ण सीमापर इसके, ज़रिये से हो जाता है।
होकर के साकार लक्ष्य, इकदम सन्मुख आ जाता है।।
सैर किया करते इस ही के, बल से परमधाम की रोज़।
करते रहते इस ही के, भीतर बैठे पीतम की खोज।।
चलें बैठकर जिस मोटर में, गाँझा था सब ही के पास।
सरहद पर नैपाल राज्य की, चौकी आती थी इक ख़ास।।
जहाँ तलाशी होती सब की, रोक रोक हर मोटर को।
नंगा झाड़ा लेकर के तब, जाने देते थे घर को।।
काफ़ी मोटर खड़ी हुई थीं, जब अपनी मोटर पहुँची।
जब हम पहुँचे तो सिपाहियों, ने अपनी मोटर रोकी।।
सब की लेते थे तलाशियाँ, मोटर के अंदर जा कर।

Nijanand App

झट उतार लेते थे नींचे, पल्ले में गाँझा पाकर।।
और जेल खाने को इकदम, उसे हाँक देते तत्काल।
डरे हुवे बैठे थे अंदर, लोग देखकर ऐसा हाल।।
एक सिपाही अपनी में भी, घुसा तलाशी लेने को।
जने जने से उसने अंदर, कहा तलाशी देने को।।
तीन चार के बाद हमारे, निकट तलाशी को आया।
हमसे कहा तलाशी दे दो, हमने सब कुछ दिखलाया।।
कुछ सामान न रखते थे हम, सिर्फ़ एक बटुवा था पास।
उसने उसे देखने की, ख़ातिर फैलाया अपना हाथ।।
बोला इसमें क्या है बाबा, हमने कहा ज्ञान बल्ली।
वह बोला यह क्या होता है, हमको ज़रा दिखादो जी।।
हमने वह गाँझा निकालकर, उसके कर में पकड़ाया।
इसे ज्ञान बल्ली कहते हैं, हमने उसको बतलाया।।
इसी ज्ञान बल्ली की ख़ातिर, घूंम रहे हैं हम सारे।
अपने बाद टटोले उसने मोटर, में न्यारे न्यारे।।
सब पै थोड़ा थोड़ा निकला, फिर बोला बोलो महाराज।
अब क्या करें आपके संग हम, तुम्हें उतरना होगा आज।।
कहीं ले चलो हमको हम, इकदम उस से ऐसे बोले।
जहाँ जाँयेगे वहीं मौज है, कहीं नहीं बच्चे रोते।।
साधू होके भी भय खाया, क्या साधू पन है उसका।
साधू जो होता हर हालत, मैं वह ख़ुश ही ख़ुश रहता।।
उसने कुछ सोचा सुनकरके, बोला अच्छा जी महाराज।
एक शर्त पर छोड़ सकूँगा, अगर दुआ दें मुझ को आप।।
वरना सब पकड़े जाओगे, जेल भुगत सकते हो सब।
यह मोटर छुड़वा सकता हूँ, अगर दुआ दो मुझको अब।।
हम बोले यदि यह इच्छा है, तो फिर हम सब मिलकर के।
दुआ ह्रदय से देंगे सब, पर मोटर छुड़वादो पहले।।
छुड़वाने से पहले कुछ नंहि, मिल सकता यह ध्यान रहे।
पहले जँचादो के हम, सारे साधू छूट गये।।
अच्छा कहकर खड़ा रहा वो, वहाँ और अफ़सर भी थे।
जब आये अपनी मोटर पर, इसे और देखो बोले।।
तो वह बाबू बोला साहब, इसको देख चुका हूँ मैं।
कुछ भी नहीं मिला मोटर की, साहब मुझे तलाशी मैं।।
अफ़सर लोग चले गए सुनकर, बोला वह इसके पश्चात्।
अब तो मुझे दुआ दे दो सब, रखकर मेरे सर पर हाथ।।

Nijanand App

हम बोले सब साधु जनों से, भाई इसे दो सब आशीष।
आशीर्वाद दिया सब ही ने, मन से अपने विस्वेबीस।।
जीवन में तुम सुखी रहोगे, होय तरक्की सरविस में।
सब ने सर पर हाथ फिराया, मोटर चलदी इतने में।।
भारत की सरहद पर आकर, मोटर को हमने छोड़ा।
अब हमने आरम्भ करी फिर, अपनी वही पैदल यात्रा।।
मैदानों में लगे विचरने, पर्वत छोड़ दिये पीछे।
मन में धुकड़ पुकड़ कुछ उपजी, अपने प्रति रामा नंद के।।
जैसे कहीं हमें मरवा या, पिटवा देंगे ये महाराज।
चाह रहे पीछा छुट जाये, हमसे रामानंद महाराज।।
पता नंहि कब किस गति में, पड़वादें यह भय रहता था।
कई दिनों से रामानंद कुछ, उखड़ा उखड़ा रहता था।।
अतः एक दिन कह ही बैठे, हम से रामानंद महाराज।
अन्य कहीं अब विचरेंगे अब, हमें आज्ञा देदो आज।।
विदा हुवे रामानंद हम से, देव गिरी रहे अपने साथ।
नदी कुट कुटा के तट पर हम, ठहरे कई दिनों के बाद।।
सिर्फ़ एक मंज़िल बाक़ी, लखनऊ रहा वहाँ से आगे।
ठहरे हम उस ही नद्दी पर, थे हम बड़े थके माँदे।।

थकन उतारी राह की किया वहाँ विश्राम।
उस नद्दी के तीर ही बसा हुआ था ग्राम।।

वहाँ एक ठाकुर साहिब, जो वृद्ध आयु के थे काफ़ी।
ग्रहस्थ भोगने में उनके, कुछ शेष रहा नंहि था बाक़ी।।
आकर लगे प्रार्थना करने, महाराज यदि किरपा हो।
तो इस सेवक को भी अपनी, संगति में कुछ दिन रखलो।।
हमने कहा आज्ञा लेकर, घर की तब रह सकते हो।
जब तक घर से नहीं छुटोगे, हरगिज़ नंहि रह सकते हो।।
वह बोला तो अभी आज्ञा, घर की लेकर आता हूँ।
काम नहीं कुछ भी देरी का, अभी बिस्तरा लाता हूँ।।
चला गया घर ठाकुर कहकर, साँयकाल तक आ पहुँचा।
जब आया घर से तो उसकी, एक बग़ल में बिस्तर था।।
अपना था प्रोग्राम रेल से, चलने का प्रातः आगे।
अगले दिन ले ले आसन, स्टेशन की जानिब भागे।।
चले जा रहे थे स्टेशन, सड़क सड़क हम तीनों जब।

Nijanand App

कुछ ही दूर रहा होगा, हम तीनों से स्टेशन तब।।
उस ठाकुर की बुढ़िया मिल गइ, बाट जोहती थी बैठी।
लड़के को भी साथ लिये थी, हमें देखकर उठ बैठी।।
हम आगे थे ठाकुर पीछे, इकदम बोला ग़ज़ब हुआ।
महाराज बुढ़िया बैठी है, अपना सत्यानाश हुआ।।
हम बोले तो हम क्या जानें, अपने मल को आप समेट।
हम से तो कहता था आज्ञा, लेली है अब क्या है देख।।
ठाकुर बोला थी तो यों ही, जब हम आगे से गुज़रे।
बुढ़िया उठी भड़क कर इकदम, कहाँ जा रहा है क्यों रे।।
मुझे कहाँ छोड़े जाता है, तू तो बना महात्माँ जी।
कुछ मेरा भी ध्यान किया यहाँ, मेरे संग क्या बीतेगी।।
उनको लड़ते छोड़ वहीं, दोनों हम पहुँचे स्टेशन।
गाड़ी आने में देरी थी, जाके बिछा लिये आ सन।।
घंटों बाद झगड़ झगड़ाकर, अपने पास वहीं पहुँचे।
लड़का उसका समझदार था, जाकर के हम से बोले।।
अजी पिता जी को मेरे, महाराज आप ही समझादें।
हम बोले बोलो तेरे, बुड्ढे को हम क्या बतलादें।।
उसने साथ हमारे चलने, की हम से आज्ञा चाही।
हमने कहा आप पहले, घर से आज्ञा ले लो भाई।।
घर वाले राज़ी होवें यदि, तो तुम इन्तज़ाम करलो।
वरना साथ हमारे जाने, का ठाकुर जी नाम न लो।।
उमर ठीक थी बात कोइ नंहि, हमने आज्ञा दे दी थी।
भगवत भजन इसी आयू में, करते हैं अक्सर भाई।।
लेकिन भइया मुझे आपके, घर में शान्ति नहीं दिखती।
काम वही उत्तम होता है, जिसको सम्मति बतलाती।।
जिसका पुत्र योग्य हो करके, धन भी ख़ूब कमाता हो।
उसका पिता तीर्थ यात्रा तक, करने जा नंहि पाता हो।।
बात बड़ी दुर्भाग्य पूर्ण है, सुख्ख मिला संतति से।
वृद्ध अवस्था में भी जो ना, निकल सके इस ग्रहस्ती से।।
लड़का बोला महाराज जी, मैं बाधा नंहि डाल रहा।
आप हमारी माँ को समझा, दो तो यह अच्छा होता।।
हम बोले बुढ़िया से माता, तुम को क्या आपत्ती है।
इस बूड्ढे से काम आपको, लेना क्या अब बाक़ी है।।
बुढ़िया बोली कोइ काम नंहि, पर घर से क्यों जाते हैं।
परमात्माँ का नाम अगर, लेना है घर ले सकते हैं।।

Nijanand App

हम बोले जो लोग यात्रा, करते हैं क्या पागल हैं।
घर छोड़े और पैदल घूमें, उनमें बुद्धी नहीं है क्या।।
मन पवित्र होता यात्रा से, तीर्थों में जाकर आसक्त।
महात्माओं के दर्शन करके, पापी भी बन जाते भक्त।।
शक्ति नाम लेने की घर घर, भ्रमण करे से आती है।
लिपटी हुई आत्माँ वरना, माया में रह जाती है।।
तुम अब रोड़ा क्यों बनती हो, इसके रस्ते में माता।
ग्रहस्थी तक ही तो था इनका, और आपका यह नाता।।
अब तक ठीक चलाई ग्रहस्ती, अब पर लोक सँवरने दो।
इनको आगे की ख़ातिर भी, माता जी कुछ करने दो।।
बनते नहीं महात्माँ ऐसे, इतना हल्का काम नहीं।
घबराओ मत घूम धामकर, आन मिलेंगे तुम्हें यहीं।।
इन्हें महात्माँ खा न जाँएगे, तुम इससे बे ख़ौफ़ रहो।
इनको अब अपनी इच्छा, पूरी करने को ख़ुद कहदो।।
अपने वचन श्रवण करते ही, बुढ़िया माता शान्त हुई।
पाँच रूपय्ये देकर उनको, ख़र्चे के आज्ञा देदी।।
माँ बेटे दोनों प्रणाम कर, के अपने से विदा हुवे।
हम भी बैठ रेल में तीनों, आख़िर अपनी राह लगे।।

मेरठ आकर रेल से नींचे रक्खा पैर।
हेर हमारा आ गया चलेंगे करते सैर।।

सड़क चढ़े जाकर रौहटे की, निकल चले पैदल पैदल।
दिन छिपने से पहले पहले, बाड़म तक नापी मंज़िल।।
संध्या काल निकट काफ़ी था, जब गुज़रे उस गाँवों से।
तो हमसे कुछ भक्त मार्ग ही, मैं थे आकर के बोले।।
बाबा लोगों यहीं ठहर लो, क्या यह नहीं आपका गाँव।
हम भी कुछ सेवा करलें जब, आ ही गये आपके पाँव।।
सुन कर नम्र निवेदन उनका, हमने टेक लिये आसन।
आ आ करके लगे बैठने, अपने पास बहुत सज्जन।।
चिलम पियोगे क्या बाबा जी, एक लगा कहने हमसे।
हाँ भाई पीते तो हैं, झट, भाग पड़ा इक इकदम से।।
चिलम लगे पीने जब, हमसे, लगे पूछने वे सट्टा।
हम बोले हम नहीं जानते, क्या होता सट्टा बट्टा।।
हम तो वक्त काटते फिरते, भइया नहीं कहीं के पीर।

Nijanand App

ये हैं काम सिद्ध लोगों के, सट्टे वाले नहीं फ़कीर।।
काफ़ी देर मग़ज़ पच्ची की, पूछे गए सब सट्टे बाज।
विदा हुवे जब नज़र न आये, उन्हें सँवरते अपने काज।।
रह बैठे हमीं अकेले, उड़ गए सारे पत्ता तोड़।
माल बताते तो उनके थे, वरना भाग गये सब छोड़।।
किसका टिकना किसे टिकाना, ग्राहक अपना था ही कौन।
उठा कमण्डल और कमलिया, चले वहाँ से उठकर मौन।।
अगले गाँव टिके फिर जाकर, बाड़म में हम टिके नहीं।
वहीं रात काटी जा करके, रटते रटते धनी धनी।।

प्रातः उठ करके चले, पकड़ी अपनी राह।
आन मजाहिद पुर रूके, दर्शन की थी चाह।।

ठाकुर देव गिरी को संग ले, जब मजादपुर आ पहुँचे।
इक चबूतरा पटवारी का, था हम उसपै जा बैठे।।
कोई इधर से कोइ उधर से, आते और निकल जाते।
बात न पूछी वहाँ किसी ने, दिखते सब आते जाते।।
बोले देव गिरी जी हमसे, आज्ञा हो सिलगालें आग।
उपले मगर चाहियें पहले, पहले भिक्षा की है बात।।
कली राम इक व्यक्ति वहाँ का, आता था बोले महाराज।
देव गिरी तुम इससे माँगो, यह कर देगा तेरे काज।।
उसे रोक कर कहा उन्होंने, वो ले गया विटौड़े पर।
दो लेकर जब चले महात्माँ, उसने कहा टोकरा भर।।
कह दो तो हम वहीं डालदें, देव गिरी ने मना किया।
ज़्यादा हमें नहीं लेने हैं, बस दो ही का हुकुम दिया।।
चिलम विलम पीते रहे अपनी, रात बिताई वहीं पड़े।
किन्तु गाँव के किसी व्यक्ति ने, रोटी के लिए नंहि पूछे।।
राज वाहे में न्हाये प्रातः, औ अपना नित नेंय किया।
एक पात्र में रख प्रशाद कुछ, देवगिरी के हाथ दिया।।
उपले लाये आप जहाँ से, उस घर में देकर आओ।
जो भी तुमको मिले वहाँ पर, उस ही को पकड़ा आओ।।
देव गिरी जी गये वहाँ पर, कली राम की बहन जहाँ।
माई लो परशाद, महात्माँ, इस प्रकार जाकर बोला।।
देवी ने इन्कार किया झट, महात्माओं का नंहि खाते।
उल्टा इन्हें खिलाते हैं हम, उनका भोजन नंहि पाते।।

Nijanand App

देव गिरी झट उल्टे लौटे, महाराज को बतलाया।
देवी ने इन्कार किया है, देना चाहा नंहि पाया।।
साथ साथ परसंदी भी थी, एक वहाँ पर थी चौपाल।
देव गिरी जब उल्टा लौटा, तो उसको कुछ हुआ ख़याल।।
क्यों लाया परशाद महात्माँ, क्या कारण जो देता था।
ऐसे तो लाता नंहि कोई, इसमें क्या है भेद छिपा।।
खड़ी हुई परसंदी आकर, देख रही थी खड़ी खड़ी।
हम चबूतरे पर बैठे थे, उसकी हमपै नज़र पड़ी।।
कर रही थी कोशिष के जानूँ, क्यों लेकर पहुँचा परशाद।
जीवन नम्बरदार वहाँ से, गुज़र रहा था पूछी बात।।
परसंदी क्यों खड़ी हुई है, वो बोली ये बाबा जी।
देने को परसाद गये थे, घर पर मेरे चाचा जी।।
सो इनको पहचान रही हूँ, कोई हमारे क्यों जाता।
अन्य महात्माँ कोई क्यों, परसाद हमारे भिजवाता।।
हो ना हो झण्डू हो चाचा, देवगिरी ने इतने में।
किया आँख का उसे इशारा, समझ लिया जो देवी ने।।
बड़ी भक्त थी अपनी देवी, श्रद्धा की सूरत साक्षात्।
रोने लगी ख़ुशी के मारे, महाराज हैं हो गए ज्ञात।।
लगा ठट्ठ गावों वालों का, सुना आगमन जब अपना।
छोटा और बड़ा गाँवों का, हम तक पहुँचा जना जना।।
था बूआ का गाँव हमारी, बचपन यहीं कटा अपना।
हर इक से थी प्रेम मोहब्बत, था घर से ज़्यादा अपना।।
भानी और रतन दोनों ही, अपने प्रेमी थे पिछले।
भागे चले आए दोनों सुन, आकर हमसे गले मिले।।
थे बूआ के पूत भाई वे, नाते में लगते अपने।
उनके यहाँ ब्याह था कोई, रोक लिया हमको आके।।
उसी रोज़ था मंढा ब्याह का, ठहरा दिया चौहानों में।
वक्त जीमने का जब आया, बुलवाया उस वक्त हमें।।
पहुँचे सभी जीमने उस घर, मंगत के मन उट्ठा भाव।
झण्डू फिरा जीमता सब कै, चौके में क्यों कर ले जाऊँ।।
पंडित सभी इकट्ठे होंगे, भ्रष्ट सभी का हो ईमान।
बोल न बैठे कोई पंडित, सभी तरह के हैं इन्सान।।
नज़रें बता रही थीं जैसे, कर डाला हमने अपमान।
रिश्तेदारों के सन्मुख, बैठेंगे होगी नींची शान।।
पल्ले क्या है एक लंगोटा,मान मर्तबा घटा दिया।।

Nijanand App

हैं मामा फूफी के भाई, क्यों कर सबसे जाए कहा।
चौका बिगड़ जायगा अपना, घर में हम जिसदम पहुँचे।
एक खोर थी वहाँ भेंस की, उसके ऊपर जा बैठे।।
चौके में ले जाना चाहा, औरों ने हम को अंदर।
नहीं यहीं जीमेंगे हम तो, चौके से रक्खो बाहर।।
पंडतों का चौका बिगड़ेगा, क्यों कि लंगोटे हैं हम तो।
इनकी बात बिगड़ जायेगी, यहीं जीमना है हमको।।
भैंस जहाँ बंधती थी उनकी, उसी जगह जीमा हमने।
पश्चाताप हुवा मंगत को, बोल सुने जब वे उसने।।
दिल की बात जान ली मेरी, मंगत जी ने पकड़े कान।
इनसे अब कुछ छिपा नहीं है, ऐसे लिया उन्होंने जान।।
बहुत आग्रह की अंदर की, पर हम जीमें बाहर ही।
ले चलना चाहा बारात में, पर हमने इन्कार करी।।
कुछ दिन रहकर चले गये हम, गाँव जड़ौदा को अपने।
महाराज फिर जल्दी आना, हमसे सबने वचन लिये।।

छोड़ आए जिस घर को उस ही घर की ओर चले।
फिरता था खेंचे कोई हम फिरते खिंचे खिंचे।।

ब्याह योग्य हो गई सुता जब, चर्चा रहती धर भर में।
लड़की है जवान बोलो अब, इस कारज को कौन करे।।
छोड़ भगे घर झण्डू दत्त तो, मर गए या कंहि जीवित हैं।
रब जाने इसको तो केवल, लेकिन दुख्ख असीमित हैं।।
घर का भार सिर्फ़ पत्नी पर, फटकारें भी पत्नी पर।
कोई नहीं जो बाँटे दुख को, दिखता न था कोई सर पर।।
बूल चंद थे मस्त अपनी में, कुनबा अपनी अपनी में।
लावारिस की भाँति समझ लो, कहने वाले सभी इन्हें।।
शब्द बहुत ढंगे बे ढंगे, आ आकर कह जाते लोग।
निज पत्नी को सुनने पड़ते, आन बना ऐसा संयोग।।
घर पर मुखिया नकली पंडत, चचा ज़ाद भाई अपने।
साथ साथ पैसे वाले भी, लेन देन भी करते थे।।
इधर अगर ख़र्चे वे पैसे, वापिस उनको कौन करे।
सिर्फ़ समस्या थी तो यह थी, कारज सिर यह कौन धरे।।
अपना उनको पता नहीं कंहि, मर गये कहीं यही निश्चय।
इसी बात पर चूड़ी बिछुवे, विनश चुके थे पत्नी के।।

Nijanand App

ज़ोर दिया नकली पंडित पर, लोगों ने जा जा करके।
बूल चंद जी को भी कहते, फेरे फेरो लड़की के।।
बात अटकती थी ख़र्चे पर, मुँह बिल्ली का पकड़े कौन।
सख़्त सुस्त सुनने को पत्नी, सुनती रहती सब की मौन।।
सधवा होकर भी विधवा का, पतनी ने आनंद लिया।
मिला न सुख दाता कोई भी, मिला जो, उसको दुख्ख दिया।।
अतः ख़र्च के भय से कोई, बटा न पाया इसमें हाथ।
गाँव भरे में चर्चा रहती, हर मुँह पर रहती यह बात।।
क्वारी कन्या रहे गाँव में, नाँक गाँव भर की जाती।
इसी लिये यह बात गाँव में, किसी आँख भी ना भाती।।
बहुत खड़ी हुइ तुल करके जब, लड़का तय था लड़की को।
ब्याह करो इस ही साये में, कहा सभी ने कुनबे को।।
ज़ोर पड़ा नकली पंडित पै, क्यों के पैसे वाला था।
कहने लगा किसे दूँ पैसा, ज़िम्मेदार कौन इसका।।
बूल चंद जी को कहते सब, अपने भाई के पश्चात्।
तुम ही तो हो और न कोई, तुम ही दोगे इसमें हाथ।।
वे कहते अपनी भाभी को, घर के घर रह जाती बात।
क्या उत्तर दे सकती भाभी, नाज़ुक थे घर के हालात।।
पले न जाने कैसे बच्चे, कैसे कैसे काम चला।
झेलै किस प्रकार इक औरत, कारज ब्याहों का ख़र्चा।।
सम्वत् उन्निस सौ चौरासी, था जिसदम हम घर आये।
सात साल के लगभग बाहर, रहकर घर वापिस आये।।
अनायास जा खड़े हुवे हम, घोषित था मैं ख़त्म हुआ।
मानों मुर्दा जी उट्ठा हो, जिसने सुना यही समझा।।
बैठ गये हम पहुँच जूड़ में, हल्ला मचा जड़ौदे में।
भाग भाग आये अपने ढिंग, चर्चा अपनी हर मुँह में।।
अति उत्तम हो गया हितैषी, जन के मुँह पर थी आवाज़।
जिसका पाप बाप उस ही का, आप सिंभाले अपना काज।।
हम पै थी बस एक लंगोटी, कमली और कमंडल एक।
ना झोली ना बटुआ कोई, ऐसा कोइ न संग अलवेस।।
जिसमें दाम दुक्कड़ी रखते, दिखते ही होता अनुमान।
फूटी कौड़ी एक न पल्ले, पल भर में हो जाता ज्ञान।।
कहा किसी ने जा पतनी से, खुश हो अब आ गए भरतार।
अब बटुआ भर देंगे तेरा, कर कारज अब खूब संवार।।
दर्शन तो कर आ जा करके, सात वर्ष में आये हैं।

Nijanand App

दर्शन से ही जँच जायेगा, कितना धन संग लाये हैं।।
गंगा राम चचेरे भाई, के मुह से इक दिन निकला।
ब्याह व्याह क्या होगा खिचड़ी, रंधवाकर खिलवा देगा।।
हमने भी सुन ली थी अपने, भाइ साहब की ऐसी बात।
सुनकर बोले नहीं किन्तु हम, रहे हमीं में अवख़ारात।।
बात नहीं थी एक चोट थी, लगा नमक सा जख़्मों पर।
दर्शन कर सोची पतनी ने, कब तक शर्म करू आख़िर।।
अतः जूड़ में पहुँची मिलने, हटे सभी ऐकान्त हुवा।
अपना अपनी शिरो मति से, इक संदिग्ध मिलाप हुवा।।
दर्श पर्श उपरान्त पत्नी ने, ऐसे हमसे प्रश्न किया।
क्या लाऐ हो मेरी ख़ातिर, दो आगे को हाथ किया।।
आप कमाने गये हुवे थे, बहुत लाए होंगे धन साथ।
सुता आपकी ब्याहने को है, लाओ किया फिर आगे हाथ।।
बोले हम अपनी पतनी से, पतनी का धन पति होता।
भेजो शुकर श्री सदगुरू को, मरा हुवा फिर आन मिला।।
ऐसा हुवा न होगा आगे, दिया तुझे जो सदगुरू ने।
तू तो रांड हुई बैठी थी, चुड़ी बिछुवे तक उतरे।।
अब भी धन ही धन चिल्लाती, तेरे लिए हमीं हैं धन।
पती व्रताऐं कभी न हमने, सुनीं कि होती हैं निरधन।।
घर में बैठ और जाकर के, सदगुरू सदगुरू कर पगली।
क्या लेगी धन के चक्कर में, हमसे अलग सभी नकली।।
ब्याह देख कर चक्कर खा गइ, क्या सम्बंध और क्या ब्याह।
जिसका काम करेगा खुद वह, सब का करते जो निर्वाह।।
कर प्रणाम पतनी उठ आई, समझ न पाई अपनी बात।
जिस लालच वश वहाँ गई थी, वह तो चीज न आई हाथ।।
जिसका लक्ष्य जहाँ होता है, वही चीज गर मिलती है।
काम हुवा वह तभी समझता, वरन निराशा दिखती है।।
दर्द पेट में दवा आंख में, उसे डाक्टर कौन कहे।
पर हकीम ऐसे ही थे गुरू, क्या मज़ाल जो दुःख रहे।।
धन की भूक भला बातों से, कहीं शान्त हो पाई क्या।
बातों ही बातों से किचिंत, जग का काम नहीं चलता।।
थी पुकार वह एक फ़र्ज की, भरत सिंह पंड़ित पहुँचा।
पहले बात करी पतनी से, माता जी कुछ भेद खुला।।
आप कर चुकीं बातें उनसे, क्या कहते हैं गुरू महाराज।
पैसे धेले दिये तुम्हें कुछ, कुछ तो खोलो उनका राज।।

Nijanand App

छलक उठी अंखिया पतनी की, पल्ले कोड़ी एक नहीं।
ज्ञान चाहे जो ले लो जाके, पैसा बारह कोस नहीं।।
क्या फ़कीर होकर आ बैठे, घर का घर फ़कीर है अब।
जिसके बच्चे फ़िकर उसे हैं, उनका उत्तर यह है अब।।
उनका कारज और करेगा, भइया मत पूछै बस बात।
दोनों जाँगें अपने ही हैं, जिसे उघाड़ो मरना लाज।।
सुनकर के पतनी से इतनी, चोट लगी मजबूरी की।
कारज उधर चढ़ा बैठा सर, उसने मिलने की सोची।।
इकले हों जिस समय मिलूँ तब, लगा ताक में मौके की।
अर्ध रात्रि उपरान्त गया वह, हमसे जाकर चर्चा की।।
महाराज जी कैसे हो अब, सुनने लगे ग़ौर से हम।
लड़की शादी को बैठी है, कैसे हो बोलो कुछ तुम।।
काम आपका आप करेंगे, बोले हम भइ ब्याह करो।
जो होना हर हालत होना, उसके लिये न देर करो।।
बोला वह तो चिट्ठी दे दे, बोले हम बिल्कूल दे दो।
ख़ार्चे की कैसे होवेगी, कहने लगे अरे पगलों।।
जिसका काम करेगा खुद वो, अन्य न कोई कर सकता।
दुनियाँ से अपने नंहि होते, औरों का क्यों कर होगा।।
की प्रणाम अपने पग लेकर, अपने घर वापिस आया।
उसने म्हारे घर कुनबे को, संदेशा यह पहुँचाया।।
चिट्ठी दो शादी की फ़ौरन, आप करेंगे गुरू महाराज।
नकली पंड़ित से बोला वह, चिट्ठी दो शादी की आप।।
ऐकत्रित हो चार आदमी, शादी की चिट्ठी दे दी।
रहें आप मूदी शादी के, नकली पंड़ित को कहदी।।
हर हिसाब शादी का रक्खो, दिया जायेगा पैसा सब।
हम इक दम ले लेंगे उनसे, चिंता कोइ न करना अब।।
उनसे बातें सब हो ली हैं, स्वयं करेंगे गुरू महाराज।
दुनियाँ से अपने नंहि होते, ये हैं सदगुरू के अलफ़ाज।।
धरा ज्यों हि दिन समझो आया, बाक़ी रहे आठ दिन अब।
घर वाले बोले के पैसा, लाओ कार्य यह होगा तब।।
पैसे का जवाब पैसा है, बातें पेट न भर सकतीं।
मालिक तो फ़कीर है भाई, अपनी समझ नहीं आती।।
उसपै सिर्फ़ लंगोटी है इक, रक़म कहाँ से दे देगा।
वह हमसे ली नहीं जायेगी, वह निकाल कर दे देगा।।
घर कुनबे के नाते से हम, खड़े हुवे हैं अलबत्ता।

Nijanand App

पर भइया रूपया पहले दो, यों अपने नंहि है बसका।।
फिर पहुँचा वह पास हमारे, महाराज जी कैसे हो।
पंदरह दिन शादी के रह गये, वे कहते हैं पैसा दो।।
इन्तज़ाम जितना हो पल्ले, दे दो ताकि काम आवे।
जो सामान जरूरत का है, वह बाजार से आ जावे।।
बैठे रहे मौन सुनकर के, उत्तर वापिस नहीं दिया।
उसे प्रतिक्षा थी उत्तर की, कहकर वो तो चुप्प हुवा।।
जैसे कहीं चले गए हों हम, इस प्रकार हम लगे उसे।
वह भी बैठा रहा देखता, जब तक मेरे नेत्र खुले।।
खुली आँख तो भरत सिंह फिर, इधर पुनः आकृष्ट हुवा।
जैसे अब उत्तर देंगे कुछ, अतः दुबारा प्रश्न किया।।
खुलने पर भी आँख न बोले, तो उसने फिर दोहराया।
महाराज जी क्या उलझन है, जो न कुछ भी फ़रमाया।।
बोले हम सुन भाइ भरत सिंह, हम जिसके हैं वह जानें।
हम तो पैसा छूते तक नंहि, कृप्या हमसे मत मांगें।।
आप करेगा करने वाला, तुम चिंता क्यों करते हो।
आँखों वाले हैं वे तो सब, देख रहे विश्वास करो।।
ऐसे बोले कान जब पहुँचे, उसके हृदय हुई धक से।
ये तो अन्य आसरे पर हैं, इनके पास नहीं पैसे।।
उधर निकट दिन इन्तजाम सब, भली मौत आई सबकी।
इनकी तो बातें कोरी हैं, फ़िकर पड़ी अब इज्जत की।।
उसके आंसू निकल पड़े झट, महाराज अब बिगड़ी बात।
जिनके आप भरोसा बैठे, उनसे करें प्रार्थना आप।।
बात है यह दुनियाँ दारी की, जिस प्रकार चलती हैं ये।
वैसे ही ये चल सकती हैं, और तरह नंहि चल सकते।।
सगे सोधड़े सभी दीख गए, कोइ नहीं आवेगा काम।
तुम ही को करना होगा सब, कोइ न देगा एक छदाम।।
कहो आप अपने सदगुरू से, अब देरी की बात नहीं।
तीर गया चुटकी से बाहर, अब वह अपने हाथ नहीं।।
रो कर पैरों गिरा हमारे, कहें श्री सदगुरू से आप।
बात बिगड़ने के दर पर है, तुल कर बिगड़ चुके हालात।।
कौन भाइ क्या भाइ चारा, कोइ नहीं तुम ही हो बस।
अपना काम आप करना है, देख लिये सारे कस कस।।
जब बोला इस तरह भरतसिंह, आंखों में आंसू आया।
भरत सिंह तू क्या कहता है, तेंने भेद नहीं पाया।।

Nijanand App

जिनकी आंखें खुली हुई हैं, सब कुछ देख रहे हैं जो।
जिनकी बंद कभी नंहि होती, कहवाता है तू उन ही को।।
तेरा मतलब है मैं उनसे, गरज़ बताऊंगा अपनी।
मेरे पै यह संकट है अब, रूपया दे दो सदगुरू जी।।
कभी नहीं निकलेगा मुँह से, मेरा नहीं कहीं सम्बंध।
बात उन्हीं की, काम उन्हीं का, वही करेंगे आप प्रबन्ध।।
क्या तू करी कराई मेरी, करवाने आया है मेंट।
जो अब तक भी मांग न पाया, मांगें आज कहाँ यह ढेट।।
साफ़ कह दिया जा अब हमने, किसकी ताब कहावे अब।
भरत सिंह को आया चक्कर, बात फंसी ऐसी बेढब।।
बैठ गया वह पैर थाम कर, नौ नौ आँसू आंखों में।
हम भी तब तक नहीं उठेंगे, जब तक यह हल नंहि करलें।।
हम बोले क्यों घबराता है, तू नाहक क्यों घबराता।
घबरावें तो हम घबरावें, तू नाहक घबराता क्यों वहाँ।।
फ़िकर चाहिए मालिक को, औरों के बट में नंहि आया।
तुम तो भाइ तमाशा देखो, सदगुरू की कैसी माया।।
सुनता और समझता कैसे, क्यों कि उसकी आतम तो।
चढ़ी जा रही थी सर्दी सी, उसने पुनः कहा हमको।।
एक बात कृप्या स्वीकारो, उन्हें एक चिट्ठी लिख दो।
अगर नहीं कह सकते मुँह से, मेरे कर से लिखवा दो।।
थोड़ा सोच साच कर बोले, स्वयं नहीं हम लिखने के।
तू लिखवा जो चाहे खुद ही, दस्ख़त उस पै कर देंगे।।
उसने इसे गनीमत समझा, चला गया उठकर घर को।
कलम और काग़ज ला करके, चिट्ठी लिख्खी सदगुरू को।।
बड़े संवर कर बड़े प्रेम से, बड़ा आग्रह था उसमें।
चर्चा खुल कर ब्याह यज्ञ की, व्यक्त करी उसने उसमें।।
आंमत्रित भी किया ब्याह पर, सहित साथ जी के आवें।
औ तारीख़ बता दो ताँगा, कब स्टेशन भिजवावें।।
सब अपनी बुद्धी की रू में, बड़े संवर करके लिख्खा।
और रात्री में पहुँचा लेकर, मेरे आगे जा रक्खा।।
मांगी कलम दस्तख़त के लिए, मैंने सो झट पकड़ा दी।
अपना नाम ड़ाल कर नींचे, फिर वापिस उसको दे दी।।
बोला चिट्ठी रख आसन पर, एक बाल्टी पानी ला।
हो तामील हुक्म की फ़ौरन, जल फौरन ही ले आया।।
अपने सन्मुख रखवा करके, भरत सिंह से हम बोले।

Nijanand App

चिट्ठी को अब डाल डाक में, श्री सद गुरू पै पहुँचा दे।।
किसको ड़ाक बताता हूँ मैं, चारों ओर लगा लखने।
अरे ड़ाक में डाल पत्र यह, कहा पुनः उससे हमने।।
जल की ओर हाथ करके जब, बोला समझ उसे आई।
तभी बाल्टी में वह चिटठी, आंख दिखा कर डलवाई।।
फिर बोले हरफ़ों को धो दे, भरत सिंह ने धो डाले।
पहुँच गई जा चिट्ठी उन पै, परसों तक उत्तर आ ले।।
वाह री ड़ाक वाहरी चिट्ठी, कहता हुवा गया बाहर।
उसकी समझ नहीं कुछ आया, उसके दिल पर रहा फ़िकर।।
गुड़ गोबर हुवा दिखा उसको, क्या कहदे किसको कहदे।
चक्कर में फंस गया भरत सिंह, लोगों को क्या उत्तर दें।।
गर कह देवे उस चिट्ठी को, यों लिख्खी औ यों भेजी।
अपनी तो उड़ रही थी बस, खुश्की उसकी भी उड़ती।।
अपने मुँह पर शिकन न दीखी, जाने किसके घर पर ब्याह।
लोग मर जाते चिंता में, मालिक बैठा बे परवाह।।
मर मर जी जी घड़िया कट रहीं, ले देकर परसों आई।
डाक न जाने कैसी है यह, लीला ही अदभुत पाई।।
दोपहरी को एक डाकिया, सरकारी चिट्ठी लाया।
महाराज जी कहाँ मिलेंगे, हम तक उसको भिजवाया।।
इक चिट्ठी औ इक मनियाड़र, सोलह रूपयों का उसने।
हाथ हमारे में पकड़ाया, लिये अदब से वे हमने।।
भरत सिंह को बुलवा हमने, चिट्ठी कर में पकड़ा दी।
लो भाई यह अपनी चिट्ठी, उसने जब पढ़ कर देखी।।
लीला समझ आइ सदगुरू की, निष्कलंक के हाथों की।
था जवाब उसकी चिट्ठी का, उसने जो जो बात लिखी।।
था प्रणाम सब साथी जन को, लिख्खा था चिट्ठी पाई।
प्राप्त हुई वे सभी सूचना, जो चिट्ठी में लिखवाई।।
क्षमा मुझे करना शादी में, हम शरीक नंहि हो सकते।
सेठ लक्ष्मी चंद भेजे हैं, परसों तक आ लें घर पै।।
निस्संकोच आप शादी का, ख़र्च उन्हें बतला देना।
पत्र बंद था इन शब्दों में, मेरी सब प्रणाम लेना।।
फिर रूपयें हाथों में देकर, बोले सोलह कला हैं ये।
इन्हें रूपय्यें नहीं समझना, गुरू गंण शादी में आये।।
कारज पूर्ण करेंगे सदगुरू, निस्संकोच करो अब काम।
सोलह कला उतर आइ घर, निमटा समझो काम तमाम।।

Nijanand App

साष्टांग गिर पड़ा चरण पर, देख भरत सिंह यह तत्काल।
गुरू महाराज बड़ी किरपा की, भले समय पर लिया संभाल।।
घुटनों में दम भर गया उसके, पड़ने लगे पैर आगे।
अपनों को संदेशा देने, चिट्ठी लेकर के भागे।।
बढ़ते गये हौंसले सुन सुन, उठने लगे पैर सबके।
लिखे मुताबिक अगले दिन ही, लक्ष्मी चंद भी आ पहुँचे।।
बहुत लाये सामान साथ में, थी कलकत्ते की सोगात।
श्री सदगुरू के लगे चरण से, आन झुकाया अपना माथ।।
कुछ क्षण बाद सेठ जी बोले, शादी का जो जो सामान।
आया हो जो आवेगा जो, कृपया हमें करा दो ज्ञान।।
सुनकर बात लक्ष्मी चंद की, दिया भरत सिंह को आदेश।
नकली जी से इन्हें मिला दो, वहीं करो ले जाकर पेश।।
नकली पंडित जी ने उनसे, कहा सेठ जी हर सामान।
आजायेगा स्वयं शहर से, आप हमारे हैं मेहमान।।
बोले सेठ ख़र्च हम देंगे, धन रक्खा उनके आगे।
पंडित जी बोले ले लेंगे, परचा दे देंगे लाके।।
सद गुरू ने की शादी खुलकर, खुलकर रीति रिवाज हुवे।
ब्याह बहुत होते देखे हैं, ऐसे लेकिन नहीं हुवे।।
अंतिम रोटी सदगुरू की थी, जो बारात को खिलवाई।
मेवा मिलवाकर खिचड़ी में, एक रसोई बनवाई।।
कहा फ़कीरी भोजन है यह, घी खिचड़ी हम वज़न पड़ा।
जिसने हेच किये सब खाने, जो प्रशाद था सदगुरू का।।

बच्चों तक के पैर सेठ जी, छूते फिरे जड़ौदे में।
तुम तो ग्वाल बाल हो ब्रज के, ब्रज लगता है यहाँ हमें।।
बड़ी मिठाई पैसे बाँटे, बच्चों को लाला जी ने।
बड़े भाग्य शाली हो तुम जो, पाया यहाँ जन्म तुमने।।
काफ़ी से ज़्यादा मिठाइयाँ, बचीं ब्याह में लड़की के।
उनसे किया गया भंडारा, वहीं जूड़ ले जा करके।।
पांचों गांवों धूम धाम से, उसमें हुवे सम्मिलित आ।
कथा कीर्तन आदिक का, सब भक्तों को आनंद मिला।।

लीला सदगुरू की बड़ी, बड़ा गुरू का नाम।
सदगुरू की क्या बात है, सारे अदभुत काम।।

Nijanand App

बैठ गये हम जूड़ में, ले सदगुरू का नाम।
जिसने सुना हमारा आना, आते वहीं तमाम।।

घड़ी वक्त की चलती रहती, आता समय चला जाता।
एक धरोहर मात्र निशानी, वक्त छोड़ करके जाता।।
ये न देखता बाट किसी की, जाकर वक्त नहीं आता।।
अपना रहन सहन कुछ ऐसा, बना तीर्थाटन के बाद।
बंद बोलना कभी न होता, सदा छिड़े रहते संवाद।।
घर की जंजीरों के बन्धन, एक मिनट ना भाते थे।
अपने सभी सगे सम्बन्धी, ज्यों खाने को आते थे।।
जूड़ गाँव के दक्षिण पचिछम, के कोने में है स्थान।
रहते हम स्थाई रूप से, था उसमें इक देवस्थान।।
टूटा फूटा सा इक मंदिर, शिवजी का स्थित उसमें।
पड़ा हुआ था बेग़ौरा सा, था अपना डेरा उसमें।।
अगर सत्य पूछों तो, वह स्थान भजन के लायक था।
सभी वहीं पर संध्या वंदन, करते जो भी साधन था।।
जब जा लगा हमारा आसन, तब फिर लगा अजब ताँता।
लगे पहुँचने अनगिन फिर तो, थोड़ा बहुत हरिक जाता।।

पहुँचा यह चोला वहाँ, छः वर्षों के बाद।
सम्वत उन्नीस सौ चौरासी थी, जब आये घर के द्वार।।

हम हममें जब हैं नहीं, बनकर आये और।
ऊपर चोला और है, आतम में कोइ और।।
संचालन चोले का करते, अंदर बैठ गुरू महाराज।
ज्यों चालक हाँकै गाड़ी को, हंके फिर रहे हम यों आज।।
अब झण्डूदत्त कहाँ है अंदर, बाई रतन बनकर आये।
उनकी आतम में बिठलाकर, सदगुरू प्रीतम को लाये।।
क्या इच्छा है श्री सदगुरू की, जाने वे लीला अपनी।
लाए गये हम वहाँ बाँधकर, जित अपने थे हम वतनी।।
जुथ अपना काफ़ी से ज़्यादा, इधर पड़ा हुआ सोता था।
जिन्हें जगाकर क़ायम करना, खेंच और को लाना था।।
लगनी अब आवाज़ दूसरी, समय क़ायमी का आया।
ज्ञान खुदाई, खेल ख़ुदाई, छिड़ै जहाँ वहाँ गुरू लाया।।

Nijanand App

जो श्री स्वामी प्राणनाथ थे, अपने समय जगाए थे।
देकर हुकम पुनः सोने का, सारे फेर सुलाए थे।।
जागे हुए लगे चिल्लाने, पल–पल प्रीतम धाम चलो।
यहाँ नहीं मन लगता अब तो, रहती हरदम चलो चलो।।
इधर साथ जगने को बाकी, संग आये संग ही जाएँ।
यह कैसे हो सकता है के, आधे सोते रह जाएँ।।
हो निश्चिंत जगावे उनको, जो बाकी हैं जगने से।
अतः सुलाने पड़े सभी वे, जितने इस दम जागे थे।।
जब दूजी आवाज लगेगी, समय कायमी का आवे।
एक साथ उठ जाना उस दम, जिस दम कान टेर जावे।।

हुआ उपद्रव सन् छालिस में, चले ग़ोल के ग़ोल इधर।
हुई ऐकत्रित अगली पिछली, अंतिम लीला चलै जिधर।।
किन्तु हुआ सब छिपे छिपे यह, ठहरी बातूनी लीला।
जाग गई जो पूर्ण रूप से, वह खेल यह समझेगा।।
वह ही देख सकी यह लीला, उस ही ने आनंद लिया।
सुख भी प्रीतम ने उस ही को, हर प्रकार का आप दिया।।

बना शेरपुर ब्रज एक तीजा, मिले यहाँ सब हास विलास।
पाया सबने प्राणनाथ को, परिचय दिया हुआ विश्वास।।
प्रकटा जोश यहाँ आकर के, जन जन को दी आवाज।
टेर–टेर कर पिया जगाई, कान पड़ी सबके आवाज।।

बना शेर पुर केन्द्र क़ायमी, उससे होगा यहाँ मिलाप।
जिसे आख़रत पर आना है, ब्रह्म प्रिया हो जिसकी आप।।
खेंच लिये शक्ती से अपनी, दे दे कर दूजी आवाज़।
सूर क़ायमी का बोला यहाँ, बजा अर्श आला का साज़।।
जहाँ जहाँ थीं खेंची सारी, उठीं वासनाऐं अपनी।
नगर नगर और गाँव गाँव, फिर फिर कर लाये धाम धनी।।
ज्यों चुगता है पक्षी दाना, अपनी लम्बी चोंच बढ़ा।
हंस चुगा करता ज्यों मोती, यही सदगुरू ने काम किया।।
दूर अगर थी उसको बरसों, पहले से आवाज़ लगी।
क्यों कि इधर होना था संगम, आत्माऐं आ यहाँ मिली।।
चोले में श्री झण्डू दत्त के, क्या आया छिपकर सामान।
किसे खबर है किसे परख है, जहाँ घोर छाया अज्ञान।।

Nijanand App

बातन की बातूनी जाने, बाहर की बाहर वाला।
पुरूष क़ायमी का छिप करके, आया, आला से आला।।
हुवा झलक में पहली पागल, दूजी को फिर ताब कहा।
श्री राज इस चोले में हैं, क्यों कर हो विश्वास यहाँ।।
जब तक स्वयं न किरपा करदें, परदा उठा न दिखलावें।
जो ख़ुद भूल भुलइयों में हैं, भला उन्हें कैसे पावें।।

खेला रास मुजाहिदपुर में, जन जन को दिखलाया।
जुथ यहाँ भी था अपना, साकुँडल जिनके संग आया।।
बात सभी ये पोशीदा, खुले समय अपने आकर।
बैठ नूर में जोश प्रभु का, पधारा शेरपुर आकर।।
हमे साथ इमाम के, दिया फरिश्ता मर्द।
उड़ावे पहाड़ जभी जड़ भूताने सो तो फरिश्ता कैसे कद।।
कहा गया है जोश मर्द पर, इस ही में इतनी सामर्थ।
मुश्किल काम जोश कर सकता, मर्द जोश ही का है अर्थ।।
नहीं बुद्धि से जो हो पाता, उसे जोश करता पश्चात।
जोशी सभी कुछ कर सकता है, हो जाता इक साथ बलात्।।
वाणी में सब खुला पड़ा है, किन्तु छिपा है फिर भी सब।
जिसके पास कृपा हो समझ ले, अन्य न समझेगा मतलब।।
मगज जो मुसाफ का, जाहिर किया छिपाय,
गाया खुश आवाज सों, कोल सिर चढ़ाय।
जरा चातुरी लखो पिया की, कितने कुशल की वहां आप।
खोल धरा सब यहाँ माजजा, लेकिन फिर भी रखा ढाँप।।
इलम चातुरी नहीं चलेगी, साधारण सी बात नहीं।
यह है काम बुद्ध का, पी की, हर एक औकात नहीं।।
रस्ते चलता अर्थ लगा के, क्या मजाल जानों खुद ही।
वाणी को समझेगा तब ही, किरपा होय श्री जी की।।
कहूँ मायने मगज विवेक, जाए दीन होय सब एक।
छूट जाये छल भेष, ये कुछ इमाम को विशेष।।
आसन है इमाम का बुध में, बुध में करते पिया निवास।
अंग और प्रत्यंग उन्हीं के, पाँच शास्त्र ले उत्तर आप।।
अलग अलग हैं काम सभी के, ले गये अलग–अलग ही रूप।
पंचम को नित भोग लगाते, पाँचों तत्व मिल एक सरूप।।
मिले नूर में पाँचों आकर, रतनबाई पर की किरपा।
होकर पाँच एक जामे में, परातत्व आकर उतरा।।
खान देश में गाँव सोनगरी, नाम श्री नारायण दास।
इस चोले पर जोश प्रभु का, उतरा आकर के साक्षात।।
परिचय दिया पूर्ण तक हूँ मैं, देखा ही प्रत्यक्ष रूप।
रही साख की नहीं जरूरत, रही मगर लीला सब मूक।।
मुँह पर कुलफ दिये परिचय, खबरदार जो कहीं कहा।
बहुत उकसाये कहने का, बातन की है यह लीला।।
धीरे धीरे खुले सब राज, खुलती गई आँख जिसकी।

Nijanand App

वह ही झुकता गया चरण पर, झुके अधिक देखा देखी।।
आत्म दुल्हन सर्वप्रथम ही, उतर चुकी थी माया में।
बैठी थी पहले से धनी श्री, देवचन्द्र जी की काया में।।
सदी ग्यारही बुद्ध जी उतरे, और बारही हुकम सरूप।
जोश तेरही आकर उतरा, और चाँद ही नूर सरूप।।
'धनी जी का जोश आत्म दुल्हिन, नूर हुक्म बुद्ध मूल वतन।
ये पाँचों मिल भई श्री महामति, वेद कतेबों पहुँची शरत।।
भया मेल पाँचों का आखर, करी कायमी पाँचों मिल।
लीला यह विचित्र बुद्ध जी की, उलट पुलट हो उठा तिमिर।।
भई गवाही पूर्ण शाम की, पूरा अपना वचन किया।
ज्ञात कराया मैं आ पहुँचा, अपना साक्षात्कार किया।।
हम हैं कौन लाखों पहचानों, आत्म की आँखें खोलों।
रूकना नहीं विपुल को भी अब, खेल खत्म कर धाम चलो।।
अपने–अपने मिले मूल से, तिमिर खेल से मुँह मोड़ो।
असली तन छोड़ै बैठी हो, अपने को उससे जोड़ो।।
उतर चुका जब नूर सान पर, तत्पश्चात जोश उतरा।
पैंतीस वर्ष रहा तिन ऊपर, खेली कायम की लीला।।
श्री मुख वाणी ऐ वचन, तण नव कीधों विचार।
ना कहाओं लखिया आधार, सांभलो रतनबाई ऐ किहूँ प्रकार।।
ऐ वी बुध केम अरबी आवार!
इन्द्रावती ही तरह रत्न भी, अपने संग पी को लाई।
सदी तेरही में नारायण दास, श्री सद्गुरू महाराज।।
पैदा हुए सोनगिरी आकर, था वो जोश सरूप साक्षात।
गुप्त भेष है यह प्रीतम का, नहीं कोई भी सखी जमात।।
बस खुद ही हैं आव महाप्रभु, साथ न कोई आत्म वर्ग।
उतरे नहीं किसी आत्म पर, बैठे नूर पर पी आवेश।।
कायम करने चल दिए तिमिर को, आ बैठे इस यों हृदयेश्स।
चोले में श्री झंडूदत्त थे, आज रतन करती अरदास।।
बख्शा मुझे काम कुछ पी ने, करके मेरे अंदर वास।
मुझ पर अंकुश चढ़ा जोश का, जो कुछ हुआ जोश ने कहा।।
मैं दासी की भाँति संग हूँ, वृथा बड़ाई दे रहे नाथ।
मुझसे हुआ न कुछ हो सकता, कर रहे खुद सद्गुरू महाराज।
सुना रही मैं तो आप बीती, मुझे न सच कहने में लाज।।

Nijanand App

श्री मुंख वाँणी से

जब सूर बाजे दूसरा देवे हक़ चिन्हाए।
तिन सब क़ायम किये रही आठों भिस्त भराय।।

आठों भिस्त क़ायम करीबजाय दूसरा सूर।
बरसा आब सबन पर अर्श अज़ीम का नूर।।

आज और कल और रोज, गिनती बढ़ती ही जाती थी।
जितनी भी थी भक्त मण्डली, हमें हृदय से चाहती थी।।
आने के पश्चात् भूल, जाते थे वे सब घर जाना।
किसका घर कैसे घर वाले, तज देते खाना दाना।।
कई कई दिन हो जाते, बहुतों को अपने घर जाये।
बने एक दम सब मतवाले, ऐसे हम उनको भाये।।
ऐसी चिपक बढ़ी कुछ हमसे, बना एक ऐसा संयोग।
पाँच गाँव के लगे पहुँचने, बड़े बड़े अपने ढिंग लोग।।
कथा कीर्तन की सीमा नंहि, रहता छिड़ा सदा सत्संग।
जमे रहा करते नित श्रोता, कभी न होता सत्संग बंद।।
रसिक वर्ग रस लेते रहते, पीते रहते रस प्याले।
श्वेत हुवे भँवरे पी पी रस, थे सरूप काले काले।।
बहुत टालते रहते उनको, पास हमारे कम आओ।
अपने पास नहीं है कुछ भी, दुनियाँ वालों भग जाओ।।
हम बिगड़े तुम तो मत बिगड़ो, हम से दूर दूर रहना।
योग्य न हम दुनियाँ वालों के, मान जाओ अपना कहना।।
लेकिन असर बहुत कम होता, उन पर ऐसे वचनों का।
तांता बढ़ता गया नित्य ही, इधर उधर से सजनों का।।
जब देखा पक्के हैं जितने, भक्त पास में आते हैं।
घर द्वारे को छोड़ काम का, नाम न लब पै लाते हैं।।
तो हम बोले उनसे भक्तों, अगर हमें तुम प्यार करो।
तो पहले इस शिव मंदिर का, मिलकर जीर्ण उद्धार करो।।
जहाँ बैठते हो नित आकर, करते हो रस पान अनेक।
तो अपने तन धन से इसका, जीर्ण उद्धार करो प्रत्येक।।
सुन कर अपनी भक्त जनों में, एक शक्ति सी जाग उठी।
शिव मंदिर की जीर्ण अवस्था, को सुधारने को उट्ठी।।
तन से मन से धन से सबने, कार्य श्रेष्ट में साथ किया।

Nijanand App

अपने हाथों पाँच गाँव ने, शिव मंदिर उद्धार किया।।
साथ साथ राशन अन्नादिक, का भी सभी प्रबंध हुआ।
जिसके पास न था देने को, उसने श्रम का दान किया।।
बढ़ा ख़र्च भी धीरे धीरे, आते जाते रहते लोग।
साथ लगा द्रढ़ता से जमने, लगता वहीं प्रशादी भोग।।
जो बनता अपना हम, उन्हें खिलाकर ही खाते।
घर जाकर ही क्या लेते जब, पेट वहीं पर भर जाते।।
रूहानी जिस्मानी दोनों, गिज़ा जहाँ मिलती हों साथ।
भला वहाँ से डिगा सकेगा, कौन उसे है झूँटी बात।।
अपने पास पचासों सज्जन, पड़े रहा करते हर वक्त।
पेटू बाबा समझ न लेना, वास्तवो में ही थे भक्त।।
हमें न थी आदत सोने की, सोने का लेते नंहि नाम।
बैठे रहते भक्त जनों में, कभी न करते हम विश्राम।।
हम तो थे अभ्यासी इसके, भक्तों का आरम्भ हुआ।
चिपके कुछ अपने से ऐसे, उनका भी यह ढंग हुआ।।
भाँति अश्व की बहुते तो, चलते चलते सो लेते थे।
कुछ बैठे बैठै सो लेते, ये क़िस्से थे प्रति दिन के।।
हम तो भूल गये थे सोना, हमें याद भी नंहि आता।
पर हमने यह नहीं विचारा, इनसे नंहि बैठा जाता।।
बहुतों को निद्रा देवी जब, आ बेचैन बनाती थी।
होता मौत बैठना पल को, इतना उन्हें सताती थी।।
तो पाख़ाने का लोटा ले, बना बहाना चल देते।
लोटा रखकर निकट खेत में, अकसर बहुते सो लेते।।
उठा 2 लोटे सोतों के, ग्रामीणों ने पहुँचाये।
कहा बहुत ने टट्टी फिरते, हम को ये सोते पाये।।
तो हमने अनुमान लगाया, सुनते हो ऐ रामरतन।
आठ पहर की बैठक रोको, इनके साथ नहीं उत्तम।।
तुम तो हो अभ्यासी लेकिन, इनको तो अभ्यास नहीं।
सहन नहीं कर पाऐंगे ये, यह धन इनके पास नहीं।।
हमको बैठा देख सभी ये, बैठे रहते हैं हर वक्त।
हमें तनिक भी नहीं अखरता, किन्तु बीतती इनपर सख्त।।
लोग लगे अंदाज़ लगाने, कहने लगे आनकर पास।
ख़ुद तो बिगड़े ही थे पर, इनका भी कर दिया सत्यानाश।।
सुनी शिकायत जब, तो हम भी, आँखें मींच लिया करते।
सिर्फ़ दिखाने की ख़ातिर ताके, वे सो जांऐं जाके।।

Nijanand App

लग जाते अपनी धुन में हम, नज्ज़ारे करते रहते।
लोग वहीं सो जाते पड़ पड़, उठकर कहीं नहीं जाते।।
एक पुजारी भी रहता था, उस मंदिर में पहले से।
पर नाराज़ रहा करता वो, खुशी नहीं थी अपने से।।
उसका मान मर्तबा अपने, रहने से सब लोप हुआ।
उसकी पूछ ख़तम सी हो गइ, जिसका उसे अफ़सोस हुआ।।
उसे एक भी आँख हमारा, रहना वहाँ न भाता था।
कथा कीर्तन को अपने, सब से हुड़दण्ग बताता था।।
हालाँके अपने कारण, मंदिर का सभी प्रबंध हुआ।
पर उसके अंतर में लखकर, एक ईर्षा द्वन्द हुआ।।
उसने इक तरक़ीब निकाली, हमें डिगाने की आसान।
करने लगा बुराई जो भी, मंदिर में जाता इन्सान।।
लो जी हम तो मांग मांग कर, अन्न गांव से लाते हैं।
इन्हें लखो मुसटण्ड़ों को, मुंह छुट्ट खिलाऐ जाते हैं।।
हमें समझ नंहि आता इतना, नाज कहाँ से लावें रोज।
ऐकत्रित रहती है यहाँ तो, टुकड़े ख़ोरों की इक फ़ौज।।
करना और कराना कुछ नंहि, हाय हाय रहती हर वक्त।
बढ़ तो जाते हैं रोज़ाना, कमती होते नंहि कमबख़्त।।
करता रहा पुजारी भी, अपनी सी हम भी अपनी सीं।
चलती रही बराबर गाड़ी, अलग अलग हम दोंनों की।।
अपना नियम रोज़ का था, पांचों गांवों में हो आना।
इक के बाद एक पै होकर, वापिस मंदिर आ जाना।।
बाढ़ी एक भरत सिंह दूजा, मुंशी माम राज सिंह तीन।
बैठक थी इन ही घर अपनी, ये तीनों निज भक्त प्रवीण।।
थी उन दिनों हमें इक आदत, जो श्री सदगुरू ने बख़्शी।
चिलम पिया करते गाँझे की, पीली जहां किसी ने दी।।
और न कुछ लेना देना था, और न कुछ अपना आचार।
बैठक अपनी पांच गांव में, थीं केवल बस दो ही चार।।
बारू भगत शेर पुर का इक, बहुत अधिक बोला करता।
बहु बोला तो था ही लेकिन, बेढ़ंगा भी कुछ कुछ था।।
जब आता बोले ही जाता, मुंह में जो आया करती।
मेरे इम्तहान भी लेना, चाहा करता कभी कभी।।
कभी कभी तो वाद विवादों, में घंटों इलझा रहता।
अनायास इक दिन आकर के, बारू सिंह हमसे बोला।।
महाराज जी कल तुमको घर, ले चलने की इच्छा है।

Nijanand App

खाना वहीं आपका होगा, तेरामी का न्यौता है।।
उसकी माँ के मरने का था, ब्रह्म भोज तेरामी पर।
उसे जिमाने की ख़ातिर, ले जाना था हमको घर पर।।
हम बोले बारू से भइया, न्यौता तेरा सिर माथे।
कहा आपने जीम लिये हम, मरण भोज हम नंहि खाते।।
घर जाना औ न्यौता खाना, छोड़ दिया हमने भइया।
क्षमा चाहते हैं घर से तो, जो जा सकता उसे खिला।।
बोला कैसे नहीं जाओगे, घर ले जाकर छोडूंगा।
जो प्रंण कर रक्खा है तुमने, आज उसे मैं तोड़ूँगा।।
हमने कहा ज़बरदस्ती क्या, तो बोला हमसे जी हाँ।
हम बोले यदि मिलें न तुमको, तो किसको ले जाओ वहा।।
वह बोला क्यों नंहीं मिलोगे, तुम्हें ढूंडकर छोड़ूँगा।
मगर ये प्रंण रहने नंहि देना, इसे आज में तोड़ूँगा।।
चला गया इतना कहते ही, हमसे वह बारू सिंह भक्त।
लेकिन अगले दिन फिर आया, खाने का जब आया वक्त।।
द्रष्टि पड़े हमको बारू सिंह, हमने आसन छोड़ दिया।
और जड़ौदे की जानिब को, हमने अपना राह लिया।।
निकले उसके सन्मुख से ही, किन्तु न उसको दिख पाया।
आसन के जब गया निकट वह, तो आसन खाली पाया।।
पूछा कुछ से कहाँ चले गए, लोगों ने संकेत दिये।
अभी जड़ौदे की जानिब को, उठ कर के महाराज गये।।
हमने पहुंच भरत सिंह के घर, एक चिलम भी पी डाली।
देखा जब बारू आ पहुँचा, खुड़ी हाथ में फिर ठाली।।
था अगला अडडा बाढ़ी का, एक चिलम उसके जा ली।
भरत सिंह घर ढूँडा उसने, किन्तु उसे पाया ख़ाली।।
महा राज जी इधर आए क्या, बोला भरत सिंह उससे।
तेरे आने पर ही तो, महाराज उठे थे आसन से।।
क्या तुमने देखा नंहि उनको, अब बढ़ई के घर होंगे।
लप झप करते बारू सिंह जी, हमें खोजने वहा पहुँचे।।
हमने माम राज जी के घर, उठ करके प्रस्थान किया।
वह बढ़ई के घर जा पहुँचा, प्रश्न वहाँ भी वही किया।।
उत्तर मिला अभी उड्डे हैं, आगे आगे ही तेरे।।
तू तो यहीं द्वार पर था तब, तुझे नंहीं दीखे क्यों रे।।
अभी गली ही में तो होंगे, उसे न पर विश्वास हुवा।
उसने उस कोठे में घुसकर, हमको बहुत तलाश किया।।

Nijanand App

विवश भाग छूटा फिर आगे, बारू माम राज के घर।
महाराज जी आये हैं क्या, चाहा जाते ही उत्तर।।
हमने उठकर मामराज से, धिसर पड़ी की राह गही।
मामराज से जब पूछा तो, माम राज ने झट्ट कही।।
उधर देख वे क्या जा रहे हैं, नहीं दीखते क्या महाराज।
किन्तु न दीखा बारू सिंह को, झूँटी लगी उसे यह बात।।
माम राज को तो दिखते हम, बारू को नंहि दिखते थे।
मैं घर में ढूँढूगा तेरे, बारू सिंह चिढ़कर बोले।।
अरे तलाशी तो तब लेना, जब वे कहीं न दिखते हों।
जब वे जाते दीख रहे हैं, फिर तुम यह क्या बकते हो।।
बारू ने देखा भी मुड़कर, पर हम नजर न आए उसे।
हमें ढूँडने को बारू सिंह, फिर भी घर में पहुँच गये।।
चप्पा चप्पा फिरा देखता, बारू सिंह उसके घर में।
लेकिन हम होते तो मिलते, फिर बाहर आया क्षण में।।
ढूँड लिया बोले मुंशी जी, हुवा आंख को क्या तेरी।
फूट गई क्या बिल्कूल ही जो, सुनता नहीं आज मेरी।।
दूर निकल गए हांलांके पर, नज़र फेर भी आते थे।
भाग पकड़ ले धिसर पड़ी तक, हाथ तेरे आ जायेंगे।
बारू लपक लिया सुनते ही, माम राज की इतनी बात।।
धिसर पड़ी अपनी बैठक पर, पहुँचा बारू हाथों हाथ।
बैठ बाठ कर हम वाँ से भी, चले शेर पुर उसके बाद।।
बारू लेता फिर तलाशी, जने जने से की बकवाद।।
आख़िर बारू चला शेर पुर, धिसर पड़ी सबसे झक मार।
हम जा बैठे बारू के घर, एक चिलम पी खूब संवार।।
जैपुर होते हुवे जूड़ में, जा हमने विश्राम किया।
नियम पूर्वक जो करते हम, पूरा उतना काम किया।।
बारू जब पहुँचा अपने घर, तो सब बोले आप कहाँ।
घूंम रहे हो महाराज जी, गये बैठ कुछ देर यहाँ।।
हमने बड़ा कहा रूकने को, बोले बारू यदि होता।
तो शायद हम रूक भी जाते, पर अब रूकना नहीं यहां।।
कौन दिशा को गये पूछकर, उसने फिर लम्बी तानी।
जैपुर खोज खाज कर उसने, पुनः जड़ौदे की ठानी।।
देख हमे आसन पर बैठे, नवा दूर से ही मस्तक।
बोला मैं भर पाया तुमसे, आप छलावा हो बेशक।।
तुम्हें ढूँडना बड़ा कठिन है, साधारण सा काम नहीं।

Nijanand App

लाख बार सर मारो कोई, तुम्हें न पावे कोइ कहीं।।
बैठ गया बारू पग गहकर, बोला गलती क्षमा करो।
घर पवित्र करने को मेरा, उठो हमारे साथ चलो।।
हम बोले हो आए भय्या, जब तुम हमें न मिल पाये।
देकर द्वार हाजरी तेरी, सीधी नाक चले आये।।
जब तुम मिले न तो क्या करते, ये तो खता नहीं अपनी।
जाना था अपने वंश में सो, डयूटी थी दे दी इतनी।।
करता रहा आग्रह बारू, रहा मारता सर हमसे।
गये न हम लेकिन उसके संग, गया अकेला आश्रम से।।

होते रहत साथ में, बहुते ऐसे काण्ड।
काफी से ज़्यादा मिले, मानव हमें मदांध।।

ज्वाला मुखी उगलता रहता, अगनी जिस प्रकार डर से।
पावस में गाती रहती ज्यों, भमरी गाना इक स्वर से।।
उस ही तरह पुजारी अपना, कार्य विषय पर जुड़ा रहा।
नित प्रचार अपने प्रति गंदे, करते करते नहीं थका।।
रहे मस्त अपने पन में हम, फ़र्क न तिल भर भी आया।
आज और कल और निरंतर, सत्संग बढ़ता ही पाया।।
श्रद्धा चली गई बढ़ती ही, जो थे वास्तव में भक्त।
अलग हुवे हमसे अभक्त, जब मिला पुजारी जी कमबख़्त।।
सीख पार जाती पत्थर के, विष प्राणों को हर लेता।
पिछला भी बाहर आता जो, विषम पदारथ खा लेता।।
जागू तो जागता ही है पर, लागू भी जगता रहता।
उसे लगन अपनी होती तो, उसे ध्यान अपना होता।।
दोनों तकते अप अपने को, दोंनों मौके के मौहताज।
जरा झपकते ही जागू के, तागू के बन जाते काज।।
देवी एक शेर पुर वासी, जिसक नाम न लूंगा मैं।
कथा कीर्तन में आती नित, देखा करती नित्य हमें।।
भाव पड़े पावन निर्मल अति, देखा करती नित्य हमें।
हमें इष्ट की भाँति समझकर, रहती प्रेमानद बे सुद्ध।।
लगती चोट बोल की उसके, कभी ध्यान से सुन लेती।
तो आँचल में मुँह देकर वह, देवी अकसर रो देती।।
था अटपटा हाल अपना कुछ, जब बकने हम लग जाते।
साधारण तो साधारण, पंडित भी समझ नहीं पाते।।

Nijanand App

हमें होश खुद कम रहती थी, किसकी बात किसे कह दी।
पात्र कुपात्र न लखते बिल्कूल, आंख मुंदी जैसी रहती।।
देवी बड़ी मर्म भेदी थी, शब्द मार्मिक जब सुनती।
तो उसकी इक साथ अवस्था, इक विभोर जैसी होती।।
तड़फ उठा करती शब्दों पर, सहन शक्ति खो सी जाती।
हालत इक अजीब सी हो, आपे से बाहर हो जाती।।
अपने श्री पुजारी जी हर, समय कटी पर रहते थे।
कैसे निकलें ये मंदिर से, बात ढूँडते रहते थे।।
उस देवी की देख अवस्था, उन्हें एक युक्ती सूझी।
जने जने को उसे दिखा कर, तरह तरह की बात कही।।
की बदनाम बहुत लोगों में, पदवी व्यभिचारिन की दी।
यहाँ प्रेम लीला होती है, फ़कत ढोंग है यह भक्ती।।
अर्द्ध रात्री तक नारी का, रहना साफ़ बताता है।
अपने लिए कहा लोगों से, इनका विषयी नाता है।।
बात नंहीं रत्ती भर झूंटी, अडडा है व्यभि चारों का।
जितने यहा पड़े रहते हैं, कोइ न सत्य विचारों का।।
शनः शनः उसका लोगों में, रंग चढ़ना आरम्भ हुवा।
अपने लिए गांव में चर्चा, होने का प्रारम्भ हुवा।।
समय एक दिन ऐसा आया, लोग लगे हमसे बचने।
बनते गये पराये अपने, चिपके हुवे लोग हटने।।
बनी योजना लोगों की, पंचायत करके निर्णय दो।
क्या यह ढ़ोग बना रक्खा है, तोड़ो और सजा भी दो।।
दूध दूध पानी का पानी, छन कर सब रह जायेगा।
बना महात्माँ फिरता है, मिनटों में भगता पायेगा।।
अपनी बिल्ली म्याँऊ हमें ही, घास क़साई की कटड़ा।
जीम जाम जिंदा भी रह ले, ऐसा कभी न हो सकता।।
वेष महात्मा है पापात्माँ, देवालय भी किया ख़राब।
छज्जू का भी नाम डबोया, खान दान की खोदी आब।।
ग़रज़ सभी नर नारी में, बदनाम हुवे अच्छे ख़ासे।
नीच पुजारी ने ऐसे कुछ, ड़ाल दिये उल्टे फाँसे।।
जो कहा किसी ने पोशीदा, जो किया किसी ने पोशीदा।
हम तक यह पहुँची नहीं बात, थी हर दिल में ये पोशीदा।।
पर आग रूइ में कोइ लपेटे, कब तक बैठा रह सकता।
एक समय वह आता जिसमें, भस्म सभी कुछ हो सकता।।
जो भी सुन पाता वह कहता, सोच समझ कर मुंह खोलो।

Nijanand App

इतने कड़वे वचन एक, सज्जन के लिए मत बोलो।।
किन्तु गांव के दुर्बुद्धों ने, ऐसा किया प्रचार प्रबल।
जितने अपने अनुयायी थे, रहा न उनपै कोई हल।।
मुंशी मामराज सिंह ने जब, देखा गांव वहा इक लोट।
हमें जानते ही थे बिल्कूल, उनमें नहीं एक भी खोट।।
बड़े बड़े लोगों के संग वे, पर अक सरियत थी उनकी।
एक पेश ना चलने दी कुछ, हुवे विवश जब मुंशी जी।।
तो होकर लाचार बहुत ही, आकर बोले मेरे पास।
मैं जो कुछ कहने आया हूं, है तो सिर्फ़ एक बकवास।।
पर है एक प्रार्थना तुमसे, यहाँ न रहना कल को आप।
मैं बैठूँगा जगह आपकी, तुम मत देखो ऐसा पाप।।
गुण्डे सिर हैं बहुत आपके, हुवा आपका गर अपमान।
तो हम उन्हें खत्म कर देंगे, या दे देंगे अपनी जान।।
यह भी जान गये किस कारण, उठा हुवा है यह हड़बोंग।
तुम्हें डिगाने की ख़ातिर यह, रचा पुजारी जी ने ढ़ोंग।।
कान पके सुन सुनकर अपने, समझाया भी बहुतेरा।
महाराज जी सच कहता हूँ, उसे मौत ने है घेरा।।
बुरा वक्त आने वाला है, इस कमबख़्त पुजारी पर।
मेरे भी हैं बहुत आदमी, जो हैं सभी इशारे पर।।
आप यहाँ मत रहना कल को, पंचायत मैं देखूँगा।
इस गुण्डी पंचायत से तुम, चले जाओ मैं निमटूँगा।।
हमने कहा बात क्या है वह, जो सब हमसे हैं नाराज।
इच्छा क्या बेधडक बता दो, ग़ांव चाहता है क्या आज।।
क्या होगा पंचायत करके, हमें एक आकर कह दो।
हम तुमसे यह चाह रहे हैं, राम रतन ऐसा कर दो।।
वचन तुम्हें देते हैं हम, मुंशी जी वैसा ही होगा।
सोखा मार्ग छोड़ करके क्यों, पकड़ रहे हैं वे ओखा।।
मामराज जी बोले हमसे, महाराज जी मत पूछो।
वे ज़लील करना चाहते हैं, इस पंचायत में तुमको।।
देवी एक शेर पुर की जो, सुनने आती है सत्संग।
उसकी अफ़वा उड़ा रहे हैं, के हैं ग़लत आपके संग।।
हम बोले भाई मुंशी जी, अपनी भी थोड़ी सुनलो।
आप हमें पंचायत में, जाने से बिलकुल मत रोको।।
पाप हमारा बाप तुम्हारा, ऐसा किस प्रकार से हो।
अपना भोग हमीं भोगेंगे, तुम अपने को मत झोंको।।

Nijanand App

रोका हमें बहुत कइयों ने, लेकिन हमने यही कहा।
अप अपना सब भोग भोगते, हम भोगेंगे भइ अपना।।
मुंशी जी लाचार चले गए, पंचायत का दिन आया।
बैठ गई पंचायत जब, संदेशा हम पर भिजवाया।।
हम भी पहुँच गये सुनते ही, जा बैठे पंचायत में।
ख़ामोशी आ गई एक दम, हम पहुंचे जिस सायत में।।
छोटे बड़े सभी बैठे थे, बोल बंद हो गए सब के।
पंद्रह मिनिट मौन हो गए जब, तो फिर मुंशी जी बोले।।
कहा सभी को संबोधन कर, बोलो भाई क्या है काम।
जिसके लिए इकट्ठे होकर, बैठे हैं यहाँ पाँचों ग्राम।।
किसने किये एकत्रित हम सब, वह जन उठकर बतलाओ।
किस निर्णय के लिये बुलाये, सबको मतलब समझाओं।।
लगे ताकने एक दूसरे, का मुह इतनी सुन कर के।
एक बोल नंहि बोला कोई, पंचायत में उठ करके।।
मानो गूंगे हुवे सभी जन, काठ मार गया हो जैसे।
पत्थर के हैं बने हुवे ज्यों, पंचायत लगती ऐसे।।
मामराज सिंह जी फिर बोले, जबां बंद क्यों है सबकी।
उठ कर कोइ बताता क्यों नंहि, ख़ामोशी किस मतलब की।।
उठा एक पंचायत में से, बोला है इक दुख की बात।
इतना बड़ा जड़ौदा है यह, जिसमें रहती छत्तिस ज़ात।।
क्या इसमें कोई ऐसा नंहि, जो अनर्थ यह छुड़वादे।
ज़िबह कशी के लिये गाय, जाती है यहाँ से रूकवादे।।
मुखिया लोगों की ढ़ीलों से, इक कसाइ बाहर का आ।
गाय मोल ले लेकर मां से, भिजवाने को आन बसा।।
अगर न उसको रोका हमने, तो इक दिन वह आयेगा।
गाय वाय की बात नहीं फिर, बैल तलक नंहि पायेगा।।
जड़ ही अगर काट डाली तो, डाल फूल पत्ते कैसे।
हमने कह दी जो कहनी थी, करो उचित होवे जैसे।।
किया ग़ौर सुन कर सब ही ने, सबने इसमें भाग लिया।
सोच साच कर पंचायत ने, सम्मति से आदेश दिया।।
आज रात में सोतों के सब, कटड़े बछड़े खुलवादो।
चाहे जो हो वापिस मत दो, दूर कहीं पर भिजवादो।।
बोले अगर कोइ उनमें से, तो दो ऐसी मीठी मार।
अगले रोज़ भागता पावे, बरतन भाँडे ले लाचार।।
बोले फिर संरपंच किसी को, अगर और कुछ कहना हो।

Nijanand App

तो बेशक कह सकता है वह, पीछे कोई नाराज़ न हो।।
पांचों गांव उपस्थित हैं अब, जहां पांच वहाँ परमेश्वर।
पीछे लोग शिकायत करते, देखे हैं हमने अकसर।।
इसके पीछे पंचायत पर, फ़िर ख़ामोशी सी आई।
थोड़ी देर मौन रह करके, मुंशी जी बोले भाई।।
उठो काम देखो फिर अपना, पंचायत हो गई खड़ी।
हिला न आगे होठ किसी का, ऐसी मुंह पर कुलफ़ जड़ी।।
सभी गऐ उठ उठ कर वाँ से, हमने भी प्रस्थान किया।
यहाँ न अपनी दाल गलेगी, ऐसा मन में ठान लिया।।
इज्ज़त आज चली जाती यदि, कृपा न करते गुरू महाराज।
कब तक उन्हें कष्ट देता रहूँ, यहाँ है बस गुण्ड़ों का राज।।
उठा न रक्खी कसर किसी ने, देने में बदनामी तौक़।
लेकिन गुरू द्रष्टि से इक दम, बंद हुई हर इक की भोंक।।
ऐसी जगह नहीं रहना अब, आसन उठा लिया तत्काल।
जितने अपने अनुयायी थे, मत पूछो क्या हुवा मलाल।।

कर प्रणाम उस भूमि को, हरिद्वार की ओर।
हमने अपनी राह ली, जूड़ दिया बस छोड़।।

काफ़ी रोज उधर विचरे हम, एक रोज वापिस आये।
बुद्धी दास सहारनपुर था, हम अपने मन में लाये।।
मिलते चलो भाइ से अपने, अतः गये हम उसके पास।
एक कोठरी में रहता था, खाना और पकाना हाथ।।
आव भगत के बाद हमें कुछ, दूध दिया उसने लाकर।
पी लेना यह दूध धरा है, चला गया फिर समझाकर।।
मिट्टी के कुल्लहड़ में था वह, धरा आन कर चौकी पर।
बैठे थे हम मस्त ध्यान में, गिरा गई बिल्ली आकर।।
फैल गया सब दूध फ़र्श पर, द्रश्य देखकर यह हमने।
ओंधे होकर लगे चाटने, चाट लिया सारा हमने।।
अभी न पूरा चाट पाए थे, बुद्धि दास वापिस आया।
दूध पड़ा देखा भूमी पर, ओधा पड़ा हमें पाया।।
यह क्या यह क्या बोला इकदम, हम उठकर चुप बैठ गये।
जब तक हम नंहि बोले अपनी, बुद्धि दास जी कहे गये।।
उसे शान्त करने को हमने, कहा भाइ थी त्रुटि मेरी।
दोंनों मिल जुल कर पी लेंगे, यों पीने में की देरी।।

Nijanand App

हमसे आंख बचा कर भय्या, बिल्ली ने आ धुधकाया।
ख़फ़ा न होने लगो कहीं तुम, भय ने हमसे चटवाया।।
दूजे भाइ दूध ही तो था, चाट लिया क्या ग़लती की।
अमृत है यह मृत्यु लोक का, घूँट भाग ही से मिलती।।
अगर गिरा था धो देते हम, पीने को ला देते और।
लेकिन यह क्या किया आपने, मानव के से कब थे तौर।।
इतनी भी क्या समझ नहीं, यह ढंग हैं सब हैवानों के।
ज़रा सोच कर देखो तुम तो, चोले में इन्सानों के।।
अपने होंठ खुले नंहि आगे, सिर्फ़ रहे सुनते हम तो।
बहुत देर हमको समझाया, दिया सबक़ काफ़ी हमको।।
अगले दिन चल दिये वहां से, ओर जन्म भूमि की हम।
जैसे कोई धकेले फिरता, और धिके फिरते हों हम।।
हम थे ताबेदार हुक्म के, जो कुछ अंदर से होता।
सौ फ़ी सदी बमूजिब उसके, नत्मस्तक हो चल देता।।
पा प्यादा हम गये गांव को, जब पहुँचे, था संध्याकाल।
गये शेर पुर आसन अपना, एक बाग में दीना डाल।।
बना हुवा था वहाँ कूप इक, और एक पिण्डी शिव की।
किन्तु ज्ञात होता लखते ही, पूजा कभी नहीं होती।।
चारों ओर विकट गंदा पन, बीटों के अम्बार लगे।
पंख और पिंजर सुखे हुऐ, पशु पक्षी के थे बिखरे।।
बाग कहें या वन झाड़ों का, साँपों की बंबियाँ बे अंत।
भूत वहाँ रह सकते हैं या, रह सकते हैं केवल संत।।
लेकर नाम श्री सदगुरू का, आसन डाल लिया अपना।
करी प्रार्थना श्री सदगुरू से, ध्यान इधर अपना रखना।।
जिसदम हम बैठे आकर के, आस्मान का रंग बदला।
आँधी और मेघ उठ आये, बड़े जोर का जल बरसा।।
ग्रामीणों ने देख लिया था, जब हम पड़े वहाँ आकर।
चुहड़ और मूले गए हम पै, विवश किया हमको जाकर।।
महाराज जी वहाँ ठहरना, वर्षा में क्यों भीग रहे।
गांव आप ही का है वह भी, यहां रहे या वहाँ रहे।।
तुम्हें भीगते हुवा देखकर, हमसे सहा नहीं जाता।
आप कींच में पड़े रहें यो, हमसे रहा नहीं जाता।।
जहाँ पड़ा बस पड़ गया अब तो, यह आसन अब नंहि उठता।
चाहे कुछ भी आवे आफ़त, अब डिगाए से नंहि डिगता।।
बहुत आग्रह की दोंनों ने, किन्तु गांव में नहीं गये।

Nijanand App

जब देखा दोनों भइयों ने, के अब बसकी नहीं रहे।।
लकड़ी फूँस ऐकत्रित करके, इक झूँपा तय्यार किया।
पानी धूंप न कर पावे कुछ, हमको उसमें बिठा दिया।।
जगह छीलकर साफ़ बना दी, इक दो दिन ही के पश्चात।
बना रूप इक कुटिया जैसा, आन लगे फिर बहुते हाथ।।
पाँच सात दस दिन में ही वहां, एक नया ही रूप बना।
मत पूछो बस शेर पूर की, आता हम तक जना जना।।
अपने पास जूड़ से ज़्यादा, होने लगा जमाव यहां।
प्रेमी वही पहुँच जाते हैं, उनको मिलता भाव जहां।।
यह सौदा वह नहीं क़ीमतन, जिसको बेचा जाता हैं।
यह तो सिर्फ़ भाव से मिलता, कीमत भाव चुकाता हैं।।
अपने पास मुरलिया थी इक, जब भी कभी मौज आती।
तो उसकी ताने मन मोहक, अर्ध निशा फूँकी जाती।।
पांचों गांव सुना करते थे, अपनी इस मुरली की टेर।
प्रेम हमारे से था जिनको, वहीं उन्हें ले आती घेर।।
दिन औ रात यहाँ भी अपना, उसी तरह सत्संग चला।
रहा यहाँ भी पंच गांव यह, अपने संग में घुला मिला।।
राजपूत सज्जन भी अपने, साथ बहुत श्रद्धा लाये।
संख्या बढ़ती गई सभों की, अपने पास सभी आये।।

यहाँ जूड़ से दो गुना, आने लगा सवाद।
चर्चा रहती नित्य ही, बड़े बड़े सँवाद।।

ग्राम जड़ौदे के पटवारी, भी अपने ढिंग आते थे।
बातें बहुत किया करते थे, चमत्कार भी चाहते थे।।
अकसर बड़े बड़े संवादों, और विवादों में हमको।
कई कई दिन लग जाते थे, समझाने में भक्तों को।।
पटवारी भी सुनता रहता, और देखता रहता सब।
किन्तु चाह थी चमत्कार की, बातूनी से क्या मतलब।।
लेते भक्त रसों के प्याले, भर भर देते रहते हम।
भर कर पिया किसी ने आधा, किसी किसी ने उससे कम।।
कुछ ऐसे जो आते भी, पर रस तक पहुँच नहीं पाया।
किसी किसी ने पाकर खोया, किसी किसी ने संगवाया।।
साक्षात् सदगुरू अंदर से, बरसाते अपनी वांणी।
लगा किसी को अमृत जैसा, और किसी को बस पानी।।

Nijanand App

वर्षा में ज्यों मेघ बरसते, वृक्ष आम औ इन्द्रायन।
दोनों ही उस पावन ऋतु का, जल कंण पीते हैं पावन।।
किन्तु एक में मीठा पन, बढ़ता है इक में कड़वाहट।
जिस जिसमें जैसा अंकुर है, है वैसी वैसी चाहत।।
जैसी माला वैसे दाने, जैसा अंकुर वैसा बुद्ध।
इष्ट मिला करता वैसा ही, वैसी ही होती है सुद्ध।।
चश्मों से देखा जाता है, जो प्राणी जैसे पाते।
कामनाए अंकुर से चलतीं, वही रूप आगे जाते।।
बहुते चमत्कार से झुकते, बहुत प्रभा पर झुक जाते।
बहुते नव जाते बोलों से, जब उनके उर में चुभते।।
अपने साथ हुवा जो कुछ, व्यौहार जड़ौदे वालों से।
हमने बुरा न चाहा उनका, अपने कभी ख़ायालों से।।
लेकिन किये भुगतने पड़ते, किया आज का पाओ कल।
कर्म अकर्मों के पाटों में, दुनिया जाती दली सकल।।
हमें छेड़ता ही रहता वह, व्यक्ति जड़ौदे का अकसर।
चमत्कार दिखला दो कोई, कहता रहता उकसाकर।।
कभी कभी यह भी कह देता, भले बने तुम बाबा जी।
केवल बातें ही बातें है, चमत्कार इक पास नहीं।।
वैसे पढ़ा लिखा भी था वो, कहने को था पटवारी।
लेकिन क्या करता बेचारा, चमत्कार ने मति मारी।।
पाण्ड़ा झील निकट है अपने, जल पक्षी रहते बे अन्त।
सोचा करते देख शिकारी, है शिकार का इसमें तंत।।
लेकिन देता न था खेलने, वहां किसी को कोइ शिकार।
इसी लिए चिड़ियों की इसमें, रहती थी बेढ़ब भर मार।।
एक रोज़ कुछ फौज़ी अफसर, आ शिकार खेले उसमें।
लोगों ने आवाज़ सुनी, बंदूक लगी जिस दम छुटने।।
इधर उधर से ऐकत्रित, हो गये गांव के आकर के।
अंग्रेज़ों को देख, पास, आये मेरे घबरा कर के।।
बोले सब आकर के हमसे, महा राज अब बतलाओ।
क्या युक्ती हम करें रोकने, की इनको अब समझाओ।।
नहीं पूछने वाला कोई, ढ़ले एक ही साँचे में।
भार सभी के सर पर है, महाराज सुरक्षा का इनकी।
वे तो हैं अँग्रेज़ मार, डालेंगे पक्षी अन गिनती।।
फ़ौरन कोई युक्ति बताओ, काम जरूरी है करना।
मर भी अगर गये तो क्या है, दो दो बार नहीं मरना।।

Nijanand App

जितने आये पास हमारे, की हमने सब ही से बात।
बोर्ड लगा दो एक मना का, लिख कर जोहड़ पर इक साथ।।
उसके बाद रोक को जाकर, पर साहस से लेना काम।
साथ आपके डरना मत, हर समय रहेंगे पांचों ग्राम।।
एक काठ की तख़्ती लेकर, तभी बांस पर जड़ डाली।
और इबारत उन्हें रोकने, की मन चाही लिख डाली।।
लेकिन थे अलफ़ाज़ तेज़, जैसे के हुक्म दिया जाता।
सार्वजनिक स्थनों पर, आदेश नम्र लिख्खा जाता।।
गाड़ दिया इक जगह हुक्म वह, और उन्हें जाकर रोका।
जनता भी बेढंग निरक्षर, जो मुंह में आया भोंका।।
कुछ वे समझ न पाये इनकी, साथ सभी था बेढंगा।
इस कारण उठ खड़ा हुवा वहाँ, आपस में इक दम दंगा।।
गूंगा गावे डुण्ड बजावे, बहरा सुन कर ताल लगाए।
तो बोलो ऐसी मजलिस में, स्वाद भला क्यों कर आ जाए।।
इनके रोके रूके न वे यों, अव्वल तो हम हैं अफ़सर।
दूजे थे हथियार हाथ में, तीजे मुकुट हमारे सर।।
राज हमारा माल हमारा, अनुचित उचित सभी अपना।
यह है प्रजा जन्म की सेवक, इनका कौन सुने बकना।।
अतः उन्होंने सुनी न इनकी, काम रहा जारी उनका।
जब वे रोके रूके न इनके, क्रोध इधर चमका सबका।।
काला अक्षर भेंस बराबर, जिनको क्या जानें क़ानून।
जितने थे ऐकत्रित उनमें, जागा इकदम धर्म जनून।।
फिर क्या था बढ़ गये अगाड़ी, बोल दिया हल्ला इकसाथ।
जा छीनीं बंदूक़े उनसे, और जमाये घूंसे लात।।
गुप्ती मार लगाई सब में, लगी मरम्मत जब होने।
तो दाऐं बाँऐ होकर के, गोरे लोग लगे भगने।।
बैठ बैठ मोटर में अपनी, बचा बचाकर अपनी जान।
भाग गये जितने थे सारे, छोड़ छाड़ अपना सामन।।
जो घटना घट गई एक दम, इतनी का अनुमान न था।
इस लीला के बाद हमारे, पास गया सारा जथ्था।।
महाराज जी अब क्या होगा, मुँह सबके उतरे उतरे।
कर तो दिया जो आया आगे, पर जँचता अब बुरे फंसे।।
इतनी आशा न थी किसी को, जितना क़िस्सा बढ़ा वहाँ।
अब निज जान बचेगी कैसे, गाँव छोड़कर जाँए कहाँ।।
थोड़ी बहुत देर में अब यहाँ, द्रश्य और बन जायेगा।

Nijanand App

पुलिस फ़ौज या हुक्कामों का, डंडा बजता पायेगा।।

जिसको देखो और ही ढंग के तौर तरीक़।
भय से थे भयभीत सब साहस ना नज़दीक।।

हम बोले करके डरते क्यों, वह भी देखा जायेगा।
तुमने की अपनी सी वह भी, अपनी करता आयेगा।।
सब अपनी अपनी करते हैं, करके फिर डरना कैसा।
वक्त सभी दिखने को आते, जो आता देखा जाता।।
सुनकर पुलीस फ़ौज की बातें, लोग बहुत भयभीत हुवे।
कोइ किधर को कोइ किधर को, इधर उधर सब भाग गये।।
बिन अफ़सर की फ़ौज बिना, मालिक जैसे घर का धंधा।
भगदड़ सी पाँचों गावों में, हर इक था भय से अंधा।।
हो तो गया क्षणेक में सबकुछ, भावुकता की रौ थी तब।
लेकिन जँचा बाद में सब कुछ, कौन सम्भाले इसको अब।।
बात ठीक है चर्म चक्षुओं, को इतना ही दिखता है।
कौन कराता कौन कर रहा, कौन उसे यहाँ भरता है।।
चर्चा इधर उधर झगड़े की, फैल गई बिजली की नाँप।
ऐसा हुवा सुना जिसने भी, सुनते ही वह जाता काँप।।
आफ़त एक बुलाली यह तो, बंध जायेंगे पाँचों ग्राम।
अंग्रेज़ों से टक्कर है यह, नहीं है कुछ साधारण काम।।
दिन भी गया रात भी बीती, आया जब सवेर का वक्त।
धिरी मिली सारी बस्ती, था बंदूकों का पहरा सख़्त।।
चारों ओर गाँव के फ़ौजी, और पुलिस दस्ते पाये।
साक्षात् विक्राल काल के, दल बादल सर पर छाये।।
किये मिले बंदूकें सीधी, जिधर किसी का मुंह चमका।
ऐसा लगता था जैसे के, साक्षात् यम आ धमका।।
जो भी व्यक्ति गाँव में पाया, बालक युवक और बूढ़ा।
बिना कहे कुछ बात एकदम, हथकड़ियों में धर जूड़ा।।
थर्रा गया इलाक़ा सारा, आस पास जितने थे ग्राम।
भाग गये घर बार छोड़कर, कहीं न था मरदों का नाम।।
गाँव रहा गर्दिश में तबतक, जब तक हाथ न आये सब।
एक एक पकड़ा नंहि जब तक, खोज रही सब की तब तक।।
छोटे बड़े सभी इक पलड़े, तुले एक ही काँटे में।
नहीं पूछने वाला कोई, ढले एक ही साँचे में।।

Nijanand App

जिसने जेल नहीं देखी थी, आने लगे जेल के ख़्वाब।
जिसने नहीं भाग कर देखा, भाग गये पड़ते ही दाब।।
वली न वारिस दीखा कोई, मानो हो गए जैसे सभी यतीम।
इज़्ज़तदार हुवे बे इज्ज़त, सर पर ऐसे चढ़े ग़नीम।।
त्राहि त्राहि कर उठे सभी जन, चले जेल को जिसदम लोग।
खाने लगी पछाड़ नारियाँ, बना अजब ही इक संयोग।।
चलीं जेल जब भर भर मोटर, सब के अंदर थी यह चाह।
मिले नहीं दर्शन सदगुरू के, भरते जाते थे सब आह।।
पहुँचे जिसदम द्वार जेल के, प्रगट हुआ सदगुरू का रूप।
बोले, है संघर्ष धर्म का, बन जाओ संघर्ष सरूप।।
डरा न करते धर्म कार्य में, हम हैं सदा आपके साथ।
धीरज रक्खो ठीक होए सब, क्यों के है सदगुरू का काज।।
ख़ुशी ख़ुशी फिर घुसे जेल में, की पूरी सदगुरू ने चाह।
जितने भी थे जेल यात्री, दर्शन पा हुए बे परवाह।।
सबने पिया जेल का पानी, साथ साथ डंडे खाये।
बड़े दिनों के बाद ज़मानत, पर छुट छुट के घर आये।।
सरकारी नज़रों में बाग़ी, घोषित हुवा जड़ौदा ग्राम।
तोपों से उड़वादो इकदम, अगर हिलावे कोई कान।।
सभी बने भीगी बिल्ली सी, म्याऊँ बने जितने ख़ूँख़ार।
कान सभी के ढलके नींचे, दिखती थी सर मौत सवार।।
बड़ा मुक़दमा था ता कारण, ऊपर से यह हुक्म हुवा।
वहीं जड़ौद बने कचहरी, वहीं मुक़दमाँ जाय सुना।।
मजिस्ट्रेट स्पेशल इक, अंग्रेज़ वहाँ तैनात किया।
ग्राम जड़ौदा उस हाकिम के, हाथों में था सोंप दिया।।
नहर महकमे की कोठी पर, बैठी आन अदालत आ।
जने जने का बारी बारी, उस हाकिम ने केस सुना।।
लोगों ने देखा जब अपनी, जान न बचने पायेगी।
नज़रें बता रहीं हाकिम की, सख़्ती बरती जायेगी।।
थोप दिया झगड़ा मेरे सिर, सबने मेरा नाम लिया।
झण्डू दत्त महात्माँ जी ने, ही हमको यह हुक्म दिया।।
कहते हैं तालाब पाण्डव, है अपना तीरथ स्थान।
जो शिकार खेलेगा इसमें, दंण्डित होगा वह इन्सान।।
चले उन्हीं के आदेशों पर, हम हैं उनके अनुयायी।
केवल हुक्म बजाया हमने, रोक उन्हीं ने लगवाई।।
सुनकर ऐसे कथन सभी के, हाकिम ने हमें बुलवाया।

Nijanand App

कुछ सिपाहियों के संग अफ़सर, हमको लेने को आया।।
महाराज इक अफ़सर बोला, तुम्हें साहब ने याद किया।
साथ लिवा लाओ साहब ने, हमको ऐसा हुक्म दिया।।
पाँच फूल लेकर सदगुरू से, साथ साथ उनके पहुँचे।
भरी मिली कोठी आदम से, हाकिम उनमें बैठे थे।।
समझ हमें सरदार, नज़र इक, हाकिम ने हम पै डाली।
कर हमने परनाम मेज़ पर, रखदी फूलों की डाली।।
क्रुद्ध हुआ बैठा था अफ़सर, भेंट किये जब हमने फूल।
फेंक फाँक डण्डे से नीचें, बोला डौन्ट मेक मी फ़ूल।।
सुनो पादरी साब आपके, फूलों से हम ख़ुश नंहि हैं।
देकर हुक्म इन्हें तुमने, अपने अफ़सर पिटवाये हैं।।
ये सब के सब बता रहे हैं, इस झगड़े के तुम हो मूल।
नौब़त यह नंहि आती हरगिज़, तुम ही दिलवाया तूल।।
तुमने ले क़ानून हाथ में, वहाँ बोर्ड लगवाया है।
औ जो जी आया लिखवाकर, तुमने ही गड़वाया है।।
तुम्हें क़ैद कर देंगे हम, समझे, कहलो जो कहना है।
अपने लिये सफ़ाई में, रक्खो जो तुमको रखना है।।
जो कुछ कहा हमें हाकिम ने, बड़े साफ़ थे उसके अर्थ।
लोगों ने अपने वचनों को, थोपा मेरे मूँड़ अनर्थ।।
हमने भी स्वीकार लिया, उपहार समझकर लोगों का।
होता है स्वादिष्ट ज़ायका, अक्सर ऐसे भोगों का।।
हम बोले साहब से साहब, तुम जिसके हो ताबेदार।
होगी वह सरकार आपकी, अपनी नंहि है वह सरकार।।
हम नौकर हैं बड़े साहब के, हम भी रखते कुछ अख़्त्यार।
तुम अपनों की रक्षा करते, हम अपनों के पहरेदार।।
अपना पार्ट अदा करते तुम, अपना हमने कर डाला।
ना तुमने देखा भाला कुछ, न हमने देखा भाला।।
हमने तो डाटे तेरे, तेरों ने मेरे मार दिये।
जुल्म किया उन मासूमों पै, मौत के घाट उतार दिये।।
भय क्या दिखा रहे हो हमको, जेल तुम्हें भिजवादेंगे।
हम ने जैसा यहाँ किया, सो भजन वहाँ भी करलेंगे।।
हमें रोक कर साहब बोला, हमें न ज़्यादा समझाओ।
ज़ामिन अगर आपका कोई, हो तो उसे लिवा लाओ।।
हम ही हैं अपने ज़ामिन बस, आप ज़मानत हैं अपनी।
पुनः छेड़ कर उसने हमको, शुरू करादी बक अपनी।।

Nijanand App

फ़ौरन सूरज भान तग़ा इक, खास जड़ौदे का बासी।
बोला मैं ज़ामिन हूँ इनका, और ज़मानत लिखवादी।।

इस प्रकार अपनी हुई उस अफ़सर से भेंट।
कर आये अंग्रेज़ को भली तरह हम चेत।।

फिर क्या था चल पड़ा मुक़दमाँ, रही बहुत दिन खेंचातान।
अपनी फ़िकर सभी को लग रही, बस मेरी बच जावै जान।।
किस प्रकार से है ये तीरथ, था सबूत हमको देना।
इसका भार हमीं पर था बस, अपनी अपनी जना जना।।
आई अमावश जय भादों की, पाण्डेवाले के तट पर।
मेले की, की एक योजना, गादी गई वहाँ उसपर।।
बाई थी इक शेर पूर की, गेंदी था देवी का नाम।
ध्वजा हाथ में ली देवी ने, घबराते थे पुरूष तमाम।।
ध्वजा सनातन की देकरके, करदी गादी के आगे।
गया कीर्तन होता वहाँ तक, नर नारी सब साथ लगे।।
आलम जुड़ा बहुत न्हाने को, आई दुकानें भी काफ़ी।
खेल तमाशे दंगल आदिक, इक अच्छी सी रौनक थी।।
आए देखने अफ़सर गण भी, बड़ी जाँच कीं उन सबने।
सालाना भरता है यह तो, बतलाया यह सब ही ने।।
कूआ भी इक खुदा वहाँ पर, पानी पीने की ख़ातिर।
जब प्रमांण सब मिले वहाँ पर, पड़ा मानना ही आख़िर।।
छः छः मास सज़ा बारह को, साल भर की दो को।
बारह को पंचस पंचास, सौ सौ जुरमाना था दो को।।
मुख़्त्यारा मर गया जेल में, छोड़ दिये हम सारे और।
काफ़ी दिन संघर्ष रहा यह, ख़त्म हुआ झगड़े का दौर।।
हुक्म हमेशा के लिए हो गया, तीर्थ बना पाँडा तालाब।
छपी प्रांन्त के लैसन्सों में, ग्राम जड़ौदे की यह ढाब।।
झगड़े की शौहरत हुई इतनी, कमिश्नरी सब मान गई।
छोटी सी बस्ती को जनता, दूर दूर की जान गई।।
इसके बाद किसी ने हमसे, चमत्कार की की नंहि माँग।
पटवारी जी से हम बोले, देखा चमत्कार का साँग।।
था तो वह मेहमान आपका, घूंम गया लेकिन घर घर।
परिचित था वह सभी गाँव से, मेहर करी उसने सब पर।।
महाराज जी क्षमाँ करो अब, पग पकड़े पटवारी ने।

Nijanand App

मूल्य न आँका तनिक आपका, भगवन बुद्धि हमारी ने।।
लगने लगे निकट फिर अपने, भक्त अभक्त गांव के सब।
बढ़ने लगी सुसंगत अपनी, झूंपे में आ आकर अब।।
गंगा राम किशन पुर के इक, व्यक्ति लगे अपने नजदीक।
सोंप दिया ख़ुद को आते ही, मांगी आकर सेवा भीक।।
भाव देख उनके अति निरमल, सेवा भार उन्हें सोंपा।
अब मंदिर बन गया राज जी, का वह तिनकों का झूंपा।।
मुरली मुकुट न बागा वांणी, केवल फ़ोटो सदगुरू का।
बहुत दिनों तक श्री सदगुरू का, झूंपा लीला भवन रहा।।
करते रहे शयन तिनकों में, सिरी सिरी जी आनंद कंद।
पीते रहे प्रेम रस प्याले, भक्त उन्हों के हो निरद्वन्द।।
परम धाम को तज रज पावन, करी तिमिर की जैसे आ।
रंग मौहौल बन गया फूंस का, झूंपा श्री राज जी का।।
लीला शिरी शिरी जी की नित, रही बदलती नित बाने।
यह वह लीला थी जो देखे, केवल वही उसे जाने।।
गूंगे की हूँ भांति न वरनन, उस छवि का हमसे होता।
कल्पनाओं से अपनी अपनी, स्वयं समझ लेना श्रोता।।
वही आरती होती थी जो, प्रचलित है जगदीश हरे।
संध्या समय ग्राम वासी सब, आते छोटे और बड़े।।
गंगा राम समझने लग गया, लगने लगा इशारों पर।
नज़रें लगी पहुँचने उसकी, कभी कभी नज्ज़ारों पर।।
आने लगा बिशम्भर सिंह इक, लड़का वहीं शेर पुर का।
श्री राज जी की सेवा का, उसको भी कुछ चाव लगा।।
मित्र बिशम्भर का बारू, थे दोंनों बचपन के साथी।
मित्र मित्र की स्वच्छ मित्रता, खेंच मित्र को ले आती।।
बंधने लगा प्रेम में बारू, खिंचने लगा पतंग की नाप।
शनः शनः आ लगा डोर पर, आने लगा नियम से आप।।
गंगा राम बड़े कामों में, और बिशम्भर छोटों में।
बारू को भी दिया काम कुछ, लेकिन मोटे झोटों में।।
एक रोज़ सब साथी मिलकर, लगे सोचने आपस में।
कोंठा एक बना करके, पधरा दो यह सेवा उसमें।।
अतः साथियों ने मिल करके, कुऐ से दक्षिण की ओर।
कोठा एक बना ही ड़ाला, पधरा दी सेवा हर तौर।।
रोज़ कीर्तन होता उसमें, रक्खे जाते निज प्रस्ताव।
सभी तरक्क़ीं चाहा करते, आश्रम को ऊँचा ले जाओ।।

Nijanand App

दैव योग से एक रोज इक, ऐसी वहाँ जमात आई।
जिसमें थे हर एक पंथ के, संत महात्माँ अनुयाई।।
थे सत्कार और आदर के, योग्य महात्माँ वे सारे।
आभा और प्रभा जिसने भी, देखी लगे उसे प्यारे।।
सब बोले हमसे मिलकर क्या, चलता नहीं यहाँ भण्डार।
जब हमने इंकार किया तो, वे बोले कुछ मन सा मार।।
महाराज यदि आप आज्ञा, दें तो हम चालू कर दें।
लंगर रहे तुम्हारा जारी, केवल आप नज़र रक्खें।।
हमने कहा आप समरथ हैं, इच्छा अगर यही है तो।
भला काम है आज्ञा किसकी, फ़ौरन आप शुरू कर दो।।
है विश्वास श्री सदगुरू सब, पूरा उसे निंभाऐंगे।
काम जगत के चला रहे क्या, अपना नहीं चलाऐंगे।।
मिलकर सभी महा पुरूषों ने, करवाया चालू भण्डार।
चलता रहे हमेशा यों ही, ताकत दें इसको करतार।।
बड़े प्रफुल्लित हो हो करके, सबने जींमा वह परशाद।
नियम पूर्वक उसी तरह से, क्षेत्र चला फिर उसके बाद।।
चले गये वे महा पुरूष तो, छोड़ गये अपनी माया।
रहे जीमते उस प्रशाद को, भण्डारे में जो आया।।
कभी वहाँ चलता था कूंआ, बैल चलाते थे चरसा।
पैड़ उसी की खुदी पड़ी थी, शुरू किया भरना गड्ढा।।
बाद कीर्तन के सब साथी, मिट्टी खोदा करते थे।
बनी तलय्या खुदा जिधर से, पैड़ उधर भर देते थे।।
चलता रहा बहुत दिन यों ही, कोठा छाप दिया इक और।
ज्यों ज्यों बढ़ता गया साथ निज, बनती गई वहाँ पर ठौर।।
हर प्रकार की दी सुविधाऐं, लोगों ने हमको हर वक्त।
सेवा भाव बहुत कम में था, ज़्यादा तर थे लोग अभक्त।।
कभी कभी कलयुग भक्तों में, भी घुस जाता है आकर।
बुद्धि भ्रष्ट कर ही देता है, अपने चक्कर में लाकर।।
गंगा राम समझ का भी था, और भाव भी थे सच्चे।
दिन चर्य्या औ नियम वियम सब, आंखों देखे थे अच्छे।।
कार्य्य महा प्रभु की सेवा का, था उन दिनों उसी के हाथ।
और किया भी करते सेवा, एक चित होकर के दिन रात।।
किन्तु फिसलते देर न लगती, कर्म काण्ड उस दिन बिगड़ा।
थाल भोग का मंदिर में से, इक दम बाहर आन पड़ा।।
बरतन जब श्री राज जी के, बजे जमीं से टकरा कर।

Nijanand App

भोग मिला इक साथ धूल में, तो हमने पूछा जाकर।।
गंगा राम ये क्या हरकत है, तुम शायद यह जान रहे।
के हम भोग वोग जो कुछ है, चित्रों को आरोग रहे।।
यहां कहां है श्री राज जी, समझी होगी सब बकवास।
झूंठ खिलाने लगे प्रभू को, गंगा राम तुम्हें शाबाश।।
श्री राज बन बैठे क्या तुम, अगर वास्तव है यह बात।
तो मस्तक अब तुम्हें नवाया, करेगा सारा सुंदर साथ।
गंगा राम भाग कर आया, इकदम मेरे पैरों में।
क्षमाँ करो अब क्षंमा करो अब, मिन्नत करने लगा हमें।।
कभी न हो आइन्दा गलती, क्षमाँ आज कर दो महाराज।
आप सत्य कहते हैं मेरी, फूट गई थी हिय की आज।।
सेवा काज बिशम्भर सिंह को, सौंप दिया उसके पश्चात्।
बस केवल देखा भाली ही, बाकी रह गइ उसके हाथ।।
चलता रहा नियम कुछ दिन यो, बारू ने सहयोग दिया।
छोटा मोटा काम योग्य जो, उसके लगा सुपुर्द किया।।
कभी कभी बारू घर जाता, न था वहीं रह जाता था।
शनः शनः अभ्यास न जाने, का घर बढ़ता जाता था।।
देखा घर वालों ने लड़का, गया हाथ के नींचे से।
तो उसके घर वाले इक दिन, लेने आश्रम आ पहुँचे।।
लगे ताड़ने उसको आकर, कहने लगे जो मुँह आया।
और लगे हमसे कहने, क्यों जी इसको क्यों बहकाया।।
किसने देखा हमें बुलाते, कौन गया इसको लेने।
झूँट मूँट भाई हमको क्यों, लगे उलहना तुम देने।।
कौन रोकता है ले जाओ, हमें नहीं इसकी दरकार।
आते को सत्कार हमें तो, देना ही पड़ता लाचार।।
धक्के मुक्के दे दा करके, हांक लिया आगे आगे।
लेकिन मोती जुदा न होते, जब पिर जाते हैं धागे।।
घास काटने को दांती दे, भेज दिया वह हाथों हाथ।
लेकिन हालत बिगड़ी उसकी, काट रहा था जिस दम घास।।
बेसुध होकर गिरा बाढ़ में, मुट्ठी में था दाँती बैंट।
दांत बंद थे आंख मिची थीं, गात रहा था सारा ऐंठ।।
काधे पर लाये जंगल से, चार पाइ पर ला टेका।
किये बहुत उपचार न उसने, आँख खोल करके देखा।।
हाल रहा जब तीन रोज़ यह, तो घर वाले घबराये।
घर वाले धक्के दे सबने, आश्रम को तब भिजवाये।।

Nijanand App

करी प्रार्थना जाकर हमसे, महाराज किरपा कर दो।
हमसे ख़ता हुई मांफी दो, बारू को अच्छा कर दो।।
एक अगर बत्ती दे करके, हमने भेजा गंगा राम।
चिमटे से मुंह खोल के उसका, करवाया चरणा मत पान।।
जब खुल गई आंख बारू की, गंगा राम चला आया।
पर चाचा बारू का बारू, को लेकर आश्रम आया।।
बोला महा राज लो वापिस, अपने चेले को रक्खो।
ख़ता हुई थी जो हम से बस, उसके लिए क्षमा कर दो।।
हमने कहा मौज है भाई, आते को आसन हाज़िर।
जो जाना चाहे वह जाओ, नहीं देखते उसको फिर।।
बारू फिर जम गया काम पर, अपने होकर के मुस्तैद।
घर भी कभी कभी आश्रम पर, पर हो गया प्रेम में क़ैद।।

अलग न हो सकते कभी, नहीं द्रष्टि से दूर।
जो इक बेरी हृदय से, हाज़िर हुवे हुजूर।।

एक रोज़ हलवा पोशीदा, जगह हमें रक्खा पाया।
श्री राज जी के प्रशाद को, हमने था वह बनवाया।।
इच्छा हुई ज़रा देखों तो, चोर कौन है हलवे का।
किसको साहस हुवा राज जी, की यह चोरी करने का।।
आ बैठे हम निज आसन पर, देखें कौन उठाता है।
श्री सद गुरू का माल चुरा कर, किस मुंह से वह खाता है।।
चले गये जब इधर उधर सब, तो इक व्यक्ति उधर पहुँचा।
मौक़ा पा ऐकान्त बड़ा, हल्वे का लुक़माँ जा ठोका।।
लेकिन लगा थूकने फ़ौरन, थू थू शब्द हमें आई।
तो हम पहुँचे उसे देखने, जाते ही बोले भाई।।
गंगा राम प्रशाद है यह तो, क्या यों थूका जाता है।
धरती पर गिरता यदि किनका, भक्त उठा खा जाता है।।
तू कमबख़्त थूकता इसको, जिसको ब्रह्मा तक तरसे।
गंगा राम श्वेत सा पड़ गया, मुझे देख करके ड़र से।।
मैं बोला यह खाना होगा, जिसको थूका है तेंने।
खा खाने का रक्खा था, सभी खिलाना है मैंने।।
बुला उधर से कुत्ते हल्वा, टेक दिया मैंने आगे।
चक्खा नहीं किसी ने सारे, सूंग सूंग वहाँ से भागे।।
फिर बोला चल खिला गाय को, वह भी सूंग हटी पीछे।

Nijanand App

गंगा राम हल्क से तेरे, अगर पहुँच जाता नींचे।।
आज सिखा देता चोरी, करना हलवा बच गए महाराज।
दर्शन करने अभी आपके, यम पुर से आते यमराज।।
शर्म नहीं आती बे ग़ैरत, कैसा तेरा पेट हुवा।
भरते भरते भी नंहि भरता, खत्ती है या है कूआ।।
कम्बख़्तों जब श्री सदगुरू के, साथ तुम्हारा यह बरताव।
तो फिर नहीं पहुँच सकती, भव सागर पार तुम्हारी नाव।।
गंगा राम चला पग गहने, हम बोले बस वहीं रहो।
अगर चरण चाहो सदगुरू के, तो पहले प्राश्चित करो।।
जीभ चमारी के वश होकर, कर तो गया पाप उस वक्त।
लेकिन थर्रा उठा एक दम, उसकी हर नाड़ी में रक्त।।
ग़र्क हुवा हैरत में अपनी, धो डाले पातक आगे।
लगा लगन में श्री चरनों की, फिर उसके चक्षू जागे।।
गिरते कभी कभी फिर उठते, भक्त कभी औ कभी अभक्त।
ऐसा ही है पथ परमारथ, राग कभी तो कभी विरक्त।।
कृपा श्री सदगुरू जब होती, तभी उठा करता है पांव।
और कृपा तब होती है जब, बस जाता चरनों की छाँव।।
बारू गया एक दिन घर तो, ताले भीतर बंद किये।
आश्रम पर क्यों जाता है तू, घर वालों ने तंग किये।।
देखें अब क्यों कर जायेगा, तू ऐसे नंहि मानेगा।
जब तेरी हडडी तोड़ेंगे, तब तू हमको जानेगा।।
कर दो बंद इसे कोठे में, किया एकने उसको बंद।
खान पान पर रोक लगा दी, किया इस तरह बारू तंग।।
सदगुरू सदा देखते रहते, हैं अपने भक्तों का हाल।
बंद कोठरी में हो करके, बारू सिंह हो गया निढाल।।
सुध से बेसुध हुवा एक दम, नब्ज छूट गइ हो जैसे।
हरकत बंद हो गई बदन की, बारू सिंह हुवे ऐसे।।
जंगले में को देख एक ने, शोर मचाया कम्बख़्तो।
ताले को खोलो इक दम, क्या हाल है लड़के का देखो।।
देखा खोल खाल जब ताला, तो बारू बेहोश मिला।
दी आवाज़ें ज़ोर ज़ोर से, सबने उसको हिला हिला।।
उत्तर मिला न जब कुछ वापिस, नब्ज तलक न हाथ आई।
तो सम्मति कर सारे बोले, वहीं छोड़ आओ भाई।।
अपने बस का रोग नहीं यह, सब कुछ करके देख लिया।
पागल पन है भइया अपना, जो कुछ इसके साथ किया।।

Nijanand App

फेंक गये आश्रम में उसको, मरा जानकर घर वाले।
लेकिन क्या रहस्य है इसमें, क्या जानें बाहर वाले।।
उठा लाए श्री चरनों में उस, शव को सारे सुंदर साथ।
चरणा मत लेकर सदगुरू की, करने लगा बैठकर बात।।
बदला गया नाम उस दिन से, युगलदास विख्यात हुआ।
छोड़ दासता चिर दासों की, धनि चरणों में दास हुआ।।
घर वालों ने तजा आसरा, निकला अपना पूत कपूत।
लेकिन सदगुरू चरण थाम कर, जो थम जाता वही सपूत।।
युगल दास ने गहे चरण, चरनों ने गह लिया अपना दास।
किया निछावर सब सदगुरू पर, हुवा पूर्ण उन पर विश्वास।।

सदगुरू की महिमा बड़ी, बड़ी हैं उनकी बात।
हो समानता किस तरह, बड़ी है उनकी जात।।

बात सुना करते थे अपनी, भरत सिंह से सुँदर लाल।
घिसर पड़ी में रहते थे वे, आकर इक दिन किया सवाल।।
भरत सिंह है चल सीने के, एक ब्राह्मण जाती से।
मुंशी हैं कोल्हू वालों के, अपने शिष्य कहाते थे।।
बाहर कहीं गये हम उस दिन, बोले आकर सुंदर लाल।
जैसे शर्त मारता कोई, इस प्रकार का किया सवाल।।
जब जानें मुंशी जी तुमको, महाराज जी के दर्शन।
आज करा दो तो हम समझे, महा राज जी है पूरन।।
वरना हमें सिर्फ़ बातें ही, बातें केवल दिखती हैं।
असल तभी जानेंगे हम तो, अगर असलियत मिलती है।।
भरत सिंह बोला भइया जी, बात अगर है इतनी सी।
महा राज जी तो पूरे हैं, दर्शन होंगे निश्चय ही।।
लेकिन बैठ जाओ श्रद्धा से, दिल में उनका ध्यान करो।
देर न लगने की आने में, कुछ उन पै विश्वास करो।।
कह तो गया भरत सिंह इतनी, पर कुछ कुछ फिर घबराया।
मानो भरत सिंह का जैसे, इम्तहान का दिन आया।।
जपा हृदय से सदगुरू सदगुरू, दर्शन को नज़रें तरसीं।
दर्शन दो प्रभु दर्शन दो प्रभु, कह कह कर अंखिया बरसीं।।
बढ़ती गई लालसा ज़्यादा, ज्यों ज्यों बढ़ता गया समय।
ज्यों ज्यों देर हुई दर्शन में, भरत सिंह को उपजा भय।।
सुंदर लाल उधर कुछ कुछ, जो मुँह आया कह देता था।

Nijanand App

लगी खटकनी बातें उसकी, पर चुप चुप सह लेता था।।
लगी उचाटी महा राज जी, नींचा दिखलाना है क्या।
नहीं कहीं का भी रहने का, अगर आपने नहीं सुना।।
रहकर इसी दिशा में मुंशी, भरत सिंह बोला भइया।
मैं टट्टी हो आऊँ इतने, आप यहीं बैठे रहना।।
टट्टी किसे लगी थी वह तो, बेचैनी अंदर की थी।
वक्त बढ़ाने के लिए थोड़ा, सिर्फ़ एक वह युक्ती थी।।
लोटा ले जा बैठा ऐसी, जगह जहाँ से वह नाका।
जिससे महाराज जी अकसर, आया करते दिखता था।।
लगी टकटकी उस नाके पर, फाड़े बैठा रहा निगाह।
था विश्वास सुनेंगे अपनी, नंहि हैं सदगुरू बेपरवाह।।
इतने में दीखे आते हुए, लोटे का पानी फेंका।
और कारख़ाने की जानिब, क़दम बढ़ा कर मैं लपका।।
ताके पहुँच जाऊँ पहले ही, हाथ पैर धो धा करके।
लेने योग्य चरण हो जाऊँ, सदगुरू आए कृपा करके।।
बोले सुंदर लाल हमारे जाते ही, क्या समझूँ अब।
दर्शन होते तो हो लेते, भइया क्या घर जाऊँ अब।।
भइया मैं क्या करूँ बता अब, मेरे कुछ नंहि बसकी बात।
आना तो उनके बसकी है, बता हमारे क्या है हाथ।।
बड़े शौक़ से जा सकते हो, हम शर्मिंदा हैं खुद ही।
जिन्हें बड़ी मुश्किल से समझे, समझ जाओगे अब तुम भी।।
सुंदर लाल चला जैसे ही, ऐन द्वार पर जब पहुँचा।
अंदर आते श्री सदगुरू जी, देखे तो वह सहम गया।।
लगे पूछने आते ही क्या, बात है भइया सुंदर लाल।
याद किया किस कारण हमको, है भी ठीक आपका हाल।।
गिरा चरण पर शमी करके, निकल न पाया आगे बोल।
कृपा और लीला दोंनों ही, समझी सदगुरू की बे तोल।।
बना पुजारी एक झलक में, अंहकार हो गया समाप्त।
थके खोजते जिसको सुर नर, हुवा सहज घर बैठे प्राप्त।।
फूट पड़े श्रद्धा के सोते, झरने झरे भक्ति रस के।
रो रो कंथ न पाया बहुतों, हमें मिला हंसते हंसते।।

इस प्रकार के चुटकले घटते थे दिन–रात।
लोगों में श्रद्धा न थी, केवल बात ही बात।।

Nijanand App

ऐसे ऐसे चुटकले दिखलाते रहे नाँथ।
सदगुरू बड़े महान हैं पारब्रह्म साक्षात्।।

जिन जाना तिन पाईया, राखा हिये छिपाय।
अन्दर ही अन्दर पिया, प्याला होठ लगाय।।
करनी कृपा और अंकुर ये, तीनों छिपाये नहीं छिपते।
लेकर ही जाते हैं उसको, अपने साथ नहीं हटते।।

सतगुरू की कृपाओं का वरनन,
स्वयम् नहीं होता हमसे।

— प्रथम पुस्तक समाप्त —

Nijanand App